

Grāmegeya-Gānam

Note:

This preliminary PDF file is **not printable** due to copyright reasons.
This file must not be offered for download elsewhere on the internet.

The corrected final edition of this work will be published in due course
as a printed book available through the book trade.

<http://www.sanskritweb.net>

ॐ

सामवेद कौथुमशाखीय

ग्रामेगेय (वेय, प्रकृति) गानम्

Grāmegeya (Veya, Prakṛti) Gānam

Edited by

Subramania Sarma, Chennai

Chennai 2006

Copyright Notice:

© Copyright by Subramania Sarma, Chennai 2006. All rights reserved.

No part of this work may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted, in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording, internet, or otherwise, without the prior written permission of the author of this work.

Preface

This work is primarily based on the following work

- *Grāmegeya Gānām, Nārāyaṇasvāmi Dikṣita, Svādhyāya Maṇḍalaṁ, 1942, Aundh*

This work will not exist except for the support provided by Mihail Bayaryn who tirelessly worked on providing me with support throughout the whole project.

As this is only a preliminary version there could be some errors. Users are requested to report any corrections or mistakes to srothriyan@yahoo.co.in.

I also thank the people at Omkarananda Ashram who have generously put their Itranslator software in the public domain thereby making this project feasible.

I conclude by thanking the various institutions and individuals who have lent, procured or presented to me various versions of the texts and also by once again thanking Mr. Ulrich Stiehl for having made this project possible.

Subramania Sarma

May 2, 2006

ॐ

॥ श्री सामवेदाय नमः॥

अथ प्रकृतिगानम्।

तत्र प्रथममाग्नेयं पर्व।

॥ गायत्रम्॥ (परमेष्ठी प्रजापतिः, गायत्री, सविता।)

ओ३म्। तत्सवितुर्वरेणियोम्॥ भर्गोदेवस्य धीमाही३२।

धियो॑ यो नः प्रचो॑ऽ१२१२॥ हिम् स्थि॑ आ३२॥ दायो॑॥ आ३३४५॥

(दीर्घाः ६। पर्वाणि ६। मात्राः २॥ का)

(इति प्रकृतिसप्तगानान्तर्भूतं गायत्राख्यं प्रथमं गानं सम्पूर्णम्॥)

(१।१) ॥ पर्कः। (गोतमो, गायत्री अग्निः)॥

ओ॑। ओ॒ऽग्नाइ॥ आयाहि॑ऽ३वोइतोया॑ऽ२इ॥ तोया॑ऽ२इ॥ गृणानो॑ह। व्यदातोया॑ऽ२इ॥

तोया॑ऽ२इ॥ नाइहोतासा॑ऽ२३॥ त्सा॑ऽ२इबा॑ऽ२३४ओहोवा॑॥ ही॑ऽ२३४पी॑॥

(दी. ७। प. १। मा. ९) (झो।१)

(१।२) ॥ बर्हिष्यम्। (कश्यपो, गायत्री, अग्निः)॥

अ॒ग्न॑ आयाहि॑वी॑ऽ॥ तयाइ॑। गृणानो॑हव्यदाता॑ऽ२३याइ॑॥ निहोता॑सत्सिर्बा॑ऽ२३इपी॑॥

बर्हा॑ऽ२इषा॑ऽ२३४ओहोवा॑॥ बर्ही॑ऽ३पी॑ऽ२३४५॥

(दी. ९। प. ६। मा. ६) (तू।२)

(१।३) ॥ पर्कः। (गोतमो, गायत्री, अग्निः)॥

४ ५ ऋ ऋ ४ १ र र २ २ २ २ ३ ५
अग्रआयाहि। वाऽ५इतयाइ॥ गृणानोहव्यदाऽ१ताऽ३ये॥ निहोताऽ२३४सा॥
१ २ ५ ५ ५
त्साऽ२३इबाऽ३। हाऽ२३४इपोऽ६हाइ।

(दी. ४। प. ६। मा. ६) (तू।३)

(२।१) ॥ सौपर्णं सुपर्णो; (वैश्वमनसम्। विश्वमना, गायत्री, अग्निः।)॥

४ ५ र ऋ ऋ ४ ५ ४ २ ऋ र र र १ र र २ ३ ५
बमग्नेयज्ञानाम्। बमग्नाइ॥ यज्ञानां५होता। विश्वेषां५हाऽ२३इताः॥ देवैभाऽ२३इर्मा॥
३ र २ १ २ ४ ५ ४
नुषेजना। औऽ३होवा। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. १२। प. ९। मा. ६) (झू।४)

(३।१)॥ बृहद्भारद्वाजम् (बृहद्वाग्नेयं, बृहद्वा सौरम्।) (भरद्वाजो, गायत्री, अग्निः।)॥

५ र २ ३ १ र र २ ३ १ २ ३ १ २ ३
अग्निन्दूताम्॥ वृणीमहाइ। होताराऽ२३वी। श्ववेदसाम्॥ अस्ययाऽ२३ज्ञा। आ। औऽ३होवा॥
१ २ १ २ ३ १ २ ३ ५ ५
स्यासुक्रतुम्। इडाऽ२३भाऽ३४३। औऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ६। प. ११। मा. ५) (कु।५)

(४।१) ॥ (श्रौतर्षाणि त्रीणि) श्रौतर्षम्॥ त्रयाणां श्रुतर्षिः, गायत्री, अग्निः॥

५ १ ३ ३ ५ र ३ ५ २ १ २ १ नि
अग्निर्वृत्रा॥ णाऽ२इजाऽ२३४औहोवा। घाऽ२३४नात्। द्रविणस्युर्विपन्ययाऽ२॥
१ २ १ २ ३ १ २ ३ ५ ५
ओइसमिद्धाऽ२३ञ्चू॥ क्रायाहुतः। इडाऽ२३भाऽ३४३। औऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ४। प. ९। मा. ६) (धू।६)

(४।२)

अग्निरोहोवाहाइ। वृत्राणी॥ जाङ्घाऽऽनात्। औहोऽऽवाऽऽ। द्रविणाऽऽ३४स्युः।
 ओइवोइपन्ययाऽ२॥ समायेऽ३॥ धाऽऽश्चूऽऽ३४औहोवा॥ ऋयाहुताऽऽ३४५॥

(दी. ४। प. ९। मा. ७) (धे।७)

(४।३)

ओग्नीः॥ वृत्राणिजङ्घनात्। औहोहोऽऽ३४वा। द्रविणस्युर्विपन्यया। औहोहोऽऽ३४वा॥
 समिद्धश्चूऽऽया। औहोहोऽऽ३४वा॥ होऽऽतोऽऽ६हाइ॥

(दी. ४। प. ८। मा. ३) (दि।८)

ओशनसानि त्रीणि।

(५।१) ॥ औशनम्॥ (उशना, विराङ्गायत्री, अग्निः।)

प्रेष्ठवाः॥ अताऽऽ३४इधीम्। स्तौषेमित्रम्। इवप्राऽऽ३४याम्। अग्नाइराऽऽ३थाऽऽ३म्॥
 नावाऽऽ३हाऽऽ३४३इ॥ दाऽऽ३४योऽऽ६हाइ॥

(दी. २। प. ७। मा. ९) (छो।९)

(५।२) ॥ शैरीषम्॥ शिरीषो (उशना, गायत्री, अग्निः।)

प्रेष्ठवः। ओहाइ॥ अताऽऽ३४इधीम्। स्तुषाइमित्राऽऽ३म्। इवाऽऽप्राऽऽ३४याम्॥ औहोऽऽ१इ॥
 अग्नेराथाऽऽ३म्॥ नाऽऽ३४वेऽऽ३। दाऽऽ३४योऽऽ६हाइ॥

(दी. ३। प. ९। मा. १०) (ढो।१०)

(५।३) ॥ औशनम्॥ (उशना, विराङ्गायत्री, अग्निः।)

प्रेष्ठवोहाउ॥ अतिथाइम्। स्तुपेमित्रमिवप्राऽ२३याम्॥ अग्नायेऽ३॥ राऽ२ऽथाऽ२३४औहोवा॥

नवेदियाऽ२३४५म्।

(दी. ६। प. ६। मा. ६) (कू।११)

(६।१) ॥ सांवर्गम्। (संवर्गः) साकमश्वः, गायत्री, अग्निः॥

बन्नोया॥ ग्रेमहोभिः। पाहोइवीऽ३श्वा। स्याअरातेः॥ उताद्वाऽ१इषाऽ२ः॥ मर्त्यस्या

इडाऽ२३भाऽ३४३। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ७। प. ९। मा. ७) (झे।१२)

(६।२) ॥ वार्त्रग्नम्। साकमश्वः, गायत्री, अग्निः॥

बांबन्नोअग्नेम। होऽ६भाइः॥ पाहिविश्वाओऽ३हो। स्याओऽ३हो। आरातेः॥

उताद्वाऽ१इषाऽ२ः॥ मर्ताऽ२याऽ२३४औहोवा॥ स्याऽ२३४५॥

(दी. ६। प. ८। मा. ९) (गो।१३)

(७।१) ॥ शौनःशेषम्। वत्सः, गायत्री, अग्निः॥

एह्यूपुऽ३ब्रवाणाऽ६इताइ॥ अग्रइत्येतरागाऽ२इराः। एभाऽ२इर्वद्धा॥ स्याऽ२३हाऽ३४३इ॥

दूऽ२३४भोऽ६हाइ॥

(दी. ६। प. ५। मा. ८) (डै।१४)

(७।२) ॥ शौनःशेषम्॥ शौनः शेषः, गायत्री, अग्निः॥

एह्यूपुब्रवौहोणाइताइ॥ अग्रइत्येतराऽ१गीऽ३राः। एभिर्वाऽ२३४र्द्धा॥ सयाऽ२३हाऽ३४३इ॥

दूऽ२३४भोऽ६हाइ॥

(दी. ४। प. ५। मा. ६) (नू।१५)

(८।१) ॥ वात्से द्वे॥ वत्सो, गायत्री, अग्निः॥

आतेवत्साः॥ मनोयमत्। परमात्। चित्सधाऽ२३स्थात्॥ अग्नाइत्वाऽ३०काऽ३॥ मयोवा।
गाऽ५इरोऽ६हाइ॥

(दी. ४। प. ७। मा. ७) (थे।१६)

(८।२)

आतेवत्सोमनोयमत्। ऐयाहाइ॥ परमाचित्सधस्थादेयाऽ२३होइया॥

अग्नेत्वाकामयऐयाऽ२३होइया॥ गिरा। इडाऽ२३भाऽ३४३। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. १२। प. ८। मा. ६) (जू।१७)

(९।१) ॥ अग्नेरार्षेयं। गायत्री, अग्निः॥

त्वामग्नेपूष्काऽ६रादधी॥ आथर्वा। नाइः। अमाऽ२न्थाऽ२३४ता॥ मूऽ२३४र्द्धो।

वाऽ२३४इश्वा॥ स्यवोवा। घाऽ५तोऽ६हाइ॥

(दी. ५। प. ८। मा. ४) (बी।१८)

(१०।१) ॥ वाध्व्यश्चम्। (वध्व्यश्चोऽनूपो वा) गायत्री अग्निः॥

अग्नेविवस्वदाभरो। वाहाइ॥ अस्मभ्यमूतऽ३याइमहे। ओ। वाऽ३हाइ। ओ। वाऽ३हाइ॥

दाइवोऽ१हियाऽ२। ओ। वाऽ३हाइ। ओ। वाऽ३हाऽ३इ॥ साऽ२इनाऽ२३४ओहोवा।

दृशेऽ१॥

(दी. ६। प. १४। मा. ९) (घो।१९)

एकोनविंशतिः। प्रथमः खण्डः॥१॥

(११।१) ॥ (सांवर्गम्) सांवर्गः। अग्निर्गायत्र्यग्निः॥

नमस्तौ। होग्नाइ॥ ओजसाऽइइ। गृणाऽरन्ताऽइइइदे। वाकृष्टयाऽः॥ अमायेऽइः॥
आऽरमाऽइइइओहोवा॥ त्रमर्हयाऽइइइ॥

(दी. ३। प. ८। मा. ६) १ (डू।२०)

(१२।१) ॥ वैश्वमनसम्। विश्वमना गायत्र्यग्निः॥

दूताऽइ०वोऽइविश्ववेदसाम्॥ हव्यवाहाम्। अमाऽरन्ताऽइइइयाम्॥ याजिष्ठम्। ऋ।
जसेऽइहाइ॥ गिरा। औऽइहोवा। होऽइइ॥ डा॥

(दी. ३। प. १०। मा. ६) २ (णू।२१)

(१३।१) ॥ आभम्। आभो गायत्र्यग्निः (इन्द्रः)॥

उपत्वाजा॥ मयोऽइगि। रओइययूऽः। दाइदिशतीर्हाविष्कृ। तओइययूऽः॥
वायोराऽइइनी॥ कयाऽइस्थाऽइइइराइइइन्॥ अश्वाऽइगावाऽइइइइः॥

(दी. ६। प. ८। मा. १०) ३ (गौ।२२)

(१३।२) ॥ श्रौष्टीयम्। (श्रौष्टम्) श्रुष्टो गायत्र्यग्निः॥

उपत्वाजामाऽइयौगिराः॥ दाइदिश। ताइः। हवीऽइष्काऽइइइइर्ताः॥ वायोरनाहाइकाया॥
स्थाइरा। औहोऽइइइवा॥ ईडा॥

(दी. ८। प. ८। मा. ७) ४ (डे।२३)

(१४।१) ॥ वैश्वामित्रम्। विश्वामित्रो गायत्र्यग्निः॥

उपात्वाऽ२३ग्नेदिवेदिवाइ॥ दोषाऽ२वास्ताऽ२ः। धियावयम्॥ नामोऽ२भाराऽ२॥

तएमाऽ२३साऽ३४३इ। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ४। प. ७। मा. ५) ५ (थु।२४)

(१५।१) ॥ जरावोधीये द्वे। द्वयोरग्निर्गायत्री रुद्रः॥

जारा॥ बोधाऽ२बोधाऽ२। तद्विविद्वाइ॥ विशेवाइशेऽ२॥ यज्ञाऽ२३। यायाऽ३४औहोवा॥

स्तोमऽ०रुद्रायदृशीकाम्॥

(दी. ७। प. ७। मा. ४) ६ (छी।२५)

(१५।२)

जराबोधोवा॥ तद्विविद्वाइ। विशाइवाऽ२३इशे। यज्ञियाया। स्तोमाऽ०रुद्राऽ२३या। दृ।

शीकोऽ३४५इ॥ डा॥

(दी. ५। प. ८। मा. ४) ७ (बी।२६)

(१६।१) ॥ मारुतम्। मरुतो गायत्र्यग्निः॥

प्रतित्याऽ२३क्षारुमध्वराम्॥ गोपीथा। या। प्राहूयाऽ२३४साइ॥ मरुद्भिः। आ॥ ग्नाआगहा।

औऽ२होवा। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. ५। प. १०। मा. ५) ८ (मु।२७)

(१७।१) ॥ वारवतीयां। त्रयाणां भृगुः शुनःशेषो वा गायत्र्यग्निः॥

आश्वा। औहोऽ२३४वा। नात्वा। औहोऽ२३४वा॥ वारवन्तवन्दध्या। आग्ना। औहोऽ२३४वा॥

नमोभिस्सम्राजन्ताम्॥ आध्वराणाम्। औऽ२३होवा। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. ७। प. १२। मा. ३) ९ (छि।२८)

(१७।२)

अश्वन्नत्वावारवन्ताम्॥ वंदध्याअग्निन्नमोभाइः॥ सम्राज। तमाध्वराऽ३४। औहोवा॥
इहाऽ२३४हाइ। औहोऽ३१२। याऽ२३४औहोवा॥ णाऽ२३४५म्॥

(दी. १०। प. ९। मा. ७) १० (भे।२९)

(१७।३)

अश्वन्नत्वाऔहोहाइ॥ वारावाऽ२३४न्ताम्। वंदध्याऽ२३४हाइ। अग्नाइन्नमाऽ३४। औहोवा।
इहाऽ२३४हाइ। उहुवाऽ२३४भीः। सम्राज। तामध्वराऽ३४। औहोवा॥ इहाऽ२३४हाइ।
औहोऽ१२३४। णाम्। एहियाऽ६हा। होऽ५इ। डा॥

(दी. ९। प. १६। मा. १०) ११ (तौ।३०)

(१८।१) ॥ समुद्रे द्वे। समुद्रस्य वासो वा। और्वः, द्वयोरग्निः। गायत्र्यग्निः॥

और्वभृगुवत्। ओहा-इ॥ शूऽ२३४चीम्। आप्रवान। वदाऽ२हुवाऽ२इ। हुवओइ॥
अग्नाऽ२इ*समूऽ२॥ समुओ॥ द्रवाससाऽ३१उवा२३४५॥

(वैधायं ऋषिर्वा) (दी. २। प. ९। मा. ९) १२ (झो।३१)

(१८।२)

और्वभृगुवच्छुचिम्। एऽ५। शुचीम्॥ आप्रवान। वदाऽ२३हुवाइ। हुवाऽ२३इ। हुवए॥
अग्नाइ*साऽ३मू॥ समूऽ२३। समुएऽ३। द्रांऽ२वाऽ२३४औहोवा॥ ससाऽ३मेऽ२३४५॥

(दी. ४। प. १२। मा. ८) १३ (थे।३२)

(१९।१) ॥ असंगम्। (आसंगः)॥ अत्रिर्गायत्र्यग्निः॥

अग्निमिन्धानोमनसौ। हौहोवाहाइ॥ धियश्चचेतमौ। होऽइहाऽइ॥ होऽइ३४र्तियाः॥
अग्रायेऽइम्। आऽइ२इधाऽइ३४औहोवा॥ विवस्वभीऽइ३४५ः॥

(दी. ८। प. ८। मा. ६) १४ (डू।३३)

(२०।१) ॥ निधनकामम्। प्रजापतिर्गायत्र्यग्निः॥

आदित्रन्नाऽइस्यरेतसाः॥ ज्योतिःपश्यंतिवासाऽइराम्॥ परोयाऽइदिध्यताइ॥ दिवि। होइ।
होइ। औहोऔहोवाऽइ३४५हाउ॥ वा॥

(दी. ८। प. ८। मा. ७) १५ (डे।३४)

पञ्चदश। द्वितीयः खण्डः। इति ग्राम-गेयगाने प्रथमस्यार्द्धः प्रपाठकः॥

(२१।१) ॥ सैंधुक्षितानि त्रीणि। त्रयाणां सिंधुक्षिद्रायत्र्यग्निः। स्वारं सैन्धुक्षितम्॥

अग्निवोवृथान्ताम्॥ आध्वराणाम्। पुरूतामौ। होवाऽइहाइ॥ आछाऽइरनाप्तेऽइ३॥
सहोऽइ३४वा। स्वाऽइ५तोऽइ६हाइ॥

(दी. ५। प. ७। मा. ४) १ (फी।३५)

(२१।२)

अग्निवाऽइए। वृथान्ताम्। अध्वराणांपुरूतममच्छाऽइहोऽइ१इ॥ नाऽइ३३३॥
सहास्वाऽइ३४५ताऽइ६५इइ॥ ईऽइ३४ती॥

(दी. ३। प. ६। मा. ४) २ (टी।३६)

(२१।३) ॥ ऐडं सैंधुक्षितम्॥

अग्निवः। ओहाइ॥ वृधाऽ२३न्ताम्। अध्वराणांपुरूऽ१ताऽ३माम्॥ अच्छानस्रोऽ२३४हाइ॥
साहाऽ३हा। स्वता। औऽ३होवा। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. ३। प. १०। मा. ६) ३ (णु।३७)

(२२।१) ॥ हरसी द्वे। द्वयोरग्निर्गायत्री अग्निः॥

आग्नाओऽ२३४वा॥ तिग्मेनऽ३शो। चाइषाओऽ२३४वा॥ यास्साओऽ२३४वा॥
वाइश्चान्निया। त्राइषाओऽ२३४वा॥ अग्निर्नोऽ२वस्तेरयीऽ१म्॥

(दी. ३। प. ७। मा. ८) ४ (ठै।३८)

(२२।२)

ओहा। ओग्नीः॥ ताऽ२३४इग्मे। नाशोचाऽ२३४इषा। यस्साऽ२द्वाऽ२३४इश्चाम्॥
नियत्राऽ२३४इषाम्॥ अग्निर्नोऽ२। वस्साऽ२ताऽ२३४ओहोवा॥ राऽ२३यीम्॥

(दी. ३। प. ९। मा. ९) ५ (ढो।३९)

(२२।३) ॥ इहवद्वामदेव्यम्। वामदेवो गायत्र्यग्निः॥

अग्निस्तिग्मेनशोचिषा। इहा॥ यऽस्सद्विश्चान्यत्रिणाऽ२म्। इहा॥ अग्निर्नोवस्सताऽ२इ।
इहाऽ३॥ राऽ२३४योऽ६हाइ॥

(दी. ४। प. ७। मा. ३) ६ (थि।४०)

(२३।१) ॥ यामम्। यमो गायत्र्यग्निः॥

अग्नाइमृडा२ऽ। महास्साऽ२३४सी। अयआदाऽ२इ। वयुञ्जाऽ२३४नाम्॥ इयेथवाऽ२३॥
हिराऽ३साऽ५दाऽ६५६म्॥

(दी. २। प. ६। मा. ६) ७ (चू।४१)

(२३।२) ॥ उत्तरयामम्। यमो गायत्र्यग्निः॥

अग्नेमृडमहाऽ०असि। ओहाऽ३ओहा॥ अयआदेवयु०जनम्। ओहाऽ३ओहा॥
इयेथाऽ२३ब॥ हिराऽ३साऽ५दाऽ६५६म्॥

(दी. ७। प. ६। मा. ६) ८ (चू।४२)

(२४।१) ॥ राक्षोघ्नम्। अग्निर्गायत्र्यग्निः॥

अग्नेराऽ३क्षाणोअ॥हसाः। प्रतिस्मदेवरिषाऽ२३ताः॥ तपाइष्ठाऽ२३इरा॥
जरोदाऽ२३हाऽ३४३। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ५। प. ६। मा. ६) ९ (पू।४३)

(२५।१) ॥ राक्षोघ्नम्। अग्निर्गायत्र्यग्निः॥

अग्नेयूऽ३इक्ष्वाहियेतवा॥ अश्वासोदेवसाधाऽ२३वाः॥ अरंवाऽ२३हा॥ तियाशाऽ२३वाऽ३४३ः।
ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ८। प. ६। मा. ३) १० (टि।४४)

(२६।१) ॥ वैश्वमनसम्। विश्वमना गायत्र्यग्निः॥

निन्वा। होऽ३इ। ना। क्षिया॥ वाइष्पताइ। दुमन्तम्। धाइ। माहेवाऽ२३४याम्॥ सुवोहाइ॥
रामग्नाओऽ२३४वा। होऽ५तोऽ६हाइ॥

(दी. ३। प. ११। मा. ९) ११ (टो।४५)

(२७।१) ॥ आर्षेयम्। अग्निर्गायत्री अग्निः॥

अग्निर्मूर्धादीऽद्वःककूत्। पातीऽरपार्थीऽर। वियाअयाम्॥ आपाऽरराइताऽर॥

सिजिन्वाऽरताऽर३३इ। ओऽर३३३इ॥ डा॥

(दी. ३। प. ७। मा. ६) १२ (टू।४६)

(२८।१) ॥ सोमसाम। सोमो गायत्र्यग्निः॥

इममूषु॥ बमास्माऽर३३काम्। सानीऽरहोइ॥ गायाऽरहो। त्रन्नव्याऽर३३साम्॥

आग्नेऽरहोइ। दाइवाऽरहो॥ पुप्रावोऽर३चाऽर३३ः। ओऽर३३३इ॥ डा॥

(दी. १। प. १०। मा. ७) १३ (डे।४७)

(२९।१) ॥ गोपवनम्। गोपवनो गायत्र्यग्निः॥

तबागोपा॥ वानोऽरगाऽर३३इरा। जनाइइदा। ग्नयाऽर०गाऽर३३इराः॥

सपौवाओऽर३३वा। कौवाओ।२३३वा॥ श्रुधीऽरहवाम्। होऽर३इ॥ डा॥

(दी. २। प. ९। मा. ८) १४ (झे।४८)

(३०।१) ॥ सौर्यम्। सूर्यवर्चा वा वसुरोचिर्वा गायत्र्यग्निः॥

पर्यो। होइवाजा॥ पताइःका१वीऽर। अग्निर्हव्या। नायक्रमोऽरत्॥ दधाऽर३त्॥

राऽर३बाऽर३३ओहोवा॥ निदाशुपेऽर३३इ॥

(दी. ५। प. ८। मा. ६) १५ (बू।४९)

(३१।१) ॥ सौर्यम्। सूर्यो गायत्री सूर्यः॥

उदुत्यम्। ओहाइ॥ जा। तवेऽरदाऽर३३साम्। देववहा। तीकेताऽर३३वाः॥

दाऽर३३शेहाइ॥ वाइश्वायसू। र्याम्। औऽर३होवा॥ होऽर३इ॥ डा॥

(दी. ४। प. १२। मा. ८) १६ (धै।५०)

(३२।१) ॥ कावम्। कवि (र्वसुरोचि) गायत्र्यग्निः॥

कविमग्निम्॥ उपाऽ२३। स्तूऽ२हाऽ२३४औहोवा। सत्यधर्माणमध्वरे॥ देवाम्॥
अमीवचाताऽ२३नाऽ३४३म्। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ७। प. ८। मा. ५) १७ (जु।५१)

(३३।१)॥ काशीतम् कापीतं वा समुन्दं वा। पारावतो (पारावतिर्वा) गायत्र्यग्निः॥

शन्नोदेवीः॥ अभिष्टाऽ२३याऽ३४इ॥ शन्नोभवा॥ तुपीताऽ२३याऽ३४इ॥ शंयोरभी॥ स्रवा।
तूऽ२। ना२३४। औहोवा॥ ऊऽ२३४पा॥

(दी. ७। प. १०। मा. ३) १८ (धि।५२)

(३३।२) ॥ काशीत्तोत्तरम्। पारावतो गायत्र्यग्निः॥

हुवाऽ३होऽ२३४इ। शन्नोदेवीः। अभिष्टयाइ॥ हुवाऽ३होऽ२३४इ। शन्नोभवा। तुपीतयाइ॥
हुवाऽ३होऽ२४४इ। शंयोरभि। स्रवन्तुनाः॥ हुवाऽ३होऽ२। वाऽ२३४औहोवा॥ ऊऽ२३४पा॥

(दी. ८। प. १२। मा. ८) १९ (द्वै।५३)

(३४।१) ॥ मनाज्ये द्वे। द्वयोर्गोतमो (गोरांगिरसो वा) गायत्र्यग्निः॥

कस्यानूऽ१नाऽ२म्। परीणाऽ२३४सी॥ धियोजिन्वाऽ२। सिसत्पाऽ२३४ताइ॥
गोषाताऽयाऽ२३॥ स्याऽ२ताऽ२३४औहोवा॥ उप्। गीऽ२३४राः॥

(दी. ५। प. ८। मा. ५) २० (बु।५४)

(३४।२) ॥ गौराङ्गिरसस्य साम, गौतमस्य मनाज्यं मनाज्योत्तरं वा॥

^{अ र ^ ?} ओहोइहूऽइवाऽ२इइ॥ ^{२ ३ २} हुवए॥ ^{र ^ ४} कस्यनूनाऽइ०पाऽइरीणसि॥ ^{अ र ३ ५} ओहो-इहूऽइवाऽ२इइ॥ ^{अ र ?} हुवए॥ ^{२ ३ २}
^{र ^ ४} धियोजिन्वाऽइसीऽइसत्पताइ॥ ^{अ र ?} ओहोइहूऽइवाऽ२इइ॥ ^{२ ३ २} हुवए॥ ^{र र र} गोषाताय॥
^{३ २} स्यताऽइइगाऽइइराऽइ४६ः॥

(दी. १२। प. १०। मा. १३) २१ (त्रि।५५)

एकविंशतिः। तृतीयः खण्डः॥३॥

(३५।१) ॥ उपहवौ द्वौ। द्वयोर्भरद्वाजो बृहत्यग्निः॥

^{५ र} यज्ञायज्ञा॥ ^अ वोअग्नयाऽइइ॥ [?] गिराऽइगिराऽइ४। ^{अ २ ^} हाहोऽइइ॥ ^{१२^ ३} चादक्षाऽइ३४साइ॥
^{१ विर ^ ?} प्रप्राऽइवयममृतंजा। ^अ तावेऽइदासाऽइम्॥ ^{१ २} प्रियम्मित्राम्। ^{२ ?} नशःसिषाम्। ^{अ २ ^} एहिया।
^{अ र} ओहोहोऽइ३४५इ॥ डा॥

(दी. ८। प. १२। मा. ८) २२ (ठै।५६)

(३५।२)

^{४ अ ४ अ} यज्ञायज्ञा। ^२ होइइ। ^{२ ३ २ ^} वोऽइअग्नयएऽइ४। ^५ हिया॥ ^{३ र २ ?} गिरागिरा। ^{१ ^ ३ २ ?} चाऽइदक्षसाइ॥ ^{२ अ २ ?} प्रप्रावयाम्।
^{२ ?} अमृतंजाऽइ। ^{२ ^} तवेऽइदाऽइ३४साम्॥ ^{१ ^ ३} प्रियम्मित्राम्। ^{२ ?} नशःसिषाम्॥ ^{अ २ ^} एहिया। ^अ ओहोऽइ३४५इ॥
 डा॥

(दी. ६। प. १४। मा. ८) २३ (घै।५७)

(३५।३) ॥ श्रौष्ठीगवम्॥ श्रुष्ठीगुर्वृहत्यग्निः॥

याज्ञायाज्ञाऽ२। वोअग्नायाऽ२इ॥ गाङ्गरागाङ्गराऽ२। चादक्षसाऽ२इ। प्रप्रवायाऽ२म्।
 अमृतंजाऽ३। तवेऽ२दाऽ२३४साम्॥ प्रायम्माङ्गत्राऽ२म्॥ नाशंसाऽ२३इषाऽ३४३म्।
 ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. २। प. ११। मा. १२) २४ (चा।५८)

(३५।४) ॥ यज्ञायज्ञीयम्। (भरद्वाजः) अग्निर्वैश्वानरो बृहत्यग्निः॥

यज्ञाऽ५य। ज्ञाऽ३वोऽ३ग्नायाइ॥ गाङ्गरागिरा। चाऽ३दाक्षाऽ३साइ। प्रप्राऽ२वयममृतम्।
 जाताऽ२३वा। हिम्माइ॥ दाऽ३२साम्॥ प्रायम्मित्रन्नशाऽ२सिषाउ। वाऽ३४५॥

(दी. ६। प. १०। मा. ७) २५ (णे।५९)

(३६।१) ॥ कार्तयशम्। कृतयशा बृहत्यग्निः॥

पाहिनोऽ३अग्रएकया॥ पाहियुता। द्वितायाऽ१याऽ२॥ पाहिगीर्भिस्तिसृभिः।
 ऊर्जाम्पाऽ१ताऽ२इ॥ पाहिचतौऽ३। होऽ३वा॥ सृभिर्वाऽ२३साऽ३४३उ। ओऽ२३४५इ॥

डा॥

(दी. ४। प. १०। मा. ६) २६ (नू।६०)

(३६।२) ॥ नार्मेधम्। नृमेधा, (भरद्वाजः) बृहत्यग्निः॥

पाहिनोअग्रएकयाऽ६ए॥ पा। होइ। उ। ता। द्वितायाऽ३या। पाहोऽ२इगाऽ२३४इर्भिः।
 ताइसृभिः। ऊर्जाम्पाता। औहोहोऽ२३४वा। पाऽ२३४हिहाइ॥ चतासृभा।

औहोहोऽ२३४वा॥ वाऽ२३४साउ। एहियाऽ६हा। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. ११। प. १७। मा. १२) २७ (खा।६१)

(३६।३) ॥ कार्तवेशम् कृतवेशो, (भरद्वाजः) बृहत्यग्निः॥

५ ३ ५ ५ र ३ २^ ? ५ र ४ ५ ५ ३ ५ ३ ४ ३ ४ ५ र
पाहिनोअग्रए। कयाऽ३। पाऽ२३४। हियुतद्विती। याया॥ पाहिगीर्भिस्तिस्मिभिरूर्जाम्।
२^ २ ५ २ २^ २^ ५ ४ ५ ? २ र ? ३ ? ? ?
पाऽ३ताइ॥ पाहोइचाऽ३ताऽ३४। हाओवा॥ स्मिभिर्वसो॥ उपाऽ२३४५॥

(दी. ११। प. ११। मा. ६) २८ (कू।६२)

(३७।१) ॥ पृश्नि। भरद्वाजो बृहत्यग्निः॥

२ ? ४ र ५ २ ? ५ र ? ५ ? २ ? २^ २
बृहाद्दीऽ२३रग्नेअर्चिभिर्हाउ॥ शुक्राद्वणदेवशोचिषा। भराद्वाऽ१जेऽ२३। होवाऽ३हाइ।
? ५ ? अ ? २^ २ र ? २ ? २^ २ ? र २
समिधानः। याविष्टियाऽ२३। होवाऽ३हाइ। रेवात्पाऽ१वाऽ२३। होवाऽ३हाइ॥ कादीदिहि।
? २^ ?
इडाऽ२३भाऽ३४३। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ७। प. १३। मा. ८) २९ (जै।६३)

(३७।२) ॥ पृश्नि। भरद्वाजो बृहत्यग्निः॥

५ र ५ २ ? ५ र ? ५ ? २ न ^ २ ? ५
बृहद्भिरग्नेअर्चिभीऽ६रे॥ शुक्राद्वणदेवशोचिषा। भराद्वाऽ१जेऽ२३॥ ओऽ३वा। समिधानः।
? अ न ^ २ र ? २ न २ ? र २ ? २^ २
याविष्टियाऽ२३। ओऽ३वा॥ रेवात्पाऽ१वाऽ२३। ओऽ३वा॥ कादीदिहि। इडाऽ२३भाऽ३४३।
?
ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ७। प. १३। मा. ४) ३० (जी।६४)

(३८।१) ॥ उरोराङ्गिरस्य सामा उरुर्बृहत्यग्निः॥

५ ५ र ५ २ ५ २ र ? २ ? २ ३ ५ ५ ४ ५
बेआऽ२३ग्नेस्वाहुतहाउ॥ प्रियासस्सन्तुसूरयः। यन्तारोऽ१याऽ२३४इ। मघवानोजना।
२ ^ ? अ २ ५ ५ ? २^ ?
नाऽ३म्॥ ऊर्वदयाऽ२३हा। तगोनाऽ२म्। इडाऽ२३भाऽ३४३। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. १०। प. १०। मा. ७) ३१ (मे।६५)

(३९।१) ॥ पौरुमद्रे द्वे। द्वयोः गोतमो बृहत्यग्निः॥ (द्वे)

अग्नेजरितर्विष्पतिः। औहोवा। एहिया। हाउ॥ तपानादेऽरक्षसः। अप्रोषाऽइवाऽन्।
गार्हपताऽइइ। माहा॥आऽर३४सी॥ दिवाः। पयोवाओऽर३४वा॥ हाऽइहाइ। दुरोऽध्रण्यूः।
होऽध्रइ॥ डा॥

(दी. ६। प. १४। मा. १२) ३२ (घा.६६)

(३९।२)

अग्नेजरितर्वि। श्पतीऽऽः। ताऽर३४। पानोदेवर। क्षसाः॥ तापानोदेवरक्षसो।
अप्रोषीऽइवान्। गृहपताइ। माहा॥आऽर३४सी॥ ओऽऽहा। हहाइ। दिवस्यायूऽर३४ध्रः॥
ओऽऽहा। हहाइ। दुरोणयूऽर३४ध्रः। ओऽऽहा। हहाऽइइइ। ओऽर३४ध्रइ॥ डा॥

(दी. ९। प. १९। मा. ११) ३३ (धा.६७)

(४०।१) ॥ माण्डवे द्वे। जमदग्निः; द्वयोर्मण्डुर्बृहत्यग्निः॥

अग्नेविवाहाउ॥ स्वाऽइदूपाऽइसाः। चाइत्राऽइ॥हाइ। राधोऽइहाऽइइ। अमाऽरतीऽर३४या।
आदाऽशुषेऽर। जातवेदः। वहातूऽशुषेऽरम्॥ अद्याहोइ। दाऽर३इवा॥ उपः।
बूऽरधाऽर३४ओहोवा॥ हुवेवसूऽर३४ध्र॥

(दी. ७। प. १३। मा. ११) ३४ (जा.६८)

(४०।२) ॥ विदावसुनिधनं माण्डवम्॥

अग्नेविवस्वदूपासाः॥ चित्र॥राधोअमाऽरतीया। आदाऽशुषेऽर। जातवेदः। वहातूऽशुषेऽरम्॥
अद्यादाऽर३इवा॥ उपः। बूऽरधाऽर३४ओहोवा॥ विदावसूऽर३४ध्र॥

(दी. १। प. १। मा. ७) ३५ (धे।६९)

(४१।१) ॥ गाधम्। भरद्वाजो बृहत्यग्निः॥

ब्र॒न्नाऽ२३श्चि॒त्रऊ॒त्या॥ व॒सो॒रा॒धा। सि॒चो॒दाऽ१याऽ२३। आ॒स्य॒राऽ२३४याः। ब्र॒म॒ग्ने।

र॒था॒इ॒रा॒साऽ३इ॥ वी॒दा॒गाऽ२३४धा॒म्। तु॒चाऽ२३हा॒इ॥ तु॒ना। औऽ३हो॒वा। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. २। प. १२। मा. ७) ३६ (छे।७०)

॥ इति ग्रामे गेय-गाने प्रथमः प्रपाठकः ॥१॥

(४२।१) उभयत स्तोभमं गौतमम्। गौतमो बृहत्यग्निः॥

५ र २ १ र २ १ अ ३ २ १ र २ १ र
हाउबमित्सप्रथाअसिहाउ॥ आग्नेत्रातः। ऋताःकवाऽ२३४इः। हाहोइ। बाविप्रासःसमिधा।
१ र २ ३ ३ २ १ २ ३ २ २ १ ५ ५
नादीदिवाऽ३४ः। हाहोइ॥ आविवासाऽ३४। हाहोऽ३॥ तिवोऽ२३४वा। धाऽ५सोऽ६हाइ॥

(दी. ११। प. ११। मा. १०) १ (कौ।७१)

(४२।२) ॥ गौतमम्। गौतमो बृहत्यग्निः॥

५ ५ २ १ २ ३ ५ १ र २ १ अ ५
बाऽ६मे॥ इत्सप्राऽ३थायासाइ। आऽ२३४सी। आग्नेत्रातः। ऋताःकवाऽ२इः।
३ ५ १ र २ १ र १ र २ ३ ५ १ र १ २
काऽ२३४वीः। बाविप्रासःसमिधा। नादीदिवो। दाऽ२३४वाः॥ आविवासाऽ२३हा॥
१ र २ ३ १
तिवेधाऽ२३साऽ३४ः। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ८। प. १३। मा. ९) २ (डो।७२)

(४३।१) ॥ आयुः साम। अग्निर्बृहत्यग्निः॥

३ र ५ र ५ ५ २ ३ २ १ १ १ १ र १ अ २
आनोअग्नेवयोवृधम्। एऽ३४। रयाऽ३४५इम्॥ पावाऽ३काशःसाऽ२३याम्।
१ र २ १ र १ अ १ १ २ २ ३ २ १ ५ ५
रास्वाचनउपमाते। पूरुस्पृहाऽ२म्॥ सुनाइताइसूऽ३हाइ। यशस्तराम्। ओऽ२३होवा।
५
होऽ५इ॥ डा॥

(दी. ९। प. ११। मा. १२) ३ (ता।७३)

(४४।१) ॥ हरसी द्वे। द्वयोरग्निर्बृहत्यग्निः॥

५ २ ५ ५ ५ १ १ १ र १ १ र १ र १ र १ र
योविश्वाऽ३दायतेवसू॥ होताऽ२मान्द्रोऽ२। जनानाम्। माधोऽ२र्नापाऽ२। त्राप्रथमान्यस्मै॥
१ १ २ १ ५ ५ ५
प्रास्तोऽ२मायाऽ२३॥ तुवोऽ२३४वा। ग्राऽ५योऽ६हाइ॥

(दी. ७। प. ८। मा. २) ४ (जा।७४)

(४४१२)

योविश्वा^५दयतेव^५सुहा^५उ॥ होता^१ऽ२मान्द्रो^१ऽ२। जनानाम्। ओवा^१। ओवा^१। माधो^१ऽ२र्नापा^१ऽ२।
त्राप्रथमान्यस्मै^५। ओवा^१। ओवा^१॥ प्रास्तो^१ऽ२माया^१ऽ२३॥ तुवो^१ऽ२३४वा^५। ग्रा^५ऽ५यो^५ऽ६हा^५इ॥

(दी. ८। प. १२। मा. ३) ५ (ठा। ७५)

(४४१३) ॥ दैर्घश्रवसे द्वे। द्वयोर्द्विर्घश्रवा बृहत्यग्निः॥

योविश्वा^५दयतेव^५स्त्रोहा^५ओहा^५ऽ६ए॥ होता^१ऽ२मंद्रो^१जना^५ऽ२नाम्। ओ^५ऽ६हा^५। ओ^५ऽ६हा^५ऽ३ए^५ऽ३४॥
मधो^३ऽ३४र्नापा^३॥ त्राप्रथ^१। मानाय^१स्मा^१इ। ओ^१ऽ६हा^१। ओ^१ऽ६हा^१ऽ३ए^१ऽ३४॥
प्रस्तो^३ऽ३४माया^३ऽ३॥ तुवो^१ऽ२३४वा^५। ग्रा^५ऽ५यो^५ऽ६हा^५इ॥

(दी. १३। प. १२। मा. ७) ६ (ठा। ७६)

(४४१४)

योविश्वा^५दयतेव^५सू^५ऽ६ए॥ होता^१मंद्रो^१जना^५नाम्॥ माधो^१ऽ१र्नापो^१। वा^१ऽ३२॥ त्राप्रथमान्यस्मै॥
प्रास्तो^१ऽ१मायो^१। वा^१ऽ३२॥ त्रग्नये^१। इडा^१ऽ२३भा^१ऽ३४३।
ओ^१ऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. १२। प. ११। मा. ३) ७ (चि। ७७)

॥ द्वाविंशतिः चतुर्थः खण्डः ॥४॥ दशति॥

(४५।१) ॥ आग्नेये द्वे। द्वयोरग्निर्बृहत्यग्निः॥

एनावो^५अग्निनामसा^५॥ ऊर्जो^१र्नापा^१। तामा^१ऽ१हुवे^१ऽ२। प्रायंचेति^१ष्ठमरतिम्^१। सुवा^१ध्वा^१ऽ१रा^१ऽ२म्॥
विश्वा^१स्या^१ऽ१दू^१ऽ१॥ ताममृतम्^१। इडा^१ऽ२३भा^१ऽ३४३। ओ^१ऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ६। प. १०। मा. ५) ८ (डु।७८)

(४५।२)

ए॒ना॒वो॒अ॒ग्नि॒न्न॒म॒सा॒हा॒उ॒॥ ऊ॒र्जो॒न॒पा॒। ता॒मा॒ऽ॒ह॒वे॒ऽ॒३॒। हा॒उ॒। प्रा॒य॒चे॒ति॒ष्ठ॒म॒र॒ति॒म्।
सु॒वा॒ध्वा॒ऽ॒३॒रा॒ऽ॒३॒म्। हा॒उ॒॥ वि॒श्वा॒स्या॒ऽ॒३॒दू॒ऽ॒३॒। हा॒उ॒॥ ता॒म॒मृ॒त॒म्। इ॒डा॒ऽ॒३॒भा॒ऽ॒३॒३॒।
ओ॒ऽ॒३॒४॒५॒इ॒। डा॒।

(दी. ७। प. १३। मा. ९) ९ (जो।७९)

(४५।३) ॥ म॒ना॒ज्ये॒ द्वे। द्वा॒यो॒र्गो॒त॒मो॒ बृ॒ह॒त्य॒ग्निः॒॥

ए॒ना॒वो॒अ॒ग्नि॒मे॒ऽ॒५॒न॒म॒सा॒॥ ऊ॒र्जो॒न॒पा॒त॒मा॒हु॒वे। प्रा॒ऽ॒३॒या॒म्। चा॒इ॒ति॒ष्ठ॒म्। आ॒र॒ति॒म्।
सु॒वा॒ध्वा॒ऽ॒३॒रा॒ऽ॒३॒म्॥ वि॒श्वा॒स्या॒ऽ॒३॒दू॒ऽ॒३॒॥ ता॒म॒मृ॒त॒म्। इ॒डा॒ऽ॒३॒भा॒ऽ॒३॒३॒। ओ॒ऽ॒३॒४॒ऽ॒इ॒॥
डा॒॥

(दी. ८। प. ११। मा. ८) १० (टै।८०)

(४५।४)

ए॒ना॒वो॒अ॒ग्नि॒न्न॒म॒सो॒। जो॒न॒पो॒वा॒॥ ता॒मा॒हु॒वे। प्रा॒ऽ॒३॒या॒म्। चा॒इ॒ति॒ष्ठ॒म्। रा॒ऽ॒३॒ती॒म्।
सु॒व॒ध्व॒र॒म्॥ वि॒श्वा॒स्या॒ऽ॒३॒दू॒॥ ता॒म॒मृ॒त॒म्। इ॒डा॒ऽ॒३॒भा॒ऽ॒३॒३॒। ओ॒ऽ॒३॒४॒५॒इ॒॥ डा॒॥

(दी. ७। प. १२। मा. ७) ११ (छे।८१)

(४६।१) ॥ दे॒व॒रा॒ज॒म्। दे॒व॒रा॒ज्, (गौ॒त॒मः,) बृ॒ह॒त्य॒ग्निः॒॥

शे॒षे॒व॒ना॒ऽ॒५॒इ॒षु॒मा॒तृ॒षू॒॥ सा॒त्वा॒म॒र्ता॒सः॒। इ॒न्धा॒ऽ॒३॒ता॒इ॒। आ॒त॒द्रो॒ह॒व्य॒व॒ह॒। सा॒इ॒।
ह॒वी॒ऽ॒३॒ष्का॒ऽ॒३॒४॒र्त्ताः॒॥ आ॒दि॒दे॒वा॒इ॒॥ पु॒रा॒जा॒ऽ॒३॒सा॒ऽ॒३॒३॒इ॒। ओ॒ऽ॒३॒४॒५॒इ॒॥ डा॒॥

(दी. ८। प. १०। मा. ८) १२ (णै।८२)

(४७।१) ॥ गाथिनम्। कौशिको गाथिर्बृहत्यग्निः॥

अदर्शिगातुवित्तमाऽदृए॥ यास्मिन्स्थिव्रतानियादधुः। ऊपोषुजाऽ३। हाऽ३हाइ।
तमारियस्यवर्द्धनम्॥ अग्नाइन्नक्षाऽ३। हाऽ३हा॥ तुनोगिरः। इडाऽ२३भाऽ३४३।
ओऽ२३४५इ। डा।

(दी. ६। प. ११। मा. ८) १३ (कै।८३)

(४८।१) ॥ बार्हदुक्थे द्वे। द्वयोर्बृहदुक्तो बृहत्यग्निः॥

अग्निरुक्थाइ॥ पुरोऽ३हाइताः। ग्रावाणोब। हिराऽ३ध्वाराइ।
ऋचायामिमरुतोब्रह्माणस्पाताऽ२इ॥ दाइवाऽ२आवाऽ२३ः॥ वरोऽ२३४वा॥ णाऽ५योऽ६हाइ॥

(दी. ६। प. ८। मा. ९) १४ (गो।८४)

(४८।२)

अग्निरुक्थाओहोहोहाइ॥ पुरौवाओऽ२३४वा। हिताः। ग्रावाणोब। हिरोवाओऽ२३४वा।
ध्वराइ। ऋचौऽ३हो। यामिमरुतोब्रह्माणस्पाताऽ२इ॥ दाइवाऽ२आवाऽ२३ः॥ वरोऽ२३४वा।
णाऽ५योऽ६हाइ।

(दी. ७। प. ११। मा. ११) १५ (चा।८५)

(४९।१) ॥ पौरुमीढम्। पुरुमीढो बृहत्यग्निः॥

अग्निमी। डिष्वाऽऽ४ओहोवा॥ आवसे। गाथाभिःशी। रशोचाऽऽ३इषाम्। अग्निंरायाइ।
 पुरूमाऽऽ३इढा। श्रुतन्नरो॥ अग्निःसूऽऽ३दी॥ तयाइच्छाऽऽ३४५। दीऽऽ६४६ः॥
 दक्षाऽऽ३याऽऽ३४५॥

(दी. ९। प. ११। मा. ७) १६ (तो।८६)

(५०।१) ॥ कार्णश्रवसम् प्रास्कण्वं वा। कर्णश्रवा बृहत्यग्निः॥

श्रुधीऽऽ३। श्रूऽऽ३४। धिश्रुत्कर्णवा। ह्निभाइः॥ देवैरग्नेसयावाऽऽ३भीः।
 आसीदतुर्बर्हिषिमित्रोअर्याऽऽ३मा॥ प्रातर्याऽऽ३वाऽऽ३॥ भाऽऽ३इराऽऽ३४ओहोवा॥ एऽऽ३।
 ध्वरआ॥

(दी. १०। प. १०। मा. ७) १७ (मे।८७)

(५१।१) ॥ देवोदासम्। दिवोदासो बृहत्यग्निः॥

प्रदेवोदासोग्नीः॥ देवइन्द्रोनमज्मना। अनुमाऽऽ३ता। रंपृथिर्वीविवावृताइ॥ तस्थौनाऽऽ३का॥
 स्याशर्मणि। इडाऽऽ३भाऽऽ३४३। ओऽऽ३४५इ॥ डा॥

(दी. ६। प. ९। मा. ४) १८ (घी।८८)

(५२।१) ॥ सौक्रतवम्। सुक्रतुर्बृहत्यग्निः॥

अधज्माओवा॥ धवादाऽऽ३इवाऽऽ३। बृहतोरोचानाऽऽ३दाधीऽऽ३। आऽऽ३। यौ। हौहोऽऽ३वा।
 वार्द्धस्वतन्वा। गाइराऽऽ३ममाऽऽ३। आज्ञातासौ। हौहोऽऽ३वाऽऽ३४॥ हा। हाउवाऽऽ३॥
 क्रतोपृणाऽऽ३४५॥

(दी. ९। प. १३। मा. ५) १९ (दु।८९)

(५३।१)

॥ काण्वे द्वे। द्वयोः कण्वो बृहत्यग्निः॥

कायमानोऽध्वनातुवाम्॥ यन्मातृरा। जागन्नाऽ२३४पाः। नतत्तेअग्नेऽ३। प्रमृषेऽ३हाऽ३इ।
निवाऽ२र्ताऽ२३४नाम्॥ यदूराऽ२३इसान्। इहाभुवा। औऽ३होवा। हो५इ॥ डा॥

(दी. ८। प. ११। मा. ८) २० (टै।९०)

(५३।२)

एकाया॥ मानो। वनातूऽ२३४वाम्। ओइ। तूऽ२३४वाम्। उहुवाहाइ। औऽ३होऽ३१इ।
यन्मातृरा। जागन्नाऽ२३४पाः। आऽ२३४पाः। उहुवाहाइ। औऽ३होऽ३१इ॥ नतत्तआ।
ग्राऽ३इप्रमृषाऽ३इ। निवाऽ२र्ताऽ२३४नाम्। ताऽ२३४नाम्। उहुवाहाइ। औऽ३होऽ३१इ॥
यदूरेसान्। इहाभूऽ२३४वाः। भूऽ२३४वाः। उहुवाहाइ। औऽ३होऽ३१२।
याऽ२३४औहोवा॥ ऊऽ२३४पा॥

(दी. ७। प. २४। मा. २१) २१ (ञ।९१)

(५४।१)

॥ मानवाद्ये द्वे। द्वयोर्मनुर्वृहत्यग्निः॥

निःबामग्नाइ॥ मनुर्द्वाऽ२३४धाइ। ज्योतिर्जना। याशश्चाताऽ२इ। दी। दाइ। थका।
ण्वाःऋतजाऽ३। तऊऽ२क्षाऽ२३४इताः॥ यन्नमस्याऽ२३॥ ताऽ२इकृऽ२३४औहोवा॥
ष्टाऽ२३४याः॥

(दी. ५। प. १२। मा. ११) २२ (फा।९२)

(५४।२)

होवाइ। निबामग्नेमनुर्दधे। होवाइ॥ ज्योतिर्जनायशश्चते। दाइदेऽथक। ण्वाऋतजाऽ३१।

तऊऽ२क्षाऽ२३४इताः॥ यन्नामाऽ२३स्याऽ३॥ ताऽ२इकृऽ२३४ओहोवा॥ ष्टाऽ२३४याः॥

(दी. ८। प. १०। मा. १०) २३ (णौ।९३)

पञ्चमी दशतिः ॥५॥

(५५।१) ॥ द्रविणम्। अग्निर्बृहत्यग्निः॥

देवोऽ३वोऽ३द्रविणोदाः॥ पूर्णाविवष्टासिचम्। ऊद्वाऽ१सिश्वाऽ२। ध्वमुपवापृणध्वम्॥

आदिद्वोदेऽ२॥ वओहते। इडाऽ२३भाऽ३४३। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ८। प. १। मा. ५) २४ (द्वौ।९४)

(५६।१) ॥ बार्हस्पत्यम्। बृहस्पतिर्बृहत्यग्निः (ब्राह्मणस्पतिर्वा)॥

प्रैतूऽ३ब्रह्मणस्पतीः॥ प्रदाइविये। तुसूनृताऽ३। अच्छाऽ२वाऽ२३४इराम्। नर्यप।

ङ्किराधाऽ१साऽ२३म्॥ देवाऽ२याऽ२३४ज्ञाम्॥ नाऽ२याऽ२३४ओहोवा॥ तूऽ२३४नाः॥

(दी. ४। प. १। मा. ८) २५ (धौ।९५)

(५७।१) ॥ वीङ्कम्। वसिष्ठो बृहत्यग्निः (यूपो वा)॥

ऊर्ध्वऊषुणाऽ३ऊताऽ२३४याइ॥ तिष्ठादेवानसविता। ऊर्ध्वोवाऽ२३जा। स्यासनिता।

यादंजिभीऽ२॥ वाधाद्भीऽ२॥ वीवीऽ२। ह्यामाऽ२३हाऽ३४३इ। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. १०। प. १०। मा. ७) २६ (मे।९६)

(५८।१) ॥ विष्पर्धसस्साम। विष्पर्धसो बृहत्यग्निः॥

५ र र २ र ५ १ र २ ५ र २ र १ २
 प्रयोरायाऽ५इनिनीषताइ॥ मर्तोयस्तेवसोदाशत्। सवीराऽ२३न्धा। ताअग्रउ। कथश्सिनम्॥
 र २ ५ १
 त्मनासाऽ२३हा॥ स्रपोषाऽ२३इणाऽ३४३म्। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ९। प. ९। मा. ९) २७ (धो।९७)

(५९।१) ॥ ऐतवाद्ध्यम्। ऐतवद्धिर्बृहत्यग्निः॥

५ ५ २ १ २ ५ र २ १ २ २ १ २ र २ १ २
 प्रवाः॥ यहंपुरूऽ२३णाम्। विशादेवयताऽ२३इनाम्। अग्निःसूक्तेभिर्वचोभिवृणीमाऽ२३हाइ॥
 १ २ १ २ १ २ १ २ १ २ १ २
 याःसाऽ२माइदाऽ२न्॥ यइधते। इडाऽ२३भाऽ३४३। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ७। प. ९। मा. ९) २८ (झो।९८)

(६०।१) ॥ दोहः सामा दोहो बृहत्यग्निः॥

५ र १ २ २ २ २ १ २ २ १ २ २
 अयमग्निःसुवीर्यस्यहाउ॥ आइशेहिसौभगस्या। होवाऽ३हाइ। रायईशेस्त्रपत्या।
 १ २ १ २ २ २ १ २ २ १ २ २ १ २
 स्यागोऽ१माताऽ२३ः। होवाऽ३हाइ॥ ईशेहाऽ२३इवृऽ३। होवाऽ३हा॥ त्राहथानाम्।
 १ २ २ ३ ४ ५
 इडाऽ२३भाऽ३४३। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. १०। प. १२। मा. ९) २९ (फो।९९)

(६१।१) ॥ समन्तम्। अग्निर्वसिष्ठो वा बृहत्यग्निः॥

५ ५ २ ५ ५ १ २ २ १ २ २ १ २ २
 बमग्नेगृहपताइः। बःहोतानोअध्वराइ। बंपोऽ२३ता। वाइश्रवा। रप्रचाइताः।
 ३ २ ३ २ १ २ २ २ १ २ २ १ २ २
 ओहोऽ३४वाहाइ॥ या। क्षाइयाऽ२३सीऽ३। होवाऽ३हाइ॥ चवाराऽ२३याऽ३४३म्।
 १ २ ३ ४ ५
 ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ८। प. १२। मा. १२) ३० (ठा।१००)

(६१।२) ॥ समन्ते द्वे। द्वयोर्वरुणो बृहत्यग्निः॥

४ ५ र ४ ४ २ ३ ५ २ ३ ५ १ ३ ५
 ब्रमग्नेगृ हाऽपृतीः॥ ब्रह्मोऽ२३४ता। नोअध्वाऽ२३४राइ॥ बाऽ२०पोऽ२३४ता।
 २ ३ ५ २ र १ २ १ ३ ५ र २ ३ १ १ १
 विश्वावाऽ२३४रा। प्रचेताऽ३ः॥ यक्षायेऽ३॥ याऽ२साऽ२३४ओहोवा॥ चवारियाऽ२३४५म्॥

(दी. ५। प. १०। मा. ६) ३१ (मू।१०१)

(६१।३)

५ २ ५ ५ ५ १ र ५ र १ २ र १ र २ ३ ५ ५ ५ ५
 ब्रमाऽ३ग्नेगृहापतीः॥ ब्रह्मतानोअध्वरे। बाऽ२३०पोता॥ ओहोऽ३४इ। ओहो। वाहाइ।
 १ ५ १ ५ ३ २ ५ ५ ३ २ १ २ ३ ५ ५ ५
 वाइश्रवा। रप्रचाइताः। ओहोऽ३४इ। ओहो। वाहाइ॥ यक्षाइयासा। ओहोऽ३४इ। ओहो।
 ३ २ ५ २ १
 वाहाइ॥ चवाराऽ३४याऽ३४३म्। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. २१। प. १८। मा. १४) ३२ (गी।१०२)

(६२।१) ॥ वाम्नाम्। वाम्नो वैखानस आजिग दानवो वा बृहत्यग्निः॥

५ र र र ४ ५ २ ३ ५ ५ १ २ २ १ ३ ५
 सखायस्त्वाओहोहोहाइ॥ ववृ। माऽ२३४हाइ। देवंमर्ताऽ३हाऽ३। सऊऽ२ताऽ२३४याइ।
 ५ २ ५ ५ ३ २ १ २ ३ ५ २ १ २
 अपान्नपाऽ३। तस्सु। भगौ। वाऽ३हाऽ३इ। सूदसाऽ२३४साम्॥ सुप्रतूऽ२३४तीम्॥
 २ ५ २ १
 अनेहाऽ२३साऽ३४३म्। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ६। प. १४। मा. १०) ३३ (घो।१०३)

॥ षष्ठी दशतिः ॥६॥

(६३।१) ॥ त्रिष्टुप् श्यावाश्वम्। स्यावाश्वस्त्रिष्टुबग्निः॥

५ ५ र ४ २ १ र १ २ १ २ १
 आजुहोता॥ हविषामर्जयाऽ२ध्वाउवाऽ२। निहोतारंगृहपतिदधोऽ२इध्वाउवाऽ२३४॥
 ३ २ ३ २ १ र २ १ १ २ १ २ १ ४ ५
 इडाऽ३४स्पदाइ॥ नमसारातहाव्याऽ२म्। सापर्यता। याजतंपाऽ२३। स्तियोवा।
 ४ ५
 आऽ५नोऽ६हाइ॥

(दी. ७। प. १। मा. ६) ३४ (झू।१०४)

(६४।१) ॥ ऋतुसामणी द्वे। द्वयोर्ऋतुर्जगत्यग्निः॥

ओइ। चित्रैश्छाद्विशोऽऽस्तुरुणाऽऽ३। स्याऽऽवक्षथः॥ ओइ। नयोमाताराऽऽवनुवाऽऽ३इ।
तीऽऽधातवे॥ ओइ। अनूधायदजीजनाऽऽ३त्। आऽऽधाचिदा॥ ओइ।
ववक्षत्साद्योऽऽमहिदूऽऽ३। तियाऽऽ३०चाऽऽप्राऽऽ६५दन्॥ दूत्यं चरन्महेऽऽ३३४५॥

(दी. १०। प. १३। मा. १०) ३५ (बौ।१०५)

(६४।२)

चित्राऽऽ६ए॥ एऽऽ३१२३४। शिशोस्तरुणस्यवक्षथः। क्षथः। हिहिहियाऽऽ६हाउ। एऽऽ३१२३४।
नयोमातरावन्वेतिधातवे। तवे। हिहिहियाऽऽ६हाउ॥ एऽऽ३१२३४। अनूधायदजीजनदधाचिदा।
चिदा। हिहिहियाऽऽ६हाउ॥ एऽऽ३१२३४। ववक्षत्सद्योमहिदूतियचरन्। चरन्।
हिहिहियाऽऽ६हाउ। वा॥ एऽऽ३। ऋतून्॥

(दी. १६। प. २०। मा. १०) ३६ (डौ।१०६)

(६५।१) ॥ यामं कौत्सं वा। यमस्त्रिष्टुबग्निः (विश्वेदेवा वा)॥

ओऽऽ४हा। हहाइ। इदंतए। काऽऽ३०परः। ऊतएकाम्॥ तृतीयेना। ज्योतिषाऽऽ३।
संविशस्त्वा॥ संवेशनाः। तनुवे। चारुरेधी॥ ओऽऽ४हा। इहाइ। प्रियोदेवा। नाऽऽ३०पर।
माऽऽ३४३इ। जाऽऽ३नाऽऽ५इत्राऽऽ६५६इ॥

(दी. ७। प. १७। मा. १०) ३७ (छौ।१०७)

(६६।१) ॥ कौत्सम्। कुत्सो जगत्यग्निः। यज्ञसारथिः॥

इमंस्तोऽ२३४माम्। अहतिऽ२३४जा। तावेदसेऽ३। होइ॥ रथामीऽ२३४वा।

संमाहेऽ२३४मा। मानीषयाऽ३। होइ॥ भद्राहीऽ२३४नाः। प्रमातीऽ२३४रा।

स्यासंसदेऽ३। होइ॥ अग्नाइसाऽ२३४ख्याइ। माराइपाऽ२३४मा। वायंतवाऽ३।

होऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. २। प. १७। मा. ९) ३८ (छो।१०८)

(६७।१) ॥ अग्निर्वैश्वानरस्य सामनी द्वे। द्वयोरग्निर्वैश्वानरास्त्रिष्टुबग्निर्वैश्वानरः॥

मूर्द्धोहोहाइ॥ नंदाऽ२३४इवाः। अरताइम्। पृथीऽ३३व्याः। वैश्वानराम्। ऋतआ।

जातमग्नीम्॥ कविंसम्राजमतिथाइम्। जनाऽ२३३नाम्॥ आसन्नःपा। त्राऽ३०जना। याऽ३४३।

ताऽ३३दाऽ५इवाऽ६४६ः॥

(दी. ६। प. १३। मा. १४) ३९ (गी।१०९)

(६७।२)

होवाइ। मूर्द्धोहाइ॥ नंदाइ। वाऽ३अरा। तिपृथिव्याः। इहोइयाऽ३। ईऽ३या। वैश्वानराम्।

ऋतआ। जातमग्नीम्। इहोइयाऽ३। ईऽ३या॥ कविंसम्रा। जाऽ३मति। थिजनानाम्।

इहोइयाऽ३। ईऽ३या॥ आसन्नःपा। त्राऽ३०जना। यंतदेवाः। इहोइयाऽ३। ईऽ२।

याऽ२३४। औहोवा॥ ईऽ२३४५॥

(दी. १३। प. २५। मा. १४) ४० (र्णी।११०)

॥ इति ग्रामेगेयगाने द्वितीयस्यार्धः प्रपाठकः ॥२॥

(६८।१)

॥ आश्वे द्वे। द्वयोरश्वस्त्रिष्टुबग्निः॥

विबत्। ओहाइ॥ आपोनपर्वतस्यपाऽ२३ष्ठात्। उक्थेभिरग्नेजनयंतदाऽ२३इवाः॥

तंबागिरःसुष्टुतयोवाजयाऽ२३०ती॥ आजिन्नगार्हववाऽ२३हाऽ३ः। जायेऽ३।

ग्यूऽ२राऽ२३४औहोवा॥ अश्वाऽ२३४५ः॥

(दी. १०। प. ९। मा. ९) १ (भो।१११)

(६८।२)

हा। ययाइदिवोहाइ। विबत्। आपो। नपर्वा। तस्यपृष्ठात्॥ हा। ययाइदिवोहाइ। उक्थाइ।

भिरा। ग्नेऽ३जना। यंतदेवाः॥ हा। ययाइदिवोहाइ। तंबा। गिराः। सुष्टुतयः। वाजयंती॥ हा।

ययाइदिवोहाइ। आजीम्। नगार्हववाऽ२३हाऽ३ः। जायेऽ३। ग्यूऽ२राऽ२३४औहोवा॥

अश्वाऽ२३४५ः॥

(दी. ३। प. २५। मा. १९) २ (पो।११२)

(६९।१)

॥ वामदेव्यं रौद्रं वा। रुद्रस्त्रिष्टुबग्निः॥

आवोराजा॥ नमध्व। रस्यरुद्राम्। हो। ता। राम्। सा। त्ययजाऽ३म्। रोदसीयोः॥ अग्निपु।

रा। तनयि। बौरचित्तात्॥ हिरण्या। रू॥ पाऽ३मवा। साऽ३४३इ। काऽ३र्णुऽ५ध्वाऽ६४६म्॥

(दी. ४। प. १८। मा. ७) ३ (दा।११३)

(७०।१)

॥ वैश्वज्योतिषे द्वे। द्वयोर्विश्वज्योतिस्त्रिष्टुबग्निः उषा वा॥

इन्धाऽ३१२३४इ। हाउहाउहाउ। राजासमर्योना। मोभीरोभीः। ओभीः॥ यस्याऽ३१२३४।

हाउहाउहाउ। प्रतीकमाहुतघृ। ताइनाआइना। आइना॥ नराऽ३१२३४। हाउहाउहाउ।

हव्येभिरीडतेस। बाधाबाधाः। बाधाः॥ आग्नाऽ३१२३४इ। हाउहाउहाउ।

अग्रमुषसाऽ२३मशाउ। वाऽ३॥ चीऽ२३४५॥

(दी. २१। प. २०। मा. २४) ४ (डी।११४)

(७०।२)

हौहोऽ२। हौहोऽ२। हौहोइ। इधेराजासमर्योनऽ३मोभोऽ२। ओभोऽ२। ओभोऽ२॥
यस्यप्रतीकमाहुतंघृऽ३ताइनाऽ२। आइनाऽ२। आइनाऽ२॥ नरोहव्येभिरीडतेसऽ३बाधाऽ२ः।
बाधाऽ२ः। बाधाऽ२ः॥ हौहोऽ२। हौहोऽ२। हौहोइ। आग्निरग्रमुषसाऽ२३मशाउ। वाऽ३॥
चीऽ२३४५॥

(दी. १३। प. १८। मा. १२) ५ (डा।११५)

(७१।१)

॥ यामे द्वे। द्वयोर्यमस्त्रिष्टुबग्निः॥

प्रकेतुना। बृहताया। तियग्नाइ। होइहोवाऽ३होइ॥ आरोदसाइ। वृषभोरो। रवीताइ।
होइहोवाऽ३होइ॥ दिवश्चिदा। तादुपमाम्। उदानाट्। होइहोवाऽ३होइ॥ अपामुपा।
स्थेमहिषो। ववर्द्धा। होइहोवाहाऽ३१उ। वाऽ२३॥ देऽ३। दिवाऽ२३४५म्॥

(दी. ११। प. १९। मा. १५) ६ (घु।११६)

(७१।२)

हा। हाओहोइ। प्राऽ२३४के। तुना। बृहताऽ३। यातियग्नीः॥ हा। हाओहोइ। आऽ२३४रो।
दसाइ। वृषभोऽ३। रोरवीती। हा। हाओहोइ। दीऽ२३४वाः। चिदा। ताऽ३दुपा।

मा३मुदानट्॥ हा। हा३ओहोइ। आऽऽ३४पाम्। उपा। स्थेऽऽ३महि। पोववर्द्धा। हा। हा३ओहो।
वाऽऽ३४ओहोवा। एऽऽ३। दिवाऽऽ३४५म्॥

(दी. ७। प. २९। मा. १६) ७ (झू।११७)

(७२।१) ॥ मराये द्वे। द्वयो राशिमरायोविराडग्निः॥

हाउहाउहाउ। आग्नीम्। नराः। नराः। नराः। दीऽऽ३धिति। भिररण्योः॥ हाउहाउहाउ।
हास्ता। च्युताम्। च्युताम्। च्युताम्। जनया तप्रशस्तम्॥ हाउहाउहाउ। दूराइ। दशाम्।
दशाम्। दशाम्। गृहपा। तिमथव्युम्। हाउहाउहाउ। वा॥ ईऽऽ३४५॥

(दी. १०। प. २४। मा. २६) ८ (भू।११८)

(७२।२)

हाउहाउहाउ। आग्नीम्। नराः। दीऽऽ३धिति। भिररण्यो। ण्यो। ण्योः॥ हाउहाउहाउ। हास्ता।
च्युताम्। जनया तप्रशस्तम्। स्तम्। स्तम्॥ हाउहाउहाउ। दूराइ। दशाम्। गृहपा।
तिमथव्युम्। व्युम्। व्युम्। हाउहाउहाउ। वा॥ ईऽऽ३४५॥

(दी. १२। प. २४। मा. १४) ९ (झी।११९)

षोडश सप्तमः। सप्तमः खण्डः ॥७॥ दशतिः॥

(७३।१) ॥ श्येनः प्रजापतिर्वा, दीर्घायुष्यं वा। प्रजापतिस्त्रिष्टुबग्निः; उषावा॥

अबोधिया। ग्राइस्मिधाजनाऽऽ२नाम्। प्रताइधेऽऽ३नूम्। इवायतीमुपासम्। यहार्इऽऽ३वा।
प्रवाऽऽ२यामुञ्जिहानाः॥ प्रभानाऽऽ३वाः॥ सप्ततेनाकमच्छ। इडाऽऽ३भाऽऽ३४।
ओऽऽ३४५॥ डा॥

(दी. १४। प. ११। मा. ९) १० (तो।१२०)

(७४।१) ॥ वासुकं शुक्रं वा वसुकस्त्रिष्टुबग्निः॥

४ ऋ ४ ५ ४ ३ ३ २ ३ ५ ४ ५ ५ अ ३ ३ ३ २ ३ ५
प्रभूर्जयंताम्॥ महाऽऽऽ४३०विपोधाम्। मूरैरमूरंपुरादर्माऽऽऽणाम्॥ नयाऽऽऽ४३०तंगीर्भिः।
३ ३ २ ३ ५ ४ ५ ४ ५ ५ २ १ १ १ १
वनाऽऽ४३धियंधाः॥ हरिश्मश्नुन्नवर्मणाऽऽ॥ हाउवा॥ धनाऽऽर्चीऽऽऽ४५म्॥

(दी. ८। प. ८। मा. ७) ११ (डे।१२१)

(७५।१) ॥ पौषम्। पूषान्निष्टुपूषा॥

५ ४ ५ ४ ५ ४ ५ १ ५ ५ ५ अ २
शुक्रंतेअन्यद्यजतम्। तआऽऽन्यात्॥ विषुरूपेअहनीदौः। इवाऽऽऽसी।
१ ५ ५ ५ २ ५ २ ५ ५ १ ५ २ ५ ५
वाइश्वाहिमायाअवसाइ। स्वधाऽऽवान्॥ भद्राते। पू॥ पाऽऽनिहा। रातिरस्तु।
४
तिराऽऽस्तुहाउवा॥

(दी. ९। प. ११। मा. ११) १२ (ता।१२२)

(७६।१) ॥ कौत्सम्। कुत्सस्त्रिष्टुबग्निः॥

५ ५ २ ५ २ ३ ४ ५ ४ ३ ४ ५ ५ ५ ५ ५
इडामग्नाइ॥ पुरुदाऽऽ। सऽसनिंगोः। शश्चत्तमऽहवमाना। यसाऽऽऽ४धा। स्यान्नस्मूनुस्तनयः।
२ ५ २ ५ ४ ५ ४ ५ ३ ३ २ ५ ४ ५ ३ १ १ १
विजाऽऽवाऽऽ॥ आग्नेसाताइ॥ सुमाऽऽऽ४३। तीऽऽऽ। भूतुहाउवा॥ स्माऽऽऽ४५इ॥

(दी. ६। प. १२। मा. ७) १३ (खे।१२३)

(७७।१) ॥ काश्यपे द्वे। द्वयोः कश्यपस्त्रिष्टुबग्निः॥

४ ५ ५ ५ ५ २ ५ ५ ५ ५ ५
प्रहोताजाताः॥ महान्नभोविन्नुपद्वाऽऽऽसीदात्। अपांविवर्ताइ॥ दधदोऽऽऽधा। याइ।
५ ५ ३ ३ १ ५ ५ १ ५ ३ ५ ५ २ १ १ १
सुतेवयाऽसियन्ताउ। वा॥ वासूनिविधा। ताऽऽ। याऽऽऽ४औहोवा॥ तनूऽऽपाऽऽऽ४५ः॥

(दी. १२। प. ११। मा. ४) १४ (चे।१२४)

(७७।२)

४ र ऋ र ४ ५ ४ ५ ? - ? - ? र र अ ३
प्रहोताजातः। उहुवाहाइ। माहाऽरन्नाभोऽर। वाइन्नुषद्मासीददपाविवाऽर३र्ताइ।
१ ३ ^ १ ३ ? - १ - १ र र र ३ १ ३
आओऽरहो। इहा। दाधाऽरद्योधाऽर। याइसुतेवयाश्सियंतावसूऽर३नी। आओऽरहो।
१ ३ १ ३ ^ १ ^ ३ ५ र ३ १ ३ १ १ ?
इहा॥ विधतायेऽर३॥ तनूऽरपाऽर३४ओहोवा॥ हविष्मतेऽर३४५॥

(दी. १०। प. १३। मा. ८) १५ (वै।१२५)

(७८।१) ॥ घृताचेराङ्गिरसस्य साम। घृताचिस्त्रिष्टुबग्निः; इन्द्रो वा॥

५ ३ ३ ^ ३ ३ ४ ५ ३ ? ३ ^ ? ३ ३ ४ ५
प्रसम्राजम्॥ असुराऽर३। स्याप्रशस्ताम्। पुःसःकृष्टाइ। नाऽरमनु। मादियस्या।
३ र ३ ३ ३ ४ ५ ३ ? र ३ ? ३ र ? १ ^ ३ ५ र
इन्द्रस्येवाऽर३४३प्रतव॥ सस्कृतानी॥ वंदद्वारावदमाना॥ विवाऽरष्टूऽर३४ओहोवा॥
३ ५
वीऽर३४शाः॥

(दी. ८। प. ११। मा. ५) १६ (टु।१२६)

(७९।१) ॥ प्रासाहम्। भरद्वाजस्त्रिष्टुबग्निः॥

५ ३ र ३ ३ र ३ ४ ३ ४ ५ ३ ३
अरण्योः॥ निहितोजाऽर३४३तवेदाः। गर्भइवेत्सुभृतोग। मिणाऽर३४इभीः॥
३ ३ र र र अ ३ ३ ४ ५ ३ ३ ४ ५ ५ र ४
दिवेदिवईड्योजागृवाऽर३४द्दीः॥ हाऽर३४वी। ष्माऽर३४द्दीः। मनुष्येऽर५भिरग्निः।
५ ५ ४
एहियाऽरहा॥ होऽरइ॥ डा॥

(दी. १०। प. ११। मा. १०) १७ (पौ।१२७)

(८०।१) ॥ अग्नेर्वैश्वानरस्यात्रेर्वा, राक्षोघ्नम्। अग्निस्त्रिष्टुबग्निः॥

अहा। वोऽऽहा। वोऽऽहा। सनादग्नाइ। मृणासि। यातुधानान्॥ नत्वारक्षा। सीऽऽपृता।
नासुजिग्यूः॥ अनुदहा॥ सहमू। रान्कयादाः॥ अहा। वोऽऽहा। वोऽऽहा। माताइहेत्याः।
मुक्षता। दाऽऽऽई। वीऽऽयाऽऽयाऽऽऽऽः॥

(दी. ५। प. १९। मा. ८) १८ (भै।१२८)

अष्टमः खण्डः ॥८॥ दशतिः॥

(८१।१) ॥ पाथे द्वा द्वयोः पथोऽनुष्टुबग्निः॥

आग्नाओऽऽऽऽवा॥ ओजिष्ठऽऽमा। भाराओऽऽऽऽवा। दुम्नमस्मभ्यमधिगोऽऽ॥ ओइ।
प्रानाओऽऽऽऽवा॥ रायेपनीऽऽयसेऽऽ। ओइ। रात्साओऽऽऽऽवा॥ वाजायपन्थाऽऽऽऽम्॥

(दी. ६। प. १०। मा. ७) १९ (डे।१२९)

(८२।१)

अग्नेहाउ॥ ओजि। षामाऽऽभारा। औहोऽऽऽऽवा। दुम्नमस्म। भ्यामधीगा। औहोऽऽऽऽवा॥
प्रनोराये। पानीऽऽयासा। औहोऽऽऽऽवा॥ रात्सीऽऽवाजाऽऽ॥ यपोवाऽऽओऽऽऽऽवा।
थाऽऽमोऽऽहाइ॥

(दी. ७। प. १३। मा. ३) २० (जि।१३०)

(८२।१) ॥ बृहदाग्नेयम्। अग्निरनुष्टुबग्निः॥

यदिवीरोअनुष्यात्। ऐयाऽऽऽऽईऽऽऽया॥ अग्निमिधीतमौ। होऽऽहाऽऽ। होऽऽऽऽर्तियाः।
आजूऽऽह्वाद्वाऽऽऽ। व्यमाऽऽनूऽऽऽऽपाक्॥ शर्मभा। क्षाइ। तदाऽऽहाऽऽइ॥
वाऽऽओऽऽऽऽवा॥ व्याऽऽऽऽम्॥

(दी. ६। प. १२। मा. ९) २१ (खो।१३१)

(८३।१) ॥ बेपस्ते यामम्। यमोऽनुष्टुबग्निः॥

बेपास्तेऽ२३ धूमऋण्वतिहाउ॥ दिविसंछुक्रऽ३ आताताऽ३। सूरोनहीहाउ॥ द्युतातूवाऽ३म्।
कृपापवाहाउ॥ करोचाऽ२३साऽ३४३इ। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ६। प. ८। मा. ९) २२ (गो।१३२)

(८४।१) ॥ बृहदाग्नेयम्। अग्निरनुष्टुबग्निः॥

बृहिक्षैतवद्यशः। ईयइयाहाइ॥ अग्नाइमि। त्रो। नापत्याऽ२३४साइ। आओऽ३४हो।
इयाहाइ। बंवि। चा। षणेऽ२३आऽ२३४वाः। आओऽ३४हो। इयाहाइ॥ वासाऽ३उवा॥ पु।
ष्टाइम्। नापुष्याऽ२३४सी। आओऽ३४हो। इयाहा। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. १। प. २०। मा. १५) २३ (डु।१३३)

(८५।१) ॥ बृहतश्च कौमुदस्य साम। कुमुकुमुदबृहदनुष्टुबग्निः॥

प्रातरग्नाइःपूऽ६रुप्रियाः॥ विशास्तवे। ताऽ२३। अतिथाइः। वाइश्वेयास्मीऽ३न्।
अमाऽ२त्ताऽ२४याइ॥ हव्याऽ२३होइ। मर्त्ताऽ३हो॥ सइधाऽ२३ताऽ३४३इ।
ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ३। प. ११। मा. ११) २४ (टा।१३४)

(८६।१) ॥ यद्वाहिष्ठीये द्वे। द्वयोरग्निरनुष्टुबग्निः॥

यद्वाहिष्ठंतादा॥ ग्नयाइ। बृहदर्चविभावाऽ२३साउ। माहीऽ२पाइवाऽ२। बद्रयिः॥ बद्वाऽ२३जाः॥
उदीराऽ२३ताऽ३४३इ। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ३। प. ९। मा. ७) २५ (ढा१३५)

(८६।२) यद्वाहिष्ठीयोत्तरम्।

यद्वाहिष्ठंतदग्रये। यद्वाहिष्ठोवा॥ तदग्रयाइ। बृहदाऽ२३र्चा। विभावसाउ। महिषाऽ२३इवा।
बद्रयिः॥ बद्वाऽ२३जाः॥ उदीराऽ२३ताऽ३४इइ। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ५। प. ११। मा. ७) २६ (पे।१३६)

(८७।१) ॥ विशोविशीयं ऐडं वा। अग्निरनुष्टुबग्निः॥

विशोविशोहिम्स्थिवोऽ६अतिथाइम्॥ वाजयन्ताः। पूऽ३रूप्रीऽ३याम्। अग्निवोऽ२।
दूराऽ२३याम्। हिमाइ। वाऽ३चाऽ३ः। स्तूऽ२३४पेहाइ॥ ओ। हुवाइ। शूऽ२३४पा॥ हिमा।
स्याऽ३माऽ३। न्माऽ२३४भाइ। एहियाऽ६हा। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. ७। प. १७। मा. १३) २७ (छि।१३७)

(८८।१) ॥ आत्रेये द्वे। द्वयोरत्रिरनुष्टुबग्निः॥

बृहद्वयाः॥ हिभानाऽ२३वाइ। आर्चादेवा। याअग्नाऽ२३याइ। यम्मित्रन्ना। प्राशस्तायाऽ२इ॥
मर्तासोऽ३दाऽ३॥ धिरोवा। पूऽ५रोऽ६हाइ॥

(दी. ४। प. ९। मा. ६) २८ (धू।१३८)

(८८।२)

बृहद्वयोहिभानाऽ६वाइ॥ आर्चादेवा। याअग्नाऽ२३याइ। यम्मित्रन्ना। प्राशस्तायाऽ२इ॥
मर्तासोद॥ धाइरेऽ१पूरा। औहोवाहाऽ३४औहोवा। वाऽ३हाऽ२३४५ः॥

(दी. १२। प. ९। मा. ७) २९ (झे।१३९)

(८९।१) ॥ श्रोतर्वणम्। श्रुतर्वाऽनुष्टुबग्निः॥

अगन्मवृ॥ त्राऽऽहान्ताऽऽमाम्। ज्याइष्टम्। ग्निमानाऽऽवाम्। यस्माऽऽहोइ। श्रुतर्वन्नार्क्षाइ॥
बृहाऽऽहोइ॥ आनीकयाऽऽउवायेऽऽ॥ ध्याऽऽऽते॥

(दी. २। प. ९। मा. ७) ३० (द्वे।१४०)

(९०।१) ॥ इन्द्रस्य प्रियम्। इन्द्रोऽनुष्टुबग्निः॥

जातःपरेणऽऽधा। इहा। मणा। इहा। योऽऽऽनीम्। योनिमिंद्रश्चगच्छथः।
यत्सवृद्धिःसऽऽहा। इहा। भुवाः। इहा। योऽऽऽनीम्। योनिमिंद्रश्चगच्छथः॥
पितायत्कश्यऽऽपा। इहा। स्याग्नाइ। इहा। योऽऽऽनीम्। योनिमिंद्रश्चगच्छथः॥
श्रद्धामातामऽऽनूः। इहा। कवाइ। इहा। योऽऽऽनीम्। योनिमिंद्रश्चगच्छथाऽऽऽऽः॥

(दी. ११। प. २४। मा. १२) ३१ (घा।१४१)

त्रयोदश नवमः। नवमः खण्डः॥९॥ दाशतिः॥

॥ इति ग्रामे गेय-गाने द्वितीयः प्रपाठकः॥

(९१।१) ॥ बार्हस्पत्यम्। बृहस्पतिरनुष्टुबग्निः॥ विश्वे देवा वा॥

सामश्रजानवरुणाम्॥ अग्निमन्वारभामहेऽऽ। होवाऽऽहाइ। आदित्यविष्णुसूर्यम्।
होवाऽऽहाइ॥ ब्रह्मणाऽऽऽचाऽऽ। होवाऽऽहाइ॥ बृहाऽऽउवाऽऽ॥ पाऽऽऽतीम्॥

(दी. ८। प. ९। मा. ७) १ (द्वे।१४२)

(९२।१) ॥ आरूढवदाङ्गिरसं यामं वा। आरूढवदाङ्गिरानुष्टुबग्निः॥

आरोऽ३हान्। आरोऽ३हान्। आरोऽ३हान्। इतएतउऽ३दारूऽ१हाऽ२न्॥

दिवःपृष्ठानीऽ३यारूऽहाऽ२न्॥ प्रभूर्जयोयऽ३थापाऽ१थाऽ२॥ उद्यामंगिरऽ३सोयाऽ१यूऽ२ः।

आरोऽ३हान्। आरोऽ३हान्। आऽ२३। रोऽ२। हाऽ२३४। औहोवा॥ ऊऽ२३४पा॥

(दी. १२। प. १४। मा. १०) २ (झौ।१४३)

(१३।१) ॥ आसिते द्वे। द्वयोरसितोऽनुष्टुबग्निः॥

रायेअग्नेमहाइ॥ बा॥ दानायसमिधीमाऽ२३ही। आइडीऽ२ष्वाहीऽ२। महेवृषन्।

द्यावाऽ२होत्राऽ२॥ यपोऽवाऽ३ओऽ२३४वा। थाऽ५इवोऽ६हाइ॥

(दी. ७। प. ८। मा. ४) ३ (जे।१४४)

(१३।२)

रायायाऽ२३ग्नेमहेबाहाउ॥ दानायसमिधीमाऽ२३हाइ। आइडाष्वाऽ३हाऽ३इ।

माहेवाऽ२३४र्षान्॥ द्यावाहोऽ३त्राऽ३॥ यपोऽ२३४वा। थाऽ५इवोऽ६हाइ॥

(दी. ८। प. ७। मा. ८) ४ (ठै।१४५)

(१४।१) ॥ बाष्ट्रीसाम। बष्टानुष्टुबग्निः॥

दधन्वेवाऽ५यदीमनू॥ वोचद्ब्रह्मेतिवेरुतत्। पारिविश्वाऽ२। निकाव्या॥ नाइमिश्चक्रौवा॥

ईऽ२३४वा। भुवात्। औऽ२३होवा। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. ६। प. १०। मा. ४) ५ (डौ।१४६)

(१५।१) ॥ राक्षोघ्नम्। अगस्त्योऽनुष्टुबग्निः॥

३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००

प्रत्यग्ने। होइ। हरसाहराऽ६ए॥ शृणाहिवाऽ२इ। श्वताऽ३४५। पाऽ३४री।

यातुधानस्यरक्षसोऽ३॥ बाऽ२३लाम्॥ नियुङ्गवोऽ२३४वा॥ रीऽ२३४याम्

(दी. ६। प. १०। मा. ६) ६ (डू।१४७)

(९६।१) ॥ मानवम्। मनुरनुष्टुबग्निः विश्वेदेवा वा॥

ब्रमग्ने। ब्रमग्नाइ॥ वसूश्रिहा। रुद्राश्आऽ२३दी। तियाश्उता। यजासूऽ२३वा। ध्वरंजनम्॥

मनुजाऽ२३ताम्॥ घृतप्लुषम्। इडाऽ२३भाऽ३४५। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ५। प. १२। मा. ७) ७ (फे।१४८)

सप्त दशमः। दशमः खण्डः ॥१०॥ दशतिः।

(९७।१) ॥ (द्यौ तानि पञ्च,) तौदे द्वे। तोद उष्णिगग्निः॥

पुरू॥ त्वादाशिवाङ्वोचायेऽ३। आरीराग्नाइ। तावस्विदा। तोदस्येवशरणाआऽ२३होइ॥

महाऽ२३होयेऽ३॥ स्यो। याऽ२३४औहोवा॥ ईऽ२३४५॥

(दी. ९। प. ९। मा. ४) ८ (ध्री।१४९)

(९७।२)

पुरुत्वादाशिवाङ्वो। चे॥ आरीराआऽ२३४ग्नाइ। तावस्त्वाऽ२३४इदा॥ तोदस्येवशर।

णयोऽ२३४हाइ॥ माऽ३हाऽ३। हिंमायेऽ३। स्यो। याऽ२३४औहोवा॥ ईऽ२३४५॥

(दी. ८। प. ११। मा. ४) ९ (ट्री।१५०)

(९७।३) ॥ दीर्घतमसानि त्रीणि। त्रयाणां दीर्घतमा उष्णिगग्निः॥

५ ४ ऋ र ऋ ऋ
पुरुत्वादाशिवाङ्गवो। चे। चे॥ अराइराऽ२३४ग्राइ। तावस्वाऽ२३४इदा॥ तोदास्याऽ२३४इवा॥
२ ३ ५ २ ४ २ ४
शाराणाऽ२३४या। माऽ३हाऽ५स्याऽ६५६॥ एऽ३१॥

(दी. ५। प. ९। मा. ४) १० (भी। १५१)

(९७।४)

५ २ ऋ ५ ऋ र ५ २ ? अ ३ ५ ३ ५
पुरुत्वाऽ३दाशिवाङ्गवोचे॥ अरिरा। ग्राइ। त्वाऽ२स्वाऽ२३४इदा॥ तोऽ२३४दा।
३ ५ २ ३ ५ २ ४ ॥
स्याऽ२३४इवा॥ शाराणाऽ२३४या। माऽ३हाऽ५स्याऽ६५६॥

(दी. ३। प. ८। मा. ३) ११ (डी। १५२)

(९७।५)

२ ? ऋ र र ५ २ ३ ३ ३ ५ २ ? अ ? २ १ २
पुरुत्वाऽ२३दाशिवाङ्गवोचेहाउ॥ हा। औहोऽ३हा। ओऽ२३४वा। अरिरग्नेतवस्त्रिदा॥ हा।
अ ३ ३ ५ अ ? अ ? र २ ३ ३ ३ ५ २
औहोऽ३हा। ओऽ२३४वा। तोदस्येवशरणआ॥ हा। औहोऽ३हा। ओऽ२३४वा॥ एऽ३।
२ ? ३ ? ? ?
महस्याऽ२३४५॥

(दी. १२। प. १४। मा. २) १२ (झा। १५३)

(९८।१)

॥प्रहितौ द्वौ। द्वयोः श्यावाश्च उष्णिगग्निः॥

५ र र २ ? २ ३ २ ३ २ ३ ?
प्रहोत्रेपू॥ विर्यं वचो। अग्नयाऽ२३इभा। रताबृहत्। विपांज्योऽ२३ती॥ पिबायेऽ३।
१ ३ ३ ५ र १ ३ १ ? ?
भ्राऽ२ताऽ२३४औहोवा॥ नवेऽ२धसेऽ२३४५॥

(दी. ७। प. ८। मा. ३) १३ (झि। १५४)

(९८।२)

प्रहोत्राऽऽइपूर्वियंवचाः॥ अग्नयेऽऽभरताऽऽवृ॥ हाऽऽऽत् विपांज्योताइ॥ षीऽऽऽऽबि॥
भ्रताऽऽइ॥ नाऽऽऽवेऽऽ॥ धाऽऽऽऽसोऽऽहाइ॥

(दी. ६। प. ८। मा. ६) १४ (गू।१५५)

(११११) ॥ श्रुध्ये द्वे। द्वयोः प्रजापतिरुष्णिगग्निः॥

अग्नेवाजाऽऽस्य। गोमतोवा॥ ईशानःसा। हसोयहो॥ अस्माइदेहिजातवेदोम। हाऽऽऽइ॥
श्रवाउवा। श्रुधियाऽऽ। एऽऽऽहियाऽऽऽऽ। ओऽऽऽऽऽइ॥ डा॥

(दी. ११। प. ११। मा. ४) १५ (की।१५६)

(१११२)

अग्नेवाजस्यगोहिंस्थिमतोहोहाइ॥ ईशानःसा। हासोयाऽऽऽऽहो। आस्मेऽऽदाइहीऽऽ। जात।
वेदाऽऽऽ॥ माऽऽऽहीऽऽ॥ आऽऽऽऽवोऽऽहाइ॥

(दी. ८। प. ८। मा. ५) १६ (डु।१५७)

(१००११) ॥ सदः। प्रजापतिरुष्णिगग्निः॥

अग्नेयजिष्ठोअध्वराऽऽए॥ देवान्देवयऽऽताइयाऽऽजाऽऽ। हुवाऽऽ। होऽऽवा॥ होतामंद्रः।
विराजाऽऽसीऽऽ॥ हुवाऽऽ। होऽऽवा। अतिस्राऽऽऽइधाऽऽऽऽ। ओऽऽऽऽऽइ॥ डा॥

(दी. ६। प. ११। मा. ७) १७ (के।१५८)

(१००१२) ॥ हविर्धानि द्वे। द्वयोः प्रजापत्युष्णिगग्निः॥

अग्ने। इयाऽऽऽऽइऽऽऽया॥ यजिष्ठोअध्वराइ। देवान्देवयतेऽऽ। होहोऽऽ। याजाऽऽ।
होताऽऽमान्द्रोऽऽ॥ विराजाऽऽसी॥ आऽऽ। तियाऽऽऽऽओहोवा॥ स्त्रीऽऽऽऽधाऽऽ॥

(दी. ७। प. ११। मा. ५) १८ (चु।१५९)

(१००।३)

अग्रइया। ओवा॥ यजिष्ठोध्वराइ। देवान्दाऽ२३इवा। यातेऽश्याजाऽ२। होताऽ३उवा॥
मन्द्रोविऽ३राऽ२३। जाऽ२साऽ२३४ओहोवा॥ अतिस्त्रिधाऽ२३४५इः॥

(दी. ६। प. ९। मा. ७) १९ (घे।१६०)

(१०१।१) ॥आतिथ्यम्। ऋष्टोष्णिगग्निः अदितिः॥

जज्ञानःसा॥ तमातृभाइ। मेधामाऽ२३४शा। सतश्रायाइ। अयाऽ२०धूऽ२३४वाः।
रयाऽ२३इणाम्॥ चिकायेऽ३॥ ताऽ२दा२३४ओहोवा॥ ऊऽ२४पा॥

(दी. ४। प. ९। मा. ७) २० (ध्वे।१६१)

(१०२।१) ॥आदित्यम्। अदितिरुष्णिगग्निः अदितिर्वा॥

उतस्याऽ३नोदिवामतीः॥ आदितिरू। तियागाऽ१माऽ२त्॥ साशंताऽ३ताऽ३॥ मा। यः।
कराओऽ२३४वा। अपाऽ५स्त्रिधाः। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. ४। प. १०। मा. ६) २१ (नू।१६२)

(१०३।१) ॥ वार्कजम्भम्। वृकजम्भ उष्णिगग्निः॥

ईडाप्वाऽ२३हिप्रतीवियाम्॥ याजस्वजा। तवेदसाऽ२३म्॥ चरिष्णुधू॥ माऽ२३४म।
गृभाऽ३इइ। ताऽ२शोऽ२३४ओहोवा॥ चीऽ२३४षाम्॥

(दी. ५। प. ८। मा. ६) २२ (बू।१६३)

(१०४।१) ॥ राक्षोघ्नम्। अगस्त्य उष्णिगग्निः॥

नतोवा। स्याऽ२३४मा। ययाचाऽ२३ना। रिपुरीशीतमाऽ३१उवाऽ२३। तीऽ२३४याः।

योअग्रयेऽ२ददा। शहव्यदोऽ२३४वा॥ ताऽ२३४ये॥

(दी. ६। प. ८। मा. ३) २० (गि।१६४)

(१०५।१) ॥ सोमक्रतवं बृहदाग्नेयीयं वा। सोमक्रतुरुष्णिगग्निः॥

अपत्यं वृजिनम्। रिपूम्। स्तेनाऽ२३४५म्॥ अग्नाइ। दुराधाऽ२३याऽ३४म्। दविष्ठमस्यसत्।

पताऽ३इ॥ काऽ२३४धीऽ३। सूऽ३४५गोऽ६हाइ॥

(द्वै।१३५) (दी. २। प. १। मा. ८) २४

(१०६।१) ॥ राक्षोघ्नम्। आगस्त्य उष्णिगग्निः॥

हाउश्रुष्टग्नेनवस्यमेहाउ॥ स्तोमास्यवाइ। रविशपतायेऽ३४। ऐहीहाउहोवा। निमायिनाः।

तपसाराऽ२३४। ऐहीहाउहोवा॥ क्षासाऽ२३४ः। ऐहीहाउहोवा॥ दहएऽ३४। हियाऽ६हा।

होऽ५इ॥ डा॥

(दी. १५। प. १३। मा. १०) २५ (बौ।१६६)

अष्टादश एकादशः। एकादशः खण्डः॥११॥ दशतिः॥

(१०७।१) ॥ प्रमं हिष्ठीये द्वे॥ द्वयोरिन्द्रः ककुबग्निः॥

प्रमंहाऽ३इष्टायगायता॥ ऋतात्रेऽ२। बृहतेशूक्राऽ३शोऽ३। चाऽ२३४इषाइ॥ उपाओऽ३हो॥

स्तोतासोऽ३आऽ३। ग्राऽ३४५योऽ६हाइ॥

(दी. ३। प. ७। मा. ६) २६ (ठू।१६७)

(१०७।२)

प्रम॑हि॒ष्ठा॒य॒। गा॑ऽ॒प्र॒य॒ता॑॥ ऋ॒ता॑ऽ॒२१॑। व्रै॒ऽ॒२२॑। बृ॒हा॒ता॑ऽ॒१३॑शूऽ॒२३॑। ऋ॒। शो॒चा॑ऽ॒२३३॑इ॒षा॑इ॒॥

उ॒पा॑। स्तु॒तो॑ऽ॒२२॑॥ हु॒वा॑इ॒। हो॑ऽ॒३३॑वाऽ॒३३॑। स॒ओ॑ऽ॒२३३॑४वा॑॥ ग्रा॑ऽ॒प्र॒यो॑ऽ॒६॥५॑

(दी. २। प. १३। मा. ६) २७ (जू।१६८)

(१०७।३) ॥ गायत्रीसामासितम्। आसितः ककुबग्निः॥

प्र॒मा॑हि॒ष्ठा॒य॒गा॑। ई॒या॑ऽ॒३४३३॑इ॒ऽ॒३४॑या॑। य॒त॑ऋ॒ता॒न्ने॒बृ॒ह॒ते॒शु॒क्र॒शो॑ऽ॒२२॑। हो॑ऽ॒२२॑। हु॒वा॑ऽ॒२२॑इ॒।

चा॒इ॒षा॑ऽ॒२२॑इ॒॥ उ॒पा॑ऽ॒३३॑हो॒इ॒। स्तु॒ता॑ऽ॒३३॑हो॒॥ सौ॒अ॒ग्रा॑ऽ॒२३॑या॑ऽ॒३४३॑इ॒। ओ॑ऽ॒२३३॑४५इ॒॥ डा॑॥

(दी. ६। प. ११। मा. ९) २८ (को।१६९)

(१०७।४) ॥ प्रमहिष्ठीयम्। इन्द्रः ककुबग्निः॥

प्र॒मा॑हि॒ष्ठा॒य॒गा॑य॒ता॑। प्र॒मा॑हि॒ष्ठो॒वा॑॥ या॒गा॑य॒ता॑। ऋ॒ता॑ऽ॒२३३॑वाऽ॒३४३॑इ॒। बृ॒ह॒ते॒शु॒क्र॒शो॑॥

चा॒ऽ॒३३॑इ॒षा॑इ॒॥ उ॒पा॑हो॒वा॑ऽ॒३३॑इ॒हा॑इ॒। स्तु॒तो॑हो॒वा॑ऽ॒३३॑इ॒हा॑ऽ॒३३॑॥ स॒ओ॑ऽ॒२३३॑४वा॑। ग्रा॑ऽ॒प्र॒यो॑ऽ॒६॥५॑

(दी. ९। प. १०। मा. ६) २९ (नू।१७०)

(१०८।१) ॥ वाजभृद्वाजाभृद्वाजाभर्मीयं वा। भरद्वाजज् ककुबग्निः॥

प्रा॒सो॑ऽ॒३३॑इ॒हा॑इ॒। आ॒ग्ने॑ऽ॒३३॑इ॒हा॑इ॒॥ त॒वा॑ऽ॒३३॑१उ॒वा॑ऽ॒२३॑। ती॑ऽ॒२३३॑४भीः॑।

सु॒वी॒रा॒भि॒स्तर॑ति॒वा॒जा॒क॒र्म॒भिः॑॥ या॒स्या॑ऽ॒३३॑इ॒हा॑इ॒। त्वा॑ऽ॒सा॑ऽ॒२३॑॥ ख्य॒मो॒वा॑। वा॑ऽ॒प्र॒थो॑ऽ॒६॥५॑

(दी. ३। प. ९। मा. ८) ३० (ढै।१७१)

(१०९।१) ॥ सौभराणि त्रीणि। त्रयाणां सुभरिः ककुबग्निः॥

तं॒गू॑ऽ॒३३॑र्धा॒ऽ॒३३॑या॒सु॒व॒र्ण॒रो॒वा॑॥ दे॒वा॒सो॑दे॒व॒म॒रा॑ऽ॒२२॑ता॒इ॒द॒धा॑ऽ॒२३॑। हो॑। न्वा॑ऽ॒३३॑४इ॒रा॑इ॒॥ दे॒व॒त्रा॑ह॒।

व्य॒मू॑ऽ॒३३॑इ॒हा॑ऽ॒३३॑॥ हा॑ऽ॒३३॑इ॒षा॑ऽ॒३३॑४ओ॒हो॒वा॑॥ ऊ॑ऽ॒३३॑४५॥

(दी. ८। प. ८। मा. ५) ३१ (डु।१७२)

(१०९।२)

तंगूर्धयासुवर्णाराम्॥ देवासोदाइ। वमरताऽ२३इम्। दधन्विराउ। वाऽ३। देऽ२३४वा॥
त्राहाऽ२३॥ व्यमोवा। हाऽ५इपोऽ६हाइ॥

(दी. ६। प. ९। मा. ७) ३२ (घे।१७३)

(१०९।३)

तंगूर्धयास्त्रोहोर्णाराम्॥ देवाऽ२सोऽ२३४दे। वसरताऽ२इम्। दाऽ२३४धा। न्वाऽ२३४इराइ।
हाहोऽ२३४हा॥ देवाऽ२त्राऽ२३४हा॥ व्यमूऽ३हाऽ५इ॥ पाऽ२३४५इ॥

(दी. ५। प. ९। मा. ७) ३३ (भे।१७४)

(११०।१) ॥पक्थस्य सौभरस्य सामनी द्वे। द्वयोः पक्थःककुबग्निः॥

मा। नाः॥ हणीऽ३थाअतिथीऽ३म्। वासूराऽ२३४ग्नीः॥ पुरोहोवाऽ३हाइ।
प्रशोहोवाऽ३हाऽ३॥ स्तओऽ२३४वा। आऽ५इपोऽ६हाइ॥

(दी. ५। प. ८। मा. ८) ३४ (वै।१७५)

(११०।२)

मानोहाउ। हाऽ२३४। णीथाअतिथिम्। वासूराऽ२३४ग्नाइः॥ पुरोहोइ। प्रशोहो॥
स्ताऽ२३४एषाः। एहियाऽ६हा। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. ७। प. १०। मा. ९) ३५ (जो।१७६)

(१११।१) ॥ देवानीकं सफम्। देवानीकः ककुबग्निः॥

४ ३ ५ २ १ ३ ४ र ५ ५ ३ र १ २ १ २ १ २ ३ ३ ४ ५
भद्रोऽऽनः। होइ। अग्निराहुताऽऽए॥ भद्राराताइः। सुभगभाऽऽ॥ द्रोऽऽध्वाऽऽ३४राः॥

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००
भद्राऊऽऽ३ताऽऽ३॥ प्राऽऽ३शाऽऽ३। स्ताऽऽ३४५योऽऽ६हाइ॥

(धै।१७७) (दी. ४। प. ९। मा. ८) ३६

(११२।१) ॥ गौतमं साध्यं वा। साधिः ककुबग्निः॥

३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००
याऽऽ५जि। षंबाऽऽ३वाऽऽ३वृमहाइ॥ देवदेवत्राहोताऽऽ३राम्। आमर्तियम्॥ आस्ययाज्ञाऽऽ३।
स्याऽऽ३सूऽऽ३॥ ऋऽऽ३४५तोऽऽ६हाइ॥

(दी. ४। प. ७। मा. ४) ३७ (थी।१७८)

(११३।१) ॥ संवर्गः। जमदग्न्युष्णिगग्निः॥

४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००
तदग्नेबूऽऽ५मम्। आभरोवा॥ यत्सासाऽऽ३हा। सदाऽऽ३नाइ। कंचिदत्राऽऽ३इणाम्॥
मान्युंजनस्यदूऽऽ३हो॥ ढाऽऽ३४याम्। एहियाऽऽ६हा। होऽऽ५इ॥ डा॥

(दी. ४। प. १०। मा. ६) ३८ (नू।१७९)

(११४।१) ॥ राक्षोघ्नम्। अगस्त्योष्णिगग्निः॥

२ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००
यद्वाऊऽऽ३विशपतिःशिताः॥ सुप्रीतोमनुषोविशे॥ विश्वादाऽऽ३ग्नीः॥ प्रतिरक्षा। सिसेधता।
औऽऽ३होवा। होऽऽ५इ॥ डा॥

(दी. ७। प. ८। मा. ५) ३९ (जु।१८०)

चतुर्दशद्वादशः, द्वादशः खण्डः॥१२॥ दशतिः॥

॥ इति ग्रामे गेय-गाने तृतीयस्यार्धः प्रपाठकः॥ इति प्रकृतिगाने आग्नेयं पर्व समाप्तम्॥

॥ इति प्रथमोऽध्यायः॥१॥

अथेन्द्रं पर्व॥

(११५।१) ॥ मार्गीयवम्। मृगयुर्गायत्रीन्द्रः॥

तद्वोहोवा॥ गायाऽ२। सुताइसाऽ२३४चा। पुरुहूता। यसात्वाऽ१नाऽ२इ॥ शंयत्। हा।
 औऽ३होइ। गाऽ२३४वाइ॥ नाऽ२शाऽ२३४औहोवा॥ एऽ३। किनेऽ२३४५॥

(दी. ५। प. १२। मा. ६) १ (फू।१८१)

(११५।२) ॥ रौद्रे द्वे। द्वयोरुद्रो गायत्रीन्द्रः॥

तद्वोगाया॥ सुताइसचाऽ३। पूरुऽ२३हूताऽ३४। हाहोऽ३। यासत्वाऽ२३४नाइ॥
 शंयद्वाऽ२३वे॥ नशोऽ२। होऽ२। हुवोऽ२३४। वा। काऽ५इन्द्रोऽ६हाइ॥

(दी. ४। प. ११। मा. ४) २ (ती।१८२)

(११५।३)

तद्वोगायसुतेसचाऽ६ए॥ पुरुहूतायस्वने। पुरुहूता। यासत्वाऽ२३नाऽ३४इ॥ शंयत्।
 गौवाओऽ२३४वा॥ नाऽ२३शाऽ३। काऽ३४इन्द्रोऽ६हाइ॥

(दी. ८। प. ८। मा. ६) ३ (डू।१८३)

(११४।४) ॥ ईनिधनं मार्गीयवं। मार्गीयवो (मृगयुः) गायत्रीन्द्रः॥

तद्वोगायसुतेसचाऽ६ए॥ पुरुहूतायसबनाइ॥ शंयद्वाऽ२३वे॥ ऐऽ२होऽ१आऽ२३इही।
 नशाऽ२३। काऽ२इन्द्राऽ२३४औहोवा॥ ईऽ२३४५॥

(दी. ७। प. ७। मा. ६) ४ (छू।१८४)

(११६।१) ॥ आश्वम्। आश्वो गायत्रीन्द्रः।

यस्तेनूनाऽ५५शतक्रताउ॥ इन्द्रद्युम्नितमोमाऽ२दाः॥ तेननूनाऽ२३०मा॥ दाइमाऽ३२उवाऽ३॥
 देऽ२३४५ः॥

(दी. ५। प. ५। मा. ५) ५ (मु।१८५)

(११७।१) ॥ ऐटते द्वे। द्वयोरिटन्वान् गायत्रीन्द्रः॥

गावः। एगावाः॥ उपवा। दाऽ३। वाऽ२दाऽ२३४औहोवा। वाऽ२३४टे॥ महीयाऽ२३४ज्ञा॥
 स्यराऽ३। स्याऽ२राऽ२३४औहोवा। प्मूऽ२३४दा॥ उभाकाऽ२३४र्णा॥ हिराऽ३।
 हाऽ२इराऽ२३४औहोवा॥ ण्याऽ२३४या॥

(दी. ७। प. १४। मा. ६) ६ (झू।१८६)

(११७।२)

ओइगाऽ२३४वाः॥ उपवऽ३दा। वाटाओऽ२३४वा। महीयज्ञस्यरप्सुदाऽ३॥ ओऊऽ२३४भा॥
 कार्णाओऽ२३४वा॥ हिरण्ययाऽ२३४५॥

(दी. १। प. ७। मा. ५) ७ (खु।१८७)

(११८।१) ॥ श्रौतकक्षे द्वे। द्वयोश्चुतकक्षो गायत्रीन्द्रः॥

अराऽ३४म्। अश्वाया। गायाऽ६ता॥ श्रुतक। क्षारा०गावाइ। आऽ२३४राम्। हाऽ३हाइ॥ इ।
 द्रास्याऽ२३४धा॥ हिंमायेऽ३। म्मो। याऽ२३४औहोवा॥ ईऽ२३४ती॥

(दी. ५। प. १३। मा. ५) ८ (बु।१८८)

(११८।२)

४५४ ऋ र र ४५ ? र२ ?२ ? २ २
अरमश्चायगायता॥ रमश्चोवा॥ यागायता श्रुतका क्षाऽ२३। हाऽ३हाऽ३इ।

? ? ३ ५ ? २ २ २ ? अ ? २ ४ ५ ४
आराऽ२०गाऽ२३४वाइ॥ आरमिन्द्राऽ३। हाऽ३हा॥ स्याधाम्ना। औऽ३होवा। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. ५। प. १३। मा. ३) ९ (बि।१८९)

(११९।१) ॥ तन्वस्य साम। तन्वः पार्थोवा गायत्रीन्द्रः॥

२ ? ४ ५ ? र२ र ? २ - ? २ २ ? ४ ५
तमिन्द्राऽ२३०वाजयामसी॥ माहेवृत्रा। यहान्ताऽ१वेऽ२॥ सर्वाऽ१वाऽ२३॥ षभोऽ२३४वा।
४
भूऽ५वोऽ६हाइ॥

(दी. ४। प. ६। मा. १) १० (ता।१९०)

(११९।२) ॥ दावसुनिधनम्। दावसुर्गायत्रीन्द्रः॥

२ ? ४ र ५ ? र२ र ? २ ? २ २
तमिन्द्राऽ२३०वाजयामसिहाउ॥ माहेवृत्रा। यहान्ताऽ१वेऽ२३। होवाऽ३हाइ॥
? २ ? २ २ ? ? ३ ४ र २
सर्वाऽ१वाऽ२३। होवाऽ३हा॥ षभोऽ२३। भूऽ२वाऽ२३४औहोवा॥ एऽ३।
अ ३ ? ? ?
दावसूऽ२३४५॥

(दी. ७। प. १०। मा. ३) ११ (जि।१९१)

(११९।३) ॥ निवेष्टवः। वसिष्ठो गायत्रीन्द्रः॥

५ र र ५ २ २ ४ ? अ ? - ? - न २ ? २
तमिन्द्रवाजयामसीऽ६ए॥ महाऽ३हाइ। वृत्राऽ३याहन्तवेऽ२। ओऽ२। ईऽ२ऽ३या। ओमोवा॥
र ? ? ? न २ ? २ ? २ ३ ४ र
सहेवार्पाऽ२। ओऽ२। ईऽ२ऽ३या। ओमोवा॥ वृष। भोऽ२। याऽ२३४औहोवा॥
३ ५
भूऽ२३४वात्॥

(दी. ६। प. १४। मा. ४) १२ (घी।१९२)

(११९।४) ॥ इडानां संक्षारम्। इडा गायत्रीन्द्रः॥

ओ॒हो॒इ॒हु॒वाऽ३॒हो॒इ॒। त॒मि॒न्द्रं॒वाऽ३॒जाऽ३॒या॒म॒सि॑॥ ओ॒हो॒इ॒हु॒वाऽ३॒हो॒इ॒।

म॒हे॒वृ॒ताऽ३॒याऽ३॒ह॒न्त॒वे॑॥ ओ॒हो॒इ॒हु॒वाऽ३॒हो॒इ॒। स॒वा॒र्षाऽ२३४॒वृ॑॥ ष॒भो॒भु॒वत्॑।

इ॒डाऽ२३॒भाऽ३॑। ए॒ही॒डा। हो॑ऽ५इ॒॥ डा॑॥

(दी. १०। प. ११। मा. ८) १३ (पै।१९३)

(१२०।१) ॥ शाय्यातानि त्रीणि। शय्यातिर्गायत्रीन्द्रः॥

हा॒उ॒ब॒मि॒न्द्रा॑॥ ब॒ला॒द॒धि॑। हाऽ३उहाउ। स॒ह॒सो॒जा। ताओऽ१जसाऽ३ः। हाऽ३उहाउ॥

ब॒श्म॒नृ॒षाऽ३॒न्। हाऽ२उहाउ॥ वृषा॒येऽ३॒त्। आऽ२साऽ२३४ओ॒हो॒वा॑॥ वृ॒धेऽ१॥

(दी. ५। प. ११। मा. १२) १४ (पा।१९४)

(१२०।२)

ब॒मि॒न्द्र॒ब॒ला॒द॒धि॑ऽ६ए॑॥ स॒ह॒सो॒जा। ताओऽ१जसः॥ इ॒याऽ३॒हो॒इ॒। इ॒या॒योऽ२३४॒वा॑॥

ब॒श्म॒नृ॒षन्। इ॒याऽ३॒हो॒इ॒। इ॒या॒योऽ२३४॒वा॑॥ वृषा॒येऽ३॒त्। आऽ२साऽ२३४ओ॒हो॒वा॑॥

म॒हेऽ१॥

(दी. ५। प. ११। मा. ८) १४ (पै।१९५)

(१२०।३)

ब॒मि॒न्द्र॒ब॒ला॒द॒धि॑स॒ह॒साः॑॥ जा॒ताऽ२ः॑। ओ॒ज॒साऽ२३४ः॑। इ॒हो॒इ॒हा॑॥ ब॒श्म॒नृ॒षाऽ३४॒न्।

इ॒हो॒इ॒हा॑॥ वृषा॒येऽ३॒त्। आऽ२साऽ२३४ओ॒हो॒वा॑॥ ई॒ऽ२३४॒हा॑॥

(दी. ६। प. ९। मा. ८) १६ (पै।१९६)

(१२१।१) ॥ इन्द्राण्याः सामा इन्द्राणी गायत्रीन्द्रः॥

५ २ १ २ १ विर २ १ २ ३ २ ३ २
इदंवसाउ॥ सुतमाऽ२३०धाः। पिबाऽ२सुपू। णमुदाऽ२३राऽ३४म्॥ अनाऽ३४भयाऽ३इन्॥
४ ५ ४ ५
ररोवा। माऽ५तोऽ६हाइ॥

(दी. २। प. ७। मा. ६) २१ (छू।२०१)

(१२४।२)

५ ४ २ अ ४ ५ २ अ २ १ ३ ५ १ २
इदाऽ३०वसोसुतमन्धाः॥ पिबासूऽ२३पूऽ३। णमूऽ२दाऽ२३४राम्॥ आऽ२३ना॥
— १ अ २ अ ३ १ १ १
भाऽ२याइन्। रराऽ२३। हाउवाऽ३। मातेऽ२३४५॥

(दी. ३। प. ८। मा. ३) २२ (डु।२०२)

(१२४।३)

५ र ५ २ र र १ अ अ २ १ र र अ अ २
इदंवसोसुतमन्धाऽ६ए॥ पिबासुपूऽ३र्णामुदरौ। होऽ३वा। पिबासुपूर्णामुदरौ। होऽ३वा॥
१ २ २ १ अ १ २ ४ ५ ४
आनाभाऽ३यीन्॥ ररिमाता। औऽ३होवा। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. ८। प. १०। मा. ३) २३ (णि।२०३)

त्रयोविंशतिः प्रथमः खण्डः॥१॥ दशतिः॥३॥

(१२५।१) ॥ ऐडसौपर्णं शरुप्रवेतसं वा। त्रयाणां सुपर्णो गायत्रीन्द्रः॥

५ र ४ ५ १ अ ३ ५ २ १ २ १ अ ३ ५ १
उद्धेदभ्योवा॥ श्रुतामाऽ२३४घाम्। वृषाभन्ना। रियाऽ२पाऽ२३४साम्॥ आऽ२स्ता।
२ १ अ १ २ ४ ५ ४
राऽ२३मे॥ षाड्सूरिया। औऽ३होवा। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. २। प. १०। मा. ४) २४ (जी।२०४)

(१२५।२) ॥ स्वारसौपर्णं शरुप्रवेतसं वा॥

उद्धेदभिश्चुतामाऽदधाम्॥ वृषभन्नर्या॥ हिम् पाऽऽ२३४साम्॥ आस्ताऽऽउवा॥ रामाह्॥

पिसूऽऽ२३४वा॥ राऽऽ५योऽदहाह्॥

(दी. ४। प. ८। मा. ६) २५ (दू।२०५)

(१२५।३) ॥ विलम्बसौपर्णं शरुप्रवेतसं वा॥

उद्धेदभिश्चुतामघम्॥ ईयद्वयाहाह्॥ वृषभन्नर्या॥ हाऽऽहाऽऽह्॥ पाऽऽ२३४साम्॥

आस्ताऽऽउवाऽऽ३॥ राऽऽ२माऽऽ२३४औहोवा॥ पिसूरियाऽऽ२३४५॥

(दी. ६। प. ८। मा. ७) २६ (गो।२०६)

(१२६।१) ॥ शाकलम्। शकलो गायत्री, इन्द्रसूर्यो॥

यदद्यकाऽऽ५चवृत्रहान्॥ उदगाभिःसूराऽऽ२३या॥ सार्वाऽऽ२म्॥ तादिन्द्रतायेऽऽ३। हिम्॥

वाऽऽ३४५शोऽदहाह्॥

(दी. २। प. ६। मा. ५) २७ (चु।२०७)

(१२७।१) ॥ आभरद्वसवे द्वे। द्वयोराभरद्वसुर्गायत्रीन्द्रः॥

यआहाउ॥ आनायाऽऽ२त्। आनायाऽऽ३त्। पाराऽऽ२वाऽऽ२३४ताः। सुनीतीतूऽऽ२।

सुनीतीतूऽऽ३। र्वाश्याऽऽ२३४दूम्॥ इन्द्रस्सानाऽऽ२ः। इन्द्रस्सानाऽऽ३ः॥

यूऽऽ२वाऽऽ२३४औहोवा॥ साऽऽ२३४खा॥

(दी. ४। प. ११। मा. ९) २८ (तो।२०८)

(१२७।२)

^४ र ^५ ५ ^४ ५ ^४ ५ ^१ र ^२ २ ^३ ३ ^४ ४ ^१ र ^२ २ ^३ ३
 यआनयत्। परावाऽदताः॥ सुनीतीतुर्वशाऽ१०याऽ३दूम्। इन्द्रस्सनोयुवाऽ१साऽ३खा।
^३ ३ ^५ ५ ^२ २ ^१ १ ^२ २ ^५ ५ ^१ १ ^२ २ ^३ ३ ^५ ५ ^१ १
 इन्द्रोऽ२३४ग्राह्॥ इन्द्राओऽ३होऽ२३४। ग्राह्॥ आइन्द्रोआ ग्राऽ२। याऽ२३४ओहोवा॥
^३ ३ ^५ ५
 ईऽ२३४०द्राः॥

(दी. ८। प. ११। मा. ११) २९ (टा२०९)

(१२८।१) ॥ तान्वे द्वे। द्वयोस्तन्वो गायत्रीन्द्रः॥

^५ ५ ^४ ४ ^५ ५ ^१ १ ^२ २ ^३ ३ ^५ ५ ^२ २ ^३ ३ ^५ ५ ^२ २ ^३ ३
 मानइन्द्राभियादाइशाः॥ सूरुओअक्तु। पुवायाऽ२३माऽ३४त्॥ तुवाऽ३४युजा॥
^१ १ ^२ २ ^३ ३
 वनाइमाऽ२३ताऽ३४३त्। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ५। प. ७। मा. ८) ३० (फै२१०)

(१२८।२)

^५ ५ ^२ २ ^५ ५ ^१ १ ^२ २ ^३ ३ ^५ ५ ^२ २ ^३ ३ ^५ ५ ^१ १ ^२ २ ^३ ३
 मानाऽ३आऽ३इन्द्राभियादिशाः॥ सूरुओआऽ२३४क्तु। पूआयाऽ२३४मात्॥ बायुजावनौऽ३हो॥
^१ १ ^२ २ ^३ ३
 मतौऽ२। हुवाइ। ओऽ३होऽ२३४५वाऽ६५६॥ एऽ३। ययूऽ२३४५ः॥

(दी. ५। प. ९। मा. ८) ३१ (भै२११)

॥ इति ग्रामे गेय-गाने तृतीयः प्रपाठकः॥

(१२९।१) ॥ रोहितकूलीये द्वे। द्वयोरिन्द्रो विश्वामित्रो वा गायत्रीन्द्रः॥

ए॒न्द्र॒सा॑॥ न॒सि॒र॒यि॒म्। स॒जि॒त्वा॒न॒स॒दा॒सा॑ऽ॒३॒हाम्॑॥ वा॑ऽ॒३॒र्षी॑॥ ष्ठा॒मू॒त॒या॑ऽ॒३॒१॒उ॒वा॒ये॑ऽ॒३॒।
भा॑ऽ॒३॒४॒रा॑॥

(दी. ४। प. ६। मा. ३) १ (ति।२१२)

(१२९।२)

ए॒न्द्र॒सा॒न॒सा॒इ॒म्॥ र॒या॑ऽ॒३॒इ॒म्। स॒जि॒त्वा॒न॒स॒दा॒सा॑ऽ॒३॒हाम्॑॥ वा॒र्षी॑ऽ॒३॒ष्ठा॒मू॑ऽ॒३॒३॑॥
त॒यो॑ऽ॒३॒४॒वा॑। भा॑ऽ॒३॒४॒हा॒इ॑॥

(दी. ४। प. ६। मा. ६) २ (तू।२१३)

(१४०।१) ॥ इन्द्राण्याः सामनी द्वे। द्वयोरिन्द्राणी गायत्रीन्द्रः॥

इ॒न्द्रा॒म्। इ॒न्द्र॒वा॒या॑ऽ॒३॒म्॥ म॒हा। म॒हा॒धा॒ना॑ऽ॒३॒इ॒म्॥ इ॒न्द्रा॒म्। इ॒न्द्र॒म॒र्भा॑ऽ॒३॒इ॒म्॥ ह॒वा।
ह॒वा॒मा॒हा॑ऽ॒३॒इ॒म्॥ यु॒जा॒म्। यु॒ज॒वृ॒त्रा॑ऽ॒३॒इ॒म्॥ पु॒वा। पु॒व॒ज्जि॒णा॑ऽ॒३॒४॒३॒म्॥ ओ॑ऽ॒३॒४॒५॒इ॒म्॥ डा॑॥

(दी. २। प. १४। मा. १०) ३ (झौ।२१४)

(१३०।२)

इ॒न्द्र॒व॒या॒म्॥ म॒हा। म॒हा॒धा॒ना॑ऽ॒३॒इ॒म्॥ आ॒ओ॑ऽ॒३॒हो॑। इ॒हा। इ॒हि॒वा॒ला॑। ओ॑ऽ॒३॒४॒वा॑॥
इ॒न्द्र॒म॒र्भा॑ऽ॒३॒इ॒म्॥ ह॒वा। ह॒वा॒मा॒हा॑ऽ॒३॒इ॒म्॥ आ॒ओ॑ऽ॒३॒हो॑। इ॒हा। इ॒हि॒वा॒ला॑। ओ॑ऽ॒३॒४॒वा॑॥
यु॒ज॒वृ॒त्रा॑ऽ॒३॒इ॒म्॥ पु॒वा। पु॒व॒ज्जि॒णा॑ऽ॒३॒४॒३॒म्॥ आ॒ओ॑ऽ॒३॒हो॑। इ॒हा। इ॒हि॒वा॒ला॑। ओ॑ऽ॒३॒४॒वा॑॥
ई॑ऽ॒३॒४॒हा॑॥

(दी. २। प. २२। मा. ९) ४ (छौ।२१५)

(१३१।१) ॥ सहस्रवाहवीयम्। इन्द्रो गायत्रीन्द्रः॥

अ॒पि॒व॒त्का॒द्रू॒ऽ॒व॒स्सु॒ताम्॥ इ॒न्द्रा॒हो॒ऽ॒इ॒। स॒हा॒हो॒ऽ॒इ॒। स्रा॒वा॒ऽ॒ह॒वे॒ऽ॒इ॒॥ त॒त्रा॒दा॒ऽ॒इ॒॥
ए॒पौ॒ऽ॒इ॒। हो॒ऽ॒इ॒। हु॒वा॒ऽ॒इ॒। ई॒ऽ॒इ॒या॒। सि॒या॒म्। औ॒ऽ॒इ॒हो॒वा॒। हो॒ऽ॒इ॒॥ डा॥

(दी. २। प. १३। मा. ५) ५ (जु।२१६)

(१३२।१) ॥ धृषतो मारुतस्य साम। मारुतो गायत्रीन्द्रः॥

व॒य॒मा॒ऽ॒इ॒इ॒न्द्रा॒॥ बा॒ऽ॒इ॒। या॒ऽ॒वा॒ऽ॒इ॒औ॒हो॒वा॒। अ॒भि॒प्र॒नो॒ऽ॒नु॒मो॒वृ॒ष॒न्॥
वि॒द्वा॒इ॒तु॒वा॒ऽ॒इ॒॥ स्या॒ऽ॒ना॒ऽ॒इ॒औ॒हो॒वा॒॥ वा॒ऽ॒इ॒सो॒॥

(दी. ६। प. ७। मा. ५) ६ (खु।२१७)

(१३२।२) ॥ अदारसृत् (द्वे)। भरद्वाजो गायत्रीन्द्रः॥

हा॒उ॒व॒य॒मि॒न्द्रा॒॥ बा॒ऽ॒या॒वा॒ऽ॒इ॒। अ॒भि॒प्र॒नो॒नु॒मो॒ऽ॒वा॒र्षा॒ऽ॒इ॒न्। वि॒द्वा॒ऽ॒इ॒तु॒वा॒ऽ॒इ॒॥ स्य॒नो॒ऽ॒इ॒॥
वा॒ऽ॒सा॒ऽ॒इ॒औ॒हो॒वा॒॥ अ॒स्म॒भ्यं॒गा॒तु॒वि॒त्त॒मा॒ऽ॒इ॒॥

(दी. ५। प. ७। मा. ६) ७ (फू।२१८)

(१३२।३) ॥ मारुतस्य साम। मारुतो गायत्रीन्द्रः॥

व॒य॒मि॒न्द्रा॒॥ बा॒या॒ऽ॒वा॒ऽ॒इ॒। अ॒भि॒प्र॒नो॒नु॒मो॒ऽ॒वा॒ऽ॒इ॒र्षा॒न्॥ वि॒द्वा॒तू॒ऽ॒इ॒वा॒। ओ॒ऽ॒इ॒हा॒इ॒॥
स्य॒नो॒वा॒। वा॒ऽ॒सो॒ऽ॒इ॒हा॒इ॒॥

(दी. १। प. ७। मा. ४) ८ (खी।२१९)

(१३२।४) ॥ अदारसृती द्वे। द्वयोर्भरद्वाजो गायत्रीन्द्रः॥

वयामोहो। इन्द्रा॥ बायाऽऽवाः। अभिप्रनोनुमोऽऽवाऽऽर्षान्॥ विद्धीबोऽऽऽहाइ॥

स्यानोऽऽहाइ। वसा। औऽऽहोवा। होऽऽइ॥ डा॥

(दी. ४। प. १०। मा. ५) ९ (नु।२२०)

(१३२।५)

वयामोहोवाहाइ। इन्द्रा। बाओहोवाहाइ। यावाः॥ आऽऽऽभी। प्राऽऽऽनो।

ओइनुमोवाऽऽऽर्षान्॥ वाऽऽऽइद्धी। तूऽऽऽवाऽऽ॥ स्याऽऽऽनाऽऽऽऽओहोवा॥ वाऽऽऽऽसो॥

(दी. ५। प. ११। मा. ८) १० (पै।२२१)

(१३३।१) ॥ ऐध्मवाहानि-हाराणि वा त्रीणि। त्रयाणामिध्मवाहो गायत्रीन्द्रः॥

आघायेअग्निमिन्धाताइ॥ स्त्रिणन्तिबर्हिरानुषाक्॥ येषामिन्द्रोयुवाइहा॥ ऊऽवाइ॥ ऊवोऽऽऽ४।

वा। साऽऽऽखोऽऽहाइ॥

(दी. ८। प. ७। मा. ६) ११ (तू।२२२)

(१३३।२) ॥ इहवदैध्मवाहम्॥

आघायइहा॥ ग्निमाइ। धाताओऽऽऽऽवा। ईऽऽऽऽहा। स्त्रिणन्तिबर्हिऽऽऽरा।

नूपाओऽऽऽऽवा। ईऽऽऽऽहा॥ येषाम्। आइन्द्राओऽऽऽऽवा॥ ईऽऽऽऽहा। युवा।

युवाऽऽसाऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽ॥ ईऽऽऽऽहा॥

(दी. ३। प. १३। मा. ७) १२ (डे।२२३)

(१३३।३)

ओहोआघायाऽ६ए॥ ग्निमाइन्धाता॥ ओहोऽ२३४वा॥ स्तृणतिबर्हिऽ३रानूषा॥ ओहोऽ२३४वा॥

येपामाइन्द्रा॥ ओहोऽ२३४वा॥ युवाऽ३॥ साऽ२३४खा॥ उहुवाऽ६हाउ॥ वा॥

(दी. ८। प. ११। मा. ५) १३ (दु।२२४)

(१३४।१) ॥ पैड्वस्य पैत्रस्य वा साम। पैत्रो गायत्रीन्द्रः॥

भि। ध्योहाइ॥ वाइश्वाअपा। द्वाइषाओऽ२३४वा॥ पाराओऽ२३४वा॥ बाधोजहाइ॥

मार्द्धाओऽ२३४वा॥ वसुस्पार्हतदाभराऽ२३४५॥

(दी. ४। प. ८। मा. ८) १४ (दौ।२२५)

द्वाविंशतिर्द्वितीयः, द्वितीयः खण्डः॥२॥ दशतिः॥२॥

(१३५।१) ॥ ऐषम्। इषो गायत्रीन्द्रः॥

इहेवाऽ२३४शृण्वएषाम्॥ कशाहस्तेषुयाऽ१द्वाऽ३दान्। नियामंचीऽ३त्राऽ३मृअताइ॥

नियामंचाइ। त्रमाऽ२र्जाऽ२३४ताइ॥ एहियाऽ३४। ओहोवा॥ एहियौहोइ। एहियौहोऽ२३इ॥

एऽ२३४ही॥

(दी. १३। प. १०। मा. ८) १५ (पौ।२२६)

(१३६।१) ॥ पौषम्। पूषा गायत्रीन्द्रः॥

इमउत्वाविचक्षते। एऽ३। सखायाः॥ इन्द्रसोमाऽ२३इनाः॥ होइहोवा॥ पुष्टावाऽ२३०ताः॥

होइहोवाऽ३॥ यथोऽ२३४वा। पाऽ५शोऽ६हाइ॥

(दी. ४। प. ९। मा. ८) १६ (धौ।२२७)

(१३७।१) ॥ मरुतां संवेशीयम्, सिन्धुषाम वा। मरुतो गायत्रीन्द्रः॥

समस्यामाऽ२। न्यावेविशाः॥ विश्वानामाऽ२। ताकृष्टयाः॥ समुद्रायेऽ२॥ वसिंधाऽ२३वाऽ३४३ः।
ओऽ२३४५६॥ डा॥

(दी. ४। प. ८। मा. ४) १७ (दी।२२८)

(१३८।१) ॥ हाविष्मते द्वे। द्वयोर्हविष्मान् गायत्रीन्द्रः (विश्वेदेवा वा)॥

देवा। नाम्। इदाओऽ२३४वा॥ ओवाओऽ२३४वा॥ माऽ२३४हात्। तदावृणाइ।

माहाओऽ२३४वा। वाऽ२३४याम्॥ वृष्णामस्मा॥ भ्यामाओऽ२३४वा॥ ताऽ२३४ये॥

(दी. ५। प. ११। मा. ८) १८ (पै।२२९)

(१३८।२)

हाउदेवानामिदवोमहद्दाउ॥ तदावृणाऽ३इ। माहेवाऽ२३४याम्। ऐऽ२होऽ१आऽ२३इही॥

वृष्णामाऽ३स्मा॥ भ्यमूऽ२३। ताऽ२याऽ२३४ओहोवा॥ हविष्मतेऽ२३४५॥

(दी. ८। प. ८। मा. ७) १९ (डे।२३०)

(१३८।३) ॥ हाविष्कृते द्वे। द्वयोर्विष्कृद्गायत्रीन्द्रः (विश्वेदेवा वा)॥

देवानामिदवोहाउमाहात्॥ तदावृणाइ। महाइवाऽ२३याम्॥ वृष्णाऽ२३होऽ१इ।

आऽ२३स्मा॥ भ्यमूऽ२३। ताऽ२याऽ२३४ओहोवा॥ हविष्कृतेऽ२३४५॥

(दी. ८। प. ८। मा. ७) २० (डे।२३१)

(१३८।४)

देवानामिदवोमाहात्॥ तादावृणी। महाइवाऽ२३याम्। वृष्णामाऽ२३स्माऽ३॥ भ्यमूऽ२३४वा।

ताऽ५योऽ६हाइ॥

(दी. ७। प. ६। मा. ४) २१ (ची।२३२)

(१३९।१) ॥ काक्षीवतम्। कक्षिवान् गायत्रीन्द्रः ब्रह्मणस्पतिर्वा॥

सोमाऽऽनास्वरणाम्॥ कृणूहिब्र। ह्यणस्पतायेऽऽ। ओऽऽ३। हाहोइ॥ कक्षाइवाऽऽ३०ताम्॥
यऔहोइ। औहोऽऽ३४वा। शाऽऽ५इजोऽऽ६हाइ॥

(दी. ५। प. ९। मा. ८) २२ (भै।२३३)

(१४०।१) ॥ औषसम्। उपो गायत्रीन्द्रः॥

बोधन्मनाः॥ इदाऽऽस्तूनाऽऽः। वृत्रहाभू। रियाऽऽसूऽऽ३४तीः॥ शृणाऽऽ३औहो॥
तुशक्रआ। शि। षाम्। औऽऽ३होवा। होऽऽ५इ॥ डा॥

(दी. २। प. ११। मा. ७) २३ (चो।२३४)

(१४१।१) ॥ दक्षणिधनमौक्षं। भरद्वाजो गायत्रीन्द्रः सविता वा॥

अद्यनोदेवसवितः। औहोवा॥ इहश्रुधाइ। प्रजावाऽऽ३त्सा। वीःसौभगाम्॥
परादूऽऽ३ष्वाऽऽ। होवाऽऽ३हा॥ प्रियस्सूऽऽ३४५वाऽऽ६५६॥ दक्षाऽऽ३याऽऽ३४५॥

(दी. ८। प. ९। मा. ३) २४ (ढि।२३५)

(१४१।२) ॥ मौक्षम्। भरद्वाजो गायत्रीन्द्रः सविता वा॥

अद्याऽऽ३। नोदेवसा। विताः॥ प्रजावत्सा। वीःसौभगाम्॥ पाराऽऽ३दूष्वा॥
प्रियस्सुवोवाऽऽ। ओऽऽ२। वाऽऽ३४। औहोवा॥ अस्मभ्यंगातुवित्तमाऽऽ३४५म्॥

(दी. ९। प. ११। मा. ३) २५ (ति।२३६)

(१४२।१) ॥ भारद्वाजानि आर्षभाणि त्रीणि। त्रयाणां भरद्वाजो गायत्रीन्द्रः॥

कूँऽ२३४वस्यवाऽ५र्षभोयुवा॥ तुविग्रीवोऽ२। अनानताः॥ ब्रह्माकाऽ२३स्ताम्॥

ऐऽ२होऽ१आऽ२३इही। सपर्याऽ२३ताऽ३४इइ। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ३। प. ८। मा. ६) २६ (डू।२३७)

(१४२।२)

कुवाकुवा॥ स्यवृषऽ३भोयुवाऽ३। ओऽ३४। हाहोइ। तुविग्रीवोअऽ३नानताऽ३ः।

ओऽ३४। हाहोइ॥ ब्रह्माऽ२३॥ काऽ२स्ताऽ२३४औहोवा। सपर्यतीऽ२३४५॥

(दी. ६। प. १०। मा. ५) २७ (डू।२३८)

(१४२।३)

ऐहीयैही। क्वस्यवृषभोयुवा॥ ऐहीयैही। तुविग्रीवोअनानताः॥ ऐहीयैही। ब्रह्माकस्तःसपर्यती॥

ऐहीयैही। आऽ२इ। हियाऽ३४औहोवा॥ आऽ२३४इही॥

(दी. २३। प. १०। मा. ५) २८ (णु।२३९)

(१४३।१) ॥ शाक्त्यसामनी द्वे। द्वयोः शाक्त्यो गायत्रीन्द्रः॥

उपह्वराइ। गिराऽ२इणाम्॥ संगामेचा। नदाऽ२इणाम्॥ धियाविप्रो। अजायता॥ अयाम्।

अयाऽ३१उ। वाऽ२३॥ ऊऽ३४पा॥

(दी. १। प. १०। मा. ७) २९ (ड्ये।२४०)

(१४३।२)

इदामीऽ२३४दाम्। इदामिदकम्। इदामीऽ२३४दाम्। उपह्वरेगिऽ३राइणाम्॥

इदामीऽ२३४दाम्। इदामिदकम्। इदामीऽ२३४दाम्। संगमेचनऽ३दाइणाम्॥

इदामीऽ२३४दाम्। इदामिदकम्। ईदामीऽ२३४दाम्। धियाविप्रोअऽ३जायाता॥

इदामीऽ२३४दाम्। इदामिदकम्। इदाऽ३माऽ५इदाऽ६५६म्॥ गोष्पदेपृट्॥

(दी. ६। प. १६। मा. १९) ३० (को।२४१)

(१४४।१) ॥ वार्षधरे द्वे। द्वयोर्वृषंधारो गायत्रीन्द्रः॥

प्रसंम्राजाम्॥ चार्षाऽ२णाइनाऽ२म्। आइन्द्राऽ२स्तोताऽ२३। नव्याऽ२ग्गाऽ२३४इर्भीः॥

नाराऽ२न्नार्षाऽ२३॥ हम्मोवा। हाऽ५इष्टोऽ६हाइ॥

(दी. १। प. ७। मा. ८) ३१ (खे।२४२)

(१४४।२)

प्रसंम्राजोहाइ॥ चार्षाणीऽ३नाम्। आइन्द्राऽ२स्तोऽ३ताऽ३। नव्याऽ२ग्गाऽ२३४इर्भीः॥

नारमोइ। नृ। पाहमोऽ३इ॥ मंहाऽ५इष्टाम्। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. २। प. १०। मा. १०) ३२ (जौ।२४३)

(१४४।३) ॥ कुत्सस्य प्रस्तोकौ द्वौ। द्वयोः कुत्सो गायत्रीन्द्रः॥

प्रसंम्राजंच। षणाऽ३२३४इनाम्॥ इन्द्राऽ२स्तोऽ३ताऽ३। नव्याऽ२ग्गाऽ२३४इर्भीः॥

नरंनृपाहमाऽ५हि। आऽ६हाउवा॥ षाऽ२३४५म्॥

(दी. २। प. ७। मा. ६) ३३ (छू।२४४)

(१४४।४)

प्रसंम्राजंचर्षणीनामिन्द्रस्तोतान। व्यंगाऽ६इर्भीः॥ इन्द्रस्तोतानव्यंगाऽ२३इर्भीऽ३४ः॥

नरंनृपाहम्। माऽ५हिष्टाम्॥ सहमैहैऽ३होऽ२। याऽ२३४औहोवा॥ मंहिऽ३ष्टाऽ२३४५म्॥

(दी. १२। प. ८। मा. ८) ३४ (जै।२४५)

विंशतिस्तृतीयः तृतीयः खण्डः॥३॥ दशतिः॥३॥

॥ इति ग्रामे गेय-गाने चतुर्थस्यार्द्धः प्रपाठकः॥

(१४५।१) ॥ औपगवे द्वे। द्वयोरुपगुर्गायत्रीन्द्रः॥

अपादुशी॥ प्रियं धसाः। सुदक्षाऽ२३स्या। प्रहोषिणः॥ इन्दोराऽ२३इन्द्राः॥ यवाशाऽ२३इराः।
ऐ। हियाऽ२इ। हियाऽ३४औहोवा॥ एऽ३। उपाऽ३१२३४५॥

(दी. ७। प. ११। मा. ८) १ (चै।२४६)

(१४५।२) ॥ औपगवोत्तरं सौश्रवसं वा॥

अपादूऽ३शिप्रियं धसाः॥ सुदक्षस्यप्रहोषिणाः। इन्द्रोऽ२। हौऽ२। हुवाऽ२३इ। आऽ३४इन्द्रो॥
यवाशाइराः। ऐ। हाऽ२एऽ२३। हियाऽ३४औहोवा॥ एऽ३। उपाऽ३१२३४५॥

(दी. ६। प. १२। मा. ८) २ (खै।२४७)

(१४६।१) ॥ बाष्ठीसाम। बष्ठा गायत्रीन्द्रः॥

इमाउबा॥ पुरूऽ२वासाऽ२उ। अभिप्रनोनवूऽ२र्गाइराऽ२ः॥ औहोऽ१इ। गावोवात्साऽ२३म्।
नाऽ२३धेऽ३। नाऽ३४५वोऽ६हाइ॥

(दी. ५। प. ७। मा. ७) ३ (फै।२४८)

(१४७।१) ॥ बष्टुरातिथ्ये द्वे। बष्ठा गायत्रीन्द्रः (बष्टुचन्द्रमसौ वा)॥

आत्रा॥ हागोरमन्वताउवाऽ२३। होवाऽ२३होइ॥ नामबष्टुरपीचियाउवाऽ२३। होवाऽ२३होइ॥
इत्थाचन्द्रमसोगृहाउवाऽ२३। होवाऽ२३होऽ२। वाऽ२३४औहोवा॥ ऊऽ२३४पा॥

(दी. ८। प. १। मा. ६) ४ (द्वौ२४९)

(१४७।२)

हावात्रा॥ हागोरमन्वताउवाऽ२३। होइयाऽ२३। हाऽ२ऊवाइ॥

नामत्तष्टुरपीचियामियाउवाऽ२३। होवाऽ२३हाऽ२ईया॥ इत्थाचन्द्रमसोगृहाउवाऽ२३।

होइयाऽ२३। हाऽ२ऊवाऽ२। याऽ२३४औहोवा॥ ऊऽ२३४पा॥

(दी. ८। प. १०। मा. १०) ५ (ज्वौ२५०)

(१४८।१) ॥ पौषे द्वे। द्वयोः पूषा गायत्रीन्द्रः पूषणौ॥

यदिन्द्रोया॥ नायाऽ२३त्। ओमोऽ३म्। ओवा। रितोमहीरापाऽ२३ः। ओमोऽ३म्। ओवा॥

वृषावृषाऽ२। तमाऽ३४औहोवा॥ तत्रपूषाभुवत्सचाऽ२३४५॥

(दी. ७। प. १०। मा. ५) ६ (जु२५१)

(१४८।२)

यदिन्द्रोअन्यद्रिताऽ६ए॥ महीरापाऽ२ः। महीरापाऽ२३ः। वर्षताऽ२३४माः॥ तत्रापूषाऽ३॥

पूऽ२षाऽ२३४औहोवा॥ भुवत्सचाऽ२३४५॥

(दी. ५। प. ७। मा. ६) ७ (फू२५२)

(१४९।१) ॥ श्यावाश्चे द्वे। द्वयोः श्यावाश्चो गायत्रीन्द्रः (मरुतो वा)॥

गौर्द्वयाऽ६ए॥ तिमरुताऽ३म्। श्रवास्युर्माऽ३। तामघोऽ२३४नाम्॥ युक्तावहाइः॥ रथाऽ३॥

नाऽ२माऽ२३४औहोवा॥ ऊऽ२३४पा॥

(दी. ३। प. ८। मा. ६) ८ (द्वौ२५३)

(१४९।२)

गौर्द्धयतिमरुताऽदमे॥ श्रवास्युर्माऽरतामघोनाऽरम्। उहुवाऽर३हाइ॥ युक्तावाऽर३हीः॥
उहुवाऽर३हाइ। रथानाम्। औऽर३होवा। होऽर३इ॥ डा॥

(दी. ७। प. ९। मा. ६) ९ (छू।२५४)

(१५०।१) ॥ सुतरयिष्ठीये द्वे। द्वयोः प्रजापतिर्गायत्रीन्द्रः॥

उपनोऽर३हरिभिस्सुतोवा॥ याहिमदाऽर३ना०प। ताऽर३इ॥ उपनोऽर३। हाऽर३ओऽर३४वा॥
राऽर३४ईभी। सुताम्। औऽर३होवा। होऽर३इ॥ डा॥

(दी. २। प. १०। मा. ६) १० (जू।२५५)

(१५०।२)

उपनोहाहोहा। राइभीः॥ सूऽर३ताम्। याहिमदा। नांपाऽर३ताइ॥ उपानोऽर३४हा॥
राऽर३इभाऽर३४ओहोवा॥ सुतरयिष्ठाऽर३४इः॥

(दी. ६। प. ८। मा. ७) ११ (गो।२५६)

(१५१।१) ॥ इष्टाहोत्रीयं अप्सरसं वा अपानिधिर्वा। इष्टाहोत्रा अप्सरसो वा गायत्रीन्द्रः॥

इष्टाहोत्राः॥ आसृक्षाऽर३४ता। इन्द्रवृधा। तोऽर३ध्वाऽर३४राइ॥ आच्छाऽर३वोभृ॥
थमोऽर३जाऽर३साऽर३५६॥ एऽर३। उदधिर्निधीऽर३१ः॥

(दी. १। प. ८। मा. ३) १२ (गि।२५७)

(१५२।१)॥ प्राजापतेर्निधनकामं सिन्धुषाम वा। प्राजापतिर्गायत्रीन्द्रः सूर्यो वा॥

अहमिद्धाऽऽइपितुःपराइ॥ मेधामृतस्यजग्रहा॥ अहसूर्याः। इवाऽऽ३४। हाहोइ॥ जनि।
होइ। होइ। औहोऔहोवाऽऽ३४५हाउ॥ वा॥

(दी. ७। प. १०। मा. ८) १३ (जै।२५८)

(१५३।१) ॥ रेवत्यः वाजदावर्यो वा। वाजदावर्यो गायत्रीन्द्रः॥

रेवतीर्नाः॥ सधाऽऽ२माऽऽ३४दाइ। इन्द्राऽऽइसाऽऽ३४०तू। तुविवाऽऽ२जाः॥ क्षूऽऽ२३मा॥
तोऽऽ२या। मिर्मोऽऽ३४वा। दाऽऽइमोऽऽ६हाइ॥

(दी. २। प. ८। मा. ६) १४ (जू।२५९)

(१५४।१) ॥ सोमपौषं गोअश्वीयं वा। सोमपूषावृषी गायत्रीन्द्रः॥

सोमःपूषा॥ चचाइततुः। अयायोऽऽ३४वा। वाइश्वासासुक्षिती। नाम्। अयायोऽऽ३४वा॥
दाइवत्राराऽऽ३॥ थियोऽऽ३र्हाऽऽइताऽऽ६५६॥ गावोऽऽअश्वाऽऽ३४५ः॥

(दी. ७। प. ९। मा. ८) १५ (झै।२६०)

पञ्चदश चतुर्थः खण्डः॥४॥ दशतिः॥४॥

(१५५।२) ॥ वैतहव्यानि त्रीणि अध्यर्द्धेड वैतहव्यम्। त्रयाणां वीतहव्योऽनुष्टुबिन्द्रः॥

पान्तमावोअन्धसाः॥ इन्द्रामाभि। प्रगायाताऽऽ३। हाऽऽ३हाइ। विश्वासाहम्। शताक्रातूऽऽ३म्।
हाऽऽ३हाइ॥ मःहाइष्ठचाऽऽ३। हाऽऽ३हा॥ षणाऽऽइ। नाऽऽ३४औहोवा॥ ऊऽऽ३२३४पा॥

(दी. ५। प. १२। मा. ९) १६ (फ्लो।२६१)

(१५५।२) ॥ इहवद्वामदेव्यम्॥

पान्तमावोअन्धसः। इहा॥ इन्द्रमभाइ। प्रगायताऽ२। इहा। विश्वासाहशताऽ२क्रतूम्।
इहा॥ म॒हाऽ२इष्ट॑चा। इहा॥ षणाऽ२इनाम्॥ इहाऽ२३४५॥

(दी. ६। प. ११। मा. ७) १७ (के।२६२)

(१५५।३) ॥ ओकोनिधनं वैतहव्यम्॥

पाऽ५न्तम्। आऽ३वोऽ३अन्धसाः॥ आइन्द्रामभाइ। प्रगाऽ२याऽ२३४ता।
विश्वाऽ२साऽ२३४हाम्॥ शाऽ३ताक्राऽ३तूम्॥ म॒हिष्ट॑चर्ष। णायैऽ३।
नाऽ२माऽ२३४औहोवा॥ ओऽ३काऽ२३४५ः॥

(दी. २। प. १०। मा. ९) १८ (जो।२६३)

(१५६।१) ॥ शाक्त्यानि षट्, शाक्त्ये सामनी द्वे। षणां शक्त्यो गायत्रीन्द्रः॥

प्रवइन्द्राऽ२। यमादाऽ२३४नाम्॥ प्रवाऽ२इन्द्रा। औऽ३हो। याऽ२३४मा॥ दाऽ३नाम्॥
हराऽ२अश्वा। औऽ३हो। याऽ२३४गा॥ याऽ३ता॥ सखाऽ२याःसो। औऽ३होऽ३।
मापोऽ२३४वा। आऽ५न्नोऽ६हाइ॥

(दी. नास्ति। प. १४। मा. ६) १९ (लू।२६४)

(१५६।२)

प्रवाऽ२इन्द्रा। औऽ३हो। याऽ२३४मा। दाऽ३नाम्। हराऽ२अश्वा। औऽ३हो। याऽ२३४गा।
याऽ३ता॥ सखाऽ२याःसो। औऽ३होऽ३॥ मापोऽ२३४वा। आऽ५न्नोऽ६हाइ॥

(दी. नास्ति। प. १२। मा. ४) २० (यी।२६५)

(१५६।३) ॥ गौरीविते द्वे॥

^२ ^३ ^४ ^५ ^६ ^७ ^८ ^९ ^{१०} ^{११} ^{१२} ^{१३} ^{१४} ^{१५} ^{१६} ^{१७} ^{१८} ^{१९} ^{२०} ^{२१} ^{२२} ^{२३} ^{२४} ^{२५} ^{२६} ^{२७} ^{२८} ^{२९} ^{३०} ^{३१} ^{३२} ^{३३} ^{३४} ^{३५} ^{३६} ^{३७} ^{३८} ^{३९} ^{४०} ^{४१} ^{४२} ^{४३} ^{४४} ^{४५} ^{४६} ^{४७} ^{४८} ^{४९} ^{५०} ^{५१} ^{५२} ^{५३} ^{५४} ^{५५} ^{५६} ^{५७} ^{५८} ^{५९} ^{६०} ^{६१} ^{६२} ^{६३} ^{६४} ^{६५} ^{६६} ^{६७} ^{६८} ^{६९} ^{७०} ^{७१} ^{७२} ^{७३} ^{७४} ^{७५} ^{७६} ^{७७} ^{७८} ^{७९} ^{८०} ^{८१} ^{८२} ^{८३} ^{८४} ^{८५} ^{८६} ^{८७} ^{८८} ^{८९} ^{९०} ^{९१} ^{९२} ^{९३} ^{९४} ^{९५} ^{९६} ^{९७} ^{९८} ^{९९} ^{१००}

(दी. ३। प. १८। मा. ८) २१ (डै।२६६)

(१५६।४)

^१ ^२ ^३ ^४ ^५ ^६ ^७ ^८ ^९ ^{१०} ^{११} ^{१२} ^{१३} ^{१४} ^{१५} ^{१६} ^{१७} ^{१८} ^{१९} ^{२०} ^{२१} ^{२२} ^{२३} ^{२४} ^{२५} ^{२६} ^{२७} ^{२८} ^{२९} ^{३०} ^{३१} ^{३२} ^{३३} ^{३४} ^{३५} ^{३६} ^{३७} ^{३८} ^{३९} ^{४०} ^{४१} ^{४२} ^{४३} ^{४४} ^{४५} ^{४६} ^{४७} ^{४८} ^{४९} ^{५०} ^{५१} ^{५२} ^{५३} ^{५४} ^{५५} ^{५६} ^{५७} ^{५८} ^{५९} ^{६०} ^{६१} ^{६२} ^{६३} ^{६४} ^{६५} ^{६६} ^{६७} ^{६८} ^{६९} ^{७०} ^{७१} ^{७२} ^{७३} ^{७४} ^{७५} ^{७६} ^{७७} ^{७८} ^{७९} ^{८०} ^{८१} ^{८२} ^{८३} ^{८४} ^{८५} ^{८६} ^{८७} ^{८८} ^{८९} ^{९०} ^{९१} ^{९२} ^{९३} ^{९४} ^{९५} ^{९६} ^{९७} ^{९८} ^{९९} ^{१००}

(दी. ६। प. १२। मा. २) २२ (खा।२६७)

(१५६।५)

॥ शक्त्यं साम॥

^१ ^२ ^३ ^४ ^५ ^६ ^७ ^८ ^९ ^{१०} ^{११} ^{१२} ^{१३} ^{१४} ^{१५} ^{१६} ^{१७} ^{१८} ^{१९} ^{२०} ^{२१} ^{२२} ^{२३} ^{२४} ^{२५} ^{२६} ^{२७} ^{२८} ^{२९} ^{३०} ^{३१} ^{३२} ^{३३} ^{३४} ^{३५} ^{३६} ^{३७} ^{३८} ^{३९} ^{४०} ^{४१} ^{४२} ^{४३} ^{४४} ^{४५} ^{४६} ^{४७} ^{४८} ^{४९} ^{५०} ^{५१} ^{५२} ^{५३} ^{५४} ^{५५} ^{५६} ^{५७} ^{५८} ^{५९} ^{६०} ^{६१} ^{६२} ^{६३} ^{६४} ^{६५} ^{६६} ^{६७} ^{६८} ^{६९} ^{७०} ^{७१} ^{७२} ^{७३} ^{७४} ^{७५} ^{७६} ^{७७} ^{७८} ^{७९} ^{८०} ^{८१} ^{८२} ^{८३} ^{८४} ^{८५} ^{८६} ^{८७} ^{८८} ^{८९} ^{९०} ^{९१} ^{९२} ^{९३} ^{९४} ^{९५} ^{९६} ^{९७} ^{९८} ^{९९} ^{१००}

(दी. ४। प. १८। मा. २) २३ (दा।२६८)

(१५६।६)

॥ गौरीवीतम्॥

^१ ^२ ^३ ^४ ^५ ^६ ^७ ^८ ^९ ^{१०} ^{११} ^{१२} ^{१३} ^{१४} ^{१५} ^{१६} ^{१७} ^{१८} ^{१९} ^{२०} ^{२१} ^{२२} ^{२३} ^{२४} ^{२५} ^{२६} ^{२७} ^{२८} ^{२९} ^{३०} ^{३१} ^{३२} ^{३३} ^{३४} ^{३५} ^{३६} ^{३७} ^{३८} ^{३९} ^{४०} ^{४१} ^{४२} ^{४३} ^{४४} ^{४५} ^{४६} ^{४७} ^{४८} ^{४९} ^{५०} ^{५१} ^{५२} ^{५३} ^{५४} ^{५५} ^{५६} ^{५७} ^{५८} ^{५९} ^{६०} ^{६१} ^{६२} ^{६३} ^{६४} ^{६५} ^{६६} ^{६७} ^{६८} ^{६९} ^{७०} ^{७१} ^{७२} ^{७३} ^{७४} ^{७५} ^{७६} ^{७७} ^{७८} ^{७९} ^{८०} ^{८१} ^{८२} ^{८३} ^{८४} ^{८५} ^{८६} ^{८७} ^{८८} ^{८९} ^{९०} ^{९१} ^{९२} ^{९३} ^{९४} ^{९५} ^{९६} ^{९७} ^{९८} ^{९९} ^{१००}

(दी. ५। प. ९। मा. ५) २४ (भु।२६९)

(१५७।१)

॥ काण्वे द्वे। द्वयोः कण्वो गायत्रीन्द्रः॥

वयंवायाम्॥ ऊँऽ२३४त्वा। तादीदाऽ२३४र्थाः। इन्द्रबायन्तः। सखाऽ२३४याः॥

कण्वाऽ३१२३४ः॥ उक्थेभिर्जरन्ते। एहियाऽ६हा। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. ४। प. १०। मा. ६) २५ (नू।२७०)

(१५७।२)

वयमूऽ३त्वातदिदर्थाः॥ ऐहिहाऽ२इ॥ वयमुत्वातदिदर्थाइन्द्रबायन्तस्सखाऽ२३याः॥

काऽ२३४ण्वाः॥ ऊँ। कथाइ। भिर्जोऽ२३४वा॥ रन्ताऽ३याऽ२३४५॥

(दी. ५। प. ८। मा. ६) २६ (बू।२७१)

(१५८।१) ॥ गोरीविते द्वे। द्वयोर्गौरीवितो गायत्रीन्द्रः॥

इन्द्रायमद्वनेहाउ॥ सुताम्। इन्द्रायमद्वनेसुताम्। पराइष्टोऽ२३भा। तुनोगिरो॥ अर्कमाऽ२३र्चा॥

तुकाराऽ२३वाऽ३४३ः। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ५। प. ९। मा. ६) २१ (भू।२७२)

(१५८।२)

इन्द्रायमद्वनेहाउ॥ ओइसूऽ३ताम्। परिष्टो। भा। तुनोऽ२३हाइ। गाइराऽ२ः। परिष्टोभा।

तुनोऽ२३हाइ॥ गाइराऽ२ः॥ अर्काऽ२३म्॥ आऽ२र्चाऽ२३४औहोवा॥ एऽ३।

तुकाऽ३रवाऽ२३४५ः॥

(दी. ६। प. १३। मा. १२) २८ (गा।२७३)

(१५८।३) ॥ श्रौतकक्षम्। श्रुतकक्षा गायत्रीन्द्रः॥

४ ऋ४५ र ४ ५ र ४५ २ ? २ २ ? अर ? २ २
इन्द्रायमद्वनेसुतम्। इन्द्रायमोवा॥ द्वाऽऽनाइसूऽऽताम्। परिष्टो। भाऽऽ३। हाऽऽहाऽऽ।
? १ ३ ५ ? २ २ २ अ २ ?
तूनोऽऽगाऽऽ३४इराः॥ आर्कमर्चाऽऽ३। हाऽऽहा॥ तुकाराऽऽ३वाऽऽ३३ः। ओऽऽ३४५इ॥
डा॥

(दी. ५। प. १२। मा. ७) २९ (फे।२७४)

(१५९।१) ॥ सौमित्रे द्वे द्वयोः सुमित्रो गायत्रीन्द्रः॥

५ २ अ १ ? २ २ अ र २ ? २ ३ ५ ? अ ?
अयंतआ॥ द्रसोमो। होवाऽऽहोइ। निपूतोआऽऽ३। धीबर्हाऽऽ३४इपी॥ आइहीमस्याऽऽ३॥
? १ ३ अ र ३ ५
द्राऽऽवाऽऽ३४ओहोवा॥ पीऽऽ३४बा॥

(दी. ६। प. ८। मा. ६) ३० (गू।२७५)

(१५९।२)

५ १ र र ? १ र ? २ र ?
अयंतइन्द्रसोऽऽमाः॥ निपूतोअधिवाऽऽर्हाइपीऽऽ२। ऐहोऽऽइमास्या॥ द्रवापाइवाऽऽ२।
? १ र २ ५
आइहीमस्याद्रवाऽऽ३१उवाऽऽ३॥ पीऽऽ३४बा॥

(दी. ५। प. ६। मा. ८) ३१ (पै।२७६)

(१५९।३) ॥ इहवद्वैवोदासम्। दिवोदासो गायत्रीन्द्रः॥

४ ३ ४ ३ ५ ? अ र ४ ५ ४ ५ ? र र २ ?
अयंतइन्द्रसोऽऽमः। नाऽऽ३४इ। पूतोअधिबर्हिपी॥ निपूतोअधिबर्हाऽऽ३इपी॥
र ? २ अ ३ ५
ऐहोइमाऽऽ३स्या॥ द्रवापाऽऽ३४५इबाऽऽ६५६॥ ईऽऽ३४हा॥

(दी. ६। प. ७। मा. ८) ३२ (खै।२७७)

(१६०।१) ॥ शाक्वरवर्णम्। शाक्वरवर्णो गायत्रीन्द्रः प्रजापतिर्वा॥

४ ५ २ ? र २ ? २ ? अ ? ? २ २ ५
सुरू॥ पकृबूमूतयाइ। सुदुघाम्। इवगोऽ२। दुहयाऽ३१उवाऽ२३। ऊऽ३४पा॥

२ अ २ १ २ ५
जुहूमाऽ२३सी॥ दविदवियाऽ३१उवाऽ२३॥ ऊऽ३२३४पा॥

(दी. ३। प. ९। मा. ४) ३३ (झी।२७८)

(१६०।२) ॥ रैवतम्। रेवतो गायत्रीन्द्रः (रेणवम्। रेणुर्गायत्री प्रजापतिर्वा)॥

५ र र २ ? १ १ १ अ ? ? अ र र अ २ २
सुरूहाहाउ॥ पकृबूमूऽ२तायाऽ२इ। सुदुघाम्। इवगोऽ२। दुहे। ऐहीयेहीऽ१॥ जुहौऽ२।
हौऽ२। हुवाऽ२इ। मासीऽ२॥ दविदवि॥ ऐहीयेहीऽ१॥

(दी. १०। प. १२। मा. ४) ३४ (फी।२७९)

(१६०।३)॥ ऐणवे वैणवे वा औदले द्वे, वींकम्। वींको गायत्रीन्द्रः प्रजापतिर्वा॥

२ र १ ५ १ र २
सुरूपकृबूऽ३मूताऽ२३४याइ॥ ओइसुरूपकृबूमूऽ१तायाऽ२इ।

१ र २ अ ३ ३ ३ ५ ५ १ १
ओइसुदुघामिवागोऽ१दुहाऽ२इ। जुहूमसाऽ२इ। दविदाऽ२३४वी। ऐही॥ जुहूऽ२मासीऽ२॥

२ ? ५ अ ५ अ ५ २ २ १ १ १
दविदा। वीवीऽ२३। आऔहोइ। आऔहोऽ६वा॥ एऽ३। दविऽ३ईऽ२३४५॥

(दी. ६। प. १३। मा. १०) ३५ (गौ।२८०)

(१६०।४) ॥ औदलम्। ओदलो गायत्रीन्द्रः॥

५ अ ५ १ १ २ ? र २ १ ३ ३ ५ ५ ५ र ५ १ १
सुरूपकृ॥ बूमूऽ२तयाइ। सुदुघामीऽ३। वागोदूऽ२३४हाइ॥ सुदुघामा॥ वागोऽ२दुहाइ।

२ अ २ १ ५ ५ ५
जुहूमाऽ२३सीऽ३। दाऽ२३वीऽ३। दाऽ३४५वोऽ६हाइ॥

(दी. ४। प. ९। मा. ४) ३६ (धी।२८१)

इति ग्रामे गेय-गाने चतुर्थः प्रपाठकः॥४॥

(१६१।१)॥आर्षभानि सैन्धुक्षितानि वा वाध्राश्वानि वा त्रीणि। त्रयाणामृषभो गायत्रीन्द्रः॥

अभि॒त्वावृष॑भासु॒ताइ॑॥ सू॒तःसृ॑जा। मि॒पाइ॒ताऽ१॒याऽ२इ॑॥ तृ॒म्पावा॑ऽ१॒याऽ२॑॥

श्रु॒हाऽ३१॒उवा॑येऽ३॥ माऽ२३४॒दाम्॑॥

(दी. ३। प. ६। मा. ५) १ (टु।२८२)

(१६१।२)

अभि॒त्वावृष॑भासु॒तेअ॒भ्याहा॑उ॥ त्वावृ॒ऽइ॒षाभा॑ऽ१सू॒ताऽ२इ॑॥ सू॒तःसृ॑जा। मि॒पाइ॒ताऽ१॒याऽ२इ॑॥

तृ॒म्पाऽ३हो॑इ। वि॒याऽ३हो॑॥ श्रु॒हीमा॑ऽ२३दाऽ३४३म्। ओऽ२३४५इ॑॥ डा॥

(दी. ७। प. ९। मा. ८) २ (झै।२८३)

(१६१।३)

अभि॒त्वावृष॑भासु॒ते। सु॒तःसृ॑जोवा॑॥ मि॒पी॒ताया॑ऽ२इ॑॥ सु॒तःसृ॑जामि। पी॒ताऽ२३या॑इ॑॥

त्राऽ२३०पाऽ३॥ वाऽ२याऽ२३४ओ॒होवा॑॥ श्रु॒हीमदा॑ऽ२३४५म्॥

(दी. ९। प. ८। मा. ४) ३ (दी।२८४)

(१६२।१)॥कौत्से पाश्र्ववाजे वा दाश्र्ववाजे वा द्वे, ऐडकौत्सम्। द्वयोः कुत्सो गायत्रीन्द्रः॥

याही॑न्द्राऽ२३। च॒मसे॑षुवा॒ईया॑॥ सोमश्च॒मूपु॑तेसु॒तः। सोमश्च॒मू। पु॒ताइ॒सूऽ२३ताः॑॥

पाइ॒वेऽ३इ॒डाइ॑॥ आ॒स्याऽ३हा॑इ॑॥ त्वा॒मीशा॑ऽ२३इ॒षाऽ३४३इ॑॥ ओऽ२३४५इ॑॥ डा॥

(दी. ७। प. १०। मा. १०) ४ (जौ।२८५)

(१६२।२)

॥ स्वार कौत्सम्॥

य^५इन्द्रचामाऽ^५दसेषुवा॥ सोमश्चमूषुताऽ^५इसूऽ^५इताः। सोमश्चमूऽ^५इ। पूऽ^५इताइसूऽ^५इताः॥

आऽ^५इ। पिबेदस्योऽ^५इइहाइ॥ ब्रमाऽ^५इइशाऽ^५इइषा^५इइइ॥

(दी. ६। प. ७। मा. १०) ५ (खौ।२८६)

(१६३।१)॥सौमेधानि, पूर्वतिथानि पौर्वातिथानि वा त्रीणि। त्रयाणां सुमेधा गायत्रीन्द्रः॥

यो^५गेयो^५गेतवस्तराम्॥ वाजेवाजेहवामहे॥ सखायाऽ^५इइइऽ^५इ॥ द्रमूऽ^५इइइवा। ताऽ^५योऽ^५इइहाइ॥

(दी. ११। प. ५। मा. ३) ६ (डि।२८७)

(१६३।२)

यो^५गेयो^५गेतवस्ताऽ^५इइराम्॥ वाजेऽ^५इवाजेऽ^५इहवाऽ^५इमहेऽ^५इ। होवाऽ^५इहाइ॥ साखाऽ^५इइयाइऽ^५इइ।
होवाऽ^५इहाइ॥ द्रमूऽ^५इइइ। ताऽ^५इइयाऽ^५इइइओहोवा॥ ऊऽ^५इइइइइपा॥

(दी. ११। प. ८। मा. ५) ७ (गु।२८८)

(१६३।३)

॥ सोमेधम्॥

यो^५गेयो^५गेतवाहाउस्ताराम्॥ वाजेवाजे। हवाऽ^५इइमाहाइ। हूवाइ। औऽ^५इइहोऽ^५इइइइवा।
साखायइ। द्रमूऽ^५इइतायाइ। हूवाइ। औऽ^५इइहोऽ^५इइइइवा॥ सखायआ॥ हूवाऽ^५इइइ।
औऽ^५इइहोऽ^५इइइइइवाऽ^५इइइइइ॥ द्रमूऽ^५इइइतयेऽ^५इइइइइ॥

(दी. ११। प. १३। मा. ९) ८ (गो।२८९)

(१६४।१)

॥ देवतिथं मैधातिथं वा। देवातिथिर्गायत्रीन्द्रः॥

आतूऽ३४। एतानि। षीदाऽदता॥ इंद्रमभाइ। प्रगायता। साखायस्तोम। वा। औऽ३हो।
 ववाऽ२हाऽ२३४साः॥ हयाइ। सखायस्तोम। वा। औऽ३हो॥ हिम्माऽ२३।
 हाऽ३४५सोऽदहाइ॥

(दी. ९। प. १५। मा. ४) ९ (नी।२९०)

त्रिंशत् पञ्चमः खण्डः॥५॥ दशतिः॥५॥

(१६५।१) ॥ आंगिरसं माधुच्छन्दसम् वा। मधुच्छन्दा गायत्रीन्द्रः॥

इदाऽदमे॥ हियऽ३नूओऽ१जासाऽ२। सूतःराधा। नाम्पाऽ१ताऽ२इ।

पिबातुवस्यागिर्वाणाऽ२३४ः॥ पिबाऽ३४तुवाऽ३॥ स्याऽ२गाऽ२३४औहोवा॥ वाऽ२३४णाः॥

(दी. ३। प. ८। मा. ५) १० (डु।२९१)

(१६५।२) ॥ गायत्री (आंगिरसं) क्रौञ्चम् वा। क्रौंचो गायत्रीन्द्रः॥

इदःहियाऽ४औहो॥ नूऽ३ओजाऽ२३४सा। सूतःराधा। नाऽ३२म्। पाऽ२३४ताइ॥

पिबातुवस्याऽ२३। ग। वाहाइ॥ वाऽ२३४णाः। एहियाऽदहा। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. २। प. १२। मा. ७) ११ (छे।२९२)

(१६५।३) ॥ आंगिरसं घृतश्रुन्निधनं प्राजापत्यं माधुच्छन्दसं वा। प्रजापतिर्गायत्रीन्द्रः॥

इदःह्यनूऽदओजसा॥ सुतःराधा। ना०पातो। होवाऽ३हाइ। पिबातुव। स्यगाइर्वाणौ।

होवाऽ३हाइ॥ पिबातुवौ। होवाऽ३हा॥ स्यगायेऽ३ः। वाऽ२नाऽ२३४औहोवा॥

घृतश्रुताऽ२३४५ः॥

(दी. ९। प. १२। मा. ७) १२ (थे।२९३)

(१६६।१) ॥ वाम्राणि प्रैयमेधानि वा त्रीणि। त्रयाणां वाम्रो गायत्रीन्द्रः॥

महा॒इन्द्राः॥ पु॒रश्च॑नो। मा॒ऽऽही॒ऽऽत्ता॑मा॒ऽऽ। स्तु॒वा जि॑णाइ॥ द्यौऽ॒र्ना॒प्रा॒ऽऽ॥
थिना॑शा॒ऽऽ३वा॑ऽ३४३ः। ओ॑ऽ॒ऽ३४५इ॥ डा॥

(दी. १। प. ९। मा. ५) १३ (घ।२९४)

(१६६।२)

महाहा॒इन्द्राः॥ पू॒ऽऽरा॑श्चा॒ऽऽनो। महा॑ऽ॒इत्ता॑ऽ॒ऽ३४मा। स्तु॒वौऽ॒ऽहो॑ऽ॒ऽ३। ह॒वाऽ॒ऽजि॑णाइ।
द्यौर्ना॑प्रा थिना॑श॒वाऽ॒ऽ३ः॥ द्यौऽ॒र्ना॒ऽऽ३४प्रा॑॥ थि॒नोऽ॒ऽहो॑ऽ॒ऽ३। ह॒वो॒वा। शा॑ऽ॒ऽवो॑ऽ॒ऽहाइ॥

(दी. ३। प. ११। मा. ६) १४ (टू।२९५)

(१६६।३)

महा॒इन्द्राऽ॒ऽपु॒रश्च॑नाः॥ मा॒हि॒त्ता॑ऽ॒ऽ३३३३मा। स्तु॒वज्रा॑ऽ॒ऽ३३३३इ॒णाइ॥
द्यौर्ना॑ऽ॒ऽ३३३३प्रा॑॥ थि॒ना॑श॒वाऽ॒ऽ३३३३४३ः। ओ॑ऽ॒ऽ३४५इ॥ डा॥

(दी. ३। प. ७। मा. ६) १५ (टू।२९६)

(१६७।१) ॥ गौरीविते द्वे। द्वयोर्गौरीवितिर्गायत्रीन्द्रः॥

आ॒तून॑आ॥ द्र॒क्षु॒माऽ॒ऽत्ता॑म्। चा॒इ॒त्र॒ग्रा॒भाऽ॒ऽ३३हाइ॥ सं॒गृ॒ऽऽभा॑या।
महा॑हस्तो॒ऽऽ३४५हाइ॥ द॒क्षाऽ॒ऽइ॒णा॒ना॥ महा॑ऽ॒ऽ३॥ हा॑ऽ॒ऽस्ता॑ऽ॒ऽ३४ओ॒हो॒वा॥
दक्षि॑णेऽ॒ऽना॑ऽ॒ऽ३४५॥

(दी. ६। प. ९। मा. ८) १६ (घै।२९७)

(१६७।२)

आतूनइन्द्रक्षुमान्ताम्॥ चित्राऽ२०ग्राऽ२३४भाम्। संगृभाऽ२३४या। माऽ३हाऽ३॥

हाऽ२स्ताऽ२३४औहोवा॥ दक्षिणेनाऽ२३४५॥

(दी. ५। प. ६। मा. ४) १७ (पी।२९८)

(१६७।३) ॥ आपालवैणवे, वेणवे वा आपाले वा आकूपारे पारववे वा द्वे।

द्वयोराकूपारो गायत्रीन्द्रः॥

आतूनइ। द्रक्षुमाऽदन्ताम्॥ चित्रग्राभःसंगृभाऽ२या। चित्रग्राभःसम्। गृऽ। औऽ३होइ।

भाऽ२३४या॥ ऐहोइ। महाहस्तीदक्षाऽ२३होइ॥ औहो। वाहोऽ२३४वा। णाऽ५इनोऽ६हाइ॥

(दी. ९। प. १२। मा. ८) १८ (थै।२९९)

(१६७।४)

आतूनइन्द्रक्षुमाऽदन्ताम्॥ चित्रग्राभःसंगृभाया। चित्रग्राभःसम्। गृऽ२३। ईऽ३४हा।

भाऽ२३४या॥ ऐहोइ। महाहस्तीदक्षाऽ२३होइ॥ औहो। वाहोऽ२३४वा। णाऽ५इनोऽ६हाइ॥

(दी. १०। प. ११। मा. ७) १९ (पे।३००)

(१६८।१) ॥ धुरोः सामनी द्वे। द्वयोर्धुरा गायत्रीन्द्रः॥

अभीअभी॥ प्रगोऽ३पातिंगिराऽ२। इन्द्रमर्चयाथाऽ१विदाऽ२इ॥ सूनूऽ३होइ।

सत्योऽ२३४हा॥ स्याऽ२साऽ२३४औहोवा॥ पतीऽ३मेऽ२३४५॥

(दी. ४। प. ७। मा. ४) २० (थी।३०१)

(१६८।२)

अभीअभी॥ प्रगो॥ पतिगिरा॥ इन्द्राम्॥ अर्चायाऽऽऽथा॥ हिऽऽस्थिहिम्ऽऽ॥

आऽऽऽऽऽऽविदाइ॥ सूनुःसत्यस्यसा॥ हिऽऽस्थिहिम्ऽऽ॥ ओऽऽऽऽवा॥ पाऽऽऽतोऽऽहाइ॥

(दी. १। प. ११। मा. ९) २१ (को।३०२)

(१६८।३)

अभि॥ प्रगोऽऽ॥ पतिगिरा॥ इन्द्रमर्चयथाविदाऽऽऽइ॥ सूनुःसत्याऽऽऽ॥

स्यसाऽऽऽत्पताइम्॥ सूनुःसत्याऽऽऽ॥ स्यसोवा॥ पाऽऽऽतोऽऽहाइ॥

(दी. १। प. ९। मा. ४) २२ (घी।३०३)

(१६९।१) ॥ वाचस्सामनी द्वे॥ द्वयोर्वाक् गायत्रीन्द्रः॥

कयानश्री॥ त्रआभूऽऽवात् ऊताइसा॥ दा॥ वाऽऽसाऽऽऽऽखा॥ कयाशाऽऽचीऽऽ॥

ष्ठाऽऽऽयाऽऽ॥ वाऽऽऽऽऽर्तोऽऽहाइ॥

(दी. २। प. ८। मा. ४) २३ (जी।३०४)

(१६९।२)

होवाइ॥ होवाइकयानश्री॥ त्रआभूऽऽवाऽऽऽत्॥ होवाइ॥ होवाऊतीसदा॥

वृधास्साऽऽखाऽऽ॥ होवाइ॥ होवाइकयाशचाइ॥ ष्टया॥ वाऽऽर्त्ताऽऽऽऽऽऽहोवा॥

ऊऽऽऽऽपा॥

(दी. १९। प. ११। मा. १०) २४ (बौ।३०५)

(१६९।३) ॥ महावामदेव्यं वा॥ वामदेवो गायत्रीन्द्रः॥

काऽऽया॥ नश्चाऽऽइत्राऽऽआभुवात्॥ ऊ॥ तीसदावृधस्सा॥ खा॥ औऽऽहोहाइ॥

कयाऽ२३श्चाइ॥ ष्योहोऽ३। हिमाऽ२। वाऽ२र्तोऽ३५हाइ॥

(दी. ६। प. १०। मा. ६) २५ (डू।३०६)

(१७०।१)॥ इन्द्रस्य सत्रासाहीये, अजितस्य आजिती वा द्वे। द्वयोरिन्द्रो गायत्रीन्द्रः॥

त्यमुवाः॥ सत्रासाहाऽ२म्। विश्वासुगीर्षूआऽ१याताऽ२म्॥ आच्याऽ२३॥

वाऽ२याऽ२३४ओहोवा॥ सियूऽ३तयेऽ२३४५॥

(दी. ६। प. ६। मा. ५) २६ (कु।३०७)

(१७०।२)

त्याऽ३४म्। उवस्सत्रासाहम्। ओऽ६वा॥ विश्वासुगीर्ष्वायाऽ२ताम्। आऽ२च्या। वाऽ२३या॥

सियौऽ३हो। वाहाऽ३४३इ॥ ताऽ२३४योऽ६हाइ॥

(दी. ७। प. ९। मा. ५) २७ (झु।३०८)

(१७१।१) ॥ वामदेव्यम्। वामदेवो गायत्रीन्द्रः॥

सादा॥ सस्पताइमद्भूता। ओऽ२३४वा। प्रायाओऽ२३४वा॥ आइन्द्रा।

स्याकामाऽ२३४५याऽ६५६म्॥ सनिमेऽ२धामयासिषाऽ२३४५म्॥

(दी. ६। प. ७। मा. ५) २८ (ठु।३०९)

(१७२।१) ॥ अश्विनोः साम। अश्विनौ गायत्रीन्द्रः॥

हाइ। आप्सूदाऽ२३४क्षाः। आप्सूदाऽ२३४क्षाः। येतेपंथाअऽ३धोदिवाऽ२३४५ः॥ हाइ।

आप्सूदाऽ२३४क्षाः। आप्सूदाऽ२३४क्षाः। येभिर्व्यश्चऽ३माइरयाऽ२३४५ः॥ हाइ।

उताश्रोऽ२३४षा॥ तुनोऽ२३। भूऽ२वाऽ२३४ओहोवा॥ ईऽ२३४ती॥

(दी. ६। प. १३। मा. १२) २९ (गा।३१०)

(१७३।१) ॥ गौतमस्य भद्रं। गोतमो गायत्रीन्द्रः॥

भद्रंभाद्राम्॥ नआभाऽ२३राऽ३। आइषामूर्जाम्॥ शतक्राऽ२३ताऽ३उ॥ यादिन्द्राम्॥
डाऽ२याऽ२३४औहोवा॥ सीऽ२३४नाः॥

(दी. ३। प. ७। मा. ७) ३० (ठे।३११)

(१७४।१) ॥ आश्विनोः साम, सोम साम वा। आश्विनौ गायत्रीन्द्रः॥

अस्तिसोमोअयस्सुतः। अ। स्त्येआस्ती॥ सोमोअयस्सुतःपिबन्त्यस्यम। रूतोऽ२३४हाइ॥
उतस्वराऽ५जोवा॥ श्वाऽ५इनोऽ६हाइ॥

(दी. ४। प. ७। मा. ७) ३१ (थे।३१२)

॥ द्वाविंशतिः, षष्टः खण्डः॥६॥ दशतिः॥८॥

॥ इत्यैन्द्राख्ये द्वितीये गाने बहुसामाख्यम्॥

॥ द्वितीयं तन्त्रं सम्पूर्णम्॥

(१७५।१) ॥ बाष्ठी साम। बष्ठा गायत्रीन्द्रः॥

ईङ्ख्यन्तीः॥ अपाऽ२स्यूवाऽ२ः। आइन्द्रंजातम्। ऊपाऽ१साताऽ२इ॥ वन्वानाऽ२३साः॥
सुवीरियाऽ३१उवाऽ२३॥ वृधेऽ१॥

(दी. ३। प. ७। मा. ७) ३२ (ठे।३१३)

(१७६।१) ॥ गोधा साम। गोधा गयत्रीन्द्रो विश्वेदेवा वा॥

नकिदेवाः॥ इनाइ। इनीमासाऽइइ। मासीऽइया॥ नकियायो॥ पया। पयामासाऽइइ।
मासीऽइया॥ मन्त्रश्रुत्याम्॥ चरा। चरामासाऽइइ। मासीऽइया॥

(दी. २। प. १२। मा. ६) ३३ (छू।३१४)

(१७७।१) ॥ सुवितुस्साम। सविता गायत्री सविता॥

दोषोआगात्॥ बृहद्गाया। दुमद्गाऽइइमान्। आथर्वणाऽइ॥ स्तुहि। औऽइइहोऽइइ॥
देवाऽइइम्। सवोवा। ताऽइइरोऽइइहाइ॥

(दी. ६। प. ९। मा. ६) ३४ (घू।३१५)

(१७८।१) ॥ उषसस्साम। उषा गायत्र्यश्विनौ॥

एषोउषाः॥ आपूर्विया। व्युच्छति। होवाऽइइहाइ। प्रियादाऽइइइवाऽइइ॥
स्तुषाऽइइइवामाऽइइ॥ श्विनोऽइइइवा। वृऽइइहोऽइइहाइ॥

(दी. ३। प. ८। मा. ७) ३५ (गो।३१६)

॥ इति ग्रामे गेय-गाने पञ्चमस्यार्धः प्रपाठकः॥

(१७९।१) ॥ ऋष्टरातिथ्य द्वे। द्वयोस्त्वष्टा गायत्रीन्द्रः॥

इन्द्रोदधीचोअस्थभिरियाऽइइइऽइया॥ वृत्राण्यप्रतिष्कुतइयाऽइइइऽइया॥
जघाननवतीर्णवइयाऽइइ॥ ईऽइइ। याऽइइइइ। औहोवा॥ ऊऽइइइइपा॥

(दी. ८। प. ७। मा. ५) १ (दु।३१७)

(१७९।२)

इन्द्रोदधाइ॥ चोअस्थाऽ२३४भीः। वृत्राणिया। प्रातिष्कुताः॥ जघानाऽ२३ना॥ वतीर्नवा।
 औऽ३होवा। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. ५। प. ९। मा. ५) २ (भु।३१८)

(१८०।१) ॥ पौषम्। पूषा गायत्रीन्द्रः॥

इन्द्रोहिमाहाउ॥ त्सीऽ३आन्धाऽ३साः। वाइश्चेभिस्सोऽ२३हाऽ३। मापर्वाऽ२३४भीः।
 महा१२३॥ आऽ२भाऽ२३४औहोवा॥ ष्टिरोजसाऽ२३४५॥

(दी. ६। प. ७। मा. ६) ३ (खू।३१९)

(१८१।१) ॥ इन्द्रस्यमायम्, माया वा। इन्द्रो गायत्रीन्द्रो वृत्रहा वा॥

आतूऔहो। आतूऔहो॥ नइन्द्रवृत्राऽ२३४हान्। अस्माकमर्द्धम्। आगाऽ२३ही। गाहीऽ२॥
 माहाऽ२न्माहीऽ२३॥ मिरूऽ२३४वा। ताऽ५इभोऽ६हाइ॥

(दी. १०। प. ९। मा. ७) ४ (भो।३२०)

(१८२।१) ॥ इन्द्रस्य संवर्तस्य सांवर्ते वा द्वे। द्वयोरिन्द्रो गायत्रीन्द्रः॥

हा। हाउवाऽ३। ओजस्तदस्यतिबिषेऽ२३४॥ हा। हाउवा। उभेयत्समवर्तयाऽ२३४त्॥ हा।
 हाउवाऽ३। इन्द्रश्चर्मोऽ२वरोदसीऽ२३४५॥

(दी. ४। प. ९। मा. ४) ५ (धी।३२९)

(१८२।२)

ओजस्तदाऽ५स्यतिबिषाइ॥ उभेयत्समवर्तयादाऽ१इन्द्राऽ२३ः॥ चाऽ२र्माऽ२३४औहोवा॥
 वरोदसीऽ२३४५॥

(दी. ५। प. ४। मा. ४) ६ (भौ।३२२)

(१८३।१) ॥ आंगिरस्सस्य शौनःशेषम्, च्यावनं वा। शुनःशेषो गायत्रीन्द्रः॥

अयाऽ५मु। ताऽ३इसाऽ३मातसाइ॥ कापोतइ। वगार्भाऽ१धीऽ२म्॥ वाचाऽ२स्ताचीऽ२इत्॥
नओऽ२३४वा। हाऽ५सोऽ६हाइ॥

(दी. २। प. ७। मा. ७) ७ (छे।३२३)

(१८४।१) ॥ प्रतीचीनेडं काशीतम्। काशीतो गायत्रीन्द्रो वायुर्वा॥

वातआवातु। भाऽ५इषजाम्॥ शा०भुमयः। भुनोहदाऽ२३४इ। हाहोइ॥ प्रनआयू०पीऽ३ता॥
रिषात्। औऽ२३होवा॥ ईडा॥

(दी. ५। प. ९। मा. ८) ८ (भौ।३२४)

॥ द्वादशप्रथमः, सप्तमः खण्डः॥७॥ दशतिः॥९॥

(१८५।१) ॥ सौमित्रम्। सुमित्रो गायत्रीन्द्रो विश्वेदेवा वा॥

य०रक्षन्तिप्रचेतसा॥ वरुणोमित्रोअर्याऽ२३मा॥ न। काइस्साऽ२३दा॥ हिंमायेऽ३।
भ्याऽ२ताऽ२३४ओहोवा॥ जाऽ२३४नाः॥

(दी. ५। प. ७। मा. ५) ९ (फु।३२५)

(१८६।१) ॥ श्यावाश्वे द्वे। द्वयो श्यावाश्वो गायत्रीन्द्रः॥

गव्योषुणोयथापुरा॥ अश्वयोतरथा। यावरिवस्या॥ मा। होमाऽ२३॥ होनाऽ३४ओहोवा॥
ऊऽ२३४५पा॥

(दी. ८। प. ७। मा. १) १० (द्व।३२६)

(१८६।२)

गव्योषुणोयथापुराऽदए॥ अश्वयोऽशत। रथाऽ२। या। वरिवाऽ२स्या॥ महो।
महोऽ२नाऽ२३४औहोवा॥ ईऽ२३४५॥

(दी. ६। प. ८। मा. २) ११ (ग्रा।३२७)

(१८७।१) ॥ शैखण्डिनम्। शिखण्डी गायत्रीन्द्रः॥

इमास्तई॥ द्रपृश्नयोघृतदूऽ३हा। औहोऽ३हाऽ३। हाऽ३इ। ताआऽ२शाऽ२३४इराम्॥
एनाऽ३४मृताऽ३॥ स्यपोऽ२३४वा। प्यूऽ५षोऽ६हाइ॥

(दी. ४। प. ८। मा. ६) १२ (दू।३२८)

(१८८।१) ॥ वैतहव्यम्। वीतहव्यो गायत्रीन्द्रः॥

अयाधियाचगव्याऽदया॥ पुरुणाऽ३। मन्पूऽ२३४रू। घृतौ। वाऽ३२। यत्सोमेऽ३सोमआ॥
यात्सोमेऽ२सो। मओऽ२३४वा। भूऽ५वोऽ६हाइ॥

(दी. ८। प. ९। मा. ३) १३ (ढि।३२९)

(१८९।१) ॥ भारद्वाजम्। भरद्वाजो गायत्रीन्द्रः सरस्वती वा॥

पावकानईया॥ सरास्वाऽशतीऽ२। वाजेभिर्वा। जिनाइवाऽशतीऽ२॥ यज्ञाऽ२३म्॥
वाऽ२घृऽ२३४औहोवा॥ धियावसूऽ२३४५॥

(दी. ७। प. ७। मा. ५) १४ (छु।३३०)

(१९०।१) ॥ आरुणस्य वैतहव्यस्य वा साम्, सौभरं वा। आरुणोगायत्रीन्द्रः॥

^{४ ५ ४} कइमम्। ^{५ ४} उहुवाहाई॥ ^५ नाहुऽ३षाड्पूऽ१वाऽ२। ^५ आइन्द्र५सोम। ^५ स्यता१र्पाऽ१याऽ२त्।
^१ सानोऽ२वसू। ^१ नियाभाऽ१राऽ२त्॥ ^१ सनोऽ२वसूनि॥ ^१ आऽ२३। ^१ भराउवा॥
^१ आगहियेहिताइमेऽ१॥

(दी. ८। प. ११। मा. ९) १५ (टो।३३१)

(१९१।१) ॥ सौभरम्। सुभरिर्गायत्रीन्द्रः॥

^५ आयाहिसू। ^२ पुमाहाऽ१इतेऽ२। ^२ पुमाहाऽ१इतेऽ२। ^१ आइन्द्रसोमम्। ^१ पिबाइमम्।
^१ पिबाआऽ१इमाऽ२म्॥ ^३ एदंबर्हाइः॥ ^२ सदोमाऽ२३माऽ३४३। ^१ ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ४। प. १०। मा. १२) १६ (ना।३३२)

(१९२।१) ॥ पाष्ठौहे द्वे। द्वयोः पष्ठवाङ् गायत्रीन्द्रः॥

^३ महाइत्राऽ२३४इणाम्॥ ^५ अवाऽ२रस्तू। ^३ दुक्षमाऽ२३४इत्रा। ^५ स्याऽ२र्यग्णाः॥
^३ दुराधाऽ२३४र्षाम्॥ ^२ वरौहोऽ२३४। ^५ वा॥ ^५ णाऽ५स्योऽ६हाइ॥

(दी. १। प. ८। मा. ७) १७ (गो।३३३)

(१९२।२)

^५ महित्रीणामवरस्तूऽ६ए॥ ^५ दुक्षमित्रस्यार्यग्णाः॥ ^५ दुराधाऽ२३४र्षाम्॥ ^५ वरौहोऽ२। ^५ हिंमाऽ२। णा
^१ स्योऽ२। ^३ याऽ२३४ओहोवा॥ ^५ हाओवा। ^५ ओवाऽ२३४५॥

(दी. ७। प. १०। मा. ५) १८ (त्रु।३३४)

(१९३।१) ॥ धुरासाकमश्वम्। साकमश्वो गायत्रीन्द्रः॥

^{११ २} ^{न २} ^{१ २ २} ^{न २} ^{२ १ २} ^{न २}
 बावतोऽ३। होऽ३होऽ३१इ॥ पुरुवसोऽ३। होऽ३होऽ३१इ॥ वयमिन्द्राऽ३। होऽ३होऽ३१इ।
^{१ २ २} ^{न २} ^{१ २} ^{न २} ^{१ २ २}
 प्रपेतऽ३ः। होऽ३होऽ३१इ॥ स्मसिस्थातऽ३ः। होऽ३होऽ३१इ॥ हरीणाऽ३म्।
^{न २}
 होऽ३होऽ३१२३४५इ॥ डा॥

(दी. ५। प. १३। मा. ९) १९ (बो।३३५)

॥ एकादश द्वितीयः, अष्टमः खण्डः॥८॥ दशतिः॥१०॥

॥ इति द्वितीयः प्रपाठकः॥२॥

(१९४।१) ॥ यामम्। यमो गायत्रीन्द्रः॥

^{५ २} ^{२ ५ ५} ^{२ ११} ^{२ ११} ^{१ १}
 उबामन्दन्तुसोहोमाः॥ कृणोहो। प्वरौहो। धाअद्रिवाः॥ आ वब्राऽ२३इहा॥ द्विषाऽ२ः।
[—] ^{न २} ^२ ^{१ १ ३} ^{१ २} ^{१ १ १}
 हाऽ२इ। औऽ३होऽ३१येऽ३। जाऽ२हाऽ२३४औहोवा॥ एऽ३। ययूऽ२३४५ः॥

(दी. ७। प. १२। मा. ७) २० (छे।३३६)

(१९५।१) ॥ आंगिरसां हरिश्चीनिधनम्। अंगिरसो गायत्रीन्द्रः॥

^{५ ५} ^{२ ५ ५} ^५ ^५ ^१ ^{१ २ २ २ २ १} ^१
 गिर्वणःपाहिनःसुतम्। गिर्वणःपा॥ हिनःसुताऽ२म्। मधोर्धाराभिराहोऽ२। ज्यासेऽ२३।
^२ ^१ ^२ ^{१ २} ^{१ १ ३} ^{१ २} ^{१ १ १}
 हाउवा॥ इन्द्राबाऽ२३दा॥ तमायेऽ३त्। याऽ२शाऽ२३४औहोवा॥ हरीऽ३श्रीऽ२३४५ः॥

(दी. ६। प. १०। मा. ६) २१ (डू।३३७)

(१९६।२) ॥ वैरूपम्। विरूपो गायत्रीन्द्रः॥

^{५ ५} ^२ ^{२ ३ ५ ५} ^{२ २} ^{१ २ १} ^{३ १ १} ^२
 सादा॥ वइन्द्राऽ३ः। चकृषादा। उपोनुसाऽ३ः। सापर्यन्॥ नदेवाऽ२३ः॥ वृताऽ३४३ः।
^२ ^२ ^५
 शूऽ३४३। राऽ३आऽ५इन्द्राऽ६५६ः॥

(दी. २। प. ९। मा. ९) २२ (झो।३३८)

(११७।१) ॥ आसितं सिन्धुषाम वा। असितो गायत्रीन्द्रः॥

अ र ५ ० १ ० १ ० ० १ ० १ ० ० १ र र ० र
आत्वाविशंबिन्दाऽद्ववाः॥ समुद्रमिवसिन्धवः। समुद्रमि। वसिन्धाऽ२३वाः। नत्वामिन्द्रातिरिच्यते॥
नत्वामाऽ२३इन्द्रा॥ तिरिच्याऽ२३ताऽ३४३इ। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ६। प. १। मा. ६) २३ (घू।३३९)

(११८।१) ॥ यमस्य इन्द्रस्य वा अर्कः (अर्कम्)। यमो गायत्रीन्द्रः॥

५ ३ अ ३ अ ५ ० १ ० १ ० १ ० ० १ ० ०
इन्द्रमिद्राधिनोबृहात्॥ इन्द्रमर्काइ। भिरर्किणाः॥ इन्द्रवाणीऽ३। हाऽ३हाइ॥
अनूऽ५षता। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. २। प. ८। मा. ६) २४ (जू।३४०)

(११९।१) ॥ सौमित्रे द्वे। द्वयोः सुमित्रो गायत्रीन्द्रः ऋभुर्वा॥

५ ५ अ ५ र ५ ० १ ० १ ० ३ ३ ३ ५ अ र ३ ०
इन्द्रइषेददातुनः। ओहाइ॥ ऋभु। क्षणाऽ२म्। ऋभुःराऽ२३४यीम्। वाजीददातुवाऽ३॥
वाजीददा॥ तुवोऽ२३४वा। जाऽ५इन्द्रोऽ६हाइ॥

(दी. ६। प. १। मा. ७) २३ (घे।३४९)

(११९।२)

५ र र ५ ० १ ० ३ ३ ३ १ ० ३ ०
इन्द्रइषेददातुनाऽदए॥ ऋभुक्षणम्। भूऽ२१२३म्। रयीऽ३४३म्॥ वाऽ२३जी॥
ददाऽ२ओऽ२३। तुवोवा। जाऽ५इन्द्रोऽ६हाइ॥

(दी. २। प. ८। मा. ७) २६ (जे।३४२)

(२००।१) ॥ इन्द्रस्याभयङ्करम्। इन्द्रो गायत्रीन्द्रः॥

इन्द्रोअंगा॥ महद्वाऽ२३याम्। आभीषदा पचुच्याऽ२३वाऽ३४त्॥ सहाऽ३४इस्थिराऽ३॥

विचोवा। पाऽ५णोऽ६हाइ॥

(दी. २। प. ७। मा. ६) २७ (छू।३४३)

(२०१।१) ॥ बाष्ठी साम। बष्ठा गायत्रीन्द्रः॥

इमाउबा॥ सुताइसुताइ। नक्षन्ताऽ२३इगीऽ३४ः। वनः। गाऽ३इराः॥ गावोवाऽ३त्साऽ३म्॥

नधोऽ२३४वा। नाऽ५वोऽ६हाइ॥

(दी. २। प. ८। मा. १०) २८ (जौ।३४४)

(२०२।१) ॥ पौषम्। पूषा गायत्रीन्द्रः इन्द्रापूषणौ वा॥

इन्द्रानुपू॥ षणावाऽ२३याम्। साख्याया सुवस्ताऽ२३याइ॥ हूवेऽ२मावाऽ२३॥

जसोऽ२३४वा। ताऽ५योऽ६हाइ॥

(दी. ३। प. ७। मा. ३) २९ (ठा।३४५)

(२०३।१) ॥ इन्द्राण्याः साम। इन्द्राणी गायत्रीन्द्रः॥

ना। केनाकी॥ आइन्द्रबदुत्तराम्। नज्यायोऽ२। अस्ताऽ२३इवृ। हिम्ऽ३स्थिहिम्।

त्राऽ२३४हान्॥ नक्ये। वयाऽ२३था॥ हिम्ऽ३स्थिहिम्ऽ३४३। तूऽ३४५वोऽ६हाइ॥

(दी. ३। प. ११। मा. ९) ३० (टो।३४६)

एकादशस्तृतीयः, नवमः खण्डः॥९॥ दशतिः॥१॥

(२०४।१) ॥ श्यावाश्वं तारणं वा। श्यावाश्वो गायत्रीन्द्रः॥

तरणिंवाः। जनाऽ२३नाम्। त्रदवाजाऽ३हाऽ३। स्यागोमाऽ२३४ताः॥ समानाऽ२३मू॥

प्रशाऽ५सिषाम्। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. २। प. ८। मा. ५) ३१ (जु।३४७)

(२०५।१) ॥ वैरूपं। विरूपो गायत्रीन्द्रः॥

असृग्रमाइन्द्राऽ६तेगिराः॥ प्रातीऽ२त्नामूऽ२त्। अहा। सता॥ साऽ१जोऽ२षावाऽ२॥

षभाऽ२०पतिम्। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ३। प. ८। मा. ५) ३२ (डु।३४८)

(२०६।१) ॥ सौमित्रम् कौत्सं वा। सुमित्रो गायत्रीन्द्रः॥

सुनीथोघाऽ५समर्तियाः॥ यंमरुतोऽ२यमर्यमा॥ मित्रास्पात्यद्बुहः॥ ऊऽ। ऊऽऽ।

वाहाऽ३१उवाऽ२॥ अतिद्विषाऽ२३४५ः॥

(दी. ७। प. ७। मा. ४) ३३ (छी।३४९)

(२०७।१) ॥ तौभम्। तुभो गायत्रीन्द्रः॥

औहोवाऔहोऽ२३४वा। ओऽ६हा। यद्वीडावीऽ३०द्राऽ३यत्स्थिराइ॥ औहोवाऔहोऽ२३४वा।

ओऽ६हा। यत्पर्शनेऽ३पाऽ३राभृतम्॥ औहोवाऔहोऽ२३४वा। ओऽ६हा।

वसुस्पार्हाऽ३०ताऽ३दाभर॥ औहोवाऔहोऽ२३४वा। ओऽ६हा। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. २२। प. १३। मा. ७) ३४ (जे।३५०)

(२०८।१) ॥ श्रौतम्। श्रुतो गायत्रीन्द्रः॥

श्रुताम्॥ वोवृत्रहन्तमम्। प्रशर्द्धचर्षणाऽ२३इनाम्॥ आशाइषाऽ२३इरा॥ धसेमहा।
औऽ३होवा। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. ३। प. ८। मा. ७) ३५ (डे।३५१)

इति ग्रामे गेय-गाने पञ्चमः प्रपाठकः॥५॥

(२०९।१) ॥ आभीशवम्। अभिशुर्गायत्रीन्द्रः॥

अरंतइन्द्रश्रवसेए। ए॥ गमाइमशूरत्वावताऽ३ः। होवाऽ३हाइ॥ अरांशाऽ१क्राऽ२३।
होवाऽ३हाइ॥ पराइमाऽ२३णाऽ३४३इ। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ३। प. ९। मा. ९) १ (ढो।३५२)

(२१०।१) ॥ पौषम्। पूषा गायत्रीन्द्रः॥

धानावतंकराभिणाम्॥ अपूपवन्तमूऽ१कधीऽ३नाम्॥ इन्द्राप्राऽ२३४ताः। ओऽ२३४हाइ॥
जुषोवा। स्वाऽ५नोऽ६हाइ॥

(दी. ३। प. ६। मा. ५) २ (टो।३५३)

(२११।१) ॥ इन्द्रस्य क्षुरपवि। इन्द्रो गायत्रीन्द्रः॥

अपाफेनेननमुचेः॥ शिरइ। द्रोत्। अवाऽ२र्त्ताऽ२३४याः॥ वाइश्चोऽ२३ः॥
याऽ२दाऽ२३४ओहोवा॥ जयस्पृधाऽ२३४५ः॥

(दी. ५। प. ७। मा. ८) ३ (फो।३५४)

(२१२।१) ॥ सौमित्रे द्वे। सुमित्रो गायत्रीन्द्रः॥

इमेतआ॥ द्रसोमाः। होवाऽ३होइ। सुतासोयेऽ३। चासोतूऽ२३४वाः॥ तेऽ४षाम्।
हाऽ३हाइ॥ मात्स्वप्रभूऽ२३४वा। वाऽ५सोऽ६हाइ॥

(दी. ५। प. ९। मा. ७) ४ (भो।३५५)

(२१३।१)

तुभ्यश्हाउ॥ सुतासस्सोमाः। स्तीर्णबाऽ२३३र्हीः। विभाऽ२होऽ१इ। वाऽ२३साउ॥

स्तोताऽ३उवाऽ३॥ भ्यआऽ२इ। द्रमृऽ३४औहोवा॥ डाऽ२३४या॥

(दी. ६। प. ९। मा. ९) ५ (घो।३५६)

दश चतुर्थः, दशमः खण्डः॥१०॥ दशतिः॥२॥

(२१४।१) ॥ कौत्से द्वे। कुत्सो गायत्रीन्द्रः॥

आवहन्द्राम्॥ कृविंयथा। वाजयाऽ२३०ताः। शताक्रतुम्॥ मश्हिष्ठाऽ२३३सी॥

चायाऽ३उवाऽ३इ॥ दूऽ२३४भीः॥

(दी. २। प. ७। मा. ७) ६ (छे।३५७)

(२१५।१)

अतश्चिदिद्रिनउपाऽ६ए॥ आयाहिशा। तवाजाऽ२३याऽ३४॥ इपाऽ३४सहाऽ३॥

स्रवोऽ२३४वा। जाऽ५ययोऽ६हाइ॥

(दी. २। प. ६। मा. ३) ७ (चि।३४८)

(२१६।१) ॥ औषसम्। उषा गायत्रीन्द्रः॥

आबुन्दवृ॥ त्रहादा दाइ। जातःपृच्छाऽ३त्। विमाऽ२ताऽ२३४राम्॥ कउग्राऽ२३के॥

हाशृण्विरे। इडाऽ२३भाऽ३४३। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ३। प. १०। मा. ५) ८ (णु।३५९)

(२१७।१) ॥ भारद्वाजम्। भरद्वाजो गायत्रीन्द्रः॥

वृबदुक्थहाऽद्वामहाइ॥ सार्पाऽरकाराऽर। स्मू। तयाइ॥ साऽशधाऽरःकाण्वाऽर३।

तमोऽर३४वा। वाऽधसोऽद्वहाइ॥

(दी. २। प. ७। मा. ३) ९ (छि।३६०)

(२१८।१) ॥ कौत्सं। कुत्सो गायत्रीन्द्रः॥

ऋजुनीतीनोवरुणः। इहा॥ मित्रोनयतिविद्वाऽर३त्साः। इहा॥ अर्यमादाऽर३इवाइ। इहा॥

सजोषाऽर३उवाऽर३॥ ईऽर३४हा॥

(दी. ५। प. ८। मा. ५) १० (बु।३६१)

(२१९।१) ॥ औषसम्। उषा गायत्रीन्द्रः अश्विनो वा॥

दूरादोऽर३हेवयत्सताः॥ अरुणप्सुराशिश्वाऽर३इतात्॥ विभानूऽर३०वी॥ श्वाथातनत्।

इडाऽर३भाऽर३४३। ओऽर३४५इ॥ डा॥

(दी. ५। प. ७। मा. ५) ११ (फु।३६२)

(२२०।१) ॥ मित्रावरुणयोः संयोजनम्। मित्रावरुणौ गायत्रीन्द्रः मित्रावरुणौ॥

आनोमित्रा। वरुणाऽर३। औहोवाऽर३४॥ घृतैर्गव्यूतिमु। क्षताऽर३म्। औहोवाऽर३॥

माध्वारजाऽर३सिपूऽर३। औहोवाऽर३॥ ऋतू। इडाऽर३भाऽर३४३। ओऽर३४५इ॥ डा॥

(दी. ११। प. १२। मा. २) १२ (खा।३६३)

(२२१।१) ॥ ऋतुषामा। ऋतवो गायत्रीन्द्रो मरुतो वा॥

उदुत्येसूनाऽद्वोगिराः। काष्ठाय। ज्ञाइ। पुवाऽर३त्ताऽर३४ता॥ वाश्राऽर३भीऽर३॥

जूऽर३याऽर३। ताऽर३४५वोऽद्वहाइ॥

(दी. ६। प. ७। मा. ४) १३ (खी।३६४)

(२२२।१) ॥ विष्णोः साम। विष्णुर्गायत्री विष्णुः॥

इ^५दा^५ऽ^३द^३मे॥ वि^३ष्णु^३ऽ^३ः। वि^३च^३क्रा^३ऽ^३२३४मा^५इ। त्रा^१इ^२धा^१नि। द^१धा^३इ^३पा^३ऽ^३१दा^३ऽ^३२म्॥ स^३मू^३ऽ^३२हो^३ऽ^३१।
ढा^३ऽ^३२३मा^३ऽ^३३॥ स्या^३ऽ^३२पा^३ऽ^३२३४औ^३हो^३वा॥ ए^३ऽ^३३। सु^३ले^३ऽ^३१॥

(दी. ३। प. १०। मा. ५) १४ (णु।३६५)

नव पञ्चमः, एकादशः खण्डः॥११॥ दशतिः॥३॥

(२२३।१) ॥ कौत्सम्। कुत्सो गायत्रीन्द्रः॥

अ^५र्ती^२हि^१मा॥ न्यु^३षा^३ऽ^३२वा^३इ^३णा^३ऽ^३२म्। सु^३षु^३वा^३ऽ^३सा^३ऽ^३२म्। हो^३इ। ऊ^३पै^३ऽ^३१रा^३या^३ऽ^३२॥
अ^३स्य^३रा^३ता^३ऽ^३२३उ॥ सू^३ऽ^३२ता^३ऽ^३२३४औ^३हो^३वा॥ पी^३ऽ^३२३४बा॥

(दी. ४। प. ८। मा. ६) १५ (दू।३६६)

(२२४।१) ॥ काश्यपम्, आप्सरसं वा। कश्यपो गायत्रीन्द्रः॥

क^३दु^३प्र^३चे^३त^३स। म^३हा^३ऽ^३३इ॥ वा^३ऽ^३२३४चो। दे^३वा^३हा^३उ। व^३चो^३दे^३वा। य^३श^३स्या^३ऽ^३२३ता^३ऽ^३३इ॥
त^३दा^३ऽ^३३४इ^३द्वि^३या^३ऽ^३३॥ स्य^३वो^३ऽ^३२३४वा। धा^३ऽ^३५नो^३ऽ^३६हा^३इ॥

(दी. ५। प. ९। मा. ५) १६ (भु।३६७)

(२२५।१) ॥ बार्हदुक्थे द्वे। द्वयोर्बृहदुक्थो गायत्रीन्द्रः॥

उ^५क्थं^५च^५नो^५हा^५इ॥ श^३स्य^३मा^३न^३म्। ना^३गा^३रा^३ऽ^३२३यीः। आ^३चि^३के^३ता॥ न^३गा^३या^३ऽ^३२३त्रा^३म्। गी॥
य^३मा^३ऽ^३२ना^३ऽ^३२३४औ^३हो^३वा॥ ऊ^३ऽ^३२३४पा॥

(दी. ९। प. ८। मा. ५) १७ (द्वु।३६८)

(२२६।१)

इन्द्रोक्थाइ॥ भिर्मान्दाष्टोऽइ। वाजानाऽ२३४०चा। वाजपतिः॥ हराऽ२इवाऽ२३४त्सू॥
तानाऽ२३सा। खा। औऽ३होवा। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. ३। प. १०। मा. ६) १८ (णु।३६९)

(२२७।१) ॥ कौत्सम्। कुत्सो गायत्रीन्द्रः॥

आयाही॥ उपनस्सुतम्। होवाऽ३हाइ। वाजेऽ२भिर्माहणीयथाऽ३। होवाऽ३हाइ॥
महाऽइवयुवाऽ२३। होवाऽ३हाऽ३इ॥ जाऽ२नाऽ२३४औहोवा॥ ऊऽ३२३४पा॥

(दी. ९। प. ९। मा. ७) १९ (भ्ले।३७०)

(२२८।१) ॥ कौत्से द्वे। द्वयोः कुत्सो गायत्रीन्द्रः॥

ओऽ२होऽ१इ। कदावसो। स्तोत्राऽ३म्। हर्यताआ॥ ओऽ२होऽ१इ। अवश्मशा।
रुधादूऽ२३४वाः॥ ओऽ२होऽ१इ। दीर्घाऽसुतम्॥ वाताऽ३४३। पीऽ३याऽ५याऽ६५६॥
ईऽ२३४५॥

(दी. ५। प. १२। मा. ७) २० (फ्रे।३७१)

(२२८।२)

कदाऽ३४औहोवा। वसो। स्तोत्राऽ३म्। हर्यताआ॥ अवाऽ३४। औहोवा। श्मशाऽ२।
रुधादूऽ२३४वाः॥ दीर्घाऽ३४औहोवा। सुताऽ२३म्॥ वाताऽ३४३। पीऽ३याऽ५याऽ६५६॥

(दी. ८। प. १२। मा. ६) २१ (ठू।३७२)

(२२९।१) ॥ और्ध्व (अर्ध) सद्मनम्। ऊर्ध्वसद्मा गायत्रीन्द्रः॥

ब्राह्मणादी। द्रराधसाः। पिबासोमाऽ२म्। ऋतूँरनू॥ तवेदाऽ२साऽ२३॥ ख्याऽ२३माऽ३।
स्ताऽ३४५र्तोऽ६हाइ॥

(दी. ६। प. ७। मा. ३) २२ (खि।३७३)

(२३०।१) ॥ और्ध्व (अर्ध) सद्मनम्। ऊर्ध्वसद्मा गायत्रीन्द्रः॥

वयंघातेअपिस्मसाइ॥ स्तोतारइन्द्रगिर्वणाः। ववाऽ२३होइ॥ तूवन्नोजीऽ२। ववाऽ२३हो॥
न्वसोऽ२३। माऽ२पाऽ२३४औहोवा॥ एऽ३। उपाऽ२३४५॥

(दी. ६। प. ९। मा. ६) २३ (घू।३७४)

(२३१।१) ॥ अभीपादस्य औदलस्य साम। उदलो गायत्रीन्द्रः॥

एन्द्रपृक्षुकासुचीऽ६दे॥ नृमणाम्। तनूषुऽ३धाइहाऽ१इनाऽ२ः॥ सात्राजिदु॥ ग्रपोऽ२३सासियाउ।
वाऽ३। ऊऽ३४पा॥

(दी. ४। प. ७। मा. ५) २४ (थ्यु।३७५)

(२३२।१) ॥ आमहीयवं उक्थ्यामहीयवम् वा। अमहीयुर्गायत्रीन्द्रः॥

एवाहोऽ३असिवीरयूः॥ एवाशूऽ१राऽ२ः। उताऽ२३स्त्रिराः॥ आइवातेरा॥ धियाऽ२३मनाउ।
वाऽ३॥ स्तोषेऽ२३४५॥

(दी. ७। प. ७। मा. ६) २५ (छू।३७६)

॥ एकादश षष्ठः, द्वादशः खण्डः॥१२॥ दशतिः॥४॥

इति द्वितीयोऽध्यायः॥२॥

॥ इत्येन्द्राख्ये तृतीये गाने एकसाम्याख्यं तृतीयं तन्त्रं संपूर्णम्॥

(२३३।१) ॥ भरद्वाजस्यार्को द्वौ द्वयोर्भरद्वाजा बृहतीन्द्र ईशानेन्द्रौ वा॥

अभिबाशू॥ रनोनुमाऽ२ः। ओइनूऽ३माः। आदुग्धाइ। वधाइनवाऽ२ः। ओइनाऽ३वाः।
आइशानमस्यजगतः। सुवार्दशम्। आर्दऽ३शाम्॥ आइशानमि॥ द्रतास्थुषः। आऽ२३।
स्थुऽ२। षाऽ२३४। औहोवा॥ स्थुषःस्थुषाऽ२३४५॥

(दी. ६। प. १६। मा. १५) २६ (कु।३७७)

(२३३।२)

अभिबाऽ३शूरनोनुमा॥ आदुग्धाइवा। धाइनाऽ२३वाः। आइशानमस्याजग। ताः।
सुवाऽ२र्दऽ२३४शाम्॥ ईशानाऽ२३मी॥ द्रातस्थुषः। इडाऽ२३भाऽ३४३। ओऽ२३४५इ॥

डा॥

(दी. ६। प. ११। मा. ९) २७ (को।३७८)

(२३४।१) ॥ इन्द्रस्य भारद्वाजे द्वौ द्वयोर्भरद्वाजो बृहतीन्द्रः॥

बामिद्धी॥ हवाऽ२महे। आ। ओऽ३होवाहाउवाऽ३। ऊऽ३४पा। सातौवाज।
स्यऽ३काऽ२रवः। आ। ओऽ३होवाहाउवाऽ३। ऊऽ३४पा॥ बावृत्राइषुड। द्रसाऽ२त्पतिम्।
आ। ओऽ३होवाहाउवाऽ३। ऊऽ३४पा॥ नरस्वाकाष्ठा। सुआऽ२र्वतः। आ।
ओऽ३होवाहाउवाऽ३॥ ऊऽ३२३४पा॥

(दी. १७। प. २०। मा. १०) २८ (श्लो।३७९)

(२३४।२)

बामिद्धिहवामह। सातौवाजोवा॥ स्याकाऽशरावाऽः। बावृत्राइपुइन्द्रसत्। पातिन्नाराऽः॥

बांकाऽः३३। सुअर्वाऽः३ताऽः३३३। ओऽः३३३५इ॥ डा॥

(दी. ८। प. ९। मा. ८) २९ (ढा३८०)

(२३५।१) ॥ सान्नते द्वे। द्वयोः सन्नतिर्बृहतीन्द्रः॥

अभिप्रवाः॥ सुराधाऽः३साम्। इन्द्रमर्चयाथाऽः३विदाऽः३३३इ। योजाऽः३३रितृ।

भ्योमघवापूरुऽः३वाऽः३सूऽः३॥ सहाऽः३३॥ स्राऽः३इणाऽः३३३औहोवा॥ वशिक्षतीऽः३३३५॥

(दी. ६। प. ८। मा. ६) ३० (गू३८१)

(२३५।२)

अभाइप्रवाऽः३। सुराधाऽः३३साम्॥ इन्द्रामर्चाऽः३३। याऽः३थाऽः३३३औहोवा। वीऽः३३३३दे।

योजरितृभ्योमघवाऽः३पूरुवसुः॥ सहा॥ स्रेणेवऽः३शायेऽः३। क्षाऽः३ताऽः३३३औहोवा॥

सुमूऽः३३तयेऽः३३३५॥

(दी. १०। प. १०। मा. ६) ३१ (मू३८२)

(२३५।३) ॥ श्येतम्। प्रजापतिर्बृहतीन्द्रः॥

अभिप्रवस्सुरा। धसाऽः३३औहोवा॥ आइन्द्रमर्चा। यथाविदाऽः३३इ। ओऽः३३हा।

योजरितृभ्यः। माघाऽः३३वा। पुरुऽः३३। वाऽः३३३सूः॥ सहस्रेणावाइवाऽः३३शा॥ हिम्मायेऽः३३।

क्षाऽः३३ताऽः३३औहोवा॥ वाऽः३३३सू॥

(दी. ७। प. १३। मा. ७) ३२ (जे३८३)

(२३६।१) ॥ प्राजापतेर्नाविकम्। प्रजापतिर्बृहतीन्द्रः॥

^{४५} तं वः। ए^{४६}दास्मा^{५६}म्॥ ऋ^२ती^२षह^२म्॥ हा^२ऽ२इ॥ आ^१ओ^२ऽ३हो॥ इ^१हा॥ वा^१सो^२र्म^२न्दा^२न^२म^२न्धा^२सा^२ऽ३ः।
हा^२ऽ२इ॥ आ^१ओ^२ऽ३हो॥ इ^१हा॥ अ^१भि^२व^२त्स^२न्न^२स्व^२सरे^२षु^२धे^२न^२वा^२ऽ२ः। हा^२ऽ२इ॥ आ^१ओ^२ऽ३हो॥ इ^१हा॥
इ^१न्द्र^२म्॥ हा^२ऽ२इ॥ आ^१ओ^२ऽ३हो॥ इ^१हा॥ गी^३र्भा^३इः॥ ना^३ऽ२३४^३ओ^३हो^३वा॥ वा^३म^३हे^३ऽ२३४५॥

(दी. १०। प. २१। मा. १७) ३३ (पे। ३८४)

(२३६।२) ॥ अभीवर्तस्य इन्द्रस्य वा, अभीवर्तम्। अभीवर्तो बृहतीन्द्रः॥

तं वो^५ऽ३दा^५ऽ३स्मा^५मृ^५ती^५षहो^५वा॥ वा^१सो^२र्म^२न्दा^२। न^१मा^२न्धा^२ऽ१सा^२ऽ२ः। आ^१भि^२व^२त्सा^२ऽ३१२३४म्॥
न^३स्व^३सरे^३। षु^३धा^३इ^३ना^३ऽ१वा^३ऽ२ः॥ इ^३न्द्रा^३ङ्गा^३ऽ१इ^३र्भी^३ऽ२ः॥ न^३वा^३ऽ३। मा^३ऽ२३४५॥ हा^३ऽ२३४५इ॥

(दी. ४। प. १०। मा. ७) ३४ (ने। ३८५)

(२३६।३) ॥ अभीवर्तस्य भागम्। भगो बृहतीन्द्रः॥

तं वो^३द^३स्म^३मृ^३ती^३। ष^५हा^५ओ^५ऽ२३४वा॥ वा^५सो^५र्म^५न्दा^५न^५म^५न्धा^५सा^५ऽ२ः।
आ^१भि^२व^२त्स^२न्न^२स्व^२सरे^२षू^२धे^२ऽ१ना^२वा^२ऽ२ः। ओ^१ऽ३वा॥ इ^१न्द्र^१ङ्गा^१ऽ२३४इ^१र्भीः॥
न^२वा^२मा^२ऽ२३४५हा^२ऽ६५इ॥ भ^२गा^२ऽ३या^२ऽ२३४५॥

(दी. ६। प. ८। मा. ६) ३५ (गू। ३८६)

(२३६।४) ॥ आभीवर्त आभीवर्तम् वा। इन्द्रो बृहतीन्द्रः॥

तं वो^३द^३स्म^३मृ^३ती^३। ष^५हा^५ऽ३म्। वा^५ऽ२३४। सो^५र्म^५न्दा^५न^५म्। धा^५साः॥ अ^१भि^२व^२त्स^२न्न^२स्व^२सरे^२षू^२ऽ३धा^२इ॥
ना^२ऽ२३वाः॥ इ^१न्द्र^१ङ्गी^१र्भा^१इ^१र्ना^१ऽ३वा॥ हि^१ऽम्^१इ^१स्थि^१हि^१ऽम्^१इ^१। हि^१ऽम्^१इ^१स्थि^१हि^१म्। न^३वा^३न^३वो^३ऽ२३४वा॥
मा^४ऽ५हो^४ऽ६हा^४इ॥

(दी. ६। प. १२। मा. १०) ३६ (ग्वौ। ३८७)

(२३६।५)

॥ नोधसम्। नोधा बृहतीन्द्रः॥

ताऽ२३४म्। वोदस्ममृती। पाहाम्॥ वसोर्मन्दा। नाऽ३मान्धाऽ३साः। आऽ२३भी। वात्सन्ना।
स्वसा। राइ। पूधेनाऽ२३४वाः॥ आऽ२३इन्द्राम्॥ गाइभिर्नवोऽ२३४वा॥ माऽ२३४हे॥

(दी. ३। प. १३। मा. ८) ३७ (डै।३८८)

॥ इति ग्रामे गेय-गाने षष्ट्यार्द्धः प्रपाठकः॥

(२३७।१)

॥ लौशे द्वे। द्वयोर्लुशो बृहतीन्द्रः॥

तारो॥ भाइर्वोविदाऽ३१उवाऽ२३। वाऽ२३४सूम्। इन्द्राऽ२२सबाधतयेऽ२। बृहात्।
बृहाऽ३१उ। वाऽ२। गायन्तस्सुतसोमेध्वरे॥ हुवेभाऽ२३राम्॥ नाकारिणम्।
इडाऽ२३भाऽ३४३। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ११। प. १३। मा. १०) १ (गौ।३८९)

(२३७।२)

तारो॥ भाइर्वोविदाऽ३१उवाऽ२३। वाऽ२३४सूम्। इन्द्राऽ२२सबाधऊतयेऽ२।
बृहाद्वाऽ१याऽ२। तास्सुतसोऽ२। मेअध्वराइ॥ हुवेभाऽ२३राम्॥ नाकारिणम्।
इडाऽ२३भाऽ३४३। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ८। प. १२। मा. ९) २ (ठो।३९०)

(२३७।३)

॥ धानाके द्वे। द्वयोर्धानाको बृहतीन्द्रः॥

५ र र ४ ५ २ र १ २
तरोभिर्वोविदद्वासूम्॥ इन्द्राम्। इन्द्रसबाधऽऽऊताऽश्याऽऽइ॥ बृहात्।

र र १ २ र र १ २
बृहद्गायन्तस्सुतसोमऽऽआध्वाऽशराऽऽइ॥ हुवाइ। हुवेभरन्नकारिणम्। इडाऽऽऽभाऽऽऽ३।
ओऽऽऽ४५इ॥ डा॥

(दी. ७। प. १०। मा. १०) ३ (जौ।३९१)

(२३७।४) ॥ क्षुल्लककालेयं वा॥

५ र र ५ २ १ ३ ५ २ १ २
तरोभिर्वोविदाऽऽद्वसूम्॥ इन्द्रसबाऽऽ। धऊऽऽताऽऽऽयाइ। बृहात्। बृहाऽऽऽउ। वाऽऽ।
११ २ १ ११ र ११ २ ११ २ १ २ १ २
गायन्तस्सुतसोमेध्वरे॥ हुवेहोइभाऽऽऽराम्॥ नाकारिणम्। इडाऽऽऽभाऽऽऽ३।
ओऽऽऽ४५इ॥ डा॥

(दी. ८। प. १२। मा. १०) ४ (ठौ।३९२)

(२३७।५) ॥ कालेयानि त्रीणि। त्रयाणां कालेयो बृहतीन्द्रः॥

१ २ ५ २ र १ २ न २ ५ ३ ५ ५
तरोऽऽऽभिर्वो। विदाऽऽद्वसूम्॥ इन्द्रसबाऽऽधाऊऽशतायाऽऽइ। ओऽऽऽवा। ओऽऽऽवा।
२ र र १ अ न २ ५ ३ ५ १
बृहद्गायन्तस्सुतसोऽऽमाअध्वाराऽऽइ। ओऽऽऽवा। ओऽऽऽवा॥ हुवाइभराम्॥
१ २ ३ ५ ३ ५ ३
नाकाराऽऽऽइणाम्। ओऽऽऽवा। ओऽऽऽ४५इ॥ डा॥

(दी. ३। प. १३। मा. १०) ५ (डौ।३९३)

(२३७।६)

^{१ २} तरोभिर्वोऽ२। ^{३ ३ ३} विदद्वाऽ२३४सूम्॥ ^{५६} इन्द्रश्सबाऽ३धाऊऽ१तायाऽ२इ। ^७ औऽ३होऽ३वा। २।
^१ बृहद्वायतस्सुतसोऽ३माअध्वाऽ२इ। ^३ औऽ३होऽ३वा। ^५ औऽ३होऽ३वा॥ ^७ हुवाइभाऽ१राऽ२म्।
^१ औऽ३होऽ३वा। ^३ औऽ३होऽ३वा॥ ^५ नाकारिणम्। ^७ इडाऽ२३भाऽ३४३। ^९ ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ५। प. १५। मा. ९) ६ (मो।३९४)

(२३७।१)

^{५ २ ३} तरोभाऽ३इर्वोविदद्सूम्॥ ^{५ ५ ५} इन्द्राश्सबा। ^{१ ३ ३ १} धऊतयाऽ२३इ। ^{३ ३ २ ३} बृहद्वायाऽ३। ^१ ताऽ२३४ः।
^{३ ५ ५} सुतसोमेआ ध्वाऽ३राइ। ^{१ ३ ३} हुवाइभरो। ^{३ ३ ३ ३} वाऽ३४३ओऽ३४वा॥ ^{५ ५} नकाऽ५रिणाम्। ^५ होऽ५इ॥ डा॥

(दी. ६। प. १२। मा. ११) ७ (खा३९५)

(२३८।१)

॥ ऐषिरे द्वे। द्वयोरिषिरो बृहतीन्द्रः॥

^{५ ६} तरणिरीत्॥ ^{३ ३ ५ ५} सिषाऽ३साती। ^{५ १ ३ १ ६} वाजां०पुराम्। ^{३ २ १} धियायुजा। ^{३ ५ ५ ३ १ ३ १} आवाऽ३आइद्राम्॥ ^{३ १ ३ १} पुरूहूतम्।
^{३ २ १} नमेगाइरा॥ ^{१ ३ ५ ५} नाइमीऽ३०ताष्टे॥ ^{१ १ १} वासुद्गुवाऽ२३४५म्॥

(दी. ५। प. १। मा. ९) ८ (भो।३९६)

(२३८।२)

^{५ ६} तराहाउ॥ ^{३ ३ १ ३} णिरित्सिऽ३षासति। ^{१ ३} हयाइ। ^{१ ३} हयाइ। ^{१ ३} वाजंपुरम्। ^{१ ३ ५ ३} धियायूजौ। ^३ होवाऽ३हाइ।
^{५ ३ ३ ३} आवइन्द्रं०पुरूहूतम्। ^{१ ३ ५ ३} नमाइगाइरौ। ^{३ ३ ३ ३} होवाऽ३हाइ॥ ^{३ ३ ३ ३} नेमितष्टेवऽ३सा॥
^{३ ३ ३ ३} औऽ३होवाहाऽ३४ओहोवा॥ ^{३ ५ ३ ५ ६} उप्। ^{५ ६} दूऽ२३४वाम्॥

(दी. १२। प. १४। मा. १३) ९ (झि।३९७)

(२३८।३)

॥ गौशृंगे द्वे। द्वयोगौशृंगो बृहतीन्द्रः॥

^{४३ ४३ ४ ५} तरणिरित्तिषा। ^२ साऽऽती। ^४ वाजंपुरंध्यायुजा॥ ^{५ ४ ५} वाजंपुरंध्यायुजा। ^५ वआऽऽइन्द्राऽऽ४म्।
^४ पुरुहूतंनमे। ^५ गाऽऽइरा॥ ^५ नेमाइन्ताऽऽइष्टे॥ ^५ वसुद्वम्। ^५ इडाऽऽइभाऽऽ४३। ^५ ओऽऽइ४५इ॥
 डा॥

(दी. ९। प. १२। मा. ७) १० (थै।३९८)

(२३८।४)

^{४३ ४३ ४ ५} तरणिरित्तिषा। ^{३ २} सतीऽऽ। ^५ वाऽऽइ४। ^५ जंपुरंधिया। ^{४ ५} युजा॥
^५ वाजंपुरंध्यायुजावइन्द्रंपुरुहूतन्नमाऽऽइगाइराऽऽ। ^५ हाऽऽऊऊवाइ॥
^५ नोमितष्टेवसोवाऽऽओऽऽइ४वा॥ ^५ द्वाऽऽवोऽऽइहाइ॥

(दी. ८। प. ९। मा. ८) ११ (ढै।३९९)

(२३९।१) ॥ पृष्ठं। पृष्ठोबृहतीन्द्रः॥

^{५ ४} पिबाऽऽसुतस्यरसिनाः॥ ^{५ ५} मत्स्वानइन्द्रगोमताऽऽइहोइया।
^५ आपिनोबोधिसधमादेवृधाऽऽइहोइया॥ ^५ अस्मा५आऽऽइवा॥ ^५ तुताइधाऽऽइयाऽऽइ४३ः।
^५ ओऽऽइ४५इ॥ डा॥

(दी. ८। प. ७। मा. ८) १२ (ठै।४००)

(२३९।२) ॥ शौक्लम्। शुक्लो बृहतीन्द्रः। अभीवर्तो द्वौ। द्वयोर्जमदग्निः॥

^{५ ५} पिबासुतस्यरसिनोहाउ॥ ^५ मत्स्वानइन्द्रगोमाऽऽतः। ^५ हाओऽऽइ४वा॥
^५ आपिनोबोधिसधमादियेवाऽऽइ४। ^५ हाओऽऽइ४वा॥ ^५ अस्मा५अवन्तुतेधाऽऽयः। ^५ हाओऽऽइ४वा॥
^५ ईऽऽइ४५इ॥

(दी. १२। प. ८। मा. ८) १३ (जै। ४०१)

(२३९।३) ॥ जमदग्नेरभीवर्तः। जमदग्निर्बृहतीन्द्रः॥

पिबासुतस्यरसिनोमत्स्वाहाउ। नाऽः। इन्द्राऽःगोमताऽः३। हाउ। आपिर्नोऽःबो।
धिसाधमाऽः२। दियेवृधाऽः३। हाउ॥ अस्माँअवाऽः३। हा॥ तुतेऽः३होऽः२।
याऽः३४औहोवा॥ धियऊऽः३४५॥

(दी. १०। प. १३। मा. ८) १४ (बै। ४०२)

(२४०।१) ॥ कोल्मलबर्हिषे द्वे। द्वयोः कुल्मलबर्हिर्बृहतीन्द्रः॥

तुवाऽः३होऽः३एहिचेरवाइ॥ विदाभगंवसूऽः२त्तायाऽः३४इ। उद्गावृषस्त्रमघवान्॥ ऐहोइ।
गाऽः२विष्टयाइ॥ उदिन्द्राश्चमोवाऽः३ओऽः३४वा। ष्टाऽः५योऽः६हाइ॥

(दी. ६। प. ७। मा. ८) १५ (खै। ४०३)

(२४०।२)

बँह्येहिचेराऽः६वाइ॥ विदाभगंवसूत्ताऽः१याऽः३४इ। उद्गावृषस्त्र। माऽः५घवान्॥ आइहियाइ।
गविष्टायाऽः२इ॥ उदिन्द्राऽः२अश्चमी। ओऽः३१म्। ओऽः३४वा। ष्टाऽः५योऽः६हाइ॥

(दी. ४। प. १०। मा. ९) १६ (नो। ४०४)

(२४१।१) ॥ वसिष्ठस्यजनित्रे द्वे। द्वयोर्वसिष्ठो बृहतीन्द्रः॥

नहिवाऽः३श्चारमंचना॥ हुवेहोऽः२इ। वसिष्ठःपराइमँसाताऽः२इ। अस्माकमद्यमरुताऽः२।
सुताइसाऽः३४चा॥ वाइश्चेऽः३होइ। पिबाऽः३हो॥ तुकाऽः३। माऽः२इनाऽः३४औहोवा॥
जनित्राऽः३४५म्॥

(दी. ३। प. १०। मा. १०) १७ (णो।४०५)

(२४१।२)

नहिवश्चरमम्। चनाऽ३। वसिष्ठाः। होइ। होइ। पराइमःसाताऽ२३४इ। अस्माकमद्यमरुतः।
सुताऽ३इसाचा॥ वाइश्वेपिबन्तुकौऽ३। होऽ३१येऽ३॥ माऽ२इनाऽ२३४औहोवा॥
जनिऽ३त्राऽ२३४५म्॥

(दी. ४। प. १२। मा. १२) १८ (धा।४०६)

(२४२।१) ॥ मेधातिथं देवतिथं वा। मेधातिथिर्बृहतीन्द्रः॥

माचिदन्यहोहाइ॥ विशोऽ३साता। सखायाऽ२होऽ१इ। माओऽ३हो। राइषाउवा।
प्याताउवा॥ इन्द्रमित्तोतावृषणाओऽ३हो॥ साचाउवा। सूताउवा॥ मुहुरुक्थाओऽ३हो। चशा।
औहो। वाहोऽ२३४वा। साऽ५तोऽ६हाइ॥

(दी. ६। प. १४। मा. ११) १९ (घा।४०७)

एकत्रिंशत्प्रथमः खण्डः॥१॥ दशतिः॥५॥

(॥ इति तृतीयस्य प्रथमोऽर्धः॥)

(२४३।१) ॥ वैखानसम्। वैखानसा बृहतीन्द्रः॥

नकिष्ठाऽ३०कर्मणानशात्॥ यश्चाकारा। सदावृधाऽ२३म्। सदावृधाम्। इद्रान्नया। जैर्विश्वगू।
तमाऽ२र्भवसाऽ२३म्। तमृभवसाम्॥ अधार्ष्टथा। ष्णुमोजसाऽ२३॥ ष्णुमोजसाऽ३४३।
ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ८। प. १३। मा. ६) २० (डू।४०८)

(२४३।२) ॥ पौरुहन्मनं प्राकर्षं वा। पुरुहन्मा बृहतीन्द्रः॥

३ ४ ३ ४ ५ ५ २ ५ २ ४ ५ ४ ५ १ १ १ १
नकिष्टं कर्मणानशत्। होऽ३४इ। यश्चकाऽ३रासदावृधाम्॥ आइन्द्राऽ२त्रायाऽ२।

५ ४ ५ २ ५ ४ ५ ३ १ १ १ १
ज्ञैर्विश्वगूर्तामृभ्वासाऽ२म्॥ अथाऽ२हो१। एाऽ२३०धृऽ३४॥ हाओवा॥ ष्णुमोजसाऽ२३४५॥

(दी. ६। प. ९। मा. ६) २१ (घू।४०९)

(२४४।१) ॥ सात्यम्। सत्यो बृहतीन्द्रः॥

५ २ ४ ५ ४ ५ १ १ १ १ २ २ २
यन्मृताऽ३इचीदभिष्रिषाः॥ पूराऽ२जात्रूऽ२। भ्यआतृदाऽ३ः। होवाऽ३हाइ।

१ २ १ १ २ १ २ १ २ १ २ १ २ १ २
सा०धाऽ२तासाऽ२म्। धाइमघवाऽ२पुरूवसुः। होवाऽ३हाइ॥ नाइष्काऽ२र्तावीऽ२॥ हुतंपुनः।

१ ३ ५ ४ ५
हो। वाऽ२। हाऽ२३४। औहोवा॥ ऊऽ२३४पा॥

(दी. ५। प. १४। मा. १२) २२ (भ्वा।४१०)

(२४५।१) ॥ भारद्वाजानिचत्वारि, भारद्वाजम्। चतुर्णाभ्रद्वाजो बृहतीन्द्रः॥

५ ४ २ १ २ १ २ २ १ २ १ २ १ २
आत्वासहा॥ स्रमाशाऽ१ताऽ२म्। यूक्तारथेहिरण्यया। ब्रह्मायूऽ१जाऽ२ः। हारयइ।

१ २ १ २ १ २ १ २ १ २ १ २ १ २
द्रकाइशाऽ१इनाऽ२ः॥ वहांतूऽ१सोऽ२३॥ माऽ२पाऽ२३४औहोवा॥ ताऽ२३४ये॥

(दी. ७। प. ९। मा. ७) २३ (झे।४११)

(२४५।२) ॥ भारद्वाजं, कण्वबृहद्वा। कण्वोबृहतीन्द्रः॥

५ ४ २ १ २ १ २ २ १ २ १ २ १ २
औहोआत्वासहाऽ६ए॥ स्रमाशाऽ१ताऽ२३४म्। हाहोइ। यूक्तारथेहिरण्यये।

१ २ ३ २ १ २ १ २ ३ २ १ २ ३ २
ब्रह्मायूऽ१जाऽ२३४ः। हाहोइ। हारयइ। द्रकाइशाऽ१इनाऽ२३४ः। हाहोइ॥

१ २ ३ २ ३ २ १ ५ ५
वहांतूऽ१सोऽ२३४। हाहो॥ मपीऽ३। ताऽ२३४याइ। उहुवाऽ६हाउ॥ वा॥

(दी. ११। प. १५। मा. १३) १४ (डि।४१२)

(२४५।३) ॥ भारद्वाजे द्वे। द्वयोर्भारद्वाजो बृहतीन्द्रः॥

आत्वासहस्रमाशतमा॥ युक्त्वारथेहिरण्यये। ब्रह्मयुजोहरयइन्द्रकेहोऽ२३। शाइनाऽ२३ः।
हाउवा॥ वहन्तुसोमपौहोऽ३। हिमाऽ२॥ तथाऽ३इ। ओऽ२३४वा॥ ऊऽ२३४५॥

(दी. ६। प. १०। मा. ६) २५ (डू।४१३)

(२४५।४)

आत्वासहस्रमा। शताम्। आत्वासाहा॥ स्रमाशतम्। आऽ२इहियाऽ२३४हाइ।
युक्त्वारथेहिरण्यये। ब्रह्मायूऽ१जाऽ२३ः। आऽ२इहियाऽ२३४हाइ। हारयइ।
द्रकाइशाऽ१इनाऽ२३ः। आऽ२इहियाऽ२३४हाइ॥ वहांतूऽ१सोऽ२३।
आऽ२इहियाऽ२३४हाइ॥ मपीताऽ२३याऽ३४इइ। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ९। प. १६। मा. १५) २६ (ते।४१४)

(२४६।१) ॥ अग्नेर्वाम्नाणि त्रीणि। त्रयाणां वम्रो बृहतीन्द्रः॥

आमन्दैरा॥ द्रहरिभाइर्याहिमयूरऽ३रामाभाऽ३इइ। मात्वाकाइचीत्। नियेमूऽ२३४रीत्।
नपाशिनाः। अतिधान्वेऽ२॥ वताऽ५ऽ२३। आऽ२इहाऽ२३४औहोवा॥ वाऽ२३४याः॥

(दी. ७। प. ९। मा. १०) २७ (झौ।४१५)

(२४६।२)

आमन्दैरिन्द्र। हाऽ५रिभाइः॥ याहिमयूररोमभा-इइ। मात्वाकाऽ२३इचीत्। नाइयेमुरित्।
नपाशाऽ२३इनाः॥ अताइधाऽ२३न्वे॥ वताऽ५ऽ२३। आऽ२इहाऽ२३४औहोवा॥
वयोऽ३भीऽ२३४५ः॥

(दी. १०। प. १०। मा. १४) २८ (मी।४१६)

(२४६।३)

आमन्द्रैरिन्द्रा हाऽऽरिभीः॥ याहिमयूररोमभाउ। वाऽऽ२। मांत्वाऽऽ२। केचिन्नियेमुरिन्नपाशिनाउ।
वाऽऽ२॥ आतीऽऽ२॥ धन्वेवताऽऽ३१उवाऽऽ२३॥ ईऽऽ२३४ही॥

(दी. ८। प. १०। मा. ४) २९ (णी।४१७)

(२४७।१) ॥ गुङ्गोः साम, गौङ्गवम् वा। अग्निर्बृहतीन्द्रः॥

ब्रमाऽऽ३०गाप्रशंसिषा॥ दाइवाऽऽ२ः। शविष्ठमाऽऽ३। तायाम्। नब्रदन्योमघवाऽऽ२३नाऽऽ२॥
स्तिमाऽऽ३३डाइता॥ आइन्द्रब्र। वा। औऽऽ३हो॥ मितोऽऽ२३४वा। वाऽऽ५चोऽऽ६हाइ॥

(दी. १। प. ११। मा. ७) ३० (के।४१८)

(२४८।१) ॥ इन्द्रस्य यशश्चत्वारि सामानि। इन्द्रो बृहतीन्द्रः॥

ब्रमिन्द्रा॥ यशाः। असाइ। ऋजीषीशवसः। पताइः। ब्रवृत्राणीऽऽ३हंसिया। प्रतीनाएऽऽ२।
कइत्पूरुऽऽ२॥ अनूऽऽ२होऽऽ१॥ तश्चा। पाऽऽ२णाऽऽ२३४औहोवा॥ धाऽऽ२३४तीः॥

(दी. ७। प. १२। मा. ९) ३१ (छो।४१९)

(२४८।२) ॥ साध्रम्। साध्रा बृहतीन्द्रः॥

ब्रमाऽऽ३इन्द्रायशाअसाइ॥ ऋजाइषीशाऽऽ२। वसाऽऽ३४५ः। पाऽऽ२३४तीः।
ब्रवृत्राणिहंस्यप्रतीन्येकइत्पु। रू॥ आनाओऽऽ२३४वा। ताश्चाओऽऽ२३४वा॥ षणाऽऽ५इधृतीः।
होऽऽ५इ॥ डा॥

(दी. ५। प. ११। मा. १२) ३२ (पा।४२०)

(२४८।३) ॥ (समीचीनं) साध्रम् वा। सध्रो बृहतीन्द्रः॥

हाउबमिन्द्रा॥ याशाआऽ२३४सीऽ६। हाउ। ऋजाइषीऽ२३४शा। वासस्पाऽ२३४तीऽ६।
हाउ। बंवृत्रा। णीहसिया। हाउ। प्रतीनाऽ२३४ए। कइत्पूऽ२३४रूऽ६। हाउ॥
अनुत्ताऽ२३४श्चाऽ६। हाउ॥ पाऽ२३४णाऽ२३४औहोवा॥ धाऽ२३४तीः॥

(दी. ४। प. १६। मा. १३) ३३ (ति।४२१)

(४२८।४) ॥ (प्राचीनं) यशसी द्वे। द्वयोरिन्द्रो बृहतीन्द्रः॥

हाउबमिन्द्रा॥ यशाअसि। होइ। होइ। होयेऽ३४। हाऽउहाऽउहाऽउ। ऋजीषीशवसस्पतिः।
होइ। होइ। होयेऽ३४। हाऽउहाऽउहाऽउ॥ बंवृत्राणिहस्यप्रतीन्येकइत्पुरू। होइ। होइ।
होयेऽ३४। हाऽउहाऽउहाऽउ॥ अनुत्तश्चर्षणीधृतिः। होइ। होइ। होयेऽ३४।
हाऽउहाऽउहाऽउवा॥ सुवर्महाऽ२३४ऽ५॥

(दी. ८। प. २२। मा. २६) ३४ (टू।४२२)

(२४८।५)

हाउबमिन्द्रा॥ यशाअसि। होयेऽ३४। होऽ२३४ऽ५। ऋजीषीशवसस्पतिः। होऽयेऽ३४।
होऽ२३४ऽ५॥ बंवृत्राणिहस्यप्रतीन्येकइत्पुरू॥ होयेऽ३४। होऽ२३४ऽ५॥ अनुत्तश्चर्षणीधृतिः।
होयेऽ३४। होऽ२३४वाऽ६। हाउवा॥ सुवर्मयाऽ२३४ऽ५॥

(दी. ८। प. १५। मा. ६) ३५ (पू।४२३)

॥ इति ग्रामे गेय-गाने षष्ठः प्रपाठकः॥६॥

(२४९।१) ॥ योक्तसुचम् युक्तसुक् बृहतीन्द्रः॥

इन्द्रमिद्देवता॥ तयाइ। इन्द्रप्रयातियत्त्वाऽ२३राइ। आइन्द्राऽ२म्।

समीकेवनिनोहवामाऽ२३हाइ॥ आइन्द्राऽ२म्॥ धानस्यसोऽ२३४वा॥ ताऽ२३४ये॥

(दी. ५। प. ८। मा. ७) १ (बी।४२४)

(२५०।१) ॥ आत्राणि त्रीणि, वासिष्ठानि वा। त्रयाणां अत्रिर्बृहतीन्द्रः॥

इमाउत्बापुरूवसोगिरः॥ एऽ५। गिराः॥ वा॒र्द्धन्तुयाममाऽ२३। पावकवर्णाः। शुचयोवीऽ३पा।

हिम्०ऽ३स्थिहिम्। चाऽ२३४इता॥ अभिस्तोमैरनौऽ२॥ हुवाइ। होऽ३वा। षता।

औऽ३होवा। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. ८। प. १५। मा. १०) २ (णौ।४२५)

(२५०।२)

इमाउत्बापुरूवसोहाउ॥ गिरोवर्द्ध। तूयाऽ१ममाऽ२। इहाहाहोइ। इहोऽ२३४वा।

पावकवर्णाःशुचयः। इहाहाहोइ। इहोऽ२३४वा॥ विपश्चि। तो। अभिस्तोमैः। इहाहाहोइ।

इहोऽ२३४वा॥ अनूऽ२३। षाऽ२ताऽ२३४औहोवा॥ ऊऽ२३४पा॥

(दी. १७। प. १६। मा. ८) ३ (चै।४२६)

(२५०।३)

इमाउत्बापुरू। वसाऽ३उ। गाऽ२३४इ। रोवर्द्धतुयाः। ममा॥ पावकवर्णाःशुचयोविपश्चि। ता।

औऽ३हो। आऔऽ३हो॥ अभिस्तोमैरनौऽ२॥ हुवाइ। होऽ३वा। षता। औऽ३होवा।

होऽ५इ॥ डा॥

(दी. १०। प. १६। मा. ७) ४ (पौ।४२७)

(२५१।१) ॥ वासिष्ठानि त्रीणि, आत्रीणि वा। त्रयाणां वसिष्ठो बृहतीन्द्रः॥

५ र अ १ १ ^ ३ ५ अ अ २ २ ^ ३ ५
उदुत्येमा॥ धूमत्तमाऽ२३ः। गाङ्गरस्तोऽ२३४मा। साईरतायेऽ३। सात्राजाऽ२३४इताः।
२ ^ ३ ५ अ अ २ ^ ३ ५ ३ २ ४ ॥
धानासाऽ२३४आ। क्षीतोतयाऽ२३ः॥ वाजायाऽ२३४०ताः॥ रथाऽ३आऽ५इवाऽ६५६॥

(दी. ६। प. १। मा. १०) ५ (घौ।४२८)

(२५१।२)

४ र ४ ५ १ र र — १ — र १ र — अ
उदुत्येमाऽ५धुमत्तमा॥ गिरस्तोमासआऽ२इराताऽ२इ। सत्राजितोधनाऽ२साअ॥
२ र १ — अ र २ ५
क्षितोतायाऽ२ः॥ वाजयन्तोरथाऽ३१उवाऽ२३॥ ईऽ२३४वा॥

(दी. १। प. ६। मा. ७) ६ (ते।४२९)

(१५१।३)

३ १ १ १ ३ ४ अ ४ ५ ३ ५ १ — १ ^ ३ २
ह२३४५। उदुत्येमधुम। तमोऽ२३४हाइ॥ गाङ्गराऽ२स्तोमाऽ२। सआऽ३४५इ।
३ ५ २ र १ अ अ अ अ ^ ३ १ १ १ ३ १ १ १ अ ३ अ अ अ
राऽ२३४ते। सत्राजितोऽ२धनसाअक्षितोतयाऽ२३४५ः। ह२ऽ२३४५॥ वाजयन्तोरथाः।
३ ५ अ १ अ १ अ १ २ ४ ५ ४
इवोऽ२३४हाइ॥ वाजयन्तोरथाइ। वा। औऽ३होवा। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. ११। प. १५। मा. १०) ७ (डौ।४३०)

(२५२।१)॥ गौतमस्य मनाज्ये, गौराङ्गिरसस्य सामनी वा द्वे। द्वयोर्गौतमो बृहतीन्द्रः॥

२ अ अ अ अ १ र २ अ ३ अ अ र र २ अ २
यथागौऽ२३रोअपाकृताम्॥ तृष्यन्नेतियवेराऽ२३इणाम्। आपिबेनःप्रपिबेतूयमागाऽ२३ही॥
१ — १ १ ^ ३ अ र ३ ५
कण्वेऽ२षुसूऽ२३॥ साऽ२चाऽ२३४औहोवा॥ पीऽ२३४वा॥

(दी. १२। प. ६। मा. ५) ८ (चु।४३१)

(२५२।२)

ओवाओऽ२३४वा। याथा॥ गौरोअऽ३पाकृतम्। ओऽ३४। हाहोइ। तृष्यन्नेतियऽ३वाइरिणम्।
ओऽ३४। हाहोइ। आऽ२३४पी। बेनःप्रपिबेतूयामाऽ१गहि। ओऽ३४। हाहोइ॥
कण्वेऽ२षुसूऽ२३॥ साऽ२चाऽ२३४औहोवा॥ पिबाऽ३ईऽ२३४५॥

(दी. ११। प. १५। मा. १०) ९ (डौ।४३२)

पञ्चविंशः, द्वितीयः खण्डः॥२॥ दशतिः॥६॥

(२५३।१)॥इन्द्रस्य हारयणनि, हारायणानि वा, त्रीणि। त्रयाणामिन्द्रो बृहतीन्द्रः॥

शग्ध्यूपू॥ शचाइपताइ। ईऽ२३४०द्रा। विश्वाभिऽ३रूतिभाइः। भाऽ२३४गाम्॥
नहिबायशऽ३सा०वसू। वीऽ२३४दाम्॥ अनूऽ२३। शूऽ२राऽ२३४औहोवा॥
चराऽ२मसीऽ२३४५॥

(दी. ६। प. १०। मा. ७) १० (डे।४३३)

(२५३।२)

शग्ध्यूप्वौहोऽ५इशचीपताइ॥ आइन्द्रविश्वाभिरूतिभिः। भगान्नाऽ३ही। बायशसाम्।
वसूऽ३हाइ॥ वाइदाऽ२म्॥ अनुशूरचरोवाऽ३ओऽ२३४वा। माऽ५सोऽ६हाइ॥

(दी. ७। प. ८। मा. १०) ११ (जौ।४३४)

(२५३।३)

शग्ध्यूपुशर्ची। पताइ। शग्ध्यूपू॥ शचाइपते। आऽ२इहिमाऽ२३४हाः। आइन्द्रविश्वा।
भिरूतिभिः। आऽ२इहिमाऽ२३४हाः। भागन्नहिबायशसम्। वसूविदम्॥

आऽरइहिमाऽर३४हाः॥ अनूशूऽशराऽर३। आऽरइहिमाऽर३४हाः॥

चरामाऽर३साऽर३४इइ। ओऽर३४५इ॥ डा॥

(दी. ७। प. १६। मा. १६) १२ (चू।४३५)

(२५४।१) ॥ वाम्नाणि त्रीणि। त्रयाणां वाम्नो बृहतीन्द्रः॥

याहोइ। ईऽर३४०द्रा॥ भुजऽर३आभाऽशराऽर३। सुवाऽर३हा। वाँअसुऽर३राइभाऽशयाऽर३।

स्तोताऽर३हा। रमिन्मघवन्नस्यावर्द्धयाऽर३॥ याइचाऽर३हाइ॥ त्वेवृक्तबर्हाऽर३इषाऽर३४३ः।

ओऽर३४५इ॥ डा॥

(दी. ३। प. ११। मा. ११) १३ (टा।४३६)

(२५४।२)

याइन्द्रभुजआभाऽर३राः॥ सुवर्वाँअ। सुरेऽर३भाऽर३४याः। हा। औहोऽर३४हा।

स्तोतारमाइत्। माघवन्ना। स्यवाऽर३र्द्धाऽर३४या। हा। औहोऽर३४हा॥ येचत्वाऽर३इवृऽर३।

हा। औहोऽर३४हा॥ क्तबर्हाऽर३इषाऽर३४३ः। ओऽर३४५इ॥ डा॥

(दी. १। प. १६। मा. ११) १४ (ता।४३७)

(२५४।३)

याइन्द्रभुजआभरः। उहुवाहाइ॥ सुवर्वाँअसुरेभ्यः। उहुवाऽर३हाइ। स्तोतारमिन्मघवन्ना।

स्यावर्द्धयाऽर३। उहुवाऽर३हाइ॥ येचत्वाऽर३इवृ। उहुवाऽर३हा॥ क्तबर्हाऽर३इषाऽर३४३ः।

ओऽर३४५इ॥ डा॥

(दी. ७। प. १२। मा. १२) १५ (छा।४३८)

(२५५।१) ॥ वरुणसामानि त्रीणि। त्रयाणां वरुणो बृहतीविश्वेदेवाः॥

५ र र
प्रमित्रायप्राहाउ॥ आऽर्यम्णाइ। सचाऽरहो। थियौऽर। हुवाइ। आर्तावसाउ। वराऽरहो।
थियौऽर। हुवाइ। वरुणेच्छा। दीयवचाः॥ स्तोत्राऽरहोइ॥ राजौऽर। हुवा।
७ १ २
पूगायताऽर१उवाऽर३॥ ऊऽर४पा॥

(दी. १०। प. १६। मा. ८) १६ (प्ये।४३९)

(२५५।२)

५ र र ४ ५ ? २^ अ २ अ न २ ? २ ? २^
प्रमित्रायप्रौहोवा॥ आर्यम्णा। औहोऽर४इ। औहोऽर३वा। साचथ्यम्। ऋतावासा।
औहोऽर४इ। औहोऽर३वा। वारुथ्येवरुणेछ। दिया०वाचा। औहोऽर४इ। औहोऽर३वा॥
? २^ अ २ अ न २ अ ? २^ अ २ अ न २
स्तोत्रराजा। औहोऽर४इ। औहोऽर३वा॥ पूगायता। औहोऽर४इ। औहोऽर३वाऽर४३।
? १
ओऽर३४५इ॥ डा॥

(दी. १६। प. २०। मा. ७) १७ (डे।४४०)

(२५५।३)

५ र र ४ ५ ४ ५ ? २ ? २ ? २ ? २
प्रमित्रायप्रार्यम्णेवा। ओवा॥ साचथ्यम्। ऋतावाऽरसाऽरउ। वाऽर३रू। थाऽर३याइ।
? अ ? २ ? न २ र ? र २ र ? २ ? अ न
वरुणेछ। दायाऽर३हाइ। वचोऽर३आ॥ स्तोत्रराजसुगायता। स्तोऽर३त्राम्॥ राजसुगौऽर३।
? ४
होऽर३१२३४। वा। याऽर५तोऽर६हाइ॥

(दी. ६। प. १५। मा. ७) १८ (डे।४४१)

(२५६।१) ॥ प्रजापतेः वषट्कारणिधनम्। प्रजापतिर्बृहतीन्द्रः॥

^{४ ३ ४ ४ ३ ४ ५ ४} ^{५ २ ४ ५ ४ ५} ^{२ ४ ४} ^{१ अ} ^{१ २}
 अभिबापूर्वपीतये। अभिबाऽऽपूर्वपीतयाइ॥ इन्द्रस्तोमोभिऽऽरायवाऽऽः। भिरायाऽऽवाऽऽऽः।
^{४ न २} ^{४ ४ ४} ^{१ अ} ^{१ २} ^{४ न २}
 ओमोऽऽवा॥ समीचीनासऋभवःसऽऽमास्वराऽऽन्। समास्वाऽऽराऽऽऽन्। ओमोऽऽवा॥
^४ ^{१ अ} ^{१ २} ^४ ^३ ^{४ ४}
 रुद्रागृणन्तऽऽपूर्वियाऽऽम्। तपूर्वाऽऽयाऽऽऽम्। ओम्। ओऽऽ२। वाऽऽऽ४। औहोवा॥
^३ ^५
 ऊऽऽऽ४पा॥

(दी. १७। प. १५। मा. ९) १९ (धो।४४२)

(२४७।१) ॥ धृषतो मारुतस्य साम, मारुतम् वा। मारुतोबृहतीन्द्रः॥

^{४ ५ ४ ४} ^{४ ५ ४} ^{२ ४} ^{१ २} ^{४ न २}
 प्रवइन्द्रायबृहते। प्रवाः॥ इन्द्रायऽऽबृहाऽऽतेऽऽऽ। ओमोऽऽवा।
^४ ^{१ २} ^{४ न २} ^{२ १} ^२ ^१ ^{४ न २}
 मरुतोब्रह्मऽऽआर्चाऽऽताऽऽऽ। ओमोऽऽवा। वृत्रहाना। तिवृ। त्राहाऽऽऽ। ओमोऽऽवा।
^{१ २} ^३ ^५ ^{३ २} ^{२ २ ४} ^४
 शताक्रतुः॥ वाऽऽऽ४जे॥ णशाऽऽ। हाऽऽहा। तपाऽऽर्वणा। होऽऽइ॥ डा॥

(दी. ७। प. १७। मा. ५) २० (छो।४४३)

(२५८।१)॥ संश्रवसः, विश्रवसः, सत्यश्रवसः, श्रवसो वा, संशानानि चत्वारि सामानि।

चतुर्णामिन्द्रो बृहती मरुतः॥

^{१ ४ २} ^१ ^१ ^३ ^{४ ४} ^{१ २}
 सांत्वाहिन्वा। तिधाइताइभीऽऽः। ताऽऽइ। भाऽऽऽ४। औहोवा॥ संश्रवसेऽऽ॥ दा १
^{१ ४ २} ^१ ^१ ^३ ^{४ ४} ^{१ २}
 सांत्वारिणा। तिधाइताइभीऽऽः। ताऽऽइ। भाऽऽऽ४। औहोवा॥ विश्रवसेऽऽ॥ दा २
^{१ ४ २} ^१ ^१ ^३ ^{४ ४} ^{२ १ २}
 सांत्वातता। क्षुर्दाइताइभीऽऽः। ताऽऽइ। भाऽऽऽ४। औहोवा॥ सत्यश्रवसेऽऽ॥ दा ३

(दी. ९। प. १८। मा. १२) २१ (दा।४४४)

(२४८।२)॥ इन्द्रस्य वाप्यानां वा, संशानानि, वासिष्ठानि वाम्राणि वा त्रीणि॥

सा०त्वाशिशा। तिधाइताऽऽइभीऽऽः। ताइभीऽऽः। बृहदिन्द्रायऽऽगायाऽऽताऽऽ। याताऽऽ॥
मरुतोवृत्रऽऽहा०ताऽऽमाऽऽम्। तामाऽऽम्॥ येनज्योतिरजनयन्तुऽऽतावाऽऽर्द्धाऽऽः।
वार्द्धाऽऽः॥ देवदेवायऽऽजागृऽऽवीऽऽ। गृवीऽऽ। सा०त्वाशिशा। तिधाइताइभीऽऽः। ताऽऽइइ।
भाऽऽ३३४। औहोवा॥ अ्रवसेऽऽ३३४५॥

(दी. ११। प. १७। मा. १३) २२ (खि।४४५)

(२५९।१) ॥ वाम्ने द्वे। द्वयोर्वाम्नो बृहतीन्द्रः॥

इन्द्राऔऽऽहो॥ ऋतुन्नऽऽआभाऽऽराऽऽ। पिताऔऽऽहो। पुत्रेभिऽऽयोयाऽऽथाऽऽ।
शिक्षाऔऽऽहो। णोअस्मिन्पुरुहूतयामाऽऽनीऽऽ॥ जीवाऽऽ३ः॥ ज्योऽऽताऽऽ३४औहोवा॥
अशीमहोऽऽ३३४५॥

(दी. ७। प. ९। मा. ७) २३ (झे।४४६)

(२५९।२) ॥ ऋतु वासिष्ठम्॥

इन्द्रऋतूऽऽन्नआभरा॥ पितापुत्रेभियोयथा। शिक्षाणोऽऽ३आ। स्माइन्पुरुहू। तयामाऽऽनीऽऽ।
औऽऽ। होऽऽ। हुवाइ। औऽऽहोऽऽ३४वा॥ जीवाज्योऽऽ३तीः॥ अशीमाऽऽ३हाऽऽ३४इइ।
ओऽऽ३३४५इ॥ डा॥

(दी. ८। प. १३। मा. ७) २४ (डे।४४७)

(२५९।३) ॥ वासिष्ठम्। वासिष्ठो बृहतीन्द्रः॥

इन्द्रक्रतुन्नआ। भराओऽ२३४वा॥ पितापूऽ३त्रेभियोयथा। ह२ऽ२३४५। पितापुत्रेभियः।
याथाऽ२३४हाइ। शाइक्षाणोआ। स्माइन्पुरुहूतया। मानोऽ२३४हाइ॥ जीवाज्योतीः॥
अशोऽ२३४वा। माऽ५होऽ६हाइ॥

(दी. ८। प. १२। मा. १०) २५ (ठौ।४४८)

(२६०।१)॥ आजिगस्य अजिगस्य वा, स्वपसः सामनी द्वे। आजिगस्यस्वपसिः बृहतीन्द्रः॥

मानइन्द्रा॥ परावाऽ३र्णाक्। भवानःसधमाऽ१दीऽ३याइ॥ बन्नऊतीबमिन्नआपीऽ३याम्॥
मानइन्द्रपरावृणाऽ३१उवाऽ२३॥ ऊऽ३४षा॥

(दी. ६। प. ६। मा. ८) २६ (कौ।४४९)

(२६०।२)

मानइन्द्रपरा। वृणाक्। मानइन्द्रा॥ परावाऽ२३र्णाक्। भवाऽ२नःसा धमादाऽ२३याइ।
बन्नऊतीऽ२। बमिन्नाऽ२आपियाम्॥ मानाआऽ२इन्द्रा॥ परावाऽ२३र्णाऽ३४३क्।
ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. १०। प. १२। मा. १२) २७ (फा।४५०)

(२६१।१) ॥ आप्कारणिधनं काण्वम्। कण्वो बृहतीन्द्रः॥

वयंघाऽ३त्वासुतावन्ताः॥ आपोनवृ। क्त्वाऽ२३र्हिषाउ। वाऽ३२। पवित्रस्या। प्रस्रवणाइ।
षुवृत्राऽ२३४हान्॥ पाऽ२३री॥ स्तोतारः। आसाऽ२३४५ताऽ६५६इ॥ आऽ२३४५पू॥

(दी. ६। प. ११। मा. ७) २८ (के।४५१)

(२६१।२) ॥ महावैष्टंभम्। वैष्टंभो बृहतीन्द्रः॥

^{४२ ५४ ४} ^{५४५ २ ४५} ^{४२ ४} ^{४२} ^{४ २}
 ओहोवा। वयंघबासुतावन्तः। ओहोवा॥ ओहोइ। आपोनवृक्तबर्हिषः। पवाइत्राऽइस्या।
^{१ २ ३} ^{३ ३ ३} ^२ ^४ ^४ ^४ ^४ ^४ ^४ ^३ ^३
 प्रस्रवणेषुवाऽश्त्राऽइहान्। ओहोऽइइ। ओहोइ॥ परिस्तोतारआसते। पराइस्तोऽइता॥
^{३ २ ३} ^३ ^{४ ५} ^४
 रआसता। औऽइहोवा। होऽइइ॥ डा॥

(दी. १७। प. १५। मा. ११) २९ (जा।४५२)

(२६१।३) ॥ अभिनिधनं काण्वम्। कण्वो बृहतीन्द्रः॥

^{४ ४} ^५ ^{४ ५} ^{४ ५} ^३ ^५ ^३ ^३ ^५ ^३ ^३ ^५
 ओहोहोहाइ। आइही। वायाम्॥ घाऽइइइइबा। सूतावाऽइइइइताः। आपोनाऽइइइइवृ
^{४ १} ^{४ १} ^३ ^५ ^{३ ३} ^५ ^३ ^३ ^५ ^{४ १}
 क्तबर्हिषाः। ऐहोइ। आऽइइइइही। पावित्राऽइइइइस्या। प्रास्नावाऽइइइइणे। पूवृत्रहान्।
^{४ १} ^३ ^५ ^{३ ३} ^५ ^{३ ३} ^{४ ॥} ^३ ^५
 ऐहोइ। आऽइइइइइही॥ पारिस्तोऽइइइइता॥ रआऽइइसाप्रताऽइइइइइ। आऽइइइइभी॥

(दी. ५। प. १७। मा. १२) ३० (फा।४५३)

(२६१।४) ॥ महावैष्टंभम्। वैष्टंभो बृहतीन्द्रः॥

^{५ ४ ५ ४} ^{५ २ ४ ५} ^{१ २ ३} ^{१ ३} ^{१ ३ ३}
 वयंघबोहाइ। सुतावन्तोवा॥ आपोनवृ। क्तबर्हिषाऽइइइइपाऽइइइइः। होवाऽइइहाइ।
^{१ ३ १ ४} ^{१ ३} ^{१ ३ ३} ^{१ ३ ३} ^{१ ३ ३} ^{१ ३ ३}
 पवित्रस्यप्रस्रवणे। पुवार्त्राऽइइहाऽइइइन्। होवाऽइइहाइ॥ पराइस्तोऽइइताऽइइइइ। होवाऽइइहा।
^१ ^१ ^३ ^{४ २} ^३ ^५
 रआऽइइइ॥ साऽइइताऽइइइइओहोवा॥ दीऽइइइइशाः॥

(दी. ५। प. १३। मा. १०) ३१ (बौ।४५४)

(२६२।१) ॥ श्रौष्टीगवम्। श्रुष्टीगुर्वृहतीन्द्रः॥

^{४ २} ^{४ ५} ^४ ^{५ २} ^५ ^१ ^१ ^१
 ओहाइ। यदिन्द्रना॥ हुषीपूऽइइवा॥ ओजोऽइइनाम्णाऽइइम्। चकृष्टि। पूऽ।
^१ ^१ ^१ ^१ ^१ ^१ ^१ ^१
 ऐऽइइहीऽइइहाइहीऽइइ। हाऽइइऊऽइइइवाइ। याऽइइइइपां०चाऽइइ। क्षितीनाम्।
^१ ^१ ^१ ^{१ २ ३} ^१ ^१ ^१
 ऐऽइइहीऽइइहाइहीऽइइ। हाऽइइऊऽइइइवाइ॥ बुम्नमाभ। रा। ऐऽइइहीऽइइहाइहीऽइइ।

हाऽरुऽरुऽवाइ॥ साऽशत्राऽरवाइश्चाऽर॥ निपौश्सि॥ या॥ ऐऽरहीऽशआइहीऽर॥

हाऽरुऽरुऽवाऽर॥ याऽर३४औहोवा॥ ऊऽर३४पा॥

(दी. ९। प. २३। मा. २४) ३२ (द्वी।४५५)

त्रयोविंशतिस्तृतीयः खण्डः॥३॥ दशतिः॥७॥

(२६३।१) ॥ इन्द्रस्य वृषकम्। इन्द्रो बृहतीन्द्रः॥

सत्यमित्थावृ॥ पाऽपृइदसाइ॥ वृषजूतिर्नोविताऽर॥ वृषाह्युग्राशृण्विपाऽरइ॥ परावताइ॥

वृषोऽर३र्वा॥ वताइश्रूऽर३ताऽर३४३ः। ओऽर३४५इ॥ डा॥

(दी. ५। प. ९। मा. ७) ३३ (भे।४५६)

॥ इति ग्रामे गेय-गाने सप्तमस्यार्द्धः प्रपाठकः॥

(२६४।१) ॥ द्योते द्वे, द्वैगते वा। द्विगद्बृहतीन्द्रः॥

यच्छक्राऽर३सीपरावती॥ यादर्वावा॥ तिवार्त्राऽशहाऽरन्। अताऽर३ः। हौऽर३होऽर३वा॥

त्वागीभिर्दुग्दिन्द्राकेऽशशिभीऽरः॥ सुताऽर३॥ वाऽर३*आऽर३४औहोवा॥ एऽर३॥

विवाऽर३सतीऽर३४५॥

(दी. ७। प. १०। मा. ५) १ (जु।४५७)

(२६४।२)

यच्छक्रासिपरावतियदोहाइ॥ वावऽर३ताइवृत्राहाऽर३४न्। अताऽर३४स्वागाइ॥ भाइर्दुग्दि॥

द्राकेऽशशिभीऽरः॥ सुताऽर३॥ वाऽर३*आऽर३४औहोवा॥ विवाऽर३सतीऽर३४५॥

(दी. ७। प. ८। मा. ८) २ (जै।४५८)

(२६५।१) ॥ कार्तयशं कार्तवेशं वा। कृतयशा बृहतीन्द्रः॥

५ ४ ५ ४ ५ ४ २ र ? — ? २ ? २ ३ ५ ४ ५ ४ ४
अभिवोवीरमन्धसाः॥ मदेषुऽऽगायाऽ२। गिरामाहाऽ३। वीचेताऽ२३४साम्॥ इन्द्रनामा॥
? अ ? ^ ३ ५ ४ २ र ? ३ ? ? ?
श्रुत्यश्शाकाऽ२इ। नाऽ२३४औहोवा॥ वचोउपाऽ२३४५॥

(दी. ८। प. ८। मा. ५) ३ (डु।४५९)

(२६६।१) ॥ इन्द्रस्य शरणम्। इन्द्रो बृहतीन्द्रः॥

४ ५ २ ? र २ ? ? अ २
इन्द्रत्रिधाऽ५तुशरणाम्॥ त्रिवरूथश्सुवस्तयाइ। छर्दिर्याऽ२३छा। माघवद्भः। चामह्याऽ२३०चा॥
अ ? २ ? २ ? २ ४ ५ ४
यावयाऽ२३दी॥ ब्रूमेऽ२भिया। औऽ३होवा। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. २। प. १०। मा. ४) ४ (जी।४६०)

(२६७।१) ॥ श्रायन्तीयम्। श्रायन्तीयो बृहतीन्द्रः (प्रजापतिः) सूर्यः॥

५ ५ ? — ? — ? — ? र २ र ५ अ
श्रायन्तइवसूऽ४रायाम्॥ विश्वाऽ२इदिन्द्राऽ२। स्यभाऽ२क्षाता। वासूनिजातोजनिमा।
? २ — ? अ ? नि ? २ २ ५ २ २ ? ३ २
नियोजाऽ१साऽ२॥ प्रतिभागन्नदीऽ२धिमः। प्राऽ२३ती॥ भागान्नाऽ३दा। हिम्। धिमाऽ३ः।
? ५ ३ ? ? ?
ओऽ२३४वा॥ हेऽ२३४५॥

(दी. ८। प. १२। मा. ६) ५ (टू।४६१)

(२६८।१) ॥ वाम्रम् आक्षीलं वा। वाम्रो बृहतीन्द्रः॥

३ ५ ३ ५ ४ र २ २ ? ५ ? ५
नसीमदेवआ। हाऽ३हाऽ३इ। पाऽ२३४। तत्पतोवा॥ इषश्होऽ२इ। दीर्घाहोऽ२।
? अ — ? अ ? २ ३ २ २ ५ ? —
योमर्तायाऽ२ः। आइतग्वाचित्। यआइताशो। युवाउवाऽ३। ऊऽ३४पा। जताऽ२इ॥
? — ? — ? ? ३ ५ ४ र २ ५
आइन्द्रोऽ२हारीऽ२॥ युयोऽ२३। जाऽ२ताऽ२३४औहोवा॥ ऊऽ३२३४पा॥

(दी. ७। प. १६। मा. १२) ६ (झा।४६२)

(२६९।१)॥ शाक्राणि, वा वैयश्चानि वा, आश्चानि वा, शौत्कानि वा, सुम्नानि वा, दुम्नानि वा, पृष्ठानि वा, योक्ताश्चानि वा, सोम सामानि वा, वासिष्ठानि वा, इमानि त्रीणि। त्रयाणां वसिष्ठो बृहतीन्द्रः॥

आनः। ए॒वि॒श्वा॑॥ सु॒हा॒व्याऽ॒रम्। आ॒इन्द्र॑सम्। त्सू॒भूऽ॒पाता॑। ऊ॒ऽ॒३॒४पा॑। हा॒ऽ॒३हा॑इ।
ब्र॒ह्मा॒णिस॑वना। नि॒वृत्र॑हान्॥ पर॒माऽ॒३॒ज्याः। आ॒र्चाऽ॒३हा॑इ। ष॒मा। औऽ॒३हो॑वा। होऽ॒५इ॑॥
डा॥

(दी. ३। प. १५। मा. ८) ७ (णै।४६३)

(२६९।२)

आ॒नो॒वि॒श्वा॑सु॒हा॒व्याम्॥ इन्द्र॑स॒मत्सु॑भूषतो। प॒ब्राऽ॒३॒ह्या। णि॑स॒वना॒ नि॒वृत्र॑हान्॥
प॒र॒माऽ॒३॒ज्याः। आ॒र्चाऽ॒३हा॑इ॥ ष॒मा। औऽ॒३हो॑वा। होऽ॒५इ॑॥ डा॥

(दी. ६। प. ११। मा. ५) ८ (कु।४६४)

(२६९।३)

आ॒ना॒वि॒श्वा॑सु॒हा॒व्याम्॥ इन्द्र॑स॒मत्सु॑भूषता। उ॒पा॒ब्राऽ॒३॒ह्याऽ॒३। णि॑स॒वना॒नि॒वृत्र॑हान्॥
प॒र॒माऽ॒३॒ज्याऽ॒३॥ ऋ॒ची॒पाऽ॒३॒माऽ॒३४३। औऽ॒३॒४इ॑॥ डा॥

(दी. ६। प. १। मा. ५) ९ (घु।४६५)

(२७०।१) ॥ प्रजापतेर्निधनकामम्। प्रजापतिर्वृहतीन्द्रः॥

त॒वेदि॑न्द्राऽ॒५व॑मंवसू॥ ब॒पुष्य॑सि॒मध्य॑मम्। सा॒त्रा॒वाऽ॒३॒४इ॑श्वा। स्या॒प॒र॒म॒स्य॑रा॒जसि॑॥
न॒कि॒ष्ट्वाऽ॒३॒४गो॑॥ पू॒वृ॒ण्वाऽ॒३॒ता॒इ। हो॑वाऽ॒३हो॑इ। हो॑ऽ। वा॒हाऽ॒३॒४उ॑वाऽ॒३॒४५॥

(दी. ३। प. १। मा. ५) १० (दु।४६६)

(२७१।१) ॥ इन्द्रस्य प्रियाणि त्रीणि, वसिष्ठस्य वा। त्रयाणां इन्द्रो बृहतीन्द्रः॥

क्वेयथा॥ कुवेदसाऽइ। औहोऽइ। औहोइ। औऽइहोऽइ३४वा। पुरुत्राचाइत्।
हितेमनाऽइः। औहोऽइ। औहोइ। औऽइहोऽइ३४वा। अलर्षियू। ध्माखजकृऽइत्।
औहोऽइ। औहोइ। औऽइहोऽइ३४वा॥ पुरन्दरा। प्रगायात्राऽइः। औहोऽइ। औहोइ।
औऽइहोऽइ३४वा॥ अगाऽइ। साऽइइपूऽइ३४औहोवा॥ सुशःसाऽइ३४५ः॥

(दी. १२। प. २३। मा. १३) ११ (जि।४६७)

(२७१।२)

कुवाकुवा॥ याथा। कुवेदसाइ। ऊवाइ। औऽइहोऽइ३४५। पुरुत्राचाइत्। हितेमनाः।
उवाइ। औऽइहोऽइ३४५। अलर्षियू। ध्माखजकृत्। ऊवाइ। औऽइहोऽइ३४५॥ पुरन्दरा।
प्रगायात्राः। ऊवाइ। औऽइहोऽइ३४५॥ अगाऽइ। साऽइइपूऽइ३४औहोवा॥
सुशाऽइःसाऽइ३४५ः॥

(दी. ७। प. २०। मा. १३) १२ (जि।४६८)

(२७१।३)

क्वेयथकुऽइवाइदाऽइ३४सी॥ पुरुत्राचित्। हिताइमाऽइ३नाः। आलर्षि। युध्माखजकृऽइत्।
हाउवा॥ पुरंदाऽइ३रा। प्रगायात्राऽइः॥ अगाऽइ३। साऽइइपूऽइ३४औहोवा॥ प्सूऽइ३४५॥

(दी. ५। प. ११। मा. ९) १३ (पो।४६९)

(२७२।१) ॥ ऐन्द्राणि वासिष्ठानि वा, वैरूपाणि त्रीणि। त्रयाणां वसिष्ठो बृहतीन्द्रः॥

वयमेनाम्॥ आऽरुद्धदाऽरुद्धाओहोवा। हीऽरुद्धायाः। अपीपेमेहवज्जिणम्।
तास्माऽरुद्धावाऽरुद्धा। द्यसवनाइ। सूतभाराऽरुद्धा॥ आनूनाऽरुद्धांभू॥ पातश्रुते।
इडाऽरुद्धाभाऽरुद्धा। ओऽरुद्धाऽरुद्धा॥ डा॥

(दी. ९। प. १२। मा. ८) १४ (थै।४७०)

(२७२।२)

वयमेनाम्॥ इडाऽरुद्धायाः। अपौहोइ। पेमौहोइ। इ। हावज्जिणाम्॥ तस्माउवा। द्यसवनाइ।
सूतभरा॥ आनौहो। नंभौहो॥ पातश्रुताऽरुद्धाउवाऽरुद्धा॥ ऊऽरुद्धापा॥

(दी. १२। प. १३। मा. ८) १५ (ज्यै।४७१)

(२७२।३)

वयमेनमिदा। हियाओऽरुद्धावा। इयाहाइ॥ हुवेहोऽरुद्धा। अपीपेमेहावज्जिणाऽरुद्धा।
तस्माउवद्यसवनाइ। सूतभाराऽरुद्धा। ईऽरुद्धाया॥ आनूनाऽरुद्धांभू॥ षताश्रुऽरुद्धाऽरुद्धाऽरुद्धाऽरुद्धा॥
श्रवाऽरुद्धासाऽरुद्धाऽरुद्धा॥

(दी. ८। प. ११। मा. ८) १६ (टै।४७२)

सप्तदश चतुर्थः खण्डः॥४॥ दशतिः॥८॥

(२७३।१) ॥ पौरहन्मनम्। पुरुहन्मा बृहतीन्द्रः॥

योरज्जाऽरुद्धाऽरुद्धाऽरुद्धाऽरुद्धा। यातारथे। भिराध्राऽरुद्धाऽरुद्धाऽरुद्धा॥ ध्राइगूऽरुद्धाऽरुद्धा। वाइश्रासाऽरुद्धा।
तरुताऽरुद्धा। तरुताऽरुद्धा। पार्त्तानाऽरुद्धाऽरुद्धाऽरुद्धा॥ ज्याइष्टयोवा। त्राहागाऽरुद्धाऽरुद्धाऽरुद्धा॥
त्रहाऽरुद्धागृणाइ॥ होऽरुद्धा॥ डा॥

(दी. ५। प. १३। मा. १३) १७ (बि।४७३)

(२७३।२) ॥ प्राकर्षम्। प्रकर्षो बृहतीन्द्रः॥

ॐ र ५ ३ ३ ५ १ र र ३ १ ३ १ र र र ३
योराजाच। षणाऽ३२३४इनाम्॥ यातारथेभिरधाऽ२३इगूः। विश्वासान्तरुतापृतानाऽ२३नाम्॥
१ ३ ३ १ ३ १ ५ ५ ५ ५
ज्याऽ२३इष्टाम्॥ योवृत्रहोवाऽ३ओऽ२३४वा। गाऽ५र्णोऽ६हाइ॥

(दी. ९। प. ७। मा. ९) १८ (थो।४७४)

(२७४।१) ॥ इन्द्रस्याभयङ्करम्। इन्द्रो बृहतीन्द्रः॥

५ ३ ५ ५ ५ १ र र ३ १ ३ १ ३ ३ ३
यतआऽ३इन्द्राभयामहाइ॥ ततो नो अभयं काऽ२३३धी। मघवञ्छग्धितवतन्न ऊताऽ२३याइ॥
१ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३
विद्वाइषोऽ२३वी॥ माद्धो जहि। इडाऽ२३भाऽ३४३। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ५। प. ८। मा. ८) १९ (बै।४७५)

(२७५।१) ॥ कावपे द्वे। द्वयोः कवपो बृहतीन्द्रो वास्तोष्पतिः॥

५ र ३ १ १ ३ ५ १ ३ र ५ ५ ५ ५
वास्तोष्पताइ॥ ध्रुवा। स्थूणाओऽ२३४वा। अ५सत्र५सोम्यानाऽ२म्।
१ १ र र र ३ ३ ५ १ ५ ५ ५ ५
द्रुप्सःपुरांभेत्ताशश्वताऽ२३इनाम्॥ आऽ२३४इन्द्राः॥ मुनीऽ२। नाऽ३१उवाऽ२३॥
३ ५
साऽ२३४खा॥

(दी. ९। प. ९। मा. ८) २० (धै।४७६)

(२७५।२)

ॐ ५ र र र ३ ३ १ ५ र ५ ५
वास्तोष्पतेध्रुवा। स्थूणाऽ३। आऽ२३४। सत्र५सो। म्यानाम्॥
३ १ र र र ३ १ ३ १ ५ ५ ५ ५ ५
द्रुप्सःपुरांभेत्ताशश्वताऽ२३इनाम्॥ आऽ२३४इन्द्राः॥ मुनीऽ२। नोऽ२३४वा॥ साऽ२३४खा॥

(दी. ११। प. १०। मा. ५) २१ (डु।४७७)

(२७६।१)

॥ सूर्यसाम। सूर्यो बृहती सूर्यः॥

बण्महा॑ऽ३असिसूर्यो॑॥ बाडादित्या॑ महा॑ऽआऽ१साऽ२३४इ॥ महस्ते॑सतोमहिमापनि॑
ष्टाऽ३मा॑॥ महादाऽ३इवाऽ३॥ महोऽ२३४वा॑ आऽ५सोऽ६हाइ॥

(दी. ६। प. ८। मा. ५) २२ (गु।४७८)

(२७७।१)

॥ वैश्वदेवे, आनूपे, वाध्यश्चे वा द्वे। आनूपो बृहतीन्द्रः॥

अश्वी॑अश्वी॑॥ रथी॑सुऽ३रूपाऽ१ईऽ२त्। गोमा॑ऽयदि॑ द्राते॑ऽ१साखाऽ२। श्वात्रा॑ऽ२भाजाऽ२।
वयसा॑सचतेसाऽ२३दा॑॥ चन्द्रा॑इर्याऽ३तीऽ३॥ साऽ२३भाऽ३म्। ऊऽ३४५पोऽ६हाइ॥

(दी. ४। प. ९। मा. ६) २३ (धू।४७९)

(२७७।२)

अश्वी॑रथी॑सुरूपाऽ६ईत्॥ गोमा॑ऽयदिन्द्रते॑सखाउवाऽ२३होवाऽ२३हाऽ२ईया॑।
श्वत्रा॑भाजावयसा॑सचतेसदाउवाऽ२३होवाऽ२३हाऽ२ईया॑॥ चन्द्रा॑इर्याऽ१तीऽ२॥ सा॑भामुप।
इडाऽ२३भाऽ३४३। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. १३। प. ८। मा. ८) २४ (डै।४८०)

(२७८।१)

॥ वैरूपम्। विरूपो बृहतीन्द्रः सूर्यः॥

यद्यावाऽ२३इन्द्रते॑शताम्॥ शत॑भूमीरुतस्यूऽ२ः। नत्वा॑वज्रिन्सहस्र॑सूर्या॑अनूऽ२॥
नाजाऽ२ता॑माऽ२३॥ ष्टरोऽ२३४वा॑ दाऽ५सोऽ६हाइ॥

(दी. ७। प. ६। मा. ५) २५ (चु।४८१)

(२७९।१)

॥ नैपातिथे द्वे। द्वयोर्निपातिथिर्बृहतीन्द्रः॥

यदिन्द्रप्रागपाक्॥ उदाक्। न्यग्वाहूयसेनृभाऽऽइः। सिमापुरुनृपूतोअ। सियानवाऽऽइ॥
 आसीऽऽप्राशाऽऽ॥ धतोवाऽऽओऽऽइ३४वा। वाऽऽप्रशोऽऽइहाइ॥

(दी. ८। प. ८। मा. ८) २६ (डै।४८२)

(२७९।२)

यदिन्द्रप्रागपागुदाऽऽइगे॥ नायग्वाहू। यसाइनृभीऽऽइः। हा। औहोऽऽइ३४हा।
 सिमाऽऽपुरुनृपूतोअ। सियानवेऽऽइ३। हा। औहोऽऽइ३४हा॥ असाइप्राशाऽऽइ। हा।
 औहोऽऽइ३४हा॥ धाऽऽतूऽऽइ३४ओहोवा॥ वाऽऽइ३४शे॥

(दी. १३। प. १४। मा. ५) २७ (दु।४८३)

(२८०।१)॥ कौमुदस्य बृहतः सामनी द्वे। (द्वयोः कुमुदो बृहत्) कौमुदस्य बृहद् बृहतीन्द्रः॥

कस्तमिन्द्रा॥ त्वाऽऽवासाऽऽउ॥ आमर्त्योदधर्षताइ। अद्वाहाइतेऽऽइ। माघवन्पा।
 रियाइदाऽऽइइवीऽऽइ॥ वाजीवाजाऽऽइम्॥ सिपाऽऽइ३। साऽऽइताऽऽइ३४ओहोवा॥
 ऊऽऽइ३३४पा॥

(दी. ८। प. १०। मा. ७) २८ (प्ले।४८४)

(२८०।२)

कस्तमिन्द्रत्वा। वसाऽऽउ। आऽऽइ३४। मर्त्योदधा। षताइ॥ अद्वाहाइतेऽऽइ। माघवन्पा।
 रियाइ। दाइवाओऽऽइ३४वा। ऊऽऽइ३३४पा॥ वाजीवाजाऽऽइम्॥ सिपाऽऽइ३।
 साऽऽइताऽऽइ३४ओहोवा॥ ऊऽऽइ३३४पा॥

(दी. ८। प. १४। मा. ८) २९ (द्वै।४८५)

(२८१।१)

॥ वाचस्साम। वाक्वृहतीन्द्रः॥

इन्द्राग्नीअपादियाऽ६मे॥ पूर्वागाऽ२त्। पद्मताडभाऽ१याऽ२ः। हिवाशिरोऽ२जिह्वयारा।
रापचाराऽ२त्॥ त्रि॒श॒त्प॒दा॥ नियाऽ२३। क्राऽ२माऽ२३४ओहोवा॥ ऊऽ२३३४पा॥

(दी. १०। प. १। मा. ६) ३० (भू।४८६)

(२८२।१)

॥ वाम्रे आशीले वा द्वे द्वयोर्वम्रो बृहतीन्द्रः॥

इन्द्रनेदीयएदि। हाइ। मितमे। धा॥ भिरूतिभिः॥ आशन्ताऽ२३मा। शन्तमाभिरभिष्टिभिः॥
आस्त्वाऽ२३पे॥ स्वाओऽ३होऽ३। पिभिरोऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ८। प. ११। मा. ६) ३१ (टू।४८७)

(२८२।२)

इन्द्रनेदीयएदि। हाऽ। मितमे। धा। भिरूतिभाइः॥ आशन्तमशन्तमाऽ२भाइः। आभिष्टिभिः॥
आस्त्वाऽ२पाइस्त्वाऽ२३॥ हाऽ३। पिभिरोऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ८। प. ११। मा. ९) ३२ (टो।४८८)

॥ षोडश पञ्चमः खण्डः॥५॥ दशतिः॥९॥

(२८३।१) ॥ गौरीविते, प्रहितौ द्वौ, वासुक्त्रे वा। द्वयोर्गौरीवितिर्बृहतीन्द्रः॥

इतरुती॥ वोऽ३ओजाऽ३राम्। औऽ३होऽ३वा। प्रहेतारमप्राहीऽ३ताम्। औऽ३होऽ३वा।
आशुंजेतारऽ३हाइताऽ३राम्। औऽ३होऽ३वा॥ रथाइतममतूर्त्ताऽ२३४०तू॥ ग्रियाऽ३।
वाऽ२र्द्धाऽ२३४ओहोवा॥ स्तुषेऽ१॥

(दी. ९। प. ११। मा. ८) ३३ (तौ।४८९)

(२८३।२)

५ र र र ५९ २ र ११ ? अर ? र र र ?
इतऊतीवोअजाऽदराम्॥ प्रहेतारमप्रहितमुहुवाऽ२३होइ। आशुंजेतार*हाइतारमुहुवाऽ२३हो॥
२ र ? ३२^ २ ५ ३ २ ? ^ ३ ५ र
रथी। तमाऽ२म्। अतूर्ताऽ२३४०तू॥ ग्रियाऽ३। वाऽ२र्द्धाऽ२३४औहोवा॥
२ ? ? ?
स्तौऽ३षाऽ२३४५इ।

(दी. १२। प. ९। मा. ८) ३४ (द्वौ।४९०)

(२८४।१)

॥ आत्रे द्वे द्वयोरत्रिर्बृहतीन्द्रः॥

५ र ? ३ ५ अर ५ नि ? २
मोषुत्वावा॥ घांताऽ२३४५ः। चाऽ२३४ना। आरेअस्मन्निरीऽ२रमन्। आराऽ१त्ताद्वाऽ२।
? अ ? र २ ? अ ? २ ? २
साधमादाऽ२म्। नाआगहि॥ आइहवासाऽ२न्। ऊपश्रुधि। इडाऽ२३भाऽ३४३।
? २
ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ६। प. १२। मा. ८) ३५ (खौ।४९१)

(२८४।२)

५ र र ५ अर ५ र ? २ ?
मोषुत्वावाघतश्चनाऽदए॥ आरेअस्मन्निरीरमाऽ२न्। हाऽ२ऊऊवाऽ२इ। ऊ।
अर ११ र र र ? २ ? २ ? २ ? २ ?
आरात्ताद्वासधमादाऽ२म्। हाऽ२ऊऊवाऽ२इ। ऊऽ२। नआगाऽ२३४ही॥ आइह।
२ ३ ५ २ ? २ ? २ ?
वासौवाओऽ२३४वा॥ उपश्रूऽ२३धाऽ३४३इ। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ११। प. १३। मा. १५) ३६ (गु।४९२)

॥ इति ग्रामे गेय-गाने सप्तमः प्रपाठकः॥७॥

(२८५।१) ॥ गौरीविते द्वे। द्वयोर्गौरीवितिर्बृहतीन्द्रः॥

५ र र र ५ ११ १ २ २ १ २
सुनोतसोमपान्नाऽदृए॥ सोममिन्द्राऽ२३। होवाऽ३हा। यवज्राऽ२३इणाइ।
१ अ १ अ १ २ २ १ २ २ १ २ २
पचतापक्ताइरवसेकृ। पूऽ। ध्वाऽ१मीऽ२३द्वाइ॥ पृ। पान्। आइत्पृऽ३हा॥
१ २ १ २ १ २ ३ ४ ३। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ६। प. १३। मा. १०) १ (गौ।४९३)

(२८५।२)

४ अ ४ अ र अ २ ३ ५ ४ ५ ११ १ २ १ २ १
सुनोतसोमपा। आन्नाओऽ२३४वा। हयाहाइ॥ सोममिन्द्राऽ२। हुवेऽ२। हुवेऽ२हो।
अ १ र अ १ २ २ १ २ २ १ २ २
यावज्जिणाऽ२इ। पचतापक्ताइरवसेकृ। पू। ध्वाऽ१मीऽ२३द्वाइ॥ पृ। पान्। आइत्पृऽ३हा।
१ २ १ २ १ २ ३ ४ ३। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ७। प. १६। मा. १०) २ (चौ।४९४)

(२८६।१) ॥ वामदेव्यम्। वामदेवो बृहतीन्द्रः॥

३ ४ र अ ४ ५ २ अ ५ अ ५ १ र २ अ २
यःसत्राहाविचर्षणिः। इन्द्रन्ताऽ३५हूमहेवयाम्॥ इन्द्रन्त५हूमहेवाऽ२३याम्।
१ र २ १ २ ११ २ १ र २ र १ २
सहस्रमन्योतुविनृम्णसत्पाऽ२३ताइ॥ भवासाऽ२३मा॥ त्सूनोवृधे। इडाऽ२३भाऽ३४३।
१
ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. १०। प. १। मा. ५) ३ (भु।४९५)

(२८७।१) ॥ अश्विनोः सामा। अश्विनो बृहतीन्द्र अश्विनौ॥

४ र १ ४ १ र २ १ २ १ २ १ २ १
शुचीभिर्नाऽ५ःशचीवसू॥ दिवानक्तंदिशस्यताम्। मावाऽ२म्। रातिरुपदसत्कदाचना॥
१ २ १ २ ५ ४ ५ ५
आस्माऽ२त्॥ रातिःकदोऽ२३४वा। चाऽ५नोऽ६हाइ॥

(दी. ५। प. ७। मा. ४) ४ (फी।४९६)

(२८८।१)॥ वसिष्ठस्य वसिष्ठस्य वा, पञ्जस्य पाञ्जस्य वा, पञ्जाणि त्रीणि। त्रयाणां वसिष्ठो
बृहतीन्द्रो वरुणः॥

५ र ? ^ ३ ५ र ३ ५ ५ र ५ र ? ३ ? ३
यदाकादा॥ चाऽ२माऽ२३४औहोवा। दूऽ२३४षे। स्तोताजरेतमर्तियऽ३ः। आदिद्वन्द्वे।
? अ ३ ३ ३ ३ ? ५ ? ? ^ ३ ५ र
तावरुणाऽ२३४म्। विपाऽ३४गिरा॥ धार्त्तरांवीऽ२३॥ ब्राऽ२ताऽ२३४औहोवा॥
३ ? ? ?
नाऽ२३४५म्॥

(दी. ९। प. १०। मा. ५) ५ (नु।४९७)

(२८८।२)

५ र र र ? ? ? ३ ३ अ न ३
यदाकदाचमाहाउ॥ दूषाऽ२इस्तोताऽ२। जराइ। तमर्तियाः। आदिद्वन्दा। औहोऽ३हाऽ३।
३ ? ^ ३ ५ ३ र ? र ३ अ न ३ ३ ? र अ
हाऽ३इ। तावाऽ२रूऽ२३४णाम्। विपागिरा॥ धर्त्तरंव्या। औहोऽ३हाऽ३। हाइ॥ ब्रातानाम्।
? ३ ?
इडाऽ२३भाऽ३४३। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. १०। प. १६। मा. ९) ६ (पो।४९८)

(२८८।३)

४ ३ ५ ३ ५ र ३ ३ ४ ५ ३ ? ३ ? ३
यदाऽ४क। दाऽ४चमी। दूषाऽ३इ। स्तोता॥ जराइ। तमार्त्तरियाऽ३ः। आदाइद्वन्दाऽ३इ।
? ^ ३ ५ र ३ ३ ^ ३ ५ र ३ ३ ^ ३ ५
तावाऽ२रूऽ२३४णाम्॥ विपा। गिरौवाओऽ२३४वा। धर्त्ता। रंव्यौवाओऽ२३४वा॥
४
ब्रताऽ५नाम्। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. ३। प. १५। मा. १०) ७ (णो।४९९)

(२८९।१)

॥ सौभरे द्वे। सौभरिर्बृहतीन्द्रः॥

५ ५ र ५ २ ५ २ १ र २ र ५ २ १ ५ १ ५ २
पाहिगाआ। धसोमाऽ२३दाइ। आइन्द्रायमे। धियाताऽ२३इथाइ। यःसंमिश्रोहरियोर्यः।

अ १ २ २ २ १ ५ ५ ५
हाइरण्यायाऽ२ः॥ आइन्द्रोवाऽ३ज्जीऽ३॥ हिरोऽ२३४वा। ण्याऽ५योऽ६हाइ॥

(दी. ८। प. ९। मा. १०) ८ (दौ।५००)

(२८९।२)

५ ५ ५ ५ २ १ र २ र ५ २
पा। ह्योपाही॥ गाअन्धसोमाऽ२३दाइ। आइन्द्रायमे। धियाताऽ२३इथाइ।

१ १ १ १ १ १ ५ ५ ५
यसंमिश्रोऽ२हरियोर्यः। हाइरण्यायाऽ२ः॥ आइन्द्रोवाऽ३ज्जीऽ३॥ हिरोऽ२३४वा।

५ ५
ण्याऽ५योऽ६हाइ॥

(दी. ८। प. १०। मा. १०) ९ (णौ।५०१)

(२९०।१)

॥ इन्द्रस्य वैयश्चम्। व्यश्चो बृहतीन्द्रः॥

५ ५ १ १ ५ १ २ २ ५ ५ १ १ १
उभयश्चृणवचनाऽ६ए॥ आइन्द्रोऽ२अर्वागिदंवाऽ२३ः। होवाऽ३हाइ। सत्राचियामघवाऽ२न्।

१ २ २ २ ३ ५ २ ५ १ २ १ ५ ५
सो। मापाऽ३हाइ। ताऽ२३४याइ॥ धियाशाविष्ठआऽ२३होइ॥ गमात्। औऽ२३होवा।

५
होऽ५इ॥ डा॥

(दी. ६। प. १२। मा. १२) १० (खा।५०२)

(२९१।१) ॥ सहस्रायुतीये, प्रजापतेर्महोविशीये वा द्वे। प्रजापतिर्बृहतीन्द्रः॥

५ ५ ५ ५ २ ३ ५ २ र र १ २ ५ ५ ३ २
महेचनोवा॥ त्वाअद्राऽ२३४इवाः। पुराशुल्का। यऽ३दायासाऽ३इ। नस। हस्राऽ३।

१ १ २ र १ २ ५ ५ ५ २ १ ५ २ ५ ५
यानायुता। यवाज्जाइवोऽ३॥ नशा। तायाऽ३॥ शाऽ२३ताऽ३। माऽ३४५घोऽ६हाइ॥

(दी. ६। प. १२। मा. ६) ११ (खू।५०३)

(२९१।२)

महेचाऽऽनत्वाअद्रिवाः॥ पाराशुल्का। यदायाऽऽसाऽऽइ। नसहस्राऽऽ। यनायुतायावज्जिऽऽ॥
 नशाताऽऽइया॥ शताऽऽइ। माऽऽधाऽऽइ४औहोवा॥ महोविशेऽऽ॥

(दी. ९। प. ९। मा. ५) १२ (धु।५०४)

(२९२।१) ॥ इन्द्राण्यास्साम। इन्द्राणी बृहतीन्द्रः॥

वस्याङ्इन्द्रासिमे। हाउपितूः॥ उताभ्राऽऽइ४तूः। अभूञ्जातौ। वाओऽऽइ४वा। माताचामौ।
 वाओऽऽइ४वा॥ छदयथः। साऽऽइमावासौ। वाओऽऽइ४वा॥ वसूत्बानौ। वाओऽऽइ४वा॥
 यरोऽऽइ४वा। धाऽऽइसोऽऽइहाइ॥

(दी. ४। प. १४। मा. १०) १३ (धौ।५०५)

सप्तदश षष्ठः खण्डः॥६॥ दशतिः॥१०॥

इति तृतीयः प्रपाठकः॥३॥

(२९३।१) ॥ सौभरम्। सुभरिर्बृहतीन्द्रः॥

इमाऽऽइ४इ॥ इमइ। द्रायसुन्वाऽऽइइराइ॥ सोमासोदध्याशिराः।
 ताऽऽआमदायवज्जहस्तपीतायाइ॥ हराऽऽइ४हो। भ्यायाऽऽइ४हो॥ हियोऽऽइ४।
 काऽऽइआऽऽइ४औहोवा॥ ऊऽऽइ४पा॥

(दी. १२। प. १०। मा. ९) १४ (धौ।५०६)

(२९४।१) ॥ गार्त्समदम्। गृतसमदो बृहतीन्द्रः॥

इममन्द्राऽऽइमदायताइ॥ सोमाश्चिकित्रउक्थिनाः। माऽऽइधोऽऽइपापाऽऽइ।
 नउपनोगिराःशाऽऽइर्णूऽऽइ४। रास्वस्तोऽऽइ४त्रा॥ यगिर्वाऽऽइ४णाऽऽइ४इ४। ओऽऽइ४इ४इ४। डा॥

(दी. ५। प. ८। मा. ७) १५ (बो५०७)

(२९५।१) ॥ वाचस्साम। वाग्बृहतीन्द्रः॥

आब्रद्यासाऽबर्दुघाम्॥ हुवाङ्गाऽयत्रवेऽपसम्। आङ्द्रधेऽङ्गुम्। सुदुघाम्। आऽ।
नियाऽरमाऽरङ्गुषाम्॥ उरुधाऽरङ्गाम्॥ अरंकाऽरङ्गुऽरङ्गुम्। ओऽरङ्गुऽरङ्गुम्॥ डा॥

(दी. ५। प. १०। मा. ११) १६ (मा५०८)

(२९६।२) ॥ बार्हदुक्थम्। बृहदुक्थो बृहतीन्द्रः॥

नत्वाबृहा। तोऽध्रयाः॥ वरन्तङ्द्रवीडाऽरङ्गुः। याछिक्षासीऽर। स्तूवताङ्गुमाऽर। वतेवसू॥
नकिष्ठाऽरङ्गुदा॥ मिनाताऽरङ्गुताऽरङ्गुऽरङ्गुम्। ओऽरङ्गुऽरङ्गुम्॥ डा॥

(दी. ४। प. १०। मा. ७) १७ (ने।५०९)

(२९७।१) ॥ नैपातिथं वाशम् वा। निपातिथिर्बृहतीन्द्रः॥

कईवेदा॥ सुताङ्गुसाऽश्चाऽर। पिबन्तंकद्रायोऽश्दाधाऽरङ्गुम्।
अयंयःपुरोविभिनत्ताओऽश्जासाऽर॥ मन्दानाऽरङ्गुःशीऽर॥ प्राऽरयाऽरङ्गुओहोवा॥
धाऽरङ्गुसाः॥

(दी. ६। प. ७। मा. ६) १८ (खू।५१०)

(२९८।१) ॥ तौरश्रवसम्। तुरश्रवा बृहतीन्द्रः॥

यदिन्द्राऽरङ्गुशासोअत्रताम्॥ च्यावयासा। दाऽरसास्पारो। वाऽर२। अस्माकामो। वाऽर२।
शुमघवन्। पुरूस्पृहो। वाऽर२॥ वसाव्यायो। वाऽर२३॥ धिबोऽरङ्गुऽरवा। हाऽरयोऽरङ्गुहाङ्गुम्॥

(दी. ४। प. १३। मा. ४) १९ (दी।५११)

(२९९।१) ॥ बाष्टयास्साम। बाष्टी बृहतीन्द्रो विश्वेदेवाः॥

बृष्टाऽ३४। नोदैवियम्। वचाः। पर्जन्योब्रह्मणस्पाऽ२३तीः॥ पुत्रैर्भ्रातृभिरदितिर्नुपातूऽ२३नाः॥
दुष्टाराऽ२३०त्रा॥ मणवाऽ२३चाऽ३४३ः। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ६। प. ९। मा. ६) २० (घृ।५१२)

(३००।१) ॥ अदितेः साम। अदितिर्बृहतीन्द्रः॥

कदाचनास्ताऽदरीरसाइ॥ नेन्द्रासाऽ२३४श्वा। साइदाशूऽ२३४षाइ। उपोपेन्नुमघवन्भूयइत्।
हाऽ२इनूऽ२३४ताइ॥ दानदाऽ२३४इवा॥ स्यपोऽ२३४वा। च्याऽ५तोऽ६हाइ॥

(दी. ६। प. ८। मा. ९) २१ (गो।५१३)

(३०१।१) ॥ आजीगर्तम्। अजीगर्तिर्बृहतीन्द्रः॥

आइहीऽ२। आइहीहाइ। युंक्षाहिवाऽ३र्त्राऽ३हन्तम॥ हारीइन्द्र। परावाऽ१ताऽ२३४ः।
अर्वाऽ३४चीनाः। माघवन्त्सो। मपाइताऽ१याऽ२३४इ॥ उग्राऽ३४ऋष्वाऽ३इ॥
भिरोऽ२३४वा। गाऽ५होऽ६हाइ॥

(दी. ४। प. ११। मा. ११) २२ (ता।५१४)

(३०२।१) ॥ माधुच्छन्दसम्। मधुच्छन्दा बृहतीन्द्रः॥

बामिदा। होइ। हियोनराऽ६ए॥ अपाइप्यन्वा। ज्राइभूर्णाऽ२३४याः। सइन्द्रस्तोमवाहसः।
इहाश्रूधा। औहोऽ३४वाहाइ॥ उपास्वासा। औहोऽ३४वाहा॥ रमागाऽ२३हाऽ३४इइ।
ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. १०। प. १३। मा. १०) २३ (बौ।५१५)

दश सप्तमः खण्डः॥७॥ दशतिः॥१॥

(३०३।१) ॥ उपसस्सामा उषा बृहतीन्द्रः॥

२ १ ३ २ १ ३ २ १ २ १ २ १ ३ २ १ ३ २
प्रताइ। इहा। आइ। इहा। उवदा। शिऽइआयती। आयती॥ उच्छा। इहा। आऽ। इहा।
१ १ अ १ अ १ अ ३ २ १ ३ २ १ ३ २ १ ३ २
तीदु। हिऽइतादिवाऽः। आदिवाऽः॥ अपो। इहा। ओऽ। इहा। माहीवृणुतेच।
१ अ १ अ १ अ ३ २ १ ३ २ १ ३ २ १ अ
क्षुपातमाऽः। आतमाऽः॥ ज्योताइ। इहा। आइ। इहा। कृणो। तिऽइसूनरीऽः।
१ अ १ अ
ओनरीऽः३४३। ओऽः३४५इ॥ डा॥

(दी. ५। प. ३०। मा. १०) २४ (मो।५१६)

(३०४।१) ॥ अश्विनोः सामा अश्विनौ बृहतीन्द्रः (अश्विनौ वा)॥

२ १ ३ २ १ ३ २ १ ३ २ १ ३ २ १ ३ २
इमाउवांदिविष्टयाऽः३४ऐही॥ उस्नाहवन्तेअश्विनाऽः३४ऐही॥
२ १ ३ २ १ ३ २ १ ३ २ १ ३ २ १ ३ २
अयंवामह्वेवसेशचीवसूऽः३४ऐही॥ विश्विश्चिह्निगच्छाथाऽः३४ऐही॥ होऽः५इ॥ डा॥

(दी. १२। प. ६। मा. ७) २५ (चे।५१७)

(३०५।१) ॥ अश्विनोः संयोजनम्। अहिनौ बृहतीन्द्रः (अश्विनौ वा)॥

४ ५ ४ ५ १ २ ३ २ १ ३ २ १ ३ २ १ ३ २ १ ३ २
कुष्ठःकोवामश्विनाआ॥ तापानोदे। वामर्तायाऽः। होवाऽःइहाऽः४इ। घृताऽःइवामाऽः१।
१ २ १ २ १ २ १ २ १ २ १ २ १ २ १ २ १ २ १ २
श्रायाऽः। होवाऽःइहाऽः४इ। क्षपाऽःइमाणाः। आशूनाऽः। होवाऽःइहाऽः४इ॥
३ २ ३ २ १ ३ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ २
इत्थाऽःइमुवाऽःइत्॥ उवाऽःइन्। यथाऽःइओहोवा॥ ऊऽःइ३४पा॥

(दी. १०। प. १४। मा. ९) २६ (भ्वो।५१८)

(३०६।१) ॥ अश्विनोः सामा अश्विनौ बृहतीन्द्रः (अश्विनौ वा)॥

अयाऽऽऽम्। अयंवांम॥ धुमत्ताऽऽमाः॥ सुतःसोमोऽऽदिविष्टिषु। ओऽऽहा। ओऽऽहाऽऽऽ।
 ओहा। तामश्चिनापिबतंतिरोअहियम्। ओऽऽहा। ओऽऽहाऽऽऽ। ओहा॥ धताऽऽराऽऽत्ताऽऽ।
 ओऽऽहा। ओऽऽहाऽऽऽ। ओहा॥ निदाऽऽऽ। शूऽऽपाऽऽऽऽओहोवा॥ ऊऽऽऽऽपा॥

(दी. १०। प. १८। मा. ५) २७ (बृ।५१९)

(३०७।१) ॥ सोमसाम। सोमो बृहतीन्द्रः (सोमो वा)॥

आत्वासोमा। स्या। गल्दाऽऽयाऽऽऽऽओहोवा। सदाऽऽयाचन्नहजियाऽऽऽ।
 भूर्णाओऽऽऽऽवा। सृगन्नसवनेषुचुकुधम्॥ कईशाऽऽऽनाम्॥ नायाचिषत्।
 इडाऽऽऽभाऽऽऽऽ। ओऽऽऽऽऽऽइ॥ डा॥

(दी. १०। प. ११। मा. ७) २८ (पो।५२०)

(३०८।१) ॥ आजमायवम्। अजमायुर्बृहतीन्द्रः॥

अध्वर्योद्राऽऽवयातुवाम्॥ सोममिन्द्राऽऽः। पिपासाऽऽतीऽऽ। उपोऽऽनूनयुजेवृ।
 पाणाऽऽहारीऽऽ॥ आचाजाऽऽऽगा॥ मवृत्रहा। ओऽऽहोवा। होऽऽइ॥ डा॥

(दी. ७। प. १०। मा. ३) २९ (त्रि।५२१)

(३०९।१) ॥ समुद्रप्रेयमेधम्। प्रियमेधा बृहतीन्द्रः॥

अभीषतस्तदाहाउ॥ भरा॥ इन्द्रज्यायःकनीयाऽऽऽसाः। पुरुवसुर्हिमघवन्बभूवाऽऽऽइथा॥
 भराइभाऽऽऽरे॥ चहव्यः। इडाऽऽऽभाऽऽऽऽ। ओऽऽऽऽऽइ॥ डा॥

(दी. ६। प. ९। मा. ६) ३० (घृ।५२२)

(३१०।१) ॥ वैरूपे द्वे। द्वयोरिन्द्रो बृहतीन्द्रः॥

असौहोवाऽऽहाइ। वीऽऽ३४दे। वांगोऋ। जीकमन्थाः॥ न्यौहोवाऽऽहा। स्मीऽऽ३४नी।
द्रोजनु। पैमुवोचा॥ बोधौहोवाऽऽहाइ। माऽऽ३४सी। बाहरि। अश्वयज्ञैः॥
बोधौहोवाऽऽहाइ। नाऽऽ३४स्तो। ममन्था सोऽऽ३४३। माऽऽ३दाऽऽ५इपूऽऽ६५६॥

(दी. ११। प. १७। मा. ७) ३५ (खे।५२७)

(३१३।२) ॥ निहवः निहवम् वा॥ वसिष्ठस्त्रिष्टुबिन्द्रः॥

आइहीऽऽ। आइही। एहीया। ओऽऽ३४वा। हाइ। असाविदेवंगोऋजीकऽऽमान्थाऽऽः।
आन्थाः। अन्था। ओऽऽ३४वा। हाइ॥ न्यस्मिन्निन्द्रोजनुपेमुऽऽ वोचाऽऽ। वोचा। वोचा।
ओऽऽ३४वा। हाइ॥ बोधामसिबाहर्षश्चऽऽयाज्ञैऽऽ। याज्ञैः। यज्ञा। ओऽऽ३४वा। हाइ॥
बोधानस्तोममन्थसोमऽऽदाइपूऽऽ। आइपू। एषुवा। ओऽऽ३४वा। हाइ। आइहीऽऽ।
आइही। एहीया। ओऽऽ३४वा। हाऽऽ३४। औहोवा॥ ईऽऽ३४५॥

(दी. ११। प. ३२। मा. १६) ३६ (श्रू।५२८)

॥ इति ग्रामे गेय-गानेऽष्टमस्यार्धः प्रपाठकः॥

(३१४।१) ॥ योनिनी द्वे। द्वयोरृत्समदः त्रिष्टुबिन्द्रः॥

योनीः। तआइ। द्राऽऽसदा। नाअकारी॥ तामा। नृभाइः। पुरूहूऽऽ। ताप्रयाही॥ आसाः।
यथा। नोऽऽअवि। तावृधश्चीत्॥ दादाः। वसू। नीऽऽममा। दाऽऽ३४३ः।
चाऽऽसोऽऽ५माऽऽ६५६इः॥

(दी. नास्ति। प. १७। मा. १३) १ (यि।५२९)

(३१४।२)

योनिष्टआइ। द्रसदनाइ। होवा॥ आकाऽइ। राइतमानृभीः। होवा। पूऽ। रूहूऽइ।
ताप्रयाही। होवा। आसोयथा। नोअविता। होवा॥ वार्द्धाऽइः। चाइददोवसू। होवा॥
नाइममदः। चसोमैः। होवा। होऽइइ॥ डा॥

(दी. ६। प. २१। मा. १२) २ (का।५३०)

(३१५।१) ॥औरुक्षये द्वे। द्वयोरुरुक्षयस्त्रिष्टुबिन्द्रः॥

अददर्रूत्॥ समसृजोविखानि। बमर्णाऽइइवान्। बद्धधानाअराम्णाः। महान्ताऽइइमी।
द्रपर्वतंवियाद्वः॥ सृजाद्धाऽइइराः॥ अवयदान। वाऽइइहाऽइइइन्। ओऽइइइइइ॥ डा॥

(दी. ५। प. ११। मा. ८) ३ (पौ।५३१)

(३१५।२)

अददर्रूत्समसृजाः॥ विखानि। बमर्णवान्बद्धधानाअराऽइइम्णाः।
महान्तमिन्द्रपर्वतंवियाऽइइद्वः॥ सृजाद्धाराऽइः॥ अवाऽइइयदान। वाऽइ। याऽइइइओहोवा॥
हाऽइइइइइन्।

(दी. १०। प. ९। मा. ७) ४ (भौ।५३२)

(३१६।१) ॥ पार्थे द्वे। द्वयोः (पृथी वैन्यः) पार्थस्त्रिष्टुबिन्द्रः॥

सूष्वाणासाः॥ इन्द्रस्तु। मसिबा। सनिष्यन्तश्चित्तुविनु। म्णवाऽइइइजाम्। आनः।
भराओऽइइइवा। सुवितंयस्यको। नाऽ॥ तानात्माना॥ सहिया। माऽइइइइ।
तूऽइइवोऽइइताऽइइइइः॥

(दी. ३। प. १३। मा. ५) ५ (दु।५३३)

(३१६।२)

ओऽ३होऽ३होइ। सूऽ२३४ष्वा। णासाः। इन्द्रस्तु। मसिबा॥ ओऽ३होऽ३होइ।
साऽ२३४नी। प्यन्ताः। चीऽ३त्तुवि। नृम्णवाजाम्॥ ओऽ३होऽ३होइ। आऽ२३४नाः। भरा।
सुवितऽ३म्। यस्यकोना॥ ओऽ३होऽ३होइ। ताऽ२३४ना। त्मना। सहिया। माऽ३४३।
तूऽ३वोऽ५ताऽ६५६ः॥

(दी. २। प. २१। मा. १०) ६ (चौ।५३४)

(३१७।१) ॥ सौपर्णे द्वे द्वयोः सुपर्णस्त्रिष्टुबिन्द्रः॥

जगृह्णातेदक्षिणमोहाओहाऽ६ए॥ इन्द्रहाऽ२३स्ताम्। विसूयवो। वसुपाऽ३। ताइवसू। नाम्।
ओऽ३। हा। ओऽ३। हाऽ३ए॥ विद्वाहिबा। गोपतीऽ३म्। शूरगो। नाम्। ओऽ३। हा।
ओऽ३। हाऽ३ए॥ अस्मभ्यंचाइ। त्राऽ३०वृषा। णरयिम्। दाः। ओऽ३। हा। ओऽ३।
हाऽ३ए। रयाइन्दाऽ३२उवाऽ३। ऊऽ३४पा। औहोऔहोवाऽ२३४५हाउ। वा॥ ईऽ२३४५॥

(दी. ११। प. ३१। मा. १७) ७ (क्रे।५३५)

(३१७।२)

जगृह्णातेदक्षिणम्। औहोहोवाहाइ॥ इन्द्राहाऽ२३४स्ताम्। विसूयवो। वसुपाऽ३। ताइवसू।
नौ। वाओऽ२३४वा। हाऽ३हाइ॥ विद्वाहिबा। गोपतीऽ३म्। शूरगो। नौ। वाओऽ२३४वा।
हाऽ३हाइ। अस्मभ्यंचाइ। त्राऽ३०वृषा। णरयिम्। दौ। वाओऽ२३४वा। हाऽ३हाऽ३४।
औहोवा। ईऽ२३४५॥

(दी. १। प. २३। मा. १२) ८ (द्रा।४३६)

(३१७।३) ॥ वात्सप्राणि त्रीणि। त्रयाणां वत्सप्रिस्त्रिष्टुबिन्द्रः। तृतीयं वात्सप्रम्॥

होईऽ२। होईऽ२। होईऽ२। जगृह्मातेदक्षिणम्। इन्द्रहास्ताऽ२म्। हास्ताऽ२म्। हास्ताऽ२म्॥
वसूयवोऽ२वसुप। तेवसूनाऽ२म्। सूनाऽ२म्॥ सूनाऽ२म्॥ विद्वाहिबागोपतिम्।
शूरगोनाऽ२म्। गोनाऽ२म्। गोनाऽ२म्॥ अस्मभ्यंचित्रंवृष। णश्रयाइन्दाऽ२ः। आइन्दाऽ२ः।
आइन्दाऽ२ः। होइऽ२। होइऽ२। होयाऽ२। वाऽ२३४ओहोवा॥ ई२३४५॥

(दी. ११। प. २४। मा. २३) ९ (घि।५३७)

(३१७।४)

आओहोइ। आओहोइ। आओहोऽ६वा। ओऽ३होइ। ओऽ३होइ। ओऽ२३होवा।
जगृह्माताइ। दक्षिणाऽ३म्। इन्द्रहस्तम्। द्रहस्तम्। द्रहस्ताम्॥ वसूयवो। वसूपाऽ३।
ताइवसूनाम्। वसूनाम्। वसूनाम्॥ विद्वाहिबा। गोपतीऽ३म्। शूरगोनाम्। रगोनाम्।
रगोनाम्॥ अस्मभ्यंचाइ। त्राऽ३०वृष। णश्रयिन्दाः। रयिन्दाः। रयिन्दाः। आओहोइ।
आओहोइ। आओहोऽ६वा। ओऽ३होइ। ओऽ३होइ। ओऽ२३होवाऽ३४। ओहोवा॥
ईऽ२३४५॥

(दी. १४। प. ३४। मा. ३१) १० (घा।५३८)

(३१७।५)

॥ महावात्सप्रोत्तरम्॥

हाउऽ(३)। ओ। होहोवा। (द्वेत्रिः)। जगृह्माताइ। दक्षिणाऽ३म्। इन्द्रहस्तम्। द्रहस्तम्।
द्रहस्ताम्॥ वसूयवो। वसूपाऽ३। ताइवसूनाम्। वसूनाम्। वसूनाम्॥ विद्वाहिबा।
गोपातीऽ३म्। शूरगोनाम्। रगोनाम्। रगोनाम्॥ अस्मभ्यंचाइ। त्राऽ३०वृष। णश्रयिन्दाः।

रयिन्दाः। रयिन्दाः। हाउऽ(३)। ओऽ। होहोवा। ओऽ। होहोवा। ओऽ। हो। होऽ॑।
वाऽ२३४। औहोवा॥ ईऽ२३४५॥

(दी. १२। प. ३८। मा. २३) ११ (जि। ५३९)

(३१८।१) ॥ गौरीवितम्। गौरीवितस्त्रिष्टुबिन्द्रः॥

इन्द्रनाऽ२३४रो। नेमाधाऽ२३४इता। हवन्ताऽ२३४इ॥ यत्पाराऽ२३४याः। यूनाजाऽ२३४ताइ।
धियास्ताऽ२३ः॥ शूरोनाऽ२३४र्षा। ताश्रावाऽ२३४साः। चकामाऽ२३४इ॥ आगोमाऽ२३४ती।
व्रजाइभाऽ२३४जा। ब्रनाऽ३२उवाऽ३। एऽ३। उपाऽ२३४५॥

(दी. नास्ति। प. १४। मा. ९) १२ (लो। ५४०)

(३१९।१) ॥ वैदन्वतम्। विदन्वास्त्रिष्टुबिन्द्रः (सूर्यो वा)॥

वयोहाहाउ॥ सूपर्णाउपसेदुराइन्द्रम्। प्रियमेधाऋषयोनाधमाऽ२३नाः।
अपत्वान्तमूर्णहिपूर्धिचाऽ२३क्षूः॥ मुमुग्धि। औऽ३होऽ३इ॥ आऽ२१। स्माऽ३त्रिधा।
येऽ३४३। वाऽ३बाऽ५इऽ३५६५६न्॥

(दी. १०। प. १०। मा. ९) १३ (मो। ५४१)

(३२०।१) ॥ यामम्। यमस्त्रिष्टुबिन्द्रः (यमो वा)॥

आऽ२याम्। अयायम्। औऽ३होऽ३इ। आऽ२इ। ऊऽ२। नाकेसुपार्णमुपयात्पतन्ताम्।
पतन्ताम्। औऽ३होऽ३इ। आऽ२इ। ऊऽ२॥ आऽ२याम्। अयायम्। औऽ३होऽ३इ।
आऽ२इ। ऊऽ२। हृदावेनांतोअभ्यचाक्षतत्त्वा। क्षतत्त्वाऽ३। होऽ३इ। आऽ२इ। ऊऽ२॥
आऽ२याम्। अयायम्। औऽ३होऽ३इ। आऽ२इ। ऊऽ२। हिरण्यपाक्षंवरुणास्यदूताम्।

स्यदूतम्। औऽइहोऽइइ। आऽइइ। ऊऽइ॥ आऽइयाम्। अयायम्। औऽइहोऽइइ।
 आऽइइ। ऊऽइ। यमस्योनौशकुनांभुरण्युम्। भुरण्युम्। औऽइहोऽइइ। आऽइइ। ऊऽइ।
 आऽइयाम्। अयायम्। औऽइहोऽइइ। आऽइइ। ऊऽइ। वाहाऽइइउवाऽइइ॥ एऽइ।
 दिवम्। एऽइ। दिवम्। एऽइ। दिवाऽइइइइइम्॥

(दी. १४। प. ५२। मा. ३९) १४ (थो।५४२)

(३२१।१) ॥ ऋतुसामनी द्वे। ऋतुस्त्रिष्टुबिन्द्रः (बृहस्पतिर्वा)॥

ब्रह्मा। ब्राऽइइइहा। जज्ञानप्रथमंपुरास्तात्। विसाइ। वाऽइइइसी। मतःसुरुचोवेनआवः॥
 सबू। साऽइइइबू। धियाउपमाअस्यवाइष्टाः॥ सताः। साऽइइइताः।
 चयोनिमसतश्चवाइवाऽइइइः। ओऽइइइइइइ॥ डा॥

(दी. ६। प. १४। मा. १४) १५ (घो।५४३)

(३२१।२)

हुवेऽइइहाऽइइ। हुवेऽइइहाऽइइ। हिषाऽइया। ब्रह्मजज्ञा। नाऽइइ०प्रथा। मुंपुरस्तात्॥
 विसीमताः। सुरुचः। वेनआवाः॥ सबुधियाः। उपमाः। अस्यविष्टाः॥ सतश्रयो। नीऽइइमसा।
 तश्चविवाः। हुवेऽइइहाऽइइ। हुवेऽइइहाऽइइ। हि। पाऽइः। आऽइइइइ। औहोवा॥ एऽइ।
 ऋतममृतम्। एऽइ। ऋतममृतम्। एऽइ। ऋतममृताऽइइइइइम्॥

(दी. ४। प. २७। मा. १७) १६ (थो।५४४)

(३२२।१) ॥ वारवन्तीयम्। इन्द्रस्त्रिष्टुबिन्द्रः॥

५ र र र ४ ५ ३ ३ ३ २ ३ ४ ५ २ १ २ १ २ ३ ४ ५ २
 अपूर्व्याओहोहोहाइ ॥ पुरुत। मानियस्मे। महेवीरा। याऽऽतवा। साइतुराया। विरञ्चि।
 २ ३ ४ ५ २ २ ३ ४ ५ २ १ २ १ २ ३ ४ ५ ३ ४ ५
 नाइवज्जिणे। शाऽऽ३३०तमानि॥ वचाऽसिया। स्माऽऽइस्थवि। रायतक्षू॥ स्थविरायतक्षूः।
 २ २ ४ १ २ ३ १ १ १
 स्थवि। राऽऽ३३। याऽऽताऽऽक्षूऽऽ६६६६॥ स्थविरायतक्षूऽऽ३३४५॥

(दी. १०। प. १७। मा. ९) १७ (फो।५४५)

॥ एकोनविंशति प्रथमः, नवमः खण्डः॥९॥ दशतिः॥३॥

(३२३।१) ॥ क्षुरपविणी द्वे। इन्द्रस्त्रिष्टुबिन्द्रः (इन्द्राबृहस्पती वा)॥

२ ३ ५ २ ३ ४ ५ १ १ १ १ २ ३ ५
 अवद्राऽऽ३४प्साः। आऽशूमाऽऽ३४तीम्। आतीऽऽ। षाऽऽ३४५त्॥ ईयानाऽऽ३४ःकृ॥
 २ ३ ५ १ २ १ १ १ २ ३ ४ ५ २ ३ ४ ५
 षोदाशाऽऽ३४भीः। साहाऽऽ। साऽऽ३४५इः॥ आवत्ताऽऽ३४मी। द्रःशाचीऽऽ३४या।
 १ २ १ १ १ २ ३ ४ ५ २ ३ ४ ५ १ २ ३ ४ ५
 धामाऽऽ। ताऽऽ३४५म्॥ आपस्नीऽऽ३४ही। तिनृमाऽऽ३४णाः। अधाऽऽद्राऽऽ३४ओहोवा॥
 २ १ १ १
 अधाऽऽद्राऽऽ३४५ः॥

(दी. २। प. १६। मा. १०) १८ (चौ।५४६)

(३२३।२)

५ ५ १ २ ३ ४ ५ १ २ ३ ४ ५ १ २ ३ ४ ५
 अवद्रप्साऽऽ६ए॥ आऽशुमतीमतिष्ठाऽऽ३त्। इयानःकृष्णाः। दाशभिःसहस्राऽऽ३इः॥
 ३ २ ३ ४ ५ १ २ ३ ४ ५ ३ २ ३ ४ ५ १ २ ३ ४ ५
 आवत्तमिन्द्राः। शाचिशाधमन्ताऽऽ३म्॥ अपास्नीहितीम्। नृमणाऽऽ३ः। अधाऽऽद्राः।
 ४
 होऽऽइ॥ डा॥

(दी. ५। प. ११। मा. ११) १९ (पा।५४७)

(३२३।३) ॥ स्यौमरश्मे द्वे। स्युमरश्मिस्त्रिष्टुबिन्द्रः॥

अवद्रप्सोअश्मुतीम्। औऽऽहोऽऽऽइ। ओहोवा॥ आतीऽऽष्ठात्। औऽऽहोऽऽऽइ।
 औहोवा। ईयानःकृष्णाः। औऽऽहोऽऽऽइ। औहोवा। दाश। भाइःसहस्रैः। औऽऽहोऽऽऽइ।
 औहोवा॥ आवत्तमिन्द्राः। औऽऽहोऽऽऽइ। औहोवा। शाऽचि। यधमन्ताम्।
 औऽऽहोऽऽऽइ। औहोवा॥ अपास्नीहितीम्। औऽऽहोऽऽऽइ। औहोवा।
 नृमाऽऽणाऽऽऽऽऽहोवा॥ अधाऽऽद्राऽऽऽऽऽऽ॥

(दी. २१। प. २५। मा. १८) २० (डै।५४८)

(३२३।४)

अवद्रप्सोअश्मुतीम्। एऽऽ। औऽऽहोऽऽऽवाऽऽ। आताऽऽऽऽऽऽऽइष्ठाऽऽऽऽऽत्।
 ईयानःकृष्णोदशभिस्सहस्रैः॥ आवत्तम्। आऽ। द्राऽऽऽशचि। याधमन्ताम्॥
 अपस्नीहितीनृमणाः। ओवा॥ अधद्राऽऽआऽऽऽऽऽऽ॥

(दी. ९। प. १२। मा. १०) २१ (थौ।५४९)

(३२४।१) ॥ द्यौताने, धृषतो मारुतस्य सामनी वा द्वे। द्युतानस्त्रिष्टुबिन्द्रः॥

हाऽऽ। ओऽऽहाऽऽ। ओऽऽहाऽऽ। हाइ। वृत्रस्यत्वा। श्वसथात्। ईषमाणाः॥ विश्वेदेवाः।
 अजहूऽऽऽ। येसखायाः॥ मरुद्विराइ। द्राऽऽऽसखि। यन्तेअस्तू॥ अथेमावाइ। श्वाऽऽऽऽऽपृता।
 नाजयासी। हाऽऽ। ओऽऽहाऽऽ। ओऽऽहाऽऽ। हाऽऽऽ। ओहोवा॥ आऽऽहोऽऽऽऽऽऽ॥

(दी. ८। प. २२। मा. १०) २२ (ठौ।५५०)

(३२४।२)

होयेऽ३। हयायेऽ३। हया। औहोऽ२३४वा। हाऽ। वृत्रस्यत्वा। श्वसथात्। ईषमाणाः॥
 विश्वेदेवाः। अजहूऽ३ः। येसखायाः॥ मरुद्भिराह। द्राऽ३सखि। यन्तेअस्तू॥ अथेमावाह।
 श्वाऽ३ःपृत। नाजयासी। होयेऽ३। हयायेऽ३। हया। औहोऽ२३४वा। हाऽ३४। औहोवा॥
 आऔऽ३हो। आऔऽ३होऽ२३४५॥

(दी. १०। प. २५। मा. ११) २३ (मा५५१)

(३२५।१) ॥ सोमसामनी द्वे। द्वयोः समस्त्रिष्टुबिन्द्रः (सूर्यो वा)॥

वीधूम्। दद्रादद्रा। णाऽ३समा। नाइबहूनाम्॥ यूवा। नसानसा। ताऽ३०पलि।
 तोजगारा॥ देवा। स्यपास्यपा। श्याऽ३कावि। यंमहिबा॥ आदा। ममाममा। राऽ३सहि।
 याऽ३४३ः। साऽ३माऽ५नाऽ६५६॥

(दी. १। प. १७। मा. ४) २४ (खी५५२)

(३२५।२)

हः५४। आऽ४५। हः। हः२३४५। विधुदद्रा। णाऽ३समा। नाइबहूनाम्॥ युवानसा।
 ताऽ३०पलि। तोजगारा॥ देवस्यपा। श्याऽ३कावि। यंमहिबा॥ हः५४। आऽ४५। हः।
 हः२३४५। अदाममा। राऽ३सहि। याऽ३४३ः। साऽ३माऽ५नाऽ६५६॥

(दी. ४। प. २१। मा. ३) २५ (ति।५५३)

(३२६।१) ॥ इन्द्रवज्रे द्वे। इन्द्रस्त्रिष्टुबिन्द्रः॥

औहोइतुवाम्। हत्यत्सप्तभ्योजायमानाऽ२३४ः॥ औहोअशा। त्रुभ्योअभवःशत्रुरिन्द्राऽ२३४॥
 औहोइगूढे। दावापृथिवीअन्वविन्दाऽ२३४ः॥ औहोइविभू। मद्भ्योभुवनेभ्योरणधाऽ२३४५ः॥

(दी. १९। प. ८। मा. १०) २६ (दो।५५४)

(३२६।२)

बोहाइ। हत्यौवाओऽ२३४वा। सप्तभ्योजायमा। नोवाऽ३। ओवाऽ२३४५॥ अशोहाइ।
त्रुभ्यौवाओऽ२३४वा। अभवःशत्रुरि। द्रोवाऽ३। ओवाऽ२३४५॥ गूढोहाइ।
दौवाओऽ२३४वा। पृथिवीअन्ववि। दोवाऽ३। ओवाऽ२३४५॥ विभोहाइ।
मद्भ्यौवाओऽ२३४वा। भुवने। भ्योवाऽ३। ओवाऽ२३४५। रणा५०धाः। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. ६। प. २३। मा. ११) २७ (गा।५५५)

(३२७।१)॥ ऋषिप्रमाणपदगणिते अर्द्धवेयः। सूर्यवर्चसो भृष्टिमतः सामनी द्वे।

भृष्टिमांस्त्रिष्टुविन्द्रः॥

मेडीम्॥ नत्वावज्जिणंभृष्टिमाऽ२३०ताम्। पुरुधस्मानंवृषभश्स्थिराऽ२३प्सूम्।
करोष्यस्तुरुपाइर्दुवाऽ२३स्यूः॥ आइन्द्रदुक्षम्॥ वृत्राऽ२३। हाऽ२णाऽ२३४औहोवा॥
गृणीऽ३षेऽ२३४५॥

(दी. ५। प. ८। मा. ८) २८ (वै।५५६)

(३२७।२)

मेडिन्नत्वा॥ वाऽ३४औहो। ज्राइ। णंभार्ष्टाइमौ। वाऽ३२३४। ताम्। पुराऽ३४औहो।
धस्मानंवृ। षभश्स्थाइरौ। वाऽ३२३४। प्सूम्॥ कराऽ३४औहो। षिअर्यस्ता। रुपाइर्दुवौ।
वाऽ३२३४। स्यूः। इन्द्राऽ३४औहो। दुक्षम्। वृत्राऽ२३। हाऽ२णाऽ२३४औहोवा॥
गृणीषेऽ२३४५॥

(दी. ५। प. २१। मा. १४) २९ (पी।५५७)

(३२८।१) ॥ अंकुशौ द्वौ (वसिष्ठौ)। वसिष्ठस्त्रिष्टुबिन्द्रः॥

५ ४ १ र ४ र १ ० ३ ० १ ० १ १ ० ३ ५ १
प्रवाः॥ माहेमहेवृधे। भराधूऽऽवाम्। प्रचाइतसाई। प्रासूमाऽऽ३४तीम्॥ कृणुध्वम्।
१ ३ ५ १ ० ३ १ ० १ ० ३ ५ १ ४ ५ ४
इहाऽऽवाऽऽ३४इशाः॥ पूऽऽ३४वीः। प्रचा। राऽऽ३४चा। षणाइ। प्रा। औऽऽ३४होवा। होऽऽ५इ॥
डा॥

(दी. ३। प. १५। मा. ११) ३० (णा।५५८)

(३२८।२)

३ १ १ ० र ३ ५ ३ ० ३ ३ ५ ३ १ १ १
हृऽऽ३४५। प्रवोमहाइमाऽऽ३४हे। वृधाऽऽ३४इ। भराऽऽ३४त्त्वाम्॥ हृऽऽ३४५।
० र १ ३ ५ ३ ० ३ ३ ५ ३ १ १ १
प्रचेतासाइप्राऽऽ३४सू। मताऽऽ३४इम्। कृणूऽऽ३४त्त्वाम्॥ हृऽऽ३४५।
० र १ ३ ५ ३ ० ३ ३ ५ ३ १ १ १ र र ४ ५
विशःपूर्वाइःप्राऽऽ३४चा। रचाऽऽ३४३। पणाऽऽ३४इप्राः॥ हृऽऽ३४५। हाउहौहोवाऽऽ६।
५ ३ १ १ १
हाउवा॥ ईऽऽ३४५॥

(दी. ५। प. १६। मा. १२) ३१ (प्रा।५५९)

(३२९।१) ॥ भारद्वाजम्। भरद्वाजस्त्रिष्टुबिन्द्रः॥

५ ४ ५ र ४ ५ ४ ० १ र र ० १ ०
शुनृहुवेममघवानमिन्द्राम्॥ अस्मिन्भरेनृतमंवाजसाऽऽ३ताउ।
१ र र ० १ ० १ १ ० ३ १ ० ३ १ ०
शृण्वन्तमुग्रमूतयेसमाऽऽ३त्सू॥ घ्न। तंवाऽऽ३४र्त्त्राऽऽ३। होवाऽऽ३हा॥ णिसंजितम्।
१ ० ३ १ ० ३ ३ ३ ३ १ ० ३ ४ ५ इ॥ डा॥

(दी. ६। प. ११। मा. ५) ३२ (कु।५६०)

(३३०।१) ॥ वैश्वदेवम्। विश्वेदेवास्त्रिष्टुबिन्द्रः॥

१ अ १ ० न ० ० १ ० अ ० ३ ४ ५ ० १ ० १
 दिवया। ओवा। औऽइहोऽइवा। उदुब्रह्मा। णीऽइऐर। तश्रवस्या॥ इन्द्रःसमा। येऽइमहा।
 ० ३ ४ ५ अ अ ० १ ० ३ ४ ५ १ अ १ ० न ० ० १ र
 यावसिष्ठा॥ आयोविश्वा। नीऽइश्रवा। सातताना॥ दिवया। ओवा। औऽइहोऽइवा। उपश्रोता।
 ० अ ० ० ४ ॥
 मईवा। तोऽइ४३। वाऽइचाऽइ५साऽइ५इइ॥

(दी. ७। प. १९। मा. ३) ३३ (झि।५६१)

(३३१।१) ॥ पुरीषम्। अथर्वा त्रिष्टुविन्द्रः॥

५ ४ ५ र ४ र ४ ५ ० अ र ० १ ० ० अ १ ० १ ० १
 चक्रयदस्याप्सुवानिषत्ताम्॥ उतोतदस्मैमध्विच्छाऽइद्यात्। पृथिव्यामतिषितंयदूऽइधाः॥
 १ र ० १ अ अ अ १ ० १ ० १
 पयोगोऽइ३पू। आदधाओषधीषु। इडाऽइ३भाऽइ४३। ओऽइ३४५इ॥ डा॥

(दी. ९। प. ८। मा. ५) ३४ (दु।५६२)

सप्तदश द्वितीयः, दशमः खण्डः॥१०॥ दशतिः॥४॥

इति ग्रामे गेय-गानेऽष्टमः प्रपाठकः॥८॥

(३३२।१) ॥ ताक्ष्यसामनी द्वे। ताक्ष्यास्त्रिष्टुबिन्द्रः (ताक्ष्यो वा)॥

त्यमूषू॥ वाजि। नाऽ२३४५म्। देवजूताऽ२३४म्। सहोवानंता। रुताऽ३। रश्तथानाम्।
अरिष्टनाऽ२३४इमीम्। पृतनाऽ३४३जमाशुम्॥ स्वस्त। याइ॥ ताक्ष्यमिहाऽ३४३।
हूऽ३वाऽ५इमाऽ६५६॥

(दी. ८। प. १३। मा. ८) १ (डै।५६३)

(३३२।२)

ईयइयाऽ३हाइ। त्यमूषुवाजिनाऽ३०देऽ३वजूतम्॥ ईऽ४यइया। हाऽ४इ। सहोवानंता।
रुताऽ३। रश्तथानाम्॥ ईयइयाऽ३हाइ। अरिष्टऽ३। नाइ। मीऽ३०पृता। नाजमाशुम्॥
ईऽ४यइया। हाऽ२३४५इ। स्वस्त। याइ। ताक्ष्यमिहाऽ३४३। हूऽ३वाऽ५इमाऽ६५६॥

(दी. १०। प. १८। मा. १४) २ (बी।५६४)

(३३३।१) ॥ इन्द्रस्य तातम्। इन्द्रस्त्रिष्टुबिन्द्रः॥

त्रातारमिन्द्रमविता। रमीऽ२३०द्राम्॥ हवेहवेसुहवश्शू। रमीऽ२३०द्राम्॥ हुवानुशक्रंपुरहू।
तमीऽ२३०द्राम्॥ इदश्ह। वाइः। मघवा। वाऽ३४३इ। तूऽ३वाऽ५इन्द्राऽ६५६॥

(दी. ५। प. ११। मा. ९) ३ (पो।५६५)

(३३४।१) ॥ वार्त्रातुरम्। वृत्रतुरस्त्रिष्टुबिन्द्रः॥

यजामहोवा॥ आइन्द्रवज्रा। दक्षाऽ२३इणाम्। हरीणाश्चरथ्यवि। व्रताऽ२३नाम्।
प्रश्मश्रुभिर्दोधुवत्। ऊऽ। ध्वाधाभूऽ२३४वात्॥ विसाइ। नाऽ। भिर्भयमानाऽ२३ः॥
वाऽ२३इराऽ३। धाऽ३४५सोऽ६हाइ॥

(दी. ४। प. १३। मा. १०) ४ (दौ।५६६)

(३३५।१) ॥ मारुतस्य धृषतः सामनी द्वे। धृषत्तिष्टुबिन्द्रः॥

सत्रा। हणाऽ३४औहोवा॥ दाधृषींतू। म्रमिन्द्राओऽ२३४वा। महामपारंवृषभश्सुवज्राऽ२३म्॥
हन्ताऽ२योऽ२३४वृ॥ त्राश्सनि। तोऽ३४३। ताऽ३वाऽ५जाऽ६५६म्॥
दातामघानिमघवाऽ२सुराधाऽ२३४५ः॥

(दी. ११। प. १०। मा. ५) ५ (दु।५६७)

(३३५।२)

सत्राहणंदाधृषिम्। तूऽ३४३०म्रमिन्द्रम्॥ महामपारंवृषभश्सुवज्राऽ२३म्॥ हन्तायोऽ२३४वृ॥
त्राश्सनि। तोऽ३४३। ताऽ३वाऽ५जाऽ६५६म्॥ दातामघानिमघवाऽ२सुराधाऽ२३४५ः॥

(दी. ९। प. ८। मा. ५) ६ (दु।५६८)

(३३६।१) ॥ आत्रम्। अत्रिस्तिष्टुबिन्द्रः॥

योनोवनुष्यन्नभिदा। तिमाऽ३२३४र्ताः॥ उगणावामन्यमानस्तुरोऽ२३वा।
क्षिधीयुधाशवसावातमाऽ२३इन्द्रा॥ अभाइष्याऽ३मा॥ वृषामाऽ३णाऽ३ः। बोऽ२३ताऽ३४३ः।
ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. १०। प. ९। मा. ६) ७ (भू।५६९)

(३३७।१) ॥ गृत्समदस्य मदौ द्वौ गार्त्समदे द्वे। गृत्समदस्तिष्टुबिन्द्रः॥

हाउयंवृत्रेषू। क्षितयाऽ३ः। स्पर्द्धमानाः। धमानाऽ३ः। ईऽ२३४यइया॥ हाउयंयुक्तेषु। तुरयऽ३।
तोहवन्ताइ। हवन्ताऽ३इ। ईऽ२३४यइया॥ हाउयश्शूरसा। ताऽ३उयम। पामुपज्मान्।

उपज्माऽऽन्। ईऽऽ३४यइया॥ हाउयंविप्रासाः। वाऽऽजय। ताइसइन्द्राः। सइन्द्राऽऽः।
ईऽऽ३४या। इयाऽऽ। हाउवा॥ ईऽऽ३४५॥

(दी. १२। प. २३। मा. २२) ८ (ज्रा।५७०)

(३३७।२)

यंयंया। हाउयंवृत्रेषू। क्षितयाऽऽः। स्पद्धमानाः। धमानाः। यंयंयऽऽ०याम्॥ यंयंया।
हाउयंक्तेषू। तुरयऽऽ। तोहवंताइ। हवन्ते। यंयंयऽऽ०याम्॥ यंयंया। हाउयंशूरसा।
ताऽऽउयम। पामुपज्मान्। उपज्मन्। यंयंयऽऽ०याम्॥ यंयंया। हाउयंविप्रासाः। वाऽऽजय।
ताइसइन्द्राः। सइन्द्राः। यंयंयऽऽ०याम्। यंयंयाऽऽ। हाउवा॥ ईऽऽ३४५॥

(दी. १५। प. २७। मा. १२) ९ (फ्रा।५७१)

(३३८।१) ॥ वैश्वामित्रम्। विश्वामित्रस्त्रिष्टुबिन्द्रः (इन्द्रापर्वतो वा)॥

इन्द्राहाउ। हाहोइ। पर्वताबृहतारथाऽऽइनाऽऽउवाऽऽ। ऊऽऽ३४पा॥ वामीर्हाउ। हाहोइ।
इषआवहतस्सुवाऽऽइराऽऽउवाऽऽ। ऊऽऽ३४पा॥ वीतस्हाउ। हाहोइ।
हव्यान्यध्वरेषुदाऽऽइवाऽऽउवाऽऽ। ऊऽऽ३४पा॥ वर्द्धाहाउ। हाहो।
यांगीर्भिरिडयामदाऽऽ०ताऽऽउवाऽऽ॥ ऊऽऽ३२३४पा॥

(दी. १४। प. १६। मा. १५) १० (ल्लु।५७२)

(३३९।१) ॥ सावित्राणि षट्पामानि (सवित्रम्)। षण्णां सविता त्रिष्टुबिन्द्रः॥

हाऽऽ। हाइ। इन्द्रायगाइ। राऽऽअनि। शीतसर्गाः।१। असाउ। असाउ। इन्द्रायगाइ।
राऽऽअनि। शीतसर्गाः।२। कुवा। कुवा। इन्द्रायगाइ। राऽऽअनि। शीतसर्गाः।३। अयाम्।

अयाम्। अपःपैरा। याऽऽत्सग। रस्यबुधात्।४। अविदाऽऽत्। अविदत्। योअक्षेणाद्वा।
वाऽऽचक्रि। यौशचीभीः॥५॥ इहाऽऽ३। ईऽऽ४हा। विष्वक्तस्ता। भाऽऽपृथि। वीऽऽ४३म्।
ऊऽऽताऽऽबाऽऽ५६म्॥

(एवं षट् सामानि) (दी. ६। प. ३१। मा. २२) ११ (का।५७३)

(३४०।१) ॥ कुतीपाद वैरूपस्य साम। विरूपस्त्रिष्टुबिन्द्रः॥

आत्वासखायःसख्याववृत्यूः॥ तिरःपुरुचिदर्णवाजगाऽऽम्यौ। हौहोऽऽवा।
पितुर्नपातमादधीतवाऽऽइधौ। हौहोऽऽवा॥ अस्मिन्क्षयेप्रतरादीदियाऽऽनौ। हौहोऽऽवा।
औहोऽऽ॥ इहाऽऽ३४५॥

(दी. ११। प. १। मा. १२) १२ (धा।५७४)

(३४१।१) ॥ आमहीयवम्। अमहीयुस्त्रिष्टुबिन्द्रः॥

कोअद्युङ्क्तेधुरिगाऽऽऋतस्याऽऽ६ए॥ शिमीवतोभामिनोदुर्हणाऽऽ३यून्॥
आसन्नेषामप्सुवाहोमयोऽऽ३भून्॥ यएषांभृत्यामृणधत्सजाइवाऽऽउवा३॥ ऊऽऽ४पा॥

(दी. १५। प. ५। मा. ८) १३ (म्यै।५७५)

॥ त्रयोदश तृतीयः, एकादशः खण्डः॥११॥ दशतिः॥५॥

॥ इति त्रैष्टुबमैन्द्रम्॥

(३४२।१) ॥ शैखण्डिने द्वे। द्वयोः शिखण्डानुष्टुबिन्द्रः॥

गायाऽ३१। ति॒त्वाऽ३१२३४। गा॒या। त्राऽ३३इणाः॥ अ॒र्चाऽ३१। ति॒याऽ३१२३४। क॒म।
काऽ३इणाः॥ ब्र॒ह्माऽ३१। ण॒स्त्वाऽ३१२३४। श॒त। क्राऽ३३ताऽ॥ उ॒द्वाऽ३१। श॒माऽ३१२३इ॥
व॒याऽ५इमि॒राइ॥ होऽ५इ॥ डा॥

(दी. २। प. १७। मा. ९) १४ (छो।५७६)

(३४२।२)

गा॒यन्ति॒त्वाहाइ॥ गा॒यात्रीऽ२३४णाः। अ॒र्चन्त्य॒र्कमाऽ१॒र्कीऽ३३णाः। अ॒र्चन्तियोऽ२३४हा।
क॒मा॒र्कीऽ२३४णाः॥ ब्र॒ह्माण॒स्त्वाश॒ताऽ१॒क्राऽ३३तो। ब्र॒ह्माण॒स्त्वोऽ२३४हाइ॥
श॒ता॒क्राऽ२३४ताउ। उ॒द्व॒श॒मि॒वयाऽ१इ॒मीऽ३३रे। उ॒द्व॒श॒मोऽ२३४हाइ॥
व॒याऽ३इ॒माऽ५इ॒राऽ६इ॒इ॥

(दी. ५। प. ११। मा. ११) १५ (पा।५७७)

(३४२।३) ॥ औद्व॒श॒मीय॒म्। वि॒श्वेदे॒वानु॒ष्टु॒बिन्द्रः॥

गा॒यन्ति॒त्वागा॒यत्रि॒णआ॥ अ॒र्चन्त्य॒र्कम॒र्काऽ२३इ॒णाः। ब्र॒ह्माण॒स्त्वाऽ२होऽ१इ॥ श॒त॒क्राऽ२३४ताउ।
उ॒द्व॒श॒मि॒वयाऽ१इ॒मीऽ३३रे॥ उ॒द्व॒श॒शाऽ२३४मी॥ वा॒याऽ३२उ॒वाऽ३। उ॒प्।
माऽ२इ॒रोऽ३इ॒हाइ॥

(दी. ४। प. ९। मा. १०) १६ (धौ।५७८)

(३४३।१) ॥ शै॒खण्डि॒नानि॒ त्रीणि॑। त्र॒याणां॑ शि॒खण्ड॒नु॒ष्टु॒बिन्द्रः॥

इन्द्र॑वि॒श्वः॥ आ॒वीऽ२वृ॒धान्। सा॒मु॒द्र॒व्या। चा॒संगि॒राः। रा॒थी॒त॒माऽ३१उ॒वाऽ२। र॒थाइ॒नाऽ२म्॥
वा॒जा॒नाऽ२३इ॒सात्॥ पा॒ति॒प॒तिम्। इ॒डाऽ२३भाऽ३४३। ओऽ२३४इ॒इ॥ डा॥

(दी. ३। प. ११। मा. ९) १७ (टो।५७९)

(३४३।२)

ओ३इन्द्र४विश्वाः५॥ अ॒वी॑ । वृ॒धा॒न् । सां॑ऽऽ॒मू॒ऽऽ॒द्रा॒व्या॒ऽऽ॒ । च॒स॒म् । गि॒राः॑॥ रां॑ऽऽ॒थी॒ऽऽ॒ता॒मा॒ऽऽ॒म् ।
र॒थी॑ । ना॒म् ॥ वा॒जा॒ऽऽ॒नां॑ऽऽ॒त् ॥ पतिं॑पा॒ऽऽ॒ती॒ऽऽ॒म् । ओ॑ऽऽ॒म् ॥ डा॑ ॥

(दी. २। प. १३। मा. १०) १८ (जौ।५८०)

(३४३।३)

इन्द्र३विश्वा४अवी५वृधन्॑ । समू॒द्रा॒ऽऽ॒व्या॑ ॥ चां॑ऽऽ॒सां॒गी॒ऽऽ॒राः॑ । रा॒थी॒ता॒मा॒ऽऽ॒म् । ऊं॑ऽऽ॒म् ।
हां॑ऽऽ॒म् । ऊं॑ऽऽ॒म् । रथा॑इ॒ना॒म् ॥ वा॒जा॒नां॑ऽऽ॒त् ॥ ऊं॑ऽऽ॒म् । हां॑ऽऽ॒म् । ऊं॑ऽऽ॒म् ॥
पतिं॑पा॒ऽऽ॒ती॒ऽऽ॒म् । ओ॑ऽऽ॒म् ॥ डा॑ ॥

(दी. ५। प. १५। मा. १०) १९ (मौ।५८१)

(३४३।४) ॥ आ॒ष्टा॒द॒ष्ट्रे॒ द्वे । द्वा॒यो॒र॒ष्टा॒द॒ष्ट्रे॒ऽनु॒ष्टु॒बि॒न्द्रः॑ ॥

इन्द्र४विश्वा५अवी५वृधन्॑ । ऐ॒या॒हा॒इ ॥ सां॑मू॒द्रा॒ऽऽ॒व्या॑ऽऽ॒म् । चां॑सां॒गा॒ऽऽ॒इ॒रा॒ऽऽ॒म् । ऐ॒या॒ऽऽ॒हा॒इ ॥
रथा॑इ॒ता॒ऽऽ॒म् । रथा॑इ॒ना॒ऽऽ॒म् । ऐ॒या॒ऽऽ॒हा॒इ ॥ वा॒जा॒नां॑ऽऽ॒त् ॥
पता॑इ॒पा॒ऽऽ॒ती॒ऽऽ॒म् । ऐ॒या॒ऽऽ॒हा॒ऽऽ॒म् ॥ ओ॑ऽऽ॒म् ॥ डा॑ ॥

(दी. ६। प. १३। मा. १६) २० (गू।५८२)

(३४३।५)

इन्द्रविश्वाअवीवृध्नैयादौ। होऽदवा॥ समुद्रव्यचसम्। गाङ्गराऽ२३ः। ऐयाऽ२३त्।
 औऽ२३होवा॥ रथाइतमश्वा। थाङ्गनाऽ२३म्। ऐयाऽ२३त्। औऽ२३होवा॥
 वाजानाश्सत्पतिम्। पातीऽ२३म्। ऐयाऽ२३त्। औऽ२३होवाऽ३४३। औऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. १४। प. १६। मा. १३) २१ (ति।५८३)

(३४३।६) ॥ महावैश्वामित्रे द्वे। द्वयोः विश्वामित्रोऽनुष्टुबिन्द्रः॥

हयाइ। हयाऽ३। ओहाओहा। (त्रीणि त्रिः)। इन्द्रविश्वाः। अवीवार्द्धाऽ२न्। समुद्रव्या।
 चसंगाङ्गराऽ२ः॥ रथीतमम्। रथाङ्गनाऽ२म्॥ वाजानाश्सात्। पतिपातीऽ२म्। हयाइ।
 हयाऽ३। ओहाओहा॥ (त्रीणि त्रिः)। होऽ४इडा। होऽ४इडा। होऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ५। प. ३०। मा. २४) २२ (मी।५८४)

(३४३।७)

हयायेऽ३। हयायेऽ३। हयाऽ२३४५। ह२ऽ२३। आऽ२३४इ। द्रविश्वाअवी। वृथाऽ३न्।
 साऽ२३४। मुद्रव्यचसम्। गिराऽ३ः॥ राऽ२३४। थीतमश्रथी। नाऽ३म्॥ वाऽ२३४।
 जानाश्सत्पतिम्। पताऽ३इम्। हयायेऽ३। हयायेऽ३। हयाऽ२३४५। ह२३४५॥
 होऽ४इडा। होऽ४इडा। होऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ६। प. २४। मा. १२) २३ (घा।५८५)

(३४४।१) ॥ वासिष्ठस्य प्रियाणि चत्वारि। वसिष्ठोऽनुष्टुबिन्द्रः॥

इममाऽ२३४इन्द्रा॥ सुतम्। पाऽ२इबाऽ२३४औहोवा। ज्येष्ठममाऽ२र्तियमदम्। शुक्रा॥
 स्यात्वाभिऽ३याऽ२३॥ क्षाऽ२राऽ२३४औहोवा॥ धाराऽ२ऋतस्यसादनेऽ२३४५॥

(दी. १०। प. ८। मा. ७) २४ (बो५८६)

(३४४।२) ॥ गौतमम्। गोतमोऽनुष्टुबिन्द्रः॥

इममिन्द्रसुतंपिबा॥ ज्येष्ठाममा। तियंमदाऽरम्। शुक्रा। औहोऽर३४वा। स्यात्वाभ्यक्षरन्॥
धारा। औहोऽर३४वा। ऋता। औहोऽर३४वा॥ स्यसाऽधदनाइ। होऽधइ॥ डा॥

(दी. ६। प. १३। मा. ४) २५ (गी।५८७)

(३४४।३) ॥ वासिष्ठस्य प्रिये द्वे। द्वयोर्वसिष्ठोऽनुष्टुबिन्द्रः॥

इममिन्द्राऽधसुतंपिबा॥ ज्येष्ठममऽर्त्तायमादाऽरम्। औऽर। होऽर। हुवाइ।
औऽरहोऽर३४वा। शुक्रस्यत्वाऽर्त्तायमादाऽरम्। औऽर। होऽर। हुवाइ।
औऽरहोऽर३४वा॥ धाराऽर्त्तायमादाऽरम्। औऽर। होऽर। हुवाइ। औऽरहोऽर३४वा॥
स्यसादाऽर३नाऽर३इ। ओऽर३४इ॥ डा॥

(दी. ३। प. १९। मा. ८) २६ (ढै।५८८)

(३४४।४) ॥ वसिष्ठस्यप्रियम्॥

इममीऽर३। द्रसुतंपिबा। ज्येष्ठाम्॥ अमऽर्त्तायमादाऽरम्। शुक्रास्यत्वाऽर्त्तायमादाऽरम्।
भियाऽर३क्षाऽर३४रान्॥ धाराओऽर३४वा। आर्त्ताओऽर३४वा॥ स्यसाऽधदनाइ। होऽधइ॥
डा॥

(दी. नास्ति। प. १९। मा. ७) २७ (हो।५८९)

(३४५।१) ॥ वींकानिचत्वारि, वीङ्के द्वे। द्वयोः गृत्समदोऽनुष्टुबिन्द्रः॥

यदिन्द्रोहाइ॥ चित्रमइहनाऽ२३। आऽ२३४। स्तिबादा। हाऽ३इ। तमद्राइवाऽ२३ः।
 राऽ२३४। धस्तन्नोविदा। हाऽ३। वाऽ। साउ॥ उभयाहाऽ२३॥ स्तियाउवाऽ३४३।
 भाऽ३४५रोऽ६हाइ॥

(दी. ४। प. १४। मा. ८) २८ (धै।५९०)

(३४५।२)

यदिन्द्रचित्रमौहोवा॥ हाऽ२३४ना। अस्तिबादातमोवाऽ३। ओवा। द्राऽ२३४इवाः॥
 राधस्तन्नोविदोवाऽ३। ओवा। वाऽ२३४साउ॥ उभयाहस्तियोवाऽ३। ओवाऽ३४३।
 भाऽ३४५रोऽ६हाइ॥

(दी. ६। प. ११। मा. ४) २९ (की।५९१)

(३४५।३) ॥ आकूपारं आकूपारमनादेशं वा। आकूपारोऽनुष्टुबिन्द्रः॥

यदिन्द्राऽ२३चित्र। मइहाऽ२३४ना॥ अस्ताऽ२इबादा। तमद्राइवो। राधस्तान्नाऽ२ः।
 विदद्वसाउ॥ उभयाहाऽ२३॥ स्ताऽ२३याऽ३। भाऽ३४५रोऽ६हाइ॥

(दी. २। प. ९। मा. ६) ३० (झू।५९२)

(३४५।४)

॥ वींकम्॥

यदिन्द्रचित्रमइ। हनाऽ३। आस्ती॥ बादातमद्रिवः। राधस्ताऽ२३न्नाः। वीवीऽ२। दद्वसाउ॥
 उभयाऽ२३हा॥ स्तायाऽ२३। भाऽ२३राऽ३४३। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ३। प. १२। मा. ५) ३१ (ठु।५९३)

॥ इति ग्रामे गेय-गाने नवमस्यार्द्धः प्रपाठकः॥

(३४६।१)

॥ तैरश्चे द्वे द्वयोः तिरश्चयनुष्टुबिन्द्रः॥

श्रुधी॥ हावाऽ२२हावाऽ२म्। तिरश्चियाः। इन्द्रयाऽ२३स्त्वा। सपौऽ३हो। र्यतीऽ३या॥
सुवीर्यस्यगोमताः॥ रायास्यूऽ२३र्धी॥ महा२ऽ२३। असियाऽ३४३। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ३। प. १२। मा. ४) १ (ठी।५९४)

(३४६।२)

श्रुधीहाऽ३वतिरश्चियाः॥ इन्द्रायस्त्वा। सपर्यतायेऽ३४। सुवी। रिया।
स्याऽ२३४गा। माताऽ२ः॥ रायस्पू३र्धीऽ३। हाऽ३हाइ॥ महा२ऽ५असीऽ। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. २। प. १२। मा. ५) २ (छु।५९५)

(३४७।१)

॥ महावैश्वामित्रम्। विश्वामित्रोऽनुष्टुबिन्द्रः सूर्यो वा॥

असाविसोमइन्द्रते। शाविष्ठाऽ२३४धृ५॥ षो२ऽ३आगाऽ३ही। आत्वापृणाऽ२३हाऽ३।
कुईऽ२०द्राऽ२३४याम्॥ रजाः। सूर्योवाओऽ२३४वा॥ नराऽ५श्मिभीः॥ होऽ५इ॥ डा॥

(दी. ४। प. १०। मा. ८) ३ (नै।५९६)

(३४८।१)

॥ काण्वे द्वे द्वयोः कण्वोऽनुष्टुबिन्द्रः॥

एन्द्राऽ३याहिहरिभाइः॥ उपाकण्वाऽ३। स्यासुष्टूऽ२३४तीम्। दिवोअमूऽ३।
प्याशासाऽ२३४ताः॥ दाइवययाऽ३१उवाऽ२३॥ दाऽ२३इवाऽ३। वाऽ३४५सोऽ३हाइ॥

(दी. ३। प. ८। मा. ९) ४ (डो।५९७)

(३४८।२)

एन्द्रयाहिहरिभिः। उहुवाहाइ॥ उपकण्वस्यसुष्टुतिम्। उहुवाऽ२३हाइ। दिवोअमूऽ३।
 ष्याशासाऽ२३४ताः॥ दाइवययाउ। वाऽ३॥ देऽ२३४वा। वसोऽ५हा। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. ३। प. १२। मा. ९) ५ (ठो।५९८)

(३४९।१) ॥ वैश्वामित्रम्। स्त्रिश्वामित्रोऽनुष्टुबिन्द्रः॥

आत्वागाऽ३इरोरधीरिवा॥ अस्थुः सुतेऽ३षूगिर्वाणाऽ३ः। ओऽ३४वा। ओऽ२३४वा॥
 अभिवासऽ३मानूऽ१पाताऽ३। ओऽ३४वा। ओऽ२३४वा॥ गावोवाऽ३त्साऽ३म्॥
 नधोऽ२३४वा। नाऽ५वोऽ६हाइ॥

(दी. ७। प. १०। मा. ४) ६ (जी।५९९)

(३५०।१) ॥ शुद्धाशुद्धीये द्वे (पदान्त निधनंशुद्धाशुद्धीयम्)। द्वयोः इन्द्रोऽनुष्टुबिन्द्रः॥

एतोन्विन्द्रस्तवामा॥ शुद्धश्चुद्धेनसाऽ२३म्ना। शुद्धैरुक्थैर्वावृध्वाऽ२३साम्॥
 शुद्धैराऽ२३शीऽ३॥ वाऽ२न्। ममाऽ३४ओहोवा॥ तूऽ२३४५॥

(दी. १०। प. ७। मा. ३) ७ (फि।६००)

(३५०।२) ॥ ऐडँशुद्धाशुद्धीयम्॥

एतोन्विन्द्रस्तवाऽ६मा॥ शुद्धश्चुद्धे। ना। साम्नाऽ२। शुद्धाइरूऽ३क्थाऽ३इः।
 वावाऽ२र्ध्वाऽ२३४साम्॥ शुद्धैराऽ२३शी॥ वान्ममत्तु। इडाऽ२३भाऽ३४३। ओऽ२३४५इ॥
 डा॥

(दी. ४। प. ११। मा. ५) ८ (तु।६०१)

(३५१।१) ॥ रयिष्ठे द्वे। द्वयोः गोतमोऽनुष्टुबिन्द्रः॥

योरयिवोरयाहाउ॥ ताऽ२३४माः। योदुमैर्दुमवत्तमः। सोमःसुतःसआऽ२३होइ। द्रताऽ२इ॥
अस्तिस्वधापताऽ२३होयेऽ३॥ मदोऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ७। प. ८। मा. ७) २ (जे।६०२)

(३५१।२)

योरयिवोरयि। तमोऽ२३४हाइ॥ योदुमैर्दुमव। तमोऽ२३४हाइ॥ सोमःसुतःसइ।
द्रतोऽ२३४हाइ॥ अस्तिस्वधापते। मदोऽ२३४हाऽ। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. ७। प. १०। मा. ५) १० (जु।६०३)

॥ आष्टाविंशति प्रथमः, द्वादशः खण्डः॥१२॥ दशतिः॥६॥

इति तृतीयोऽध्यायः॥३॥

(३५२।१) ॥ कौत्मबर्हिषे द्वे। द्वयोः कुत्मबर्हिरनुष्टुबिन्द्रः॥

प्रत्यस्मैपिपाहाउ॥ आइषाऽ३ताइ। वाइश्चानिवाइ। दूषेऽ३हाऽ३इ। भाऽ३रा।
आराऽ२०गमा॥ याजाऽ३हाऽ३। ग्माऽ३याइ॥ अपाऽ२३। आऽ२दाऽ२३४औहोवा।
घ्वनेऽ२नराऽ२३४५ः॥

(दी. ७। प. ११। मा. ९) ११ (चो।६०४)

(३५२।२)

प्रत्यस्मैपीऽ६पीषताइ॥ वाइश्चानिवाइ। दूषेभाराऽ२। आराऽ२०गमा। यजग्मा। याऽइ॥
अपश्चादघ्वनाऽ२३होइ॥ नरा। औऽ३होवा। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. ६। प. ११। मा. ६) १२ (कू।६०५)

(३५२।३) ॥ नानदम् इन्द्रोऽनुष्टुबिन्द्रः॥

३ ४ ५ ४ ५ ३ २ ? ४ ५ र ४ ५ ४ ३ ४ ५ ३ ५
प्रत्यस्मैपिपी। षताऽ३इ। वाऽ२३४इ। श्वानिविदुषे। भारा॥ अरंगमायज। ग्मयोऽ२४हाइ॥
४ ५ ४ ५ ३ ? ५ ४ ५ ॥ ५
आपश्चादा॥ घ्वनोऽ२३४वा। नाऽ५रोऽ६हाइ॥

(दी. ५। प. १०। मा. ४) १३ (मी।६०६)

(३५३।१) ॥ शाकपूतम् शाकपूतिरनुष्टुबिन्द्रः॥

५ र र ५ २ र ३ ५ २ र र ३ ५
आनोवयोवयःशाऽ६याम्॥ महान्तंगह्वराऽ२३४इष्टाम्। महान्तपूर्विनाऽ२३४इष्टाम्॥
२ ? २ ३ २ ४ ॥
उग्रवाऽ२३चाः॥ अपाऽ३वाऽ५धाऽ६५६इः॥

(दी. ६। प. ५। मा. ८) १४ (डे।६०७)

(३५४।१) ॥ कौत्मलबर्हिषे द्वे। द्वयोः कुत्मलबर्हिरनुष्टुबिन्द्रः॥

५ र र ४ ५ १ २ ३ ५ ? र २ ३ ५ १ २
आत्वारथयथौहोवा॥ तायाइसूऽ२३४म्ना। यवर्तयामसितुविकूर्मीम्। आऽ२३४र्ती। षहम्॥
१ २ ४ ५ २ ? २ ३ ४ ३ ५ १
आइन्द्राऽ३शावी॥ षसत्पाऽ२३तीऽ३४३म्॥ ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ४। प. ९। मा. ६) १५ (धू।६०८)

(३५४।२)

३ ४ ३ ४ ५ ३ २ ३ ३ ४ ५ २ ? २ ३ ३ ४ ५ ३ ४ ५
आत्वारथयथा। तयाइ। आत्वारथाम्॥ यथोताया। औहोऽ२३४वा। ईऽ२३४हा।
२ र ? २ ३ ३ २ ३ ४ ५ २ र ? २ ३ ४ ५ २
सुम्नायवर्तऽ३यामसि। औहोऽ३१इ। ओऽ२होऽ२३४वा॥ तुविकूर्मिमृऽ३ताइषहम्।
३ २ ३ ४ ५ २ ३ ४ ५ १ २ ३ ४ ५ ३ २
औहोऽ३१इ। औऽ२होऽ२३४वा॥ इन्द्रश्शविष्ठऽ३सात्पतिम्। औहोऽ३१इ।
३ ४ ५ ३ ४ ५ ३ ४ ५ ३ ४ ५ ३ ४ ५
औऽ२होऽ२३४५वाऽ६५६॥ ईऽ२३४हा॥

(दी. ११। प. १६। मा. ८) १६ (कै।६०९)

ओहाइ। दधिक्राव्णोअकारिषम्। ओहाइ॥ ओहाइ। जिष्णोरश्चस्यवाजिनाऽ२३होइ।
सुरभिर्नोमुखाकाऽ२३रात्॥ प्रनाऽ२३होइ। आयूऽ२३हो॥ पिताराऽ२३इषाऽ३४३त्।
ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. १। प. ११। मा. ११) २० (ता६१३)

(३५१।१) ॥ मारुतम्। मरुतोऽनुष्टुबिन्द्रः॥

पुरांभिन्दुर्युवाकवीः॥ अमितौजाअजायाऽ२३ता। आइन्द्रोविश्वाऽ३। स्याकर्माऽ२३४णाः॥
धर्त्ता। वाज्रौवाओऽ२३४वा॥ पुरूऽ५ष्टुताः। होऽ४इ॥ डा॥

(दी. ६। प. १। मा. ७) २१ (घा६१४)

॥ एकादश द्वितीयः, प्रथमः खण्डः॥१॥ दशतिः॥७॥

(३६०।१) ॥ वामदेव्यम्। वामदेवोऽनुष्टुबिन्द्रः॥

प्रप्रवास्त्रिष्टुभमिषमोहाओहाऽ६ए॥ वन्दद्वीरा। यआइन्दवेऽ२॥ ओऽ३हा। ओऽ३हाऽ३ए।
धियावोमेधसाऽ१ताऽ३याइ। ओऽ३हा। ओऽ३हाऽ३ए॥ पुरांधीऽ३याऽ३॥ विवोऽ२३४वा।
साऽ५तोऽ६हाइ॥

(दी. ६। प. ११। मा. ८) २२ (कै६१५)

(३६१।१) ॥ काश्यपम्। कश्यपोऽनुष्टुबिन्द्रः॥

कश्यपस्यसुर्वविदाऽ६ए॥ यावाहुस्स। युजावाऽ१इतीऽ२३४। ययोर्विश्वमपि। व्रताऽ३म्॥
यज्ञान्धीऽ३राः॥ निचाऽ२३। आऽ२याऽ२३४ओहोवा॥ ऊऽ२३४पा॥

(दी. ४। प. १। मा. ५) २३ (ध्वा६१६)

सघायस्ताऽऽइ॥ ए॥ दिवोनराऽऽः॥ ए॥ धियामर्त्ताऽऽ॥ ए॥ स्यशमताऽऽः॥ ए॥
ऊताइसवृऽऽ॥ ए॥ हतोदिवाऽऽः॥ ए॥ द्विषोअहाऽऽः॥ ए॥ नातरति॥ इडाऽऽ३भाऽऽ४३॥
ओऽऽ३४५इ॥ डा॥

(दी. ६। प. १८। मा. ८) २८ (गै।६२१)

(३६५।२)

सघायस्ताइ॥ दिवोनराः॥ धियामर्त्ताऽऽ॥ स्यशमताः॥ ऊतीसावृऽऽ॥ हतोदिवाः॥
द्विषोअहाऽऽ॥ नातरति॥ इडाऽऽ३भाऽऽ४३॥ ओऽऽ३४५इ॥ डा॥

(दी. ७। प. ११। मा. ७) २९ (चा।६२२)

(६३३।१) ॥ वरुणान्याः साम। वरुणान्यनुष्टुबिन्द्रः॥

विभोष्टइन्द्रराधाऽऽसाः॥ विभ्वीराऽऽतिःशतक्रतो॥ शताऽऽक्राता॥ आथानोविश्वचर्षणे॥
श्रचाऽऽर्षाणाइ॥ दुम्लसुदत्रमहया॥ त्रमाऽऽहाऽऽयाऽऽ५६॥

(दी. ८। प. ७। मा. ४) ३० (ठी।६२३)

(३६७।१) ॥ उषसम्, औषसम् वा। उषानुष्टुबिन्द्रः उषा वा॥

वयश्चाऽऽइत्तेपतत्रिणाः॥ द्विपाच्चतुष्पादर्जुनायेऽऽ॥ ऊषःप्रारान्। ऋतूँरनू॥ दिवोआन्तेऽऽ३॥
भाऽऽ३याऽऽः॥ पाऽऽ४५रोऽऽहाइ॥

(दी. ५। प. ७। मा. ६) ३१ (फू।६२४)

(३६८।१) ॥ देवानारुचिः रोचनम् वा। रुचिरनुष्टुबिन्द्रः विश्वेदेवा वा॥

५ २ २ २ २ ४ ५ ? २ २ २ २ ? २ ? २ ?
अमीयेदेवास्थाना॥ मध्यआरोचनेदिवाः॥ कद्वक्ताम्॥ कदमार्त्ताऽ२म्॥

१२ २ २ १२ २ ?
काप्रत्नावआहूऽ२३तीऽ३४३ः। ओऽ२३४५ इ॥ डा॥

(दी. १०। प. ७। मा. ८) ३२ (फै।६२५)

(३६९।१) ॥ ऋक् साम्नोः सामनी द्वे। द्वयोः ऋगनुष्टुबिन्द्रः॥

४ ५ ४ ५ ४ ? २ २ २ २ ? २ ? २ १२ २ १२ २
ऋचःसामयजा॥ महाइ। याम्याकर्माणिकृण्वाऽ२३ताइ। वितेसदसिराजाऽ२३ताः॥

? २ ? २ ? २ ? २ ? २ ?
यज्ञांदाऽ२३इवे॥ पूवक्षतः। इडाऽ२३भाऽ३४३। ओऽ२३४५ इ॥ डा॥

(दी. ६। प. ९। मा. ६) ३३ (घू।६२६)

(३६९।२) ॥ साम्नः साम। सामानुष्टुबिन्द्रः॥

५ २ ४ ५ ४ ५ ? २ २ २ ? २ ? २ ? २ ? २ ?
ऋचःसाऽ३मायजामहाइ॥ याम्याकर्मा। णिकाण्वाऽ१ताऽ२इ। ण्वाताऽ२इ। वाइतेसदा

? २ ? २ ? २ ? २ ? २ ?
सिराजाऽ१ताऽ२ः। जाताऽ२ः। यज्ञांदाऽ१इवेऽ२॥ पूवक्षतः। इडाऽ२३भाऽ३४३।

?
ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ४। प. १२। मा. ९) ३४ (थो।६२७)

॥ त्रयोदशतृतीयः, द्वितीयः खण्डः॥२॥ दशतिः॥८॥

॥ इत्यानुष्टुभमैन्द्रम्॥

(३७०।१) ॥ त्रैशोकम्। त्रिशोको जगतीन्द्रः॥

५ ४ ? १२ १२ २ ३ २ ? २ १२ २ ? २ ? २ २ ? २ २ ? ५
विश्वोहाइ॥ पृतनाअभिभू। तरन्नराः। सजूस्ततक्षुराइन्द्रजजनुः। चराजासोऽ२३४हाइ।

२ १२ २ १२ २ ४ ३ ५ ५ ४ २ ? ५
ऋबौहोइ। वरौहोइ। स्थेमन्याऽ२मूऽ२३४रीम्॥ उतोहाइ॥ उग्रमोऽ२३४जी।

२ ४ ३ ५ २ ४ ३ २ ५ ५ २ ४ ३ ५
ष्टताराऽ२३४साम्। होइ। तराऽ३४। स्विनम्। ओऽ६वा॥ ओइदीऽ२३४वा॥

(दी. ७। प. १६। मा. १४) ३५ (ची।६२८)

॥ इति ग्रामे गेय-गाने नवमः प्रपाठकः॥९॥

(३७१।१) ॥ शैखण्डिने द्वे। द्वयोः शिखण्डी जगतीन्द्रः॥

^{३ २} ^१ ^{३ २} ^१ ^५ ^{४ ५} ^{४ ५} ^{४ ५} ^{३ २} ^१
अत्तेऽ३होइ। दधाऽ३होऽ२३४। मिप्रथमायम्। न्यवाइन्यवाइ॥ अहाऽ३नूहोइ।

^{३ २} ^१ ^{४ ५ ४ ५} ^{४ ५ ४} ^{३ २} ^१ ^{३ २} ^१
यद्वाऽ३होऽ२३४। स्यन्नर्यविवेः। अपाअपाः॥ उभेऽ३होइ। यत्त्वाऽ३होऽ२३४।

^{४ ५} ^{४ ५} ^{४ ५} ^{४ ५} ^{४ ५ ४ ५} ^{३ २} ^१ ^{३ २} ^१ ^{४ ५} ^{४ ५} ^{४ ५ ४ ५}
रोदसीधावताम्। अनूअनू॥ भ्यसाऽ३द्धोइ। तेशूऽ३होऽ२३४। ष्मात्पृथिवीचिदा। द्विवोद्विवाः।

^{४ ५} ^४ ^{४ ५} ^४ ^५ ^३ ^{१ १ १}
द्विवआ। औहोवाऽ६। हाउवा॥ ईऽ२३४५॥

(दी. ११। प. २०। मा. १४) १ (ङी।६२९)

(३७१।२)

^{३ २} ^{३ २} ^५ ^{४ ५} ^{४ ५} ^{४ ५} ^{३ २} ^{३ २}
अत्ताऽ३१इ। दधाऽ३१२३४। मिप्रथमायमा। न्यवाइन्यवाइ॥ अहाऽ३१न्। यद्वाऽ३१२३४।

^५ ^४ ^{५ ४ ५} ^{३ २} ^{३ २} ^{४ ५} ^{४ ५} ^{४ ५} ^{४ ५ ४ ५}
स्युन्नर्यविवेः। अपाअपाः॥ उभाऽ३१इ। यत्त्वाऽ३१२३४। रोदसीधावताम्। अनूअनू॥

^{३ २} ^{३ २} ^{४ ५} ^{४ ५} ^{४ ५ ४ ५} ^{४ ५ ४} ^५ ^५ ^४
भ्यसाऽ३१त्। तेशूऽ३१२३४। ष्मात्पृथिवीचिदा। द्विवोद्विवाः। द्विवए। हियाऽ६हा। होऽ५इ॥

डा॥

(दी. १। प. २०। मा. १४) २ (नी।६३०)

(३७१।३) ॥ अत्रेर्विवर्तो द्वौ। द्वयोरत्रिर्जगतीन्द्रः॥

^३ ^५ ^{३ २ ३} ^५ ^{४ ५} ^४ ^५ ^{४ ५} ^{४ ५} ^{४ ५}
अयोऽ२३४वा। अयायोऽ२३४वा। आत्ताइ। दाऽ२३४धा। मिप्रथमायम्। न्यवाइन्यवाइ॥

^३ ^५ ^{३ २ ३} ^५ ^{४ ५} ^१ ^{५ ४ ५} ^४ ^{५ ४ ५}
अयोऽ२३४वा। अयायोऽ२३४वा। आहान्। याऽ२३४द्वा। स्युन्नर्यविवेः। अपाअपाः॥

^३ ^५ ^{३ २ ३} ^५ ^{४ ५} ^१ ^४ ^{४ ५} ^{४ ५} ^{४ ५ ४ ५}
अयोऽ२३४वा। अयायोऽ२३४वा। ऊभाइ। याऽ२३४त्वा। रोदसीधावताम्। अनूअनू॥

अयोऽ२३४वा। अयायोऽ२३४वा। भ्यासात्। ताऽ२३४इशु। ष्मात्पृथिवीचिदा। द्विवोद्विवोः।
द्विवआ। औहोवाऽ६। हाउवा॥ द्विवऔहोऽ३ह५ऽ१॥

(दी. १३। प. २८। मा. १६) ३ (डू।६३१)

(३७१।४)

इयोऽ२३४वा। इयायोऽ२३४वा। श्रान्ताइ। दाऽ२३४धा। मिप्रथमायम्। न्यवाइन्यवाइ॥
इयोऽ२३४वा। इयायोऽ२३४वा। आहान्। याऽ२३४द्वा। स्युन्नर्यविवेः। अपाअपाः॥
इयोऽ२३४वा। इयायोऽ२३४वा। ऊभाइ। याऽ२३४त्वा। रोदसीधावताम्। अनूअनू॥
इयोऽ२३४वा। इयायोऽ२३४वा। भ्यासात्। ताऽ२३४इशु। ष्मात्पृथिवीचिदा। द्विवोद्विवोः।
द्विवआ। औहोवाऽ६। हाउवा॥ द्विवइहोऽ३ह५ऽ१॥

(दी. १२। प. २८। मा. १६) ४ (जू।६३२)

(३७१।५) ॥ महासावेतसे द्वे। द्वयोः सवेतसो जगतीन्द्रः॥

आऽ२३याऽ३म्। श्रान्ताइ। दाऽ२३४धा। मिप्रथमायम्। न्यवाइन्यवाइ॥ आऽ२३याऽ३म्।
आहान्। याऽ२३४द्वा। स्युन्नर्यविवेः। अपाअपाः॥ आऽ२३याऽ३म्। ऊभाइ। याऽ२३४त्वा।
रोदसीधावताम्। अनूअनू॥ आऽ२३याऽ३म्। भ्यासात्। ताऽ२३४इशु। ष्मात्पृथिवीचिदा।
द्विवोद्विवोः। द्विवआ। औहोवाऽ६। हाउवा॥ द्विवोऽ३द्विवाऽ२३४ः॥

(दी. १२। प. २४। मा. २०) ५ (झौ।६३३)

(३७१।६)

^२ अयंयाऽऽः। ^{४ ५} श्रत्ताइ। ^{१ २} दधाऽऽ१२३४। ^{५ ४५} मिप्रथमायम। ^{४ ५ ४ ५} न्यवाइन्यवाइ॥ ^२ अयंयाऽऽः। ^{४ ५} आहान्।
^{१ २} यद्वाऽऽ१२३४। ^{५ ४५} स्युन्नर्यविवेः। ^{५ ४ ५} अपाअपाः॥ ^{४ ५} अयंयाऽऽः। ^{१ २} ऊभाइ। ^{४ ५} यत्वाऽऽ१२३४।
^{१ २} रोदसीधावताम्। ^{४ ५ ४ ५} अनूअनू॥ ^२ अयंयाऽऽः। ^{४ ५} भ्यासात्। ^{१ २} ताइशूऽऽ१२३४। ^{१ २} ष्मात्पृथिवीचिद।
^{४ ५ ४ ५} द्विवोद्विवाः। ^{४ ५ ४} द्विवआ। ^{५ ४} औहोवाऽऽ। ^५ हाउवा॥ ^२ द्विवऽऽईऽऽ३४५॥

(दी. १०। प. २४। मा. २०) ६ (भौ।६३४)

(३७१।७) ॥ महोशैरीषे द्वे। द्वयोः शिरीषो जगतीन्द्रः॥

^{५ ४ ५} औहोहोहाइ। ^{४ ५} श्रत्ताइ॥ ^३ दाऽऽ३४धा। ^{५ २ ३} मीप्राथाऽऽ३४मा। ^{५ २ ३} यमन्याऽऽ३४वे।
^{२ ३} यमन्याऽऽ३४वाइ। ^{३ २} अहाऽऽ१२स्थियाऽऽ३४द्वा। ^{५ २ ३} स्युन्नारीऽऽ३४याम्। ^{२ ३} विवेराऽऽ३४पो।
^{२ ३} विवेराऽऽ३४पाः॥ ^{५ ३ २} उभाऽऽ१२इयाऽऽ३४त्वा। ^{५ २ ३} रोदसीऽऽ३४धा। ^{५ २ ३} वतामाऽऽ३४नू।
^{२ ३} वतामाऽऽ३४नू॥ ^{५ ३ २} भ्यसाऽऽ१२त्ताऽऽ३४इशू। ^{५ २ ३} ष्मात्पृथीऽऽ३४वी। ^{५ २ ३} चिदद्रिऽऽ३४वः।
^{२ ३} चिदद्राऽऽ३४इवाः। ^{५ ४ ५ ४} द्विवआ। ^{५ ४} औहोवाऽऽ। ^५ हाउवा॥ ^२ एऽऽ। ^{२ १ ३ १ १ १} द्विवइहाऽऽ३४५॥

(दी. ३। प. २३। मा. १४) ७ (डी।६३५)

(३७१।८)

^{५ ४ ४ ५} श्रत्ताऔहोहोहाइ॥ ^{१ २} दधाऽऽ१२३४। ^{५ ४५} मिप्रथमायम। ^{४ ५ ४ ५} न्यवाइन्यावाइ। ^{५ ४ ४ ५} अहाऔहोहोहाइ।
^{१ २} यद्वाऽऽ१२३४। ^{५ ४५} स्युन्नर्यविवेः। ^{५ ४ ५} अपाअपाः॥ ^{५ ४ ५} उभाऔहोहोहाइ। ^{१ २} यत्वाऽऽ१२३४।
^{१ २} रोदसीधावताम्। ^{४ ५ ४ ५} अनूअनू॥ ^{५ ४ ५} भ्यसाऔहोहोहाइ। ^{१ २} ताइशूऽऽ१२३४। ^{१ २} ष्मात्पृथिवीचिद।
^{४ ५ ४ ५} द्विवोद्विवाः। ^{४ ५ ४} द्विवआ। ^{५ ४} औहोवाऽऽ। ^५ हाउवा॥ ^२ द्विवएऽऽद्विवाऽऽ३४५॥

(दी. १८। प. २०। मा. २१) ८ (णा।६३६)

(३७२।१) ॥ इन्द्रस्य प्रियाणि त्रीणि। इन्द्रो जगतीन्द्रः॥

समाहाउ॥ आइतविश्वाओजसाऽइ। पतिमाऽइइ। दिवाऽइइः। होहोइ।
यआइकाऽइइत्। भूरतिथिः। जनाऽइइनाऽइइम्। हाहोइ। सपूर्वियाऽइः। नूतनमा।
जिगाऽइइइषाऽइइन्। हाहोइ॥ तंवार्त्ताऽइनीऽइः॥ अनुवावृते। आयेऽइ। कयाउवाऽइ॥
वृधेऽइ।

(दी. १०। प. १८। मा. १९) ९ (बो।६३७)

(३७२।२)

समेतविश्वाओजसापतिम्। एपातीम्॥ दिवया। होऽइ। होऽइहोऽइवा। ईऽइया।
यआइकाऽइइत्। भूरतिथिः। जनाऽइइनाम्। होऽइ। होऽइहोऽइवा। ईऽइया।
सपूर्वियाऽइः। नूतनमा। जिगाऽइइइषान्। होऽइ। होऽइहोऽइवा। ईऽइया॥
तंवार्त्ताऽइनीऽइः॥ अनुवावृते। आयेऽइ। कयाउवाऽइ॥ महेऽइ॥

(दी. १०। प. २३। मा. १४) १० (बी।६३८)

(३७२।३)

अमेतविश्वाओजसापतिम्। एपातीम्॥ दाइवाऽइयाऽइ। औऽइ। होऽइहोऽइवा। ओमोवा।
यआइकाऽइइत्। भूरतिथिः। जनाऽइइनाम्। औऽइ। होऽइहोऽइवा। ओमोवा।
सपूर्वाऽइयाऽइः। नूतनमा। जिगाऽइइइषान्। औऽइ। होऽइहोऽइवा। ओमोवा॥
तंवार्त्ताऽइनीऽइः॥ अनुवावृते। आयेऽइ। कयाउवाऽइ॥ धर्मणेऽइइइ५॥

(दी. ९। प. २३। मा. १५) ११ (दु।६३९)

(३७३।१) ॥ वैरूपाणि त्रीणि। इन्द्रो जगतीन्द्रः॥

इमेतआ॥ द्रतेवयंपुरूऽऽष्टूताऽऽ। येत्वारभ्यचरामसिप्रभूऽऽवासाऽऽउ।
नहिबदन्योगिर्वणोगिराऽऽसाधाऽऽत्॥ क्षोणीरिवप्रतितद्धर्यनोऽऽवाचाऽऽः॥ वचाओऽऽ३४वा।
होऽऽ५इ॥ डा॥

(दी. १। प. ८। मा. ६) १२ (दू।६४०)

(३७३।२)

इमेतआ॥ द्रतेवयंपुरु। ष्टूता। याऽऽइत्वाऽऽराभ्याऽऽ। चारामसिप्रभू। वसाउ।
नाऽऽहीऽऽत्वादाऽऽन्। योगिर्वणोगिरः। सघात्॥ क्षोऽऽणीऽऽराइवाऽऽ॥ प्रतितद्ध।
र्यनोवाऽऽ३चाऽऽ४३ः। ओऽऽ३४५इ॥ डा॥

(दी. ६। प. १४। मा. ९) १३ (घो।६४१)

(३७३।३)

इमेताऽऽ३इन्द्रतेवयंपुरुष्टूतोवा॥ येत्वारभ्याऽऽ। चरामसीऽऽ३प्राऽऽ३भूवसाउ।
नहित्वादाऽऽन्। योगिर्वणोऽऽ३गीऽऽ३रःसघत्॥ क्षोणीरिवाऽऽ॥ प्रतितद्धाऽऽ३। र्यनोऽऽ५वचाः।
होऽऽ५इ॥ डा॥

(दी. १। प. १०। मा. ६) १४ (नू।६४२)

(३७४।१) ॥ बार्हदुक्थम्। बृहदुक्थो जगतीन्द्रः॥

चर्षणीधृतःहाउ॥ मघवानमुक्थाऽऽ३याम्। इन्द्रगिरोबृहतीरभ्यनूपाऽऽ३ता। वावृधानाऽऽ३म्।
 पुरुहूताऽऽ३म्। सुवाऽऽ३र्त्ताऽऽ३४इभीः॥ अमाऽऽ३र्तियाम्॥ जरमाणाऽऽ३म्।
 दाऽऽ३इवेऽऽ३। दाऽऽ३४५इवोऽऽ३हाइ॥

(दी. ५। प. १०। मा. ११) १५ (मा६४३)

(३७५।१) ॥ त्रासदस्यवे द्वे। द्वयोस्त्रसदस्युर्जगतीन्द्रः॥

अच्छावइन्द्रमतयःसुवर्युवाऽऽ३ए॥ सध्रीचीर्विश्वाशतीरनूऽऽ३पाताऽऽ३।
 परिष्वजन्तजनयोयथाऽऽ३पातीऽऽ३म्॥ मर्यन्नाऽऽ३इशू। ध्युम्मा। घवाऽऽ३। नमूऽऽ३४औहोवा॥
 तयाऽऽ३इऽऽ३४५॥

(दी. ८। प. ८। मा. ६) १६ (डू।६४४)

(३७५।२) ॥ अच्छत्रासदस्यवम्॥

आऽऽ३४। छावइन्द्रम। तयाः। सूवर्युवाऽऽ३ः॥ साऽऽ३४। ध्रीचीर्विश्वाउ। शतीः।
 आनूषताऽऽ३३॥ पाऽऽ३४। रिष्वजन्तज। नयाः। याथापताऽऽ३इम्॥ माऽऽ३४।
 र्यन्नशुन्ध्युम्मा। घवा। नामूतयाऽऽ३१उ॥ वाऽऽ३४५॥

(दी. ११। प. १७। मा. ९) १७ (खो।६४५)

(३७६।१) ॥ जागतःसोमसाम। सोमो जगतीन्द्रः॥

अभित्याऽऽ३०मेषपुरुहू॥ तमृग्मायाऽऽ३म्। इन्द्रगीर्भाइः। मदतावस्त्रऽऽ३आर्णवम्। ओऽऽ३४।
 हाहोइ। यस्यदावोनविचरन्तिऽऽ३मानुषम्। ओऽऽ३४। हाहोइ॥ भुजेमःहिष्ठमभिविप्रमर्चत।
 दुराऽऽ३। तिनाऽऽ३४औहोवा॥ ऊऽऽ३४पा॥

(दी. १०। प. १३। मा. ९) १८ (बौ।६४६)

(३७७।१) ॥ सौभरम् सुभरिर्जगतीन्द्रः॥

त्यसूऽमेपमहया॥ सुवर्वाद्ददाऽरम्। शतयस्यसुभुवस्साकऽमाद्वराऽशताऽरद्व।
अत्यनवाजहवनस्यऽदाऽराऽशथाऽरम्॥ आद्वद्रववृत्याम॥ वसायेऽ३।
सूऽरवृऽर३४औहोवा॥ कीऽर३४भीः॥

(दी. ६। प. ८। मा. ८) १९ (गौ।६४७)

(३७८।१) ॥ जागतं वरुणसामनी द्वे। द्वयोर्वरुणो जगतीद्यावापृथिव्यौ॥

घृतवा। ताऽऽद्वभुवनानाम्। अभिश्रिया॥ उर्वीपृथ्वीमधुदुघेसुपेशसाऽर३होद्व।
द्यावापृथिवीवरुणा। स्याधर्मणाऽर३। होद्व॥ विष्काभाऽर३द्वते॥ आजरे। भूरि। रायेऽ३।
तसाउवाऽ३॥ एऽ३। इन्दुस्समुद्रमुर्वियाविभातीऽर३४५॥

(दी. १४। प. १४। मा. ६) २० (धू।६४८)

(३७८।२)

घृतवतीभुवनानाम्। भाऽऽद्वश्रिया॥ उर्वीपृथ्वीमधुदुघेसुपेशाऽरसा। द्यावापृथिवीवरुणा।
स्याधर्मणा॥ वाद्वष्कभिताद्व॥ अजरेऽरभूरि। रायेऽ३। तसाउवाऽ३॥
इन्दुस्समुद्रमुर्वियाविभातीऽर३४५॥

(दी. १५। प. १०। मा. ४) २१ (मी।६४९)

(३७९।१) ॥ श्येनम् इन्द्रो जगतीन्द्रः॥

उभेयदिन्द्रोदसाह् ॥ आऽ२३पा। प्राथोपाऽ३१उवाऽ२३। इवआ। महान्तन्बामाहाइनाम् ॥
संम्रौऽ३हो ॥ जं चर्षणाऽ३१उवायेऽ३। नाऽ३मा। देवीजनित्रियाजीऽ१जानाऽ२त्। भद्रौऽ३हो ॥
जानित्रियजाऽ३१उवाऽ२३ ॥ एऽ३। जनदाऽ३२ ॥

(दी. ६। प. १३। मा. ९) २२ (गो। ६५०)

(३८०।१) ॥ वैरूपम्। विरूपो जागतीन्द्रो मरुत्बान् ॥

प्रमदाऽ२३४इने ॥ पितुमदाऽ३र्घाऽ३तावचः। यःकाऽ३ओऽ२३४वा।
ष्णगर्भानिरहन्त्रजिश्चनाऽ३। अवस्याऽ२३४वाः। वृषणवा। ज्रादक्षाऽ२३४इणाम्।
मारौवाओऽ२३४वा ॥ बन्तःसख्यायहुवाऽ५इमहाउ ॥ वा ॥

(दी. ३। प. १०। मा. ९) २३ (गो। ६५१)

॥ चतुर्विंशति चतुर्थः, तृतीयः खण्डः ॥३॥ दशतिः ॥९॥

॥ इत्यैन्द्राख्ये तृतीयेगाने अनुष्टुबाख्यम् ॥

॥ षष्ठं तन्त्रं संपूर्णम् ॥

॥ इति जागतम् ॥

(३८१।१) ॥ क्रोशम्। इन्द्र उष्णिगिन्द्रः ॥

इन्द्रा ॥ सुतेषुसोमे। पु। होइऽ२। हो। वाहोइ। क्रतुपुनीषउक्थियाम्।
विदाऽइवाऽ१र्द्धाऽ२३ ॥ स्याऽ३दाक्षाऽ३स्या ॥ महाऽ२३३हिषाऽ३४३ः। ओऽ२३४५इ ॥ डा ॥

(दी. ५। प. १२। मा. ७) २४ (फे। ६५२)

(३८१।२) ॥ अनुक्रोशम्। इन्द्र उष्णिगिन्द्रः ॥

इन्द्राऽऽहोइ। हवेऽऽहोइ॥ सुतेपुसोमेपुक्रतुम्पुनीषउक्थियाम्॥ विदाइवाऽऽर्द्धाऽऽ२।
स्यदक्षस्या। माऽऽहाऽऽहि॥ पाऽऽ२३४५ः॥

(दी. ५। प. ७। मा. ६) २५ (फू।६५३)

(३८१।३) ॥ कौत्सम् (क्रौशम्)। कुत्स उष्णिगिन्द्रः॥

इन्द्रसुतेपुसोमेषू॥ ऋतूऽऽ०पुनाइ। षउक्थियाम्। विदेवार्द्धाऽऽ२। स्यदक्षस्या॥
महाऽऽहाइपाऽऽ२ः॥ महाऽऽ२३ऽऽहिषाऽऽ३३ः। ओऽऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ४। प. ९। मा. ७) २६ (धे।६५४)

(३८२।१) ॥ दैवोदासे द्वे। द्वयोः दिवोदास उष्णिगिन्द्रः॥

हाउतमूवभी॥ प्रगायता। हाउ। पुरुहूऽऽ२३४ताम्। पुरुष्टृताम्। हाउ॥ इन्द्रंगाऽऽ२३४इर्भीः॥
तवाइपाऽऽ२३माऽऽ३४। हाउ। विवाऽऽ३साऽऽ५ताऽऽ६५६॥ दीऽऽ२३४वी॥

(दी. ६। प. ११। मा. ९) २७ (को।६५५)

(३८२।२)

ताऽऽ४मूवभी। हाइ। प्रगायताऽऽ६ए॥ पुरुहूऽऽ३ताम्। पुरुष्टृऽऽ३ताऽऽ३म्। पूरूऽऽ२ष्टृऽऽ२३४ताम्।
इन्द्रांगीऽऽ३र्भीइः। तवाइपाऽऽ३मा। विवासाऽऽ३ताऽऽ३। विवाऽऽ२साऽऽ२३४ता। आइन्द्राऽऽ३४म्।
हीर्भाऽऽ३इः। तविषम्। आऽऽ॥ विवाऽऽ२३हाऽऽ३॥ साताओऽऽ२३४वा॥ ऊऽऽ२३४५॥

(दी. ३। प. १७। मा. १४) २८ (ठी।६५६)

(३८२।३) ॥ प्रहितः संयोजने द्वे। ओकोनिधनं वा द्वयोः प्रहितरुष्णिगिन्द्रः॥

४५ ० ३४ र५ र ० ? र हूतंपुरूऽरष्टूताऽरम् । इन्द्राऽरंगाड्भीऽरः । तविषाऽर३४मा॥
 विवाऽर३॥ साऽरताऽर३४औहोवा॥ ओऽर३४काः॥

(दी. ४। प. ८। मा. ६) २९ (दू।६५७)

(३८२।४)

५४ ० ३४ र५ र ० ? र हूतंपुरूऽरष्टूताऽरम् । आइन्द्रगीभिस्तविषमा॥
 विवासाऽरताऽर । आइन्द्रंगाऽर३४५इ । भाऽर३४५इ । तवाइषाऽर३माऽर३॥
 वाऽरइवाऽर३४औहोवा॥ सतएऽर३४५॥

(दी. ७। प. १०। मा. १२) ३० (जा।३५८)

(३८३।१) ॥ हारिवर्णानि चत्वारि । चतुर्णां हरिवर्ण उष्णिगिन्द्रः॥

तंतेऽरमदम् । गृणीऽरमसि॥ वृषा । णंपृक्षुसासाऽरहाइम् । उलोका । कृत्तुमद्राइ॥
 वोहाऽर३रीऽर३॥ आऽर३याऽर३३म् । ओऽर३४५इ॥ डा॥

(दी. ३। प. १०। मा. ६) ३१ (पू।६५९)

(३८३।२)

ता४०ते । होइ । मदंगृणीमसीऽरए॥ वृषाहोऽर । णंपृक्षुसाऽरसाहीऽरम् ।
 उलोककृत्तुमद्रिवोहाऽररीऽर३॥ श्रियाम् । ओऽर३होवा । होऽर५इ॥ डा॥

(दी. ३। प. १०। मा. ५) ३२ (पू।६६०)

(३८३।३)

५ र २ १ २ २ ५ ४ ५ ४ २ १ २ २
तंतेमदंगृणीमसीऽदए॥ वृषाओऽइहोऽइ४। णंपृक्षुसासहीम्। उलाओऽइहोऽइ४।

५ ४ ५ ४ २ १ ५ ४ ५
ककृलुमद्विवाः। हरोऽइ२इ४वा॥ आऽइ५योऽइहाइ॥

(दी. ३। प. ७। मा. ६) ३३ (टू। ६६१)

(३८३।४)

४ र १ २ १ २ २ १ २ २ १ २ २ २ १ २ २
तंतेमदाऽइ५गृणीमसाइ॥ वार्षणंपृ। क्षुसासाऽइहोऽइ३म्। होवाऽइहाइ॥ उलोकाऽइकृऽइ३।
१ २ २ १ १ २ ३ ५ ४ २ १ १ १ १
होवाऽइहा॥ लुमाऽइ३। द्राऽइ२इवाऽइ३इ४ओहोवा॥ हरिश्रियाऽइ३इ४इ५म्।

(दी. ४। प. ९। मा. ६) ३४ (धू। ६६२)

॥ इति ग्रामे गेय-गाने दशमस्यार्द्धः प्रपाठकः॥

(३८४।१)

॥ त्रैतानि चत्वारि। चतुर्णां त्रित उष्णिगिन्द्रः॥

५ र ४ ५ १ र २ २ २ १ २ ५
यत्सोममिन्द्रविष्णावी॥ यद्वाघत्रितआसियाइ॥ यद्दामरुत्सुमऽइ०दासोऽइ३इ४हाइ॥
१ २ ३ ५ ४ २ १ ३ १ १ १
साऽइ२माऽइ३इ४ओहोवा॥ एऽइ३। दुभीऽइ३इ४इ५ः।

(दी. ६। प. ६। मा. ५) १ (कू। ६६३)

(३८४।२)

४ र ४ २ १ २ २ १ २ २ १ २ २ १ २ २
यत्सोममाऽइ५इन्द्रविष्णवाइ॥ यद्वाघत्रितआप्ताऽइ२याइ॥ यद्दामाऽइ२रुत्सुमा॥ दासायेऽइ३।
१ २ ३ ५ ४ २ ३ ५
साऽइ२माऽइ३इ४ओहोवा॥ दूऽइ३इ४भीः॥

(दी. ६। प. ६। मा. ६) २ (कू। ६६४)

(३८४।३)

हाओहायत्सोममा॥ द्राऽ२वाऽ२३४ओहोवा। ष्णाऽ२३४वी। यद्वाऽ२घत्रितआऽ२प्तिये।

यद्वामरुत्सुमाऽ२३हो। दसाऽ२इ॥ समाऽ२३होयेऽ३॥ दुबिरोऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. १०। प. १। मा. ५) ३ (भु। ६६५)

(३८४।४)

ओहोऽ३१इ। ओऽ२होऽ२३४वा। यत्सोममीऽ३०द्राऽ३विष्णवाइ॥ ओहोऽ३१इ।

ओऽ२होऽ२३४वा। यद्वाघत्रीऽ३ताऽ३आप्तियाइ॥ ओहोऽ३१इ। ओऽ२होऽ२३४वा।

यद्वामरूऽ३त्सूऽ३मंदसाइ॥ ओहोऽ३१इ। ओऽ२होऽ२३४५वाऽ६५६॥ समिन्दुभीऽ२३४५ः।

(दी. ८। प. १२। मा. ९) ४ (ठो। ६६६)

(३८५।१) ॥ सुराधसम्। सुराधस उष्णिगिन्द्रः॥

एदुमधो। मदाऽ३२इन्ताऽ२३४राम्। सिधाध्वर्योन्धसाऽ२ः। धाऽ२३४साः॥

एवाहिवीरस्तवताऽ२इ। वाऽ२३४ताइ॥ सदाऽ३वाऽ५र्द्धाऽ६५६ः॥

(दी. ७। प. ७। मा. ९) ५ (छो। ६६७)

(३८५।२) ॥ प्रराधसम्। प्रराधस उष्णिगिन्द्रः॥

एदुमधोहोऽ५र्मदिन्तराम्॥ सिधाहोऽ२इ। अध्वर्योअंधासाऽ२ः॥ आइवाऽ१हिवीऽ२॥

राऽ२स्तवताइ। सदावृ। धाऽ। ओऽ३होवा। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. ३। प. १०। मा. ७) ६ (णे। ६६८)

(३८६।१) ॥ विकल्पमारुतम्। मरुत उष्णिगिन्द्रः॥

३ ५ ४ २ ४ ५ १ विर र १ २ ११
एऽधु०दुमि। द्राऽऽयाऽऽसिध्वता॥ पिबाऽऽतिसोम्यमधु। प्रराधाऽऽ३३सी॥

११ २ २ १ २ ४ ५ ४
चोदयताइमाऽऽही॥ बना। औऽऽहोवा। होऽऽधुइ॥ डा॥

(दी. ४। प. १। मा. २) ७ (धा।६६९)

(३८७।१) ॥ वैश्वमनसम्। विश्वमना उष्णिगिन्द्रः॥

११ र ५ १ अ १ १ ३ २ १ र २ ११ र अ १ २ १
एतोन्विन्द्रस्तवाऽऽदमा॥ साखायस्तोऽऽ। मियाऽऽ३४५म्। नरमाकृष्टीर्योविश्वाअभि॥ आऽ।

२ १ १ ३ ११ र ३ १ १ १
स्तियाये॥ काईऽऽदाऽऽ३४औहोवा॥ ऊऽऽ३४५॥

(दी. १। प. ८। मा. ४) ८ (दी।६७०)

(३८८।१) ॥ सौमित्राणि त्रीणि। त्रयाणां सुमित्र उष्णिगिन्द्रः॥

५ र १ र २ १ २ १ र २ १ अ १
इन्द्रायसा॥ मागायता। वाइप्राऽऽश्यावृऽऽ। होतेवृहत्॥ ब्राह्मकृतेऽऽ॥ विपाऽऽ३ः।

१ १ ३ ११ र २ १ १ १ १
चाऽऽइताऽऽ३४औहोवा॥ पनस्यवेऽऽ३४५॥

(दी. ५। प. ८। मा. ५) ९ (बु।६७१)

(३८८।२)

३ २ र ११ ५ १ अ १ १ ३ २ ३ ५
इन्द्राऽऽ३४। यसाम। गायाऽऽदता॥ वाइप्रायवृऽऽ। हताऽऽ३४५इ। वृऽऽ३४हात्।

२ १ विर १ विर १ २ १ १ ३ ११ र ३ ५
ब्राह्मकृतेऽऽविपश्चितेऽऽ॥ ओयेऽऽ। पाऽऽरनाऽऽ३४औहोवा॥ स्याऽऽ३४वे॥

(दी. ७। प. १०। मा. ४) १० (जी।६७२)

(३८८।३)

(३९०।१) ॥ औक्षोरन्ध्राणिनियनानि त्रीणि। त्रयाणामुक्षोरंध्रोष्णिगिन्द्रः॥

५ र र ३ २ ४ ५ १ २ ४ ५ २ १ २ २
सखायआहाउ॥ शिषाऽऽमहेहाउ। ब्रह्माऽऽइन्द्राहाउ। यवज्जिणाइ। स्तूपऊपूऽऽहाइ।
१ अ २ १ १ १ ३ ५ र ३ ५
वोनृत्तमाऽऽहा॥ यथाऽऽ३॥ ष्णाऽऽवाऽऽ३४औहोवा॥ ऊऽऽ३४पा॥

(दी. ४। प. ९। मा. ९) १५ (ध्वो।६७७)

(३९०।२)

४ ऋ ४ ५ र ४ ५ र र ४ ५ १ २ २ १ २ २ २
सखायआशिषमा हाइ। ब्रह्मेन्द्रायवज्जिणोवा॥ आइतीऽऽवाऽऽ। होवाऽऽहाऽऽ। हाइ।
३ अ १ ५ १ २ २ १ २ २ २ १
स्तूपऊपूऽऽ३४। वोहोहाइ॥ नार्त्ताऽऽमाऽऽ। होवाऽऽहाऽऽ। हा॥ यथाऽऽ३॥
१ १ ३ ५ र ३ १ १ १
ष्णाऽऽवाऽऽ३४औहोवा॥ ईऽऽ३४५॥

(दी. ८। प. १४। मा. ७) १६ (द्वो।६७८)

(३९०।३)

३ ऋ ३ ४ ५ २ ४ ५ र ऋ ४ २ र र १ २
साऽऽखायः। आशिषा। माऽऽहाइ। ब्रह्मेन्द्रायवज्जिणो। हाऽऽ। स्तूपऊपुवोऽऽनार्त्तामा।
३ ५ २ २ र १ २ ३ ५ २ २ १ २
याऽऽ३४धृ। हाऽऽहाइ। वोनार्त्तामा। याऽऽ३४धृ। हाऽऽहा॥ ष्णाऽऽइइ। औऽऽहो।
३ र २ न २ २ ३ र २ ५ र २ १ १ ५
औहोवा॥ ष्णाऽऽइइ। औऽऽहो। औहोवाऽऽ३४। औहोवा॥ ऊऽऽ३४पा॥

(दी. १४। प. १९। मा. ७) १७ (ध्वो।६७९)

॥ अष्टाविंशति प्रथमः। चतुर्थः खण्डः॥ दशतिः॥१०॥

॥ इति द्वितीयोऽर्धः, चतुर्थः प्रपाठकश्च समाप्तः॥

(३९१।१)

॥ प्रयस्वम्, प्रयस्वद्वा। प्रजापतिरुष्णिगिन्द्रः॥

^४ हाउगृणाइ॥ ^५ तदाऽइन्द्राताइ। ^{३ २} शवाऽ२३१२३ः। ^{४ ५} उपाऽइमान्दे। ^१ वतातयाइ।
^{३ २} यद्धःसाऽ२३इवा। ^५ त्रमोऽइजासा॥ ^{४ ५} शाची॥ ^{१ २} पते। ^१ औऽ२३होवाऽइ४। ^{२ ३} औहोवा॥
^३ द्युऽ२३४भीः॥

(दी. ५। प. १२। मा. ८) १८ (फै।६८०)

(३९१।२) ॥ आक्षरम्, प्रजापतिरुष्णिगिन्द्रः॥

^{५ ४} गृणे। ^{३ २} तदाऽइ४। ^{३ ४} औहोऽइन्द्रतेशवाः। ^५ उपमादेवताताऽ२३याऽइ४इ॥ ^{१ २ ३ ४} यद्धाऽइ४५सिवा॥
^५ त्रमोजसा। ^{३ २} शाऽइचीप॥ ^{४ ५} ताऽ२३४५इ॥

(दी. ८। प. ८। मा. ४) १९ (डी।६८१)

(३९१।३) ॥ प्रयस्त्रम्, रजापतिरुष्णिगिन्द्रः॥

^{५ ४} गृणेतदौहोऽइन्द्रतेशवाः॥ ^{३ २} उपमान्देऽ२वताऽ२तये। ^५ उपमादे। ^{१ २ ३ ४} वताताऽ२३याइ॥ ^५ यद्धःसिवृ।
^५ त्रमोऽ२३जसाउ। ^{३ २} वाऽइ। ^{४ ५} शाऽ२३४ची। ^{३ २} पाऽ२३४ताइ। ^५ हाऽ२३४५इ॥ ^{३ २} डा॥

(दी. १०। प. ११। मा. ६) २० (पू।६८२)

(३९२।१) ॥ दैवोदासानि चत्वारि। चतुर्णां दिवोदास उष्णिगिन्द्रः॥

^{३ २} यस्याऽइ१। ^{३ २} त्यच्छाऽइ१२३४म्। ^५ बरम्। ^{३ २} माऽइदाइ॥ ^५ दिवोऽइ१। ^{३ २} दासाऽइ१२३४। ^५ यरा
^{३ २} धाऽइयान्॥ ^{३ २} अयाऽइ१म्। ^{३ २} ससोऽइ१२३४। ^५ मइ। ^{३ २} द्राऽइताइ॥ ^५ सुताऽइ१ः। ^{३ २} पिवाऽइ।
^३ ओऽ२३४वा॥ ^५ ऊऽ२३४पा॥

(दी. १। प. १६। मा. ८) २१ (क्वै।६८३)

(३९२।२)

यस्यत्यच्छाऽ५०बरंमदाइ॥ दिवोदासायरंधयन्॥ आयससोऽ३॥ मइ। द्रताऽ३इ।

सूऽ२ताऽ२३४औहोवा॥ पीऽ२३४बा॥

(दी. ५। प. ७। मा. ५) २२ (फु।६८४)

(३९२।३)

यस्यत्याऽ३च्छाऽ०बरंमदाइ॥ दिवोऽ२दासायरंधयन्॥ आयससोऽ३। मइ। द्रताऽ३इ।

सुतआऽ२३ः। पाऽ२इबाऽ२३४औहोवा॥ ईऽ२३४ती॥

(दी. ५। प. ८। मा. ८) २३ (बै।६८५)

(३९२।४)

याऽ४स्यत्यत्। होइ। शंबरंमदाऽ६ए॥ दिवोदासायरंधयन्नयासाऽ३सो। मइ। द्रताऽ३४।

औहोवा। सूऽ२३४ताः॥ पिबोऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ५। प. १०। मा. ६) २४ (मू।६८६)

(३९३।१) ॥ सांवर्ते द्वे। द्वयोरिन्द्र उष्णिगिन्द्रः॥

एन्द्रनाः॥ गधिप्राऽ२३या। सात्राजित्। अगोहाऽ२३याऽ३४॥ गिराऽ३४इर्नवाइ॥

श्वताःपार्थुऽ३ः। पाऽ२ताऽ२३४औहोवा॥ दीऽ२३४वाः॥

(दी. ५। प. ८। मा. ७) २५ (बै।६८७)

(३९३।२)

एन्द्रनोऽ५गधिप्राया॥ सात्राजित्। अगोहायौ। होऽ३वा॥ गिराइर्नवौ। होऽ३वा। श्वताऽ२३ः।

पाऽ२र्थुऽ२३४औहोवा॥ पतिर्दिवाऽ१ः॥

(दी. ६। प. ९। मा. ५) २६ (घु।६८८)

(३९४।१) ॥ यामम्, आक्षरं वा। यम उष्णिगिन्द्रः॥

यइन्द्रसो॥ मापाऽऽतामाः। मदाश्नवाइ। षचेतताइ॥ याइनाऽऽहासी॥ नियत्रिणाम्।
ताऽऽमीम॥ हाऽऽ३४५इ॥

(दी. २। प. ८। मा. ७) २७ (जे।६८९)

(३९५।१) ॥ दीर्घायुष्यम्। प्रजापतिरुष्णिगिन्द्र आदित्यो वा॥

तुचेतना। यताऽऽत्सूऽऽ३४नाः॥ द्राघीयाऽऽ३४यूः। जीवासाऽऽइ॥ आदीऽऽत्यासाऽऽः॥
समहसाऽऽः। कृणोऽऽताऽऽ५। नाऽऽ३४५॥

(दी. ३। प. ८। मा. ५) २८ (डु।६९०)

(३०६।१) ॥ शुन्ध्युस्सामा भरद्वाज उष्णिगिन्द्रः॥

वेत्थाहिनिर्ऋतीनाम्॥ वाज्रहस्तपरिवृ। जाम्॥ अहर। हाः॥ शुन्ध्युःपरि।
पदाऽऽमाऽऽइवाऽऽ५६॥

(दी. ३। प. ७। मा. ४) २९ (ठी।६९१)

(३९७।१) ॥ अपामीवम्। आदित्य उष्णिगादित्यः॥

अपामीवामपा॥ स्त्रिधाम्। अपसेधतदुर्माऽऽ३तीम्। आदीऽऽत्यासाऽऽः॥
युयोतनानओवाऽऽओऽऽ३४वा॥ हाऽऽ५सोऽऽ६हाइ॥

(दी. ६। प. ६। मा. ६) ३० (कू।६९२)

(३९८।१) ॥ वैराजे द्वे। द्वयोरिन्द्रो विराडिन्द्रः॥

पिबा॥ सोममिन्द्रमदन्तुबाऽ२। यन्तेसुषावहरिया॥ श्वाऽ२३द्रीः। सोऽ२३तूः॥

बाहूभीऽ३याऽ३म्। सुयाऽ२ताऽ२३४औहोवा॥ एऽ३। नार्वाऽ२३४५॥

(दी. ७। प. ९। मा. ४) ३१ (झी।६९३)

(३९८।२) ॥ सहोदैर्घतमसम्॥

हाउपिबा॥ सोममिन्द्र। माऽ। दतुत्त्वाऽ३। दतुत्वा। यन्तेसुषावहरिया। श्वाऽ१द्रीऽ२ः।

श्वाद्रीऽ२ः॥ सोतुर्बाहुभ्याम्। सुयताऽ३ः। सुयताऽ३ः॥ नाऽ२र्वाऽ२३४औहोवा॥ ईऽ२३४५॥

(दी. ६। प. १३। मा. ७) ३२ (ग्री।३९४)

॥ इति पञ्चदश द्वितीयः, पञ्चमः खण्डः॥५॥ दशतिः॥१॥

॥ इत्यौष्णिहम्॥

(३९९।१) ॥ अभ्रातृव्यं। इन्द्रः ककुबिन्द्रः॥

अभ्रातृव्योऽ५अनातुवाम्॥ अनापिराइन्द्राऽ२। जनुषाऽ२॥ सनाऽ३४५त्त्॥ आऽ२३४सी।

युधेदाऽ२पिबमिच्छसे॥ युधाऽ१॥

(दी. ६। प. ७। मा. ४) ३३ (खी।३९५)

(४००।१) ॥ शार्करे द्वे। द्वयोः शर्करः ककुबिन्द्रः॥

योनोहाउ॥ इदाम्। इदंपुराऽ२३हाउ। प्रवा। प्रवस्यआऽ२३हाइ। निना।

निनायतमुवाऽ२३हाउ॥ स्तुषाइ। सखायआऽ२३हाइ॥ द्रमूताऽ२३याऽ३४३इ।

ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ४। प. १२। मा. ११) ३४ (था।६९६)

(४००।२)

योनाऽऽइदमिदंपुरा॥ योनइदमिदाऽ१०पूऽइरा। प्रवस्यआनिना। यत्ताऽऽमूऽऽवस्तुषाइ॥
निना। यताऽऽमूऽऽवस्तुषाइ॥ सखायाऽ२ः। आऽ२इइ। द्रमूऽऽताऽऽयाऽऽइ॥

(दी. ३। प. १। मा. ८) ३५ (ढै। ६९७)

॥ इति ग्रामे गेय-गाने दशमः प्रपाठकः॥१०॥

(४०१।१) ॥ बृहत्कम्। बृहत्ककुम्मरुतः॥

आगन्ता॥ मारिषण्याऽऽता। प्रास्थावानोमापस्थात। सामान्यावाऽऽः॥ दृढाचीऽऽद्याऽऽ॥
मयोवा। ष्णाऽऽवोऽऽहाइ॥

(दी. ७। प. ७। मा. २) १ (छा।६९८)

(४०२।१) ॥ सौयवसानि त्रीणि। त्रयाणां सूयवसः ककुबिन्द्रः॥

आयाही॥ अयमिन्द्रवे। श्वपाऽऽताइ। गोपतउ। वर्वाऽऽपाताऽऽऽइ॥ सोमाऽऽम्॥
सोमाऽऽऽ। पाऽऽताऽऽऽऽओहोवा॥ पीऽऽऽबा॥

(दी. ७। प. ९। मा. ५) २ (झु।६९९)

(४०२।२)

आयाहिया॥ याऽऽमाइदाऽऽवे। आश्वपतेगोपते। ऊ। वर्वाऽऽहाऽऽइ। पाऽऽताइ॥
सोऽऽऽमहाइ॥ सोऽ। मा। पतेऽऽहाऽऽइ। पाऽऽऽइबा॥ एहियाऽऽहा। होऽऽइ॥ डा॥

(दी. ६। प. १४। मा. ७) ३ (घे।७००)

(४०२।३)

आयाह्यमिन्द्रादवाइ॥ अश्वपाऽऽताऽऽइ। गोपाताऊऽऽ। वर्वाऽऽपाऽऽऽताइ॥
सोमऽऽसोमाऽऽऽ॥ पताइ। पिबाऽऽओऽऽऽवा॥ ऊऽऽऽपा। उपा॥

(दी. ३। प. ९। मा. ६) ४ (ढू।७०१)

(४०३।१) ॥ धेनुषां। मरुतः ककुबिन्द्रः॥

बहाहस्वीत्॥ यूजावयम्। प्रातिसाऽ२। तंवृषभा ब्रूवीऽ१माहाऽ२३४इ॥ संस्थाऽ३इ॥
जानस्यगोऽ२३४वा॥ माऽ२३४ताः॥

(दी. २। प. ८। मा. ५) ५ (जु। ७०२)

(४०४।१) ॥ संवेशीयम्। मरुतः कुकुम्मरुतः॥

गावश्चिद्घासाऽ६मन्यवाः॥ सजात्येनमरुतस्सबन्धवाऽ२३होइ॥ रिहतेकाकूऽ३भो॥ मिथा।
औऽ३होवा। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. ५। प. ७। मा. ३) ६ (फि। ७०३)

(४०५।१) ॥ आभरे द्वे। द्वयोरिन्द्रः ककुबिन्द्रः॥

बन्नई॥ द्रआभाऽ२३रा। ओजोनृम्णम्। शातक्रताऽ३उ। वीचर्पाऽ२३४णाइ॥
आवीरंपाऽ३हाऽ३॥ ताऽ२नाऽ२३४औहोवा॥ साऽ२३४हाम्॥

(दी. ५। प. ८। मा. ७) ७ (बे। ७०४)

(४०५।२)

बन्नइन्द्रा॥ आभाऽ२३रा। ओजोनृम्णम्। शातक्रताऽ३उ। वीचर्पाऽ२३४णाइ॥
आवीराऽ२३०पा॥ तनासहाम्। औऽ२३होवा। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. ५। प. १०। मा. ६) ८ (मू। ७०५)

(४०६।१) ॥ ऐषिराणि त्रीणि। त्रयाणां वायुः ककुबिन्द्रः॥

अधाहिया॥ द्रगिर्वाऽ२३णाः। उपत्वाका। मईमाऽ२३हाइ॥ ससृग्माऽ२३हाइ॥ ऊदेऽ२॥
वग्माऽ२३०ताः। उदाऽ२३भाइः। इडाऽ५भीः। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. ४। प. ११। मा. ९) ९ (तो।७०६)

(४०६।२)

अधाहीन्द्रगिर्वाऽदणाः॥ ऊपत्वाका। माईऽशमाहाऽरइ। सासृग्माहाऽरइ॥
ऊदेऽशवाग्माऽरइ॥ तओवा। दाऽधुभोऽदहाइ॥

(दी. ४। प. ७। मा. ६) १० (धू।७०७)

(४०६।३)

अधाहीन्द्रगिर्वाऽदणाः॥ उपत्वाका। माईऽशमाहाऽरइ। सासृग्माऽरइ४हाइ॥
ऊदौऽरहोऽरइ। वाऽरहाऽरइ॥ ग्माऽरइ। तऊऽरइ४ओहोवा॥ दभीऽररेऽरइ४५॥

(दी. ६। प. ९। मा. ६) ११ (घू।७०८)

(४०७।१) ॥ सीदन्तीये द्वे। द्वयोः प्रजापतिः ककुबिन्द्रः॥

साऽरइ४इ। दन्तस्तेव। योयाऽदथा॥ गोश्राइतेम। धोमदिराइ। वाऽरइइवक्ष। णाऽरइ४५इ॥
अभित्त्वामाइन्द्राऽरनोऽरइ॥ नूऽरइ४५॥ माऽरइ४५॥

(दी. ६। प. १०। मा. ७) १२ (डे।७०९)

(४०७।२)

सीदन्तस्तेवयः। यथाऽरइ। गोऽरइ४। श्रीतेमधौम। दिराइ॥ विवाऽरइ। हाऽरइ।
क्षाऽरइ४णाइ॥ अभीऽरइ। होऽरइइ। बाऽरइ४मी॥ द्रनोऽरइ। नूऽरइ४माः। उहुवाऽदहाउ॥

वा॥

(दी. ५। प. १५। मा. ६) १३ (मू।७१०)

(४०८।१) ॥ सौभरे द्वे (पक्थम्)। द्वयोः सुभरिः ककुबिन्द्रः॥

५ ३ अ ३ अ ५ अ १ अ ५ ३ २ १ ५
वयमुत्तामपूर्विया॥ स्थूरन्नकच्चिद्भरन्तआवस्यावाऽ२३४ः॥ वज्रिन्। चित्राऽ३म्॥ हाऽ२३वाऽ३।
माऽ३४५होऽ६हाइ॥

(दी. ३। प. ६। मा. ५) १४ (टु।७११)

(४०८।२) ॥ सौभरम्॥

५ ४ ५ अ ५ र र ४ ५ ४ ५ २ २ ३ २ १ १ १ १ २ २ २
वयमुत्तामपूर्वस्थूरन्नकच्चिद्भरन्तः। ओवा॥ हाऽ३हाइ। अवस्यावाऽ२३४५ः॥ हाऽ२हाइ।
वज्रिन्चित्राऽ२३४५म्॥ हाऽ३हाइ। हवाऽ३। माऽ२३४हाइ॥ उहुवाऽ६हाउ॥ वा॥

(दी. ३। प. ११। मा. ८) १५ (टौ।७१२)

अष्टादश तृतीयः, षष्ठः खण्डः॥६॥ दशतिः॥२॥

॥ इति काकुभम्॥

(४०९।१) ॥ यामम्। यमः पंक्तिरिन्द्रः॥

अ अ ४ अ ४ अ ३ २ १ २ ४ ५ र ४ ५ अ र २ अ
स्वादोरित्थाविषू। वताऽ३ः। माऽ२३४। धोःपिबन्तिगौ। रियाः॥ याइन्द्रेण। सयावाऽ२३रीः।
१ अ १ २ अ २ १ २ २ १ र २ १ २
वृष्णामदा। तिशोभाऽ२३था॥ वस्वाइराऽ१नूऽ२॥ स्वाराजियम्। इडाऽ२३भाऽ३४३।
ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. १२। प. १४। मा. ७) १६ (झे।७१३)

(४१०।१) ॥ गृत्समदस्य मदौ द्वौ। द्वयोः गृत्समदः पंक्तिरिन्द्रः॥

५ र २ १ २ १ २ अ २ १ २ १ २ अ २
इत्थाहिसो॥ मइन्माऽ२३दाः। ब्रह्मचका। रवर्द्धाऽ२३नाम्। शविष्ठवा। जिन्नोजाऽ२३सा।
अ २ र १ २ १ २ १ २ १ २ १ २
पृथिव्यानिश्चशाअहिम्॥ अर्चानाऽ१नूऽ२॥ स्वरौहोऽ२। जियमोऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ५। प. ११। मा. ६) १७ (पू।७१४)

(४१०।२)

इत्थाहिसोऽ५मइन्मदाः॥ ब्रह्मचका। रवर्द्धाऽ२३नाम्। शाविष्ठाऽ२३४वा। जिन्नोजाऽ२३४सा।
पृथिव्यानिःशशाअहिम्॥ अर्चाऽ३न्होई। अनूऽ२३हो॥ स्वाराजियम्। इडाऽ२३भाऽ३४३।
ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ५। प. १२। मा. ८) १८ (फै।७१५)

(४११।१) ॥ आभीके द्वे। द्वयोरभीकः पंक्तिरिन्द्रः॥

इन्द्रोमदायवाऽ३। वाद्धाइ॥ शवसेवृत्रहाऽ३। नृभीः। तमिन्महत्सुवाऽ३। जाइपू॥
ऊतिमर्भेहवाऽ३। माहाइ॥ सावा। जाइषुप्रनोऽ२३४वा। वाऽ५इषोऽ६हाइ॥

(दी. ५। प. ११। मा. ७) १९ (पै।७१६)

(४११।२)

इन्द्रोमदाऽ५यवावृधाइ॥ शवसेवृ। त्रहानृभीऽ३४ः। ताम्। इन्माहाऽ२३४त्सुवाऽ६। हाउ।
जाइपू। ऊतिमर्भेहवाऽ१। माऽ३हाइ॥ सावा॥ जाइषुप्रनोऽ२३४वा। वाऽ५इषोऽ६हाइ॥

(दी. ५। प. १२। मा. ९) २० (फो।७१७)

(४११।३) ॥ आभीशवे द्वे। द्वयोरभीशुः पंक्तिरिन्द्रः॥

इन्द्रोमदाऽ५यवावृधाइ॥ शवसेवृ। त्रहाऽ२नृभिः। आऔऽ३हो। औहोवाऽ२३४५।
ह२३४५। तमिन्महा। त्सुवाऽ२जिषु। आऔऽ३हो। औहोवाऽ२३४५। ह२३४५।

ऊ॒ति॒म॒र्भे॑ । ह॒वाऽ॒र॒म॒हे॑ । आ॒ओऽ॒हो॑ । ओ॒हो॒वाऽ॒र॒३॒४॒५॑ । ह॒२॒३॒४॒५॑ ॥ स॒वा॒जे॒पू॒प्राऽ॒नोऽ॒३॑ ॥
वाऽ॒३॒४॒५॒इ॒षोऽ॒६॒हा॒इ॑ ॥

(दी. ११। प. १८। मा. ७) १२ (गो।७१८)

(४११।४)

इ॒न्द्रो॒म॒दा॒य॒वा॒वृ॒धे॒श॒व॒से॒वृ॑ ॥ त्र॒हा॒नृ॑ऽ॒भीऽ॒ः । तामि॒न्म॒ह॑ । त्सू॒आऽ॒१॒जि॒षूऽ॒३॑ ।
ऊ॒ती॒माऽ॒२॒३॒४॒र्भा॒इ॑ । ह॒वाऽ॒२॒मा॒हा॒इ॑ ॥ स॒वा॒जे॒पू॒प्राऽ॒नोऽ॒३॑ ॥ वाऽ॒३॒४॒५॒इ॒षोऽ॒६॒हा॒इ॑ ॥

(दी. ७। प. ८। मा. ६) २२ (जू।७१९)

(४११।४) ॥ बा॒र्ह॒द्रि॒रा॒णि॒ त्री॒णि॑ । त्र॒या॒णां॑ बृ॒ह॒द्रि॒रिः॑ पं॒क्ति॒रि॒न्द्रः॑ ॥

इ॒न्द्रोऽ॒३॒१॒२॒३॒४॑ । म॒दा॑ ॥ य॒वा॒वृ॒धे॒श॒वाऽ॒२॒साऽ॒२॒३॒४॒इ॒वृ॑ । त्र॒हा॒ऽ॒३॑ । ओ॒होऽ॒३॒वा॑ । आऽ॒३॑ ।
ओ॒होऽ॒२॒३॒४॒वा॑ । नृ॒भा॒इः॑ । तामि॒न्म॒ह॒त्स्वा॒जि॒षू॒ति॒माऽ॒२॒३॒र्भा॒इ॑ । ह॒वाऽ॒३॑ । ओ॒होऽ॒३॒वा॑ । आऽ॒३॑ ।
ओ॒होऽ॒२॒३॒४॒वा॑ । म॒हा॒इ॑ ॥ स॒वा॒जे॒षु॒प्र॒नाऽ॒३॑ । ओ॒होऽ॒३॒वा॑ । आऽ॒३॑ । ओ॒होऽ॒२॒३॒४॒वा॑ ॥
वाऽ॒५॒इ॒षोऽ॒६॒हा॒इ॑ ॥

(दी. ९। प. १९। मा. ७) २३ (धे।७२०)

(४११।६)

इ॒न्द्रोऽ॒३॒४॑ । म॒दा॒या॑ । वा॒वाऽ॒६॒र्हा॒इ॑ ॥ श॒व॒से॒वृ॑ । त्र॒हा॒नृ॑भीऽ॒ः । हा॒उ॒हो॑ । हो॒वा॑ । तामि॒न्म॒ह॑ ।
त्सू॒आऽ॒१॒जि॒षूऽ॒३॑ । हा॒उ॒हो॑ । हो॒वा॑ । ऊ॒ति॒म॒र्भे॑ । ह॒वा॒मा॒हेऽ॒३॑ । हा॒उ॒हो॑ । हो॒वा॑ ॥
स॒वा॒जे॒पू॒प्राऽ॒नोऽ॒३॑ ॥ वाऽ॒३॒४॒५॒इ॒षोऽ॒६॒हा॒इ॑ ॥

(दी. १५। प. १७। मा. ८) २४ (फै।७२१)

(४११।७)

ओहाइ। इन्द्रोऽ३४। मदाया वावाऽ६र्द्धाइ॥ शवसेवृ। त्रहानृभीऽ३ः। आउहौ। होवा।
तामिन्महा। त्सूआऽ१जिपूऽ३। आउहौ। होवा। ऊतिमर्भाइ। हवौ। होऽ३वा। माहाऽ२इ॥
सवाजेपूपाऽ३नो॥ विषात्। औऽ२३होवा। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. १५। प. २१। मा. १०) २५ (पौ।७२२)

(४१२।१)

॥ स्वाराज्यम्। इन्द्रः पंक्तिरिन्द्रः॥

इन्द्रतुभ्यमिदद्रिवाऽ६ए॥ आनुत्तवज्जिन्वीरियम्॥ यद्वात्याऽ१म्माऽ२। याइनमृगम्।
तवात्याऽ१न्माऽ२। यायावधीः॥ अर्चानाऽ१नूऽ२॥ स्वाराजियम्। इडाऽ२३भाऽ३४३।
ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ४। प. ११। मा. ७) २६ (ते।७२३)

(४१३।१)

॥ संवेशीयम्, धृष्णुसाम। कश्यपः पंक्तिरिन्द्रः॥

प्राइहीऽ२। अभीहिधृष्णुहाओऽ३हो॥ नाताऽ२इ। वज्रोनिशसताओऽ३हो। आइन्द्राऽ२।
नृम्णाहितेशवाओऽ३हो॥ हानाऽ२ः। वृत्रंजयाअपाओऽ३हो॥ आर्चाऽ२नानूऽ२। स्वाराजियम्।
इडाऽ२३भाऽ३४३। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ५। प. १३। मा. ११) २७ (बा।७२४)

(४१४।१)

॥ संवेशीयम्। मरुतः पंक्तिरिन्द्रः॥

^{४ र} यदुदीराऽ^{र ४}पृतआजयाः॥ ^{२ १ विर} धृष्णवेऽ^रधी। ^{१ २} यताइधाऽ[—]शनाऽ^{१ २}रम्। ^{१ २} युंक्ष्वामदच्युताऽ^{४ ५}३। हारी।
^{२ १} क^२हनःक^{४ ५}वसाऽ^{२ १}३उ। ^{४ ५} दाधाः॥ ^{२ १} अस्मा^{२ १}आऽ^{२ १}२३इन्द्रा॥ ^{२ १} वसौदाऽ^{२ १}२३धाऽ^{२ १}३४३ः। ^१ ओऽ^{२ १}२३४५इ॥
 डा॥

(दी. ७। प. ११। मा. १०) २८ (चौ।७२५)

(४१५।१) ॥ यामे द्वे। यमः पंक्तिरिन्द्रः, चित्रा वा। (पितरो वा पूर्वस्य)॥

^{३ ४ ३ ५ ५} अक्षन्नमीमदा। ^{३ २} तर्हीऽ^१३। ^{५ ५ ५ ५ ४ ५} आऽ^{१ २}२३४। ^{१ २} वप्रियाअधू। ^{१ २} षता॥ ^{१ २} अस्तोषतस्वभानवः।
^{१ २} विप्रानाऽ^२३वी। ^{१ २ २ २} षायामती॥ ^{१ २} योजानूऽ^२३वाऽ^{१ २}३इ॥ ^{१ २} द्राऽ^{१ २}२ताऽ^{१ २}२३४औहोवा॥
^३ हाऽ^४२३४री॥

(दी. ११। प. ११। मा. ४) २९ (की।७२६)

(४१६।१) ॥ यामम्। यमः पंक्तिरिन्द्रः॥

^{३ ५ ३ ४ ५} उपोषुशृणुहीगिरः। ^२ एऽ^२३। ^२ औऽ^२३होऽ^२५वा॥ ^{१ २} माद्यवन्मा। ^२ तथाआऽ^२१इवाऽ^२३४।
^{३ २} कदाऽ^{३ २}३४नस्मू। ^{१ २ २} नार्त्तावतः। ^{१ २} करइद। ^{१ २} थायाऽ^{३ २}१साईऽ^{३ २}२३४त्॥ ^{३ २} योजाऽ^{३ २}३४नुवाऽ^{३ २}३इ॥
^{१ २} द्राऽ^{१ २}२ताऽ^{१ २}२३४औहोवा॥ ^३ हाऽ^४२३४री॥

(दी. ७। प. १२। मा. ९) ३० (छो।७२७)

(४१७।१) ॥ त्रैतानि त्रीणि। त्रितः पंक्तिरिन्द्रो विश्वेदेवाः॥

^{२ १ २ २} चन्द्रमाआउवा। ^{१ २} प्सुवान्ताराउवा। ^{१ २} सुपर्णोधाउवा॥ ^{१ २} वतेदिवि। ^{१ २} नवोहिराउवा। ^{१ २} ण्यनाइमायाउवा।
^{१ २} पदंविन्दाउवा। ^{१ २} तिविद्युताः॥ ^{१ २} वित्तम्माआउवा। ^{१ २} स्यरोदाऽ^{१ २}२३साऽ^{१ २}३४३इ। ^{१ २} ओऽ^{१ २}२३४५इ॥ डा॥

(दी. ५। प. १२। मा. १३) ३१ (फि।७२८)

(४१७।२)

४ ५ र ४ २ ? २ २ ? अर र ? २ ३ २
चन्द्रमाआ॥ प्सूऽ३आन्ताऽ३रा। सूपर्णोधावा। ताऽ२३इ। दिविया।

? लि ? २ र ? २ ? ५ २ ?
नवोऽ२हिरण्यनेमयःपदंविन्द। तिविदूतो॥ अ२३४हाइ॥ वित्तं५होइ। मआऽ२३हो॥

२ अ २ ?
स्यरोदाऽ२३साऽ३४३इ। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ६। प. १२। मा. ८) ३२ (खै।७२९)

(४१७।३)

५ २ ४ ५ ५ ५ ? अर र ? २ ? लि ? २ र ? २
चन्द्रमाऽ३आप्सुवन्तरा॥ सूपर्णोधा। वताइदाऽ१इवीऽ२। नवोऽ२हिरण्यनेमयःपदंविन्द।

? तिविदूताऽ२३ः॥ वित्तं५होइ। मआऽ२३हो॥ स्यरोदाऽ२३साऽ३४३इ। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ५। प. १०। मा. ८) ३३ (मै।७३०)

(४१७।४)

५ ४ अ ४ ? र र अ
चन्द्रमाअप्सुवा॥ तरा। सुपर्णोधावतेदाऽ२३इवी। नवाऽ२३होइ। हिरण्यनेमयःपदंविन्द।

? तिविदूताऽ२३ः॥ वित्तं५होइ। मआऽ२३हो॥ स्यरोऽ२३। दाऽ२साऽ२३४ओहोवा॥

२ ५
ऊऽ३२३४पा॥

(दी. ७। प. ११। मा. ७) ३४ (ल्ले।७३१)

(४१७।५)

५ अ अ र ५ ४ ५ ४ र ५ ५ २ अ र र २ ? २ ? ^
चन्द्रोहोमाअप्सुवन्तरा। ओऽ६वा॥ सुपर्णोधावतेदाइवायेऽ३। होवाऽ३होऽ२इ।

३ २ ^ ? ? ? ? र ? २ ? ^ ३ २ ^ ? ? ?
हुवाऽ२३४५इ। नवोहाइरण्यनाइमायाऽ२३ः। होवाऽ३होऽ२इ। हुवाऽ२३४५इ॥

पदं विन्दन्ति वा इदूताऽ२३ः। होवाऽ३होऽ२इ। हुवाऽ२३४५इ॥ वित्तम्मे अस्य रोदासायेऽ३।

होवाऽ३होऽ२इ। हुवाऽ३ओऽ५वाऽ६५इ॥ ऊऽ३२३४पा॥

(दी. १०। प. १५। मा. १६) ३५ (सू। ७३२)

(४१८।१) ॥ लौशम्। लुशः पंक्तिरश्विनौ॥

प्राऽ२३४। तिप्रियतमम्। राथाम्॥ वार्षणंवा। सुवाहाऽ२३नाम्। स्तोतावाऽ३माऽ३।

श्विनाऽ२वाऽ२३४र्षीऽ३ः। स्तोमाइभीऽ३र्भूऽ३। षातिप्राऽ२३४ती॥ माध्वाइमाऽ३माऽ३॥

श्रूऽ२३ताऽ३म्। हाऽ३४५वोऽ६हाइ॥

(दी. ४। प. १२। मा. ८) ३६ (धै। ७३३)

एकविंशति चतुर्थः, सप्तमः खण्डः॥७॥ दशतिः॥४॥

॥ इति ग्रामे गेय-गाने एकादशस्यार्द्धः प्रपाठकः॥

(४१९।१) ॥ संजये द्वे। द्वयोरिन्द्रः पंक्तिरग्निः॥

आऽ२३४। तेअग्रइधी॥ माहाइ॥ द्युमन्तदेवऽ३। आऽ२३। जरमा। यद्वास्याऽ३ताऽ३इ।

पानीऽ२याऽ२३४सी। समिद्दीऽ२दया। ताऽ२३इ। द्यविया॥ इषास्तोऽ३तृऽ३॥

भ्याऽ२३आऽ३। भाऽ३४५रोऽ६हाइ॥

(दी. ४। प. १४। मा. ७) १ (धै। ७३४)

(४१९।२)

आतेअग्रइधी। माऽ३हाइ। द्युमन्ताऽ३देवअजरम्॥ यद्वास्यातेपनीयसी।

समिद्दीदयताइ। हिम्ऽ३स्थिहिम्। द्याऽ२३४वी॥ इषास्तोतृभ्याऽ३आ॥

हिम्^३स्थिहिम्^३ऽ३४३म्। भा^३ऽ३४५रो[॥]॥^५

(दी. १०। प. १०। मा. १२) २ (मा।७३५)

(४२०।१) ॥ उत्सेधः, उत्सेधम् वा। अंगिरसः पंक्तिरग्निः॥

हाउ। औहो^३ऽ२३४वा। आग्निन्नस्त्वृक्तिभी^३ऽ२३४५ः॥ हाउ। औहो^३ऽ२३४वा।

होतारन्त्वावृणीमहे^३ऽ२३४५। हाउ। औहो^३ऽ२३४वा। शीरंपावकशोचिषम्।

विवोमा^३ऽ२३४दाइ॥ हाउ। औहो^३ऽ२३४वा। यज्ञाइपुस्तीर्णबर्हिषा^३ऽ२३४५म्॥ हाउ।

औहो^३ऽ२३४वा॥ विवक्षसे^३ऽ२३४५॥

(दी. १। प. १६। मा. १०) ३ (तौ।७३६)

(४२०।२) ॥ निषेधः, निषेधम् वा। अंगिरसः पंक्तिरग्निः॥

आग्निन्नस्त्वृक्तिभिर्हइहाहाइ॥ होतारन्त्वावृणीमहइहइहा^३ऽ३। हाइ।

शीरंपावकशोचिषमिहइहा^३ऽ३। हाइ। विवोमा^३ऽ२३४दाइ॥ यज्ञाइपुस्तीर्णबर्हिषमिहइहा^३ऽ३॥

हा^३ऽ३इ॥ वा^३ऽ२इवा^३ऽ२३४औहोवा॥ क्षा^३ऽ२३४से॥

(दी. १२। प. १०। मा. १३) ४ (जि।७३७)

(४२१।१) ॥ सत्यश्रवसः वाय्यस्य साम। सत्यश्रवाः पंक्तिरुषा॥

महा^३ऽ३४इ। महेनोअद्य। बोधा^३ऽदया॥ उपोराये। दिवित्मा^३ऽ२३ती। यथाची^३ऽ३न्ना^३ऽ३ः।

आबोधा^३ऽ२३४याः। सत्याश्रा^३ऽ३वा^३ऽ३। सिवा^३ऽ२या^३ऽ२३४याइ॥ सुजाता^३ऽ३आ^३ऽ३।

श्वा^३ऽ२३सू^३ऽ३॥ ना^३ऽ३४५र्तो[॥]॥^५

(दी. ६। प. १२। मा. ७) ५ (खे।७३८)

(४२२।१) ॥ पौषम्। पूषा पंक्तिःसोम॥

२ १ ५ ५ १ विर १ २ ३ ५ १ अर र १
भद्रन्नोऽ२३अपिवातया॥ मनोऽ२द। क्षाम्। ऊतक्राऽ२३४तूम॥ आधाते। सा।
अर ३ २ १ ५ ३ ३ ३ ५ १ विर १र विर १ १ २
ख्येअन्धसाऽ२ः। विवोमाऽ२३४दाइ। रणाऽ२गावाऽ२नय॥ वसायेऽ३॥
१ ५ ३ ५ ३ ५ ३ ५
वाऽ२इवाऽ२३४औहोवा॥ क्षाऽ२३४से॥

(दी. १०। प. १२। मा. ८) ६ (फै।७३९)

(४२३।१) ॥ औषसम्। उषा पंक्तिरिन्द्रः॥

५ र र ५ अर र र १ २ १ २
ऋबामहा५अनुष्वधाऽ६मे॥ भीमआवावृऽ३ताइशाऽ१वाऽ२ः। श्रियऋष्वाऽ३ः।
१ २ ३ ५ २ र १ २ १ २ १ २ ५
ऊपाकाऽ२३४योः। निशिप्रीहरिऽ३वान्दाऽ१धाऽ२इ॥ हस्तायोऽ३र्वाऽ३॥ ज्रमोऽ२३४वा।
५
याऽ५सोऽ६हाइ॥

(दी. ६। प. ८। मा. ९) ७ (गो।७४०)

(४२४।१) ॥ लौशम्। लुशः पंक्तिरिन्द्रः॥

३ अर ३ ४ ५ ३ २ ३र अर ५ १ २ र १ २ १ २ १ २ १
सघातंवृषणम्। रथाऽ३४औहोवा॥ आधितिष्ठा। तिगोवाऽ१इदाऽ२म्॥ यपात्र५हा।
अ ५ ३ ५ अर १ २ ३ ५ १र २ २
रियाऽ२जाऽ२३४नाम्। पूर्णिम्। द्रा। चीकेताऽ२३४ती॥ योजानूऽ३वाऽ३इ॥
१ ५ ३ ५ ३ ५ ३ ५
द्राऽ२ताऽ२३४औहोवा॥ हाऽ२३४री॥

(दी. ९। प. १२। मा. ७) ८ (थे।७४१)

(४२५।१) ॥ निषेधस्साम। अंगिरसः पंक्तिरग्निः॥

अग्निंताऽ३०मन्येयोवसूः॥ अस्तंययाऽ३। तीधेनाऽ२३४वाः। अस्तमर्वाऽ३।

ताआऽ२शाऽ२३४वाः। अस्तन्नित्याऽ३। सोवाऽ२जाऽ२३४इनाः॥ इपास्तोऽ३तृऽ३४।

हाहोऽ२३४हा॥ भ्याऽ२३आऽ३। भाऽ३४५रोऽ६हाइ॥

(दी. ४। प. ११। मा. ८) ९ (तौ।७४२)

(४२६।१)॥ अ॒होमुचस्साम, गौराङ्गिरसस्य साम वा। अ॒होमुग्बृहती विश्वेदेवाः॥

नतम॒होनदुरितम्। ईयइयाहाइ॥ दाइवाऽ२सोअष्टमर्तियमी। यइयाऽ२३हाइ॥

सजोषसोयमर्यमाई। यइयाऽ२३हाइ॥ माइत्रोनायाऽ३॥ तिवाऽ२रूऽ२३४५णाऽ६५६ः॥

अतिद्विषाऽ२३४५ः॥

(दी. ८। प. ९। मा. १३) १० (दि।७४३)

दश पञ्चमः, अष्टमः खण्डः॥८॥ दशतिः॥४॥

॥ इति पंक्तिः॥

(४२७) ॥ इन्द्रस्य संक्रमे द्वे। द्वयोरिन्द्रः पंक्तिरिन्द्रसोमौ॥

परिप्रधन्वा॥ इन्द्रायसोमास्त्वाऽ१दूऽ२३४ः। हाइ। मित्राया॥ पूष्णेभाअ२३४हाइ॥

गाऽ२३४योऽ६हाइ॥

(दी. ५। प. ६। मा. ४) ११ (पी।७४४)

(४२७।२)

परिप्रधन्वा॥ इन्द्रायसोमा। ओऽ३हा। ओऽ३हा॥ स्वादुर्मित्राया। ओऽ३हा। ओऽ३हा॥

पूष्णाऽ३४ओहोवा॥ भगाऽ३याऽ२३४५॥

(दी. ७। प. ९। मा. १) १२ (झा।७४५)

(४२७।३)॥ सौहविषाणि त्रीणि (स्वर्निधनं सौहविषम्)। त्रयाणां सुहविः पंक्तिरिन्द्रसोमौ॥

परीऽऽहोइ। प्रधाऽऽ३४न्वा॥ इन्द्राऽऽहो। यसोऽऽ३४मा। स्वादूऽऽर्होइ। मित्राऽऽ३४या।

पूष्णेऽऽहोइ। भगाऽऽ३४या॥ पूष्णेभगाय॥ पूष्णेऽऽ३४३। होऽऽ३४३इ।

भाऽऽ३गाऽऽ५याऽऽ६५६॥ एऽऽ३। सुवर्वतेऽऽ३४५॥

(दी. ६। प. १४। मा. ४) १३ (घी।७४६)

(४२७।४)

हाऽऽहाइ। परिप्रऽऽधान्वा। एऽऽ३४हिया। हाऽऽहाइ॥ हाऽऽहाइ। इन्द्रायऽऽसोमा।

एऽऽ३४हिया। हाऽऽहाइ॥ हाऽऽहाइ। स्वादुर्मिऽऽत्राया। एऽऽ३४हिया। हाऽऽहाइ।

पूष्णेभऽऽगाया। एऽऽ३४हिया। हाऽऽहाऽऽ३४३५इ॥ ओऽऽ३४५इ॥ डा॥

(दी. ४। प. १८। मा. ९) १४ (दो।७४७)

(४२७।५) ॥ वाङ्निधेनं सौहविषम्॥

पा। र्येपारी॥ प्रधन्वा। होवाऽऽहोइ। इन्द्रायसोमा। होवाऽऽहोइ। स्वादुर्मिऽऽत्राया।

होवाऽऽहोयेऽऽ३॥ पूष्णोवाओऽऽ३४वा॥ भगाऽऽ५याउ॥ वा॥

(दी. ५। प. ११। मा. ४) १५ (पी।७४८)

(४२८।१) ॥ बाकानि त्रीणि। त्रयाणां बकोऽनुष्टुप् सोमः॥

पर्युषुप्रधन्वावाजऽऽसा॥ तायाइ। ओइ। पारी। ओइ। वृत्राणि। सक्षणिः॥ द्वाइपस्ताराऽऽ॥
धियाऽऽइ। अर्णयाऽऽः। नाऽऽः। ईरासाऽऽइइ। ओयेऽऽ। रसाऽऽइइइ। ओऽऽइइइइइ॥
डा॥

(दी. ५। प. १६। मा. ११) १६ (पा।७४९)

(४२८।२)

पर्युषु॥ प्रधन्वावाऽऽ। जासाताऽऽइइयाइ। परिवृत्राणिसक्षणिः। द्विपास्ताऽऽरा॥
धियाऽऽणयाऽऽनाऽऽइइ॥ हिम्। राऽऽइइइसोऽऽइइ॥

(दी. ४। प. ८। मा. ६) १७ (दू।७५०)

(४२८।३)

पा। र्येपारी॥ ऊषुप्रधन्वावाजसातयेपरिवृत्राणिसक्षणिर्द्वाऽऽइइषाः। ताऽऽइइरा॥
धियाऽऽणयानओवाऽऽओऽऽइइइवा॥ राऽऽइइसोऽऽइइ॥

(दी. ८। प. ६। मा. ६) १८ (दू।७५१)

(४२९।१) ॥ धर्म धाम सामनी वा द्वे। द्वयोः प्रजापतिः पंक्तिस्सोमः॥

पवस्वसोमा॥ माहान्त्समुद्राः। पितादेऽऽवानाऽऽइइम्॥ वाऽऽइइश्वाऽऽइइइओहोवा॥
भिधामाऽऽइइइइ॥

(दी. ८। प. ५। मा. ४) १९ (णी।७५२)

(४२९।२)

^५ॐ^५होऽद्व॥ ^२ॐ^२होऽद्व॥ ^३ॐ^३होऽद्व॥ ^४ॐ^४होऽद्व॥ ^५ॐ^५होऽद्व॥ ^६ॐ^६होऽद्व॥ ^७ॐ^७होऽद्व॥ ^८ॐ^८होऽद्व॥
^१ॐ^१होऽद्व॥ ^२ॐ^२होऽद्व॥ ^३ॐ^३होऽद्व॥ ^४ॐ^४होऽद्व॥ ^५ॐ^५होऽद्व॥ ^६ॐ^६होऽद्व॥ ^७ॐ^७होऽद्व॥ ^८ॐ^८होऽद्व॥
^९ॐ^९होऽद्व॥ ^{१०}ॐ^{१०}होऽद्व॥ ^{११}ॐ^{११}होऽद्व॥ ^{१२}ॐ^{१२}होऽद्व॥

(दी. १६। प. १२। मा. ४) २० (खी।७५३)

(४३०।१) ॥ विधर्म सामनी द्वे। द्वयोः प्रजापतिः पंक्तिस्सोमः॥

^५ॐ^५होऽद्व॥ ^६ॐ^६होऽद्व॥ ^७ॐ^७होऽद्व॥ ^८ॐ^८होऽद्व॥ ^९ॐ^९होऽद्व॥ ^{१०}ॐ^{१०}होऽद्व॥ ^{११}ॐ^{११}होऽद्व॥ ^{१२}ॐ^{१२}होऽद्व॥
^{१३}ॐ^{१३}होऽद्व॥ ^{१४}ॐ^{१४}होऽद्व॥ ^{१५}ॐ^{१५}होऽद्व॥ ^{१६}ॐ^{१६}होऽद्व॥ ^{१७}ॐ^{१७}होऽद्व॥ ^{१८}ॐ^{१८}होऽद्व॥ ^{१९}ॐ^{१९}होऽद्व॥ ^{२०}ॐ^{२०}होऽद्व॥
^{२१}ॐ^{२१}होऽद्व॥ ^{२२}ॐ^{२२}होऽद्व॥ ^{२३}ॐ^{२३}होऽद्व॥ ^{२४}ॐ^{२४}होऽद्व॥ ^{२५}ॐ^{२५}होऽद्व॥ ^{२६}ॐ^{२६}होऽद्व॥ ^{२७}ॐ^{२७}होऽद्व॥ ^{२८}ॐ^{२८}होऽद्व॥
^{२९}ॐ^{२९}होऽद्व॥ ^{३०}ॐ^{३०}होऽद्व॥ ^{३१}ॐ^{३१}होऽद्व॥ ^{३२}ॐ^{३२}होऽद्व॥

(दी. १५। प. १२। मा. ३) २१ (फि।७५४)

(४३०।२) ॥ धनसाम॥

^५ॐ^५होऽद्व॥ ^६ॐ^६होऽद्व॥ ^७ॐ^७होऽद्व॥ ^८ॐ^८होऽद्व॥ ^९ॐ^९होऽद्व॥ ^{१०}ॐ^{१०}होऽद्व॥ ^{११}ॐ^{११}होऽद्व॥ ^{१२}ॐ^{१२}होऽद्व॥
^{१३}ॐ^{१३}होऽद्व॥ ^{१४}ॐ^{१४}होऽद्व॥ ^{१५}ॐ^{१५}होऽद्व॥ ^{१६}ॐ^{१६}होऽद्व॥ ^{१७}ॐ^{१७}होऽद्व॥ ^{१८}ॐ^{१८}होऽद्व॥ ^{१९}ॐ^{१९}होऽद्व॥ ^{२०}ॐ^{२०}होऽद्व॥
^{२१}ॐ^{२१}होऽद्व॥ ^{२२}ॐ^{२२}होऽद्व॥ ^{२३}ॐ^{२३}होऽद्व॥ ^{२४}ॐ^{२४}होऽद्व॥ ^{२५}ॐ^{२५}होऽद्व॥ ^{२६}ॐ^{२६}होऽद्व॥ ^{२७}ॐ^{२७}होऽद्व॥ ^{२८}ॐ^{२८}होऽद्व॥
^{२९}ॐ^{२९}होऽद्व॥ ^{३०}ॐ^{३०}होऽद्व॥ ^{३१}ॐ^{३१}होऽद्व॥ ^{३२}ॐ^{३२}होऽद्व॥

(दी. ६। प. ६। मा. नास्ति) २२ (क।७५५)

(४३१।१) ॥ भागम्। भगः पंक्तिस्सोमः॥

^५ॐ^५होऽद्व॥ ^६ॐ^६होऽद्व॥ ^७ॐ^७होऽद्व॥ ^८ॐ^८होऽद्व॥ ^९ॐ^९होऽद्व॥ ^{१०}ॐ^{१०}होऽद्व॥ ^{११}ॐ^{११}होऽद्व॥ ^{१२}ॐ^{१२}होऽद्व॥
^{१३}ॐ^{१३}होऽद्व॥ ^{१४}ॐ^{१४}होऽद्व॥ ^{१५}ॐ^{१५}होऽद्व॥ ^{१६}ॐ^{१६}होऽद्व॥ ^{१७}ॐ^{१७}होऽद्व॥ ^{१८}ॐ^{१८}होऽद्व॥ ^{१९}ॐ^{१९}होऽद्व॥ ^{२०}ॐ^{२०}होऽद्व॥
^{२१}ॐ^{२१}होऽद्व॥ ^{२२}ॐ^{२२}होऽद्व॥ ^{२३}ॐ^{२३}होऽद्व॥ ^{२४}ॐ^{२४}होऽद्व॥ ^{२५}ॐ^{२५}होऽद्व॥ ^{२६}ॐ^{२६}होऽद्व॥ ^{२७}ॐ^{२७}होऽद्व॥ ^{२८}ॐ^{२८}होऽद्व॥
^{२९}ॐ^{२९}होऽद्व॥ ^{३०}ॐ^{३०}होऽद्व॥ ^{३१}ॐ^{३१}होऽद्व॥ ^{३२}ॐ^{३२}होऽद्व॥

(दी. ४। प. ६। मा. ३) २३ (ति।७५६)

(४३२।१) ॥ वाजिनासाम। वाजिनोऽनुष्टुप्सोमः॥

अनु॑। अनु॑॥ हाइ॒त्वा॒सुत॑सोममदामसि॑। म॒दाम॑सायेऽ३। म॒हाऽ३४३इ॑। साऽ३४मा॑॥

र्य॑राज्ये। वाजा॑अभिपवमान। पव॑माना॥ प्रागा॑हसा। औऽ३होवा॑। होऽ५इ॑॥ डा॑॥

(दी. ११। प. १३। मा. ४) २४ (गी।७५७)

(४३३।१) ॥ हिक॑म्। प्रजापतिः पंक्तिर्मरुतः॥

कई॑व्यऽ५क्ताः॥ नर॑स्सऽ३नाइडाऽ२ः॥ रु॒द्रस्य॑मर्याऽ२३ः॥ आऽ२थाऽ२३४औ॑होवा॑॥

सुव॑ऽ३श्वाऽ२३४५ः॥

(दी. ३। प. ५। मा. ७) २५ (णे।७५८)

(४३३।२) ॥ विक॑म्। प्रजापतिः पंक्तिर्मरुतः॥

कई॑ऽ३४३०विय॑क्ताः॥ नरा॑ऽ३४३स्सनीडाः॥ रु॒द्रस्या॑मर्याऽ२३ः॥ आऽ२थाऽ२३४औ॑होवा॑॥

सुव॑ऽ३श्वाऽ२३४५ः॥

(दी. ५। प. ५। मा. ६) २६ (मू।७५९)

(४३३।३) ॥ निक॑म्। प्रजापतिः पंक्तिर्मरुतः॥

काई॑म्। वि॒याऽ२३। ओवा॑ऽ३। आ॒क्ताः॥ ना॒राः। स॒नाऽ२३। ओवा॑ऽ३। आइ॑डाः। रू॒द्रा।

स्य॑माऽ२३। ओवा॑ऽ३। आ॒र्याः॥ आ॒था। सु॒वाऽ२३। ओवा॑ऽ३। आ॒श्वाः। हो॑ऽ५इ॑॥ डा॑॥

(दी. नास्ति। प. १८। मा. ९) २७ (रो।७६०)

(४३४।१) ॥ आ॒श्वे द्वे। द्वयोर॑श्वः पंक्तिरग्निः॥

अ॒ग्ने॒तमा॑द्या॥ अ॒श्वन्न॑स्तोमाइः। ऋ॒तुन्न॑ऽ३भाद्राऽ२म्॥ हा॒र्दि॒स्पृशा॑म्॥

ऋ॒ध्याऽ२मा॑ऽ२३४औ॑होवा॑॥ तओ॑हाऽ२३४५इ॑ः॥

(दी. ५। प. ६। मा. ८) २८ (पै।७६१)

(४३४।२)

अग्ने। होऽ३४३इ। तमद्य॥ अश्वन्नस्तोमाइः। ऋतुन्नऽ३भाद्राऽ२म्॥ हार्दाऽ३ओइ॥ स्पृशम्।
ऋध्याऽ२माऽ२३४ओहोवा॥ तओहाऽ२३४५इः॥

(दी. ५। प. ९। मा. ११) २९ (भा।७६२)

(४३५।१) ॥ वाजिनाःसाम। वाजिनोष्णिक् सविता॥

आविर्माऽ२३४र्याः॥ आवाजंवाजिनोअग्मान्। देवस्यस॥ वितुस्साऽ२३४वाम्॥
स्वर्गाःअर्वाऽ२३४५न्ताऽ६५इः॥ जयताऽ२३४५॥

(दी. ६। प. ६। मा. ६) ३० (कू।७६३)

(४३६।१) ॥ पवित्रम्॥ आदित्याः पंक्तिस्सोमः॥

पवस्वसोमा॥ द्युम्नीऽ३४३सुधारः। माहाःअवीनाम्॥ अनुपू॥ वियोऽ३४५ इ॥ डा॥

(दी. ५। प. ६। मा. ४) ३१ (पी।७६४)

॥ एकविंशतिः षष्ठः, नवमः खण्डः॥९॥ दशतिः॥५॥

(४३७।१) ॥ आभरे द्वे। द्वयोरिन्द्रः पंक्तिरिन्द्रः॥

विश्वतोहाउ॥ दावान्निश्वतोनाः। ओऽ३। हा। ओऽ२३४हाइ। आ। भरा। भाऽ२३रा॥
यान्त्वाशविष्ठमाइ॥ माहा। ओहोऽ२३४वा॥ ऐहीयेहीऽ१॥

(दी. ९। प. १२। मा. ४) ३२ (थी।७६५)

(४३७।२)

विश्वतोदावनिविश्वतोना॥ भरा॥ भाऽऽ३रा॥ यान्बाशविष्ठमाइम्॥ हाऽ। औऽऽहोवा।
होऽऽइ॥ डा॥

(दी. ५। प. ८। मा. ३) ३३ (बि।७६६)

(४३८।१) ॥ वासुमन्दे द्वे। द्वयोर्वसुमन्दो गायत्रीन्द्रः॥

एषाः॥ ब्राह्मायआऽऽ३१उवाऽऽ३। एऽऽ३। त्वियआ॥ आऽऽ३इन्द्राः॥ नमश्रुताऽऽ३१उवाऽऽ३॥
एऽऽ३। गृणआ॥

(दी. १। प. ८। मा. ८) ३४ (गै।७६७)

(४३८।२)

एषाएषाः॥ ब्राह्माऽऽब्राह्माऽऽ। यऋत्वियोवा। ओवा॥ आइन्द्राऽऽआइन्द्राऽऽः॥ नामश्रुतोवा।
ओवा। गृणा। औऽऽहोवा। होऽऽइ॥ डा॥

(दी. १। प. ११। मा. ८) ३५ (कै।७६८)

(४३८।३) ॥ कावषाणि त्रीणि। त्रयाणां कवषो गायत्रीन्द्रः॥

एषाः। ओ। ओवा॥ ब्रह्मायाः। ऋत्वियाऽऽः। आइन्द्रोऽऽहाऽऽइ॥ नाऽऽ३मा॥ श्रुऽऽ३तो।
गृणा। औऽऽहोवा। होऽऽइ॥ डा॥

(दी. १। प. १२। मा. ६) ३६ (खू।७६९)

(४३८।४)

^न ओऽ३हाऽ३४३। ^२ ओऽ३४हा। ^५ एषाब्राह्माऽ३४३। ^२ याऽ३४ः। ^४ ऋत्विः॥ ^५ ओऽ३हाऽ३४३।
^२ ओऽ३४हा। ^५ इन्द्रोनामाऽ३४३। ^२ श्रूऽ३४। ^५ तौगृणाइ। ^२ ओऽ३हाऽ३४३। ^२ ओऽ३४५हाऽ३४५॥
^२ एऽ३। ^१ सुवर्वतेऽ३४५॥

(दी. २। प. १४। मा. ३) ३७ (झि।७७०)

(४३८।५)

^२ एषब्रह्मौहो। ^२ याऽ३ऋत्विः॥ ^२ इन्द्रोनामौहो॥ ^२ श्रूतोऽ३गृणाऽ३४३५॥ ^५ ऊऽ३४पा॥

(दी. ८। प. ५। मा. ३) ३८ (ण्यि।७७१)

॥ इति ग्रामे गेय-गाने एकादशः प्रपाठकः॥११॥

(४३९।१) ॥ श्लोके द्वे। द्वयोः प्रजापतिस्त्रिष्टुबिन्द्रः॥

हाउस्वरता॥ ब्रह्माणाऽ२ः। इन्द्रम्। आऽ। महयाऽ२०तोऽ२३४। कैः॥ अवाऽ२र्द्धयान्॥
अहयेहा। तवाऽ३४५इ। ऊऽ६५६॥ श्लोकयताऽ२३४५॥

(दी. ३। प. ११। मा. ६) १ (टू।७७२)

(४३९।२)

हाउ। अभि। स्वरता॥ ब्रह्माणआइन्द्राऽ२म्। महयाऽ२०तोऽ२३४। कैः। अवर्द्धयाऽ२न्॥
अहयेहन्तवाऽ२३४५ऊऽ६५६॥ श्लोऽ२३४काः॥

(दी. ३। प. १। मा. ८) २ (टै।७७३)

(४४०।१) ॥ अनुश्लोके द्वे। द्वयोः प्रजापतिस्त्रिष्टुबिन्द्रः ब्रष्टा वा॥

हाउस्वरता। स्वरतस्वराऽ२३ता। आनवस्तेरथम। श्वायाताऽ१क्षूऽ२३४ः॥ हाउस्वरता।
स्वरतस्वराऽ२३ता। ब्रष्टावज्रपुरुहू। ताद्युमान्ताऽ२३४म्॥ हाउस्वरता॥ स्वरतस्व। राऽ२।
ताऽ२३४। औहोवा॥ स्वराऽ३ताऽ२३४५॥

(दी. १। प. १४। मा. ५) ३ (धु।७७४)

(४४१।१)

औहोइ। शम्पदाम्॥ मघश्रयाऽ३१२३४इ। षिणाइ। नकाममव्रतोहिनोतिनस्पृशत्॥
रयिमोऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ४। प. ७। मा. ६) ४ (धू।७७५)

(४४२।१) ॥ वाचः सामनी द्वे। द्वयोर्वाग्पङ्क्तिर्वाक्॥

सादा॥ गावश्चुचयोविश्वधायाऽ२३साः॥ साऽ२३४दा॥ दाइवाअरोऽ२३४वा॥ पाऽ२३४साः॥

(दी. ४। प. ५। मा. ४) ५ (नी।७७६)

(४४३।१)

औहोऽ३इ। आयाही॥ वनाऽ२सासहा। गावःसच। तावर्त्तानीऽ२म्॥ यात्। ऊऽ२३॥
धभिरोऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. २। प. ९। मा. ४) ६ (झी।७७७)

(४४४।१) ॥ माधुछन्दसम्। मधुछन्दा त्रिष्टुभ्मरुतः॥

ओवा। उपप्रक्षेमधुमतिक्षियन्तः। ओवा॥ ओइ। पुष्येमरयिन्धीमहेतआऽ२३इन्द्रा॥ ओ।
वाओवा॥ ओ। वाहाऽ३१उवाऽ२३॥ ऊऽ३४पा॥

(दी. ५। प. १०। मा. ६) ७ (म्यू।७७८)

(४४५।१) ॥ मारुतम्। मरुतस्त्रिष्टुभ्मरुतः॥

अर्चन्तिया॥ कम्मरुतःसुवाऽ२३र्काः॥ आस्तोभताइ॥ श्रुतोयुवासआइन्द्राऽ३उवाऽ३॥
ऊऽ३४पा॥

(दी. ३। प. ५। मा. ५) ८ (ण्यु।७७९)

(४४६।१) ॥ उद्वाश्शं साम। उद्वाश्शपुत्रः प्रजापतिस्त्रिष्टुबिन्द्रो वृत्रहा॥

प्रवाः॥ आइन्द्रायवृत्रहान्तमाऽ२३या॥ वाइप्रायगाथंगाऽ१याऽ३ता॥ यांजुजौवाऽ३। उप्।
षाऽ२ताऽ३५हाइ॥

(दी. ३। प. ६। मा. ५) ९ (ट्ट।७८०)

षोडश सप्तमः, दशमः खण्डः॥१०॥ दशतिः॥७॥

॥ इति प्रथमोऽर्धः प्रपाठकः॥

(४४७।१) ॥ शाम्ये द्वे। द्वयोर्धुरो गायत्र्यग्निः॥

अचेती॥ अग्निः। चिकाऽ२३इतीऽ३॥ हाऽ२३व्याऽ३। वाऽ२ङ्नाऽ२३४औहोवा॥

सुमद्रथाऽ२३४५॥

(दी. ३। प. ६। मा. ५) १० (ट्ट।७८१)

(४४७।२)

अचेतिया॥ ग्राहश्चाइकाइतीऽ२३ः। हौहोइ। औऽ३होऽ२३४५॥ हव्याऽ२३॥

वाऽ२ङ्नाऽ२३४औहोवा॥ एऽ३। सुमद्रथाऽ२३४५॥

(दी. ४। प. ८। मा. ७) ११ (दी।७८२)

(४४८।१) ॥ गूर्दः (गूर्दम्)। प्रजापतिः पंक्तिरग्निः॥

ओग्नाइ॥ बन्नोऽ२३आ। हिम्माऽ२३। ताऽ२३४माः। उतत्राताशिवोभुवः॥ शिवोभुवाऽ२३॥

वरोवा। थाऽ५योऽ६हाइ॥

(दी. ४। प. ८। मा. ६) १२ (ट्ट।७८३)

(४४८।२) ॥ अत्यर्दः। विश्वामित्रः पंक्तिरग्निः॥

अग्रौ। होइ। बौ। होइ॥ नोअन्तमाऽ३१उवाऽ२३॥ ऊऽ२३४ता॥ त्राताओऽ२३४वा॥

शिवोभुवाऽ२३४५॥

(दी. ५। प. ८। मा. ६) १३ (बू।७८४)

(४४८।३) ॥ गूर्द्धः। प्रजापतिः पंक्तिरग्निः॥

अग्नेतूऽ३वन्नोअन्तमाः॥ उतत्राताशिवोभुवः॥ वराऽ२३॥ औहोहोऽ२३४वा।
थाऽ५योऽ६हाइ॥

(दी. ६। प. ५। मा. ४) १४ (डी।७८५)

(४४८।४) ॥ अत्यर्द्धः। विश्वामित्रः पंक्तिरग्निः॥

अग्ने। होऽ३इ। बन्नोअ। तमाः॥ उताऽ२। हाऽ२इ। औऽ३होऽ३१इ॥ त्राताऽ२॥
शिवोऽ३४५॥ भूऽ२३४वाः॥

(दी. २। प. १०। मा. ६) १५ (जू।७८६)

(४४९।१) ॥ सान्तनिके द्वे। द्वयोः प्रजापतिर्गायत्र्यग्निः॥

भागाः॥ नचित्रः॥ अग्निर्महोऽ२३नाऽ३म्॥ दाऽ२धाऽ२३४औहोवा॥ तिरत्नाऽ२३४५म्॥

(दी. २। प. ५। मा. ५) १६ (जू।७८७)

(४४९।२)

भगोनचित्राः॥ अग्निर्महोऽ२३नाऽ३म्॥ दाऽ२धाऽ२३४औहोवा॥ एऽ३। तिरत्नाऽ२३४५म्॥

(दी. ३। प. ५। मा. ४) १७ (णी।७८८)

(४५०।१) ॥ धनम् (द्वे। द्वयोः) प्रजापतिर्गायत्री विश्वेदेवाः॥

विश्वस्या॥ प्रस्तोभाऽ२। पुरोवासाऽ३न्। यदिवेऽ२३४हा॥ नूऽ२३॥ नाऽ२माऽ२३४औहोवा॥
धाऽ२३४नाम्॥

(दी. ४। प. ७। मा. ३) १८ (थि।७८९)

(४५०।२)

॥ धर्मसाम॥

औहोइविश्वस्या॥ प्रस्तोभाऽ२। पुरौहोवाऽ३हाइ। वासाऽ२न्। यदिवेहा॥ नूऽ२३॥
नाऽ२माऽ२३४औहोवा॥ धाऽ२३४र्मा॥

(दी. ७। प. ८। मा. ४) १९ (जी।७९०)

(४५१।१)

॥ उषसस्साम। उषा पंक्तिरुषा॥

उषाअपा॥ स्वासुष्टाऽ२३४माः। संवाऽ२र्त्तया। तिवाऽ२र्त्ताऽ२३४नीम्॥
सूऽ२जाऽ२३४औहोवा॥ एऽ३। तताऽ२३४५॥

(दी. ३। प. ७। मा. ४) २० (ठी।७९१)

(४५२।१)

॥ भारद्वाजम्। भरद्वाजः पंक्तिर्विश्वेदेवाः॥

इमानुकंभूऽ५वना॥ सीषधाऽ२इमाउवाऽ३। ईऽ३४हा। इन्द्रश्चवाऽ२इश्चाउवाऽ३।
ईऽ३४हा॥ चदेऽ३। वाऽ२याऽ२३४औहोवा॥ वीऽ२३४शाः॥

(दी. ४। प. ८। मा. ६) २१ (दू।७९२)

(४५३।१)

॥ रातिसाम। इन्द्रो गायत्रीन्द्रः॥

विसूविसू॥ तायाऽ२स्तायाऽ२ः। यथापथः॥ आइन्द्राऽ२त्वाद्याऽ२३॥ तुरोऽ२३४वा।
ताऽ५योऽ५हाइ॥

(दी. १। प. ६। मा. ४) २२ (की।७९३)

(४५४।१)

॥ भारद्वाजम्। भरद्वाजस्त्रिष्टुविन्द्रः॥

अयावाजाम्॥ दाइवहि। त॒सनेमा। मदेमशऽ३ताहिमाऽ२ः॥ शताऽ२३॥

हाऽ२इमाऽ२३४औहोवा॥ सुवीऽ३राऽ२३४५ः॥

(दी. ५। प. ७। मा. ६) २३ (फू।७९४)

(४५५।१) ॥ ऐषम्। इषस्त्रिष्टुभिन्नावरुणौ॥

ऊर्जा॥ मित्रोवरुणःपिन्वताऽ२३इडाः॥ पीवरीमिषंकृणुहीनआइन्द्राऽ३उवाऽ३॥ ऊऽ३४पा॥

(दी. ४। प. ४। मा. ५) २४ (ध्यू।७९५)

(४५६।१) ॥ वैराजे द्वे। द्वयोरिन्द्रो गायत्रीन्द्रः॥

इन्द्रोऽ३४॥ विश्वस्यरा॥ जतिहोऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. १। प. ४। मा. १) २५ (घा।७९६)

(४५६।२)

इन्द्राऽ२होऽ१इ॥ वाऽ२इश्वा॥ स्यराऽ२जति॥ होवाऽ२३होऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. नास्ति। प. ५। मा. ३) २६ (वि।७९७)

॥ सप्तदशाष्टमः, एकादशः खण्डः॥११॥ दशतिः॥८॥

॥ इति द्वैपदमेन्द्रं समाप्तम्॥

(४५७।१) ॥ वाजजित्। प्रजापतिरष्टिर्विष्णुः॥

ओइत्रिक। द्रुकाइ। पूऽ३महिषो। यवाशिरम्। तुवीशुष्मः॥ ओइतृऽ२३४०पात्। सोमाम्।

अपिबाऽ३द्वि। षुनासुतम्। यथावशम्॥ ओइसाऽ२३४ईम्। ममा। दाऽ३महिका। मकर्तवे।

महामुरुम्॥ ओइसाऽ२३४इनाम्। सश्वात्। देवोदेवाम्। सत्यइन्दुःसत्याऽ५मिन्द्राउ॥ वा॥

(दी. १। प. २०। मा. २०) २७ (नौ।७९८)

(४५८।१) ॥ गौराहिरसस्य सामनी द्वे। द्वयोगैरतिजगतीन्द्रः॥

अयसहोहाइ॥ समानाऽ२३४वाः। दृशाःकवीनामतिर्ज्यो। तिर्विधाऽ२३४र्मा॥

ब्रध्नाःसमाइचीरुषसः। समाइराऽ१याऽ२त्। अराऽ३। होवाऽ३। पाऽ। सस्सचे। तसाऽ३ः॥

स्वासरे॥ मन्युमाऽ२३०ताः॥ चितो। याऽ२३४औहोवा॥ गोऽ२३४५ः॥

(दी. ८। प. १६। मा. १०) २८ (ठौ।७९९)

(४५८।२)

अयसहस्रमानाऽ६वाः॥ दृशाःकवीनामतिर्ज्यो। तिर्विधाऽ२३र्मा॥ ब्रध्नाःसमाइचीरुषसः।

समाइराऽ१याऽ२त्। ओऽ३वा। अरेपसःसचेतसः। स्वासरे॥ मन्युमाऽ२३ताः। ओऽ३वा॥

चिताऽ३ः। गोऽ२राऽ२३४औहोवा॥ बाऽ२३४५॥

(दी. १०। प. १३। मा. ९) २९ (बो।८००)

(८५९।१) ॥ प्रयस्वत्। प्रजापति (रष्टि) रत्यष्टिरिन्द्रः॥

एन्द्रयाह्युपनाः॥ पाराऽ२वाऽ२३४ताः। नायमच्छा। विदथानाइ। वासत्याऽ२३४तीः।

अस्ताराऽ३जेऽ३। वासत्याऽ२३४तीः। हवामहेत्वाप्रयस्वन्ताः। सुताइपूऽ३वा॥ पुत्रासोना।

पितरंवा। जासाताऽ२३४याइ॥ मःहाइष्ठाऽ३०वाऽ३॥ जाऽ२३साऽ३। ताऽ३४५योऽ६हाइ॥

(दी. ९। प. १५। मा. १०) ३० (नौ।८०१)

(४६०।१) ॥ अक्षय्यम्। रेवत्प्रजापतिरतिजगतीन्द्रः॥

^{४ ५ र र ४ फ ४ ३ ५ २ ११ र ४ ३ ५}
 तमिन्द्रजोहवीमघवानाम् ॥ ऊऽ२३४ग्राम् । सत्राहोइ । दधानमप्रताऽ२इष्कूऽ२३४ताम् ।
^{१ १ ३ ५ १ र र अ ३ ५ अ १}
 श्रवाऽ२३४साऽ२इ । भूऽ२३४री । म*हिष्ठांगीर्भिरा । चयाऽ२ज्ञाऽ२३४याः । वावार्त्ताऽ२॥
^{११ अ र ३ ५ ३ २ १ ३ फ र ३ ५}
 रायेहोइ ॥ नोविश्वासुपाऽ२३४था । कृणोऽ३ । तूऽ२वाऽ२३४ओहोवा ॥ ऊऽ२३४पा ॥

(दी. १४। प. १४। मा. ९) ३१ (धो।८०२)

(४६१।१) ॥ याज्ञतुरम् । यज्ञतुरोऽत्यष्टिरिन्द्रः ॥

^{५ र २ ११ २ ११ अ १ २ ५ ११ अ १}
 अस्तुश्रौषाट् ॥ पुरोअग्निधियादधे । हाऽ । औऽ३होऽ२३४वा । आनुत्यच्छर्द्धीदि । व्याम् ।
^{अ २ ३ ५ १ २ २ १ ३ ५}
 वृणाऽ२३हाइ । माऽ२३४हे । इन्द्रावाऽ३यूऽ३ । वृणीऽ२माऽ२३४हाइ ।
^{१ र र २ २ २ र ११ र २ ४ ५ १ र}
 यद्धक्राणाविवाऽ१स्त्राऽ३ताइ । नाभासन्दायनाऽ३ । व्यासाइ । अधप्रनूनमुपया ।
^{२ र १ १ २ ५ १ २ १}
 तिधीतायाऽ२३ः । हाऽ । औऽ३होऽ२३४वा ॥ दाइवाऽ१*अच्छाऽ२३ । हाऽ ।
^{२ ५ २ ५ ४ ५}
 औऽ३होऽ२३४वा ॥ नधोऽ२३४वा । ताऽ५योऽ६हाइ ॥

(दी. १३। प. २२। मा. ११) ३२ (ठा।८०३)

(४६२।१) ॥ एवयामरुतः साम । एवयामरुदतिजगतीन्द्रः ॥

^{१ र ५ ४ ५ ४ फ ४ ५ ४ २ १ २ ३ र १ ४}
 प्राऽ२३४ । वीमहेमतयोयन्तुविष्णवो । हाइ ॥ मरुत्ताऽ३इगिरिजाऽ३४ः । हाहोइ । एवायाऽ२ ।
^{३ ५ १ अ १ अ १ ३ ५ १ अ १ २ र}
 माऽ२३४रूत् । प्राशर्द्धीयाऽ२ । प्रायज्यावाऽ२३इ । सूखादाऽ२३४याइ । तवसेभंददिष्टये ॥
^{१ ३ २ १ ३ फ र ३ ५}
 धुनाइव्राऽ३ताऽ३ ॥ याऽ२शाऽ२३४ओहोवा ॥ वाऽ२३४से ॥

(दी. ९। प. १४। मा. ९) ३३ (धो।८०४)

(४६३।१) ॥ विषमानि त्रीणि, (विषमाणानि वा) । भरद्वाजोत्यष्टिसोमः ॥

आया॥ रुचा। हरि। ण्यापुनानाः। विश्वाद्द्वेषाश्सितरतीऽ२३साऽ३युग्वभिः॥ सूरौऽ२३नाऽ३॥
साऽ२यूऽ२३४औहोवा॥ ग्वाऽ२३४भीः॥

(दी. ६। प. ८। मा. ४) ३४ (गी।८०५)

(४६३।२)

अयारुचाहरिण्या॥ पुनानः। विश्वाद्वाऽ२३इषा। साइतर। त्यौहो। वाऽ३हाऽ३इ।
सायूऽ२ग्वाऽ२३४भीः॥ सूरौऽ२३ना॥ सयूऽ३ग्वाऽ३भाऽ६५६इः॥

(दी. ७। प. ९। मा. ७) ३५ (झे।८०६)

(४६३।३)

अयारुचाहरिण्या। पूऽ२३४। नानोविश्वाद्द्वेषा। साइतरति। सायुग्वामीऽ२ः। सूरौनाऽ३।
सायूऽ२ग्वाऽ२३४भीः। धारापृष्ठा। स्यारोऽ२चताइ। पुनानोआऽ३। रूपोहाऽ२३४रीः।
विश्वायद्रू। पापरिया। साःक्काभीऽ२ः। सप्तासीऽ३येऽ३॥ भाऽ२३इराऽ३।
क्वाऽ३४५भोऽ६हाइ॥

(दी. १०। प. १०। मा. १०) ३६ (फौ।८०७)

(४६४।१) ॥ सुवितस्सामा सवितात्यष्टिः सविता॥

अभित्यन्देवश्सवितारम्। औहोहोवाहाइ॥ ओणाऽ२३४योः। कविक्राऽ२३४तूम्।
आर्चामीऽ२३४सा। त्यासावाऽ२३४रा। त्रधामाऽ२३४भी। प्रियम्माऽ२३४तीम्।
औहोहोवाऽ२३४हाउ॥ ऊर्ध्वायाऽ२३४स्या। आमातीऽ२३४र्भाः। अदिबूऽ२३४तात्।

सवीमाऽ२३४नी। ओहोओहोवाऽ२३४हाउ॥ हरिण्याऽ२३४पा। णीरामीऽ२३४मी।

तसुक्राऽ२३४तूः। ओहोओहोवाऽ२३४५हाउ। वा॥ एऽ३। कृपासुवाऽ२३४५ः॥

(दी. १७। प. २१। मा. १५) ३७ (चु।८०८)

(८६५।१) ॥ भारद्वाजे द्वे। भरद्वाजोऽत्यष्टिरग्निः॥

अग्निहोता॥ रम्मन्येऽ३दास्वन्तम्। ओऽ३वाऽ३। वासोःसूऽ२३४नूम्।

सहसोजाऽ३तावेऽ१दासाऽ२म्। विप्रन्नजा। ओऽ३वाऽ३। तवेऽ२दाऽ२३४साम्।

यऊर्ध्वाऽ१याऽ२। सुवाध्वाऽ१राऽ२ः। देवादेवा। ओऽ३वाऽ३। चियाऽ२काऽ२३४र्पा।

घृतोवा। स्यविभ्राऽ२ष्टिम्। अनुशुक्रशा। ओऽ३वाऽ३। चिषः॥ आजुह्वाऽ२३ना॥ स्यसा।

ओऽ३वाऽ३। पाऽ२इषाऽ२३४ओहोवा॥ ऊऽ२३४पा॥

(दी. १३। प. २३। मा. १०) ३८ (द्वौ।८०९)

(४६५।२)

अग्निहोतारम्मन्ये। दाऽ२३४। स्वन्तवसोःसूनुम्॥ सहसोजाऽ३तावेऽ१दासाऽ२म्।

विप्रजन्नजाऽ३तावेऽ१दासाऽ२म्। यऊर्ध्वाऽ३सूवध्वाराऽ२ः। देवोदेवाऽ३चायाऽ१कृपाऽ२।

घृतास्यविभ्राष्टिमनुशु। क्राशोऽ१चिपाऽ२ः। आजुह्वाऽ२३नाऽ३॥ स्याऽ२३साऽ३।

पाऽ३४५इषोऽ३हाइ॥

(दी. १६। प. १२। मा. ८) ३९ (खे।८१०)

(४६५।३) ॥ अवभृथसाम। बृहस्पतिरत्यष्टिरग्निः॥

अहावोहाऽ२३४वाः। अहावोहाऽ२३४वाः। अहावोहाऽ२३४वाः। अग्निष्टपती। प्रतिदहती।
 अग्निहो। तारम्माऽ३न्येऽ३दास्वन्तम्॥ वसोः। सूनुसहसोजाऽ३ताऽ३वेदसम्। विप्राम्।
 नजाऽ३ताऽ३वेदसम्। यऊ। धयाऽ३सूऽ३वध्वरः। देवो। देवाऽ३चीऽ३याकृपा॥ घृता।
 स्यविभ्राष्टिमनुशूऽ३क्राऽ३शोचिषः॥ आजू। हानाऽ३स्याऽ३सर्पिषः। अहावोहाऽ२३४वाः।
 अहावोहाऽ२३४वाः। अहावोहाऽ२३४वाः। अग्निष्टपती। प्रतिदहाऽ५ताऽ६५६६॥ एऽ३।
 विश्वसमत्रिणंदहा। एऽ३। विश्वसमत्रिणंदहा। एऽ३। विश्वसमत्रिणंदहाऽ२३४५॥

(दी. १४। प. ३०। मा. १६) ४० (नू।८११)

(४६५।४) ॥ प्रवर्ग्यसाम। बृहस्पतिरत्यष्टिरग्निः॥

त्यग्नाइः। प्रतिदहती। हाउहोऽ५हाउ। अग्निहो। तारम्माऽ३न्येऽ३दास्वन्तम्॥ वसोः।
 सूनुसहसोजाऽ३ताऽ३वेदसम्। विप्राम्। नजाऽ३ताऽ३वेदसम्। यऊ।
 धयाऽ३सूऽ३वध्वरः। देवा। देवाऽ३चीऽ३याकृपा॥ घृता।
 स्यविभ्राष्टिमनुशूऽ३क्राऽ३शोचिषः॥ आजू। हानाऽ३स्याऽ३सर्पिषः। त्यग्नाइः। प्रतिदहती।
 हाउहोऽ५हाउ। वा॥ एऽ३। विश्वसमत्रिणंदहा। एऽ३। विश्वव्यत्रिणंदहा। एऽ३।
 विश्वव्यत्रिणंदहाऽ२३४५॥

(दी. १४। प. २७। मा. १७) ४१ (थो।८१२)

(४६६।१) ॥ ऐषम्। इषोऽष्टिरिन्द्रः॥

ताऽ२३४वत्यन्नाऽ५रियन्ताऽ६॥ अपइन्द्राऽ७२। प्रथमंपूऽ८२। विंयदिवि। प्रवा। चियंकृतम्।
योदेवास्याऽ९२। शवसाप्राऽ१०२। रिणाअसु। रिणन्नपः। भुवोविश्वाऽ११२म्। अभ्यदाऽ१२३॥
वमोजसा। विदेदूर्जम्॥ शताक्राऽ१३४तूः॥ विदाऽ१५इदिपाऽ६॥ वा॥

(दी. १। प. १७। मा. ११) ४२ (था८१३)

षोडश नवमः, द्वादशः खण्डः॥१२॥ दशतिः॥८॥

॥ इति ग्रामे गेय-गाने द्वादशस्यार्द्धः प्रपाठकः॥

॥ इत्येद्राख्यतृतीये गाने इन्द्रपुच्छाख्यं सप्तमं तन्त्रं समाप्तम्॥

॥ इति ऐन्द्रं काण्डम्॥

॥ इति चतुर्थोऽध्यायः॥४॥

अथ पावमानं काण्डम्।

(४६७।१) ॥ आजिगम्। अजिगो प्रजापतिर्वा गायत्री सोमः॥

उच्चा। तेजाऽ३तामन्धासाऽ२ः। दिविसद्भूम्याददाइ॥ उग्रंशाऽ२३र्माऽ३॥
माऽ२हाऽ२३४औहोवा॥ उप्। आऽ२३४वाः॥

(दी. ६। प. ७। मा. ५) १ (खु।८१४)

(४६७।२) ॥ आभीकम्। अभिरसो गायत्री सोमः॥

उच्चातेऽ२३४जा। तमन्धाऽ२३४साः। दिवाइसाऽ२३४द्भू॥ मियाददाइ॥ उग्रंशाऽ२३र्माऽ३॥
महायेऽ३। आऽ२वाऽ२३४औहोवा॥ वाऽ२३४५इ॥

(दी. ४। प. ८। मा. ५) २ (दु।८१५)

(४६७।३) ॥ ऋषभः पावमानम्। ऋषभो गायत्री सोमः॥

५ र र २ २ १ ३ ५ २ १ र २ २ २
हाहाउघातेजा॥ हाऽ३। हाऽ३इ। तामाऽ२०धाऽ२३४साः। दिविसद्भूमियाऽ१दाऽ३दे॥
उग्रश्शाऽ२३४र्मा॥ ओमोऽ३। महोवा। आऽ५वोऽ६हाइ॥

(दी. ५। प. ९। मा. ४) ३ (भी।८१६)

(४६७।४) ॥ आभीकम्। अंगिरसो गायत्री सोमः॥

१ र र २ २ १ ३ ५ २ १ र २ २ २
ऊऽ२३४घातेजाऽ५। तमोहो०धासाः॥ दिविसद्भूमियाऽ१दाऽ३दे॥ उग्रश्शाऽ२३४र्मा॥
१ न २ २ ५
माहाऽ३उवाऽ३४३। आऽ३४५वोऽ६हाइ॥

(दी. ४। प. ६। मा. ३) ४ (ति।८१७)

(४६७।५) ॥ वाभ्रवे द्वे। द्वयोः बभ्रुर्गायत्री सोमः॥

५ र र २ १ १ न २ १ २ र १ २ १ न
उघातेजा॥ तम। धासाऽ२३। ओमोऽ३वा। दिविसद्भूमियादाऽ१देऽ२३। ओमोऽ३वा॥
१ २ १ न २ १ ३ ५ र २ १ १ १
उग्रश्शाऽ१र्माऽ२३॥ ओमोऽ३वाऽ३। माऽ२हाऽ२३४ओहोवा॥ अवाऽ३ईऽ२३४५॥

(दी. ८। प. ११। मा. ३) ५ (टि।८१८)

(४६७।६)

५ र र २ १ २ १ २ र २ १ १ २ २ १ २ २ १ २ २
उघातेजा॥ तमन्धाऽ२३साः। दिविसद्भूमियादाऽ२३दाइ॥ ऊग्राऽ३हाइ। शार्माऽ३हाइ॥
३ २ १ २ १ ३ ५ र ३ ५
महाऽ३होयेऽ३। आऽ२वाऽ२३४ओहोवा॥ ग्वाऽ२३४भीः॥

(दी. ६। प. ९। मा. ६) ६ (घू।८१९)

(४६७।७) ॥ इन्द्राण्याः साम। इन्द्राणी गायत्री सोमः॥

उच्चतेजातमा॥ धासाऽ२३ः। ओमोऽ३वा। दिविसद्भू। मियादाऽ१देऽ२३। ओमोऽ३वा॥
उग्रश्शाऽ१र्माऽ२३। ओमोऽ३वा॥ महायेऽ३। आऽ२वाऽ२३४औहोवा॥ ऊऽ३२३४पा॥

(दी. ९। प. ११। मा. २) ७ (ला।८२०)

(४६७।८) ॥ शैशवे द्वे। द्वयोः शिशुर्गायत्री सोमः॥

उच्चतेजातमन्धासाः॥ दिविसद्भूम्याददाइ॥ उग्रश्शाऽ२३४र्मा॥ महाऽ३इआऽ५वाऽ६५६ः॥

(दी. ५। प. ४। मा. ४) ८ (भी।८२१)

(४६७।९)

उच्चतेजातमन्धाऽ६साः॥ दिविसद्भू। म्यादाऽ२३दाइ। उ। ग्रश्शाऽ२३र्मा॥

महाऽ२। हाऽ२इ। औऽ३होऽ३१इ। अवाऽ२ः। हाऽ२इ। औऽ३होऽ३१इ॥ इयाऽ३होइ।

इयोऽ२३४५वाऽ६५६॥ ऊऽ२३४५॥

(दी. ५। प. १४। मा. ८) ९ (भी।८२२)

(४६७।१०) ॥ दोहसामनी द्वे। द्वयोः प्रजापतिर्गायत्री सोमः॥

उच्चाऽ३४औहोवा॥ तेजाऽ२। तमाऽ३४५। धाऽ२३४साः। दिविसद्भूम्याददे॥

ऊग्रश्शाऽ२३र्मा॥ महिश्रवा। औऽ३होवा। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. ५। प. १०। मा. ३) १० (मि।८२३)

(४६७।११) ॥ दोहीयसाम॥

उचातेजातमन्धसोदोहाइदोहाऽ६ए॥ दिविसद्भूम्याददे। दोऽ३हाइ। दोऽ३हाऽ३ए॥

उग्रश्शाऽ२३र्मा। दोऽ३हाइ। दोऽ३हाऽ३ए॥ महिश्राऽ२३वाऽ३४३ः। औऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. १०। प. १०। मा. ८) ११ (मै।८२४)

(४६७।१२) ॥ इन्द्राण्याः साम। इन्द्राणी गायत्री सोमः॥

उ॒घा॒ते॒जा॒त॒म॒न्ध॒साः॥ दि॒वा॒इ॒सा॒ऽ२३४॒द्रू॒। मि॒या॒ऽ२२॒द॒दे। ओम्। ओ॒ऽ३॒वा। ओ॒ऽ३॒वा।
व॒वा॒ऽ२३॒हो॒इ॒॥ उ॒ग्र॒श्शा॒ऽ२३॒र्मा। ओ॒ऽ३॒वा। ओ॒ऽ३॒वा। व॒वा॒ऽ२३॒हो॒इ॒॥ म॒हि॒श्र॒वो॒ऽ२३॒।
या॒ऽ२३४॒ओ॒हो॒वा॒॥ य॒यु॒रे॒ऽ२३४॒५॒॥

(दी. ६। प. १४। मा. ६) १२ (घू।८२५)

(४६७।१३) ॥ आमहीयवम्। अमहीयुर्गायत्री सोमः॥

उ॒घा॒ता॒ऽ३३॒जा॒त॒म॒न्ध॒साः॥ दि॒वा॒इ॒सा॒ऽ१॒द्रू॒ऽ२३॒। मि॒या॒ऽ२३॒द॒दा॒इ॒॥ उ॒ग्र॒श्श॒र्मा॑॥
म॒हा॒ऽ२३॒इ॒श्र॒वा॒उ। वा॒ऽ३३॒॥ स्तो॒षे॒ऽ२३४॒५॒॥

(दी. ३। प. ७। मा. ६) १३ (ठू।८२६)

(४६८।१) ॥ आजिगम्। आजिगो गायत्री सोमेन्द्रौ॥

स्वा॒दा॒इ॒ष्टा॒या। म॒दा॒इ॒ष्टा॒या॒॥ प॒व॒स्व॒सो। मा॒धा॒ऽ१॒रा॒ऽ२३॒या॒॥ इ॒न्द्रा॒या॒पा॑॥
त॒वा॒इ॒सू॒ऽ२३॒ता॒ऽ३४॒३ः। ओ॒ऽ२३४॒५॒इ॒॥ डा॑॥

(दी. २। प. ८। मा. ५) १४ (जू।८२७)

(४६८।२) ॥ सुरूपे द्वे। द्वयोः सुरूपोगायत्री सोमेन्द्रौ॥

स्वा॒दि॒ष्टा॒या॒ऽ२३॒। इ॒या॒ऽ२३॒इ॒या॒। म॒दि॒ष्टा॒या॒ऽ२३॒॥ प॒व॒स्व॒सो॒ऽ२३॒। इ॒या॒ऽ२३॒इ॒या॒। म॒धा॒रा॒या॒ऽ२३॒॥
इ॒न्द्रा॒य॒पा॒ऽ२३॒। इ॒या॒ऽ२३॒इ॒या॒॥ त॒वा॒सू॒ऽ२३॒ता॒ऽ३४॒३ः। ओ॒ऽ२३४॒५॒इ॒॥ डा॑॥

(दी. ३। प. ११। मा. ६) १५ (टू।८२८)

(४६८।३)

स्वादिष्ठयौहोऽ२। इया। मदिष्ठायाऽ२॥ पवस्वसौहोऽ२। इया। मधारायाऽ२॥
इन्द्रायपौहोऽ२। इया॥ तवाइसूऽ२३ताऽ३४३ः। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ३। प. ११। मा. ३) १६ (टि।८२९)

(४६८।४) ॥ जमदग्नेः शिल्पे द्वे। द्वयोः जमदग्निर्गायत्री सोमेन्द्रौ॥

ओइस्वाऽ२३४दी॥ षयाऽ३मादिष्ठया। ओऽ२३४वा। पवस्वसोमधारयाऽ३॥
ओईऽ२३४०द्रा॥ याऽ२पाऽ२३४ओहोवा॥ तवेसुताऽ१ः॥

(दी. ६। प. ७। मा. ४) १७ (खी।८३०)

(४६८।५)

उहुवाइ। स्वाऽ२३४दी॥ षयाऽ३मादिष्ठया। ओऽ२३४वा। पवस्वसोमधारयाऽ३॥ उहुवाइ।
इन्द्राऽ५यया॥ ताऽ२वाऽ२३४ओहोवा॥ सूऽ२३४ताः॥

(दी. ५। प. ९। मा. ४) १८ (भी।८३१)

(४६८।६) ॥ संहितम्। संहितः साध्या देवा गायत्री सोमेन्द्रौ॥

स्वादाइष्ठया॥ मदिष्ठयाऽ३। पावाऽ३स्वासो। मधारयाऽ३॥ आइन्द्राऽ३यापाऽ६। हाउ॥
तवाऽ५इसुताउ॥ वा॥

(दी. २। प. ८। मा. ५) १९ (जु।८३२)

(४६८।७) ॥ शकुलः। वसिष्ठो गायत्री सोमेन्द्रौ॥

स्वादिष्ठयामदिष्ठयापवस्वसोमधारयाइ। द्राऽऽयपा॥ तवाऽऽइ। ऊऽऽ। तवाऽऽइ। ऊऽऽ॥

तवाऽऽइ औहोवा॥ सूऽऽइताः।

(दी. ८। प. ८। मा. ५) २० (डु।८३३)

(४६८।८) ॥ गंभीरम्। जमदग्निर्गायत्री सोमेन्द्रौ॥

औहोहिम्स्थिहाएहिया। हाऽऽहाइ। स्वादाइष्टाया। माऽऽइताः॥ औइमाऽऽइताः॥

औहोहिम्स्थिहाएहिया। हाऽऽहाइ। षयापाव। स्वाऽऽइताः॥ औस्वाऽऽइताः॥

औहोहिम्स्थिहाएहिया। हाऽऽहाइ। मधारया। ईऽऽइताः॥ औईऽऽइताः॥

औहोहिम्स्थिहाएहिया। हाऽऽहाइ। यपातवाइ। सूऽऽइताः। औइसूऽऽइताः।

औहोहिम्स्थिहाएहिया। हाऽऽहाइ। औहोवा॥ ईऽऽइताः॥

(दी. २३। प. २४। मा. २१) २१ (ट्ट।८३४)

(४६८।९) ॥ संहितम्। संहितः साध्या देवा गायत्री सोमेन्द्रौ॥

स्वादिष्ठयाम। दाऽऽइष्टया॥ पवाऽऽ। स्वाऽऽइताः। मधाऽऽइताः॥ आऽऽइन्द्रा॥ याऽऽपा।

तवाऽऽइ॥ हाउवाऽऽइ॥ सूऽऽइताः॥

(दी. २। प. १०। मा. ४) २२ (जी।८३५)

(४६९।१) ॥ सोम सामनी द्वे। द्वयोः सोमो गायत्री सोमौ इन्द्रो वा॥

वृषापवा॥ स्वधारायाऽऽइ मरुत्ताइ। चमत्साऽऽइताः॥ वाइश्वाऽऽइताः॥

दाऽऽधाऽऽइताः औहोवा॥ नओजसाऽऽइताः॥

(दी. ५। प. ७। मा. ५) २३ (फु।८३६)

(४६९।२)

वृषाहाउ॥ पाऽऽऽ४वा। स्वाधाराऽऽऽ४या। माऽऽऽ४रू। बाऽऽऽ४ताइ।
चामत्साऽऽऽ४राः॥ वाइश्वादधाऽऽऽ३॥ नाऽऽऽओऽऽऽ४ओहोवा॥ जाऽऽऽ४सा॥

(दी. ३। प. ९। मा. ६) २४ (दू।८३७)

(४६९।३) ॥ आशुभार्गवम्। भृगुर्गायत्रीन्द्रासोमौ इन्द्रो वा॥

वृषापवा। स्वधाराऽऽया॥ मारुबताऽऽइ। चामाऽऽत्साऽऽ४राः॥ विश्वादाऽऽधाऽऽ॥
नओऽऽ३। जाऽऽ४सोऽऽहाइ॥

(दी. २। प. ७। मा. ४) २५ (छी।८३८)

(४६९।४) ॥ वैश्वदेवे द्वे। द्वयोर्विश्वेदेवा गायत्रीन्द्रासोमौ इन्द्रो वा॥

आइवृषा॥ पवा। इहा। ओऽऽहो। स्वाधाराऽऽ४या। मा। रू। बतेऽऽहाइ। चा। मा।
त्सराऽऽहाऽऽइ॥ विश्वादधाहाउ। नओजसाहाउ॥ ओवाऽऽ४ओऽऽ४वाऽऽ५६॥
अस्मेरायाऽऽउतश्रवाऽऽ४५ः॥

(दी. ९। प. १५। मा. ९) २६ (नो।८३९)

(४६९।५)

वृषा। पवाऽऽ३। एहिया॥ स्वाधाऽऽ२। रयाऽऽ४ओहोवा। मारूऽऽ४। ओहोवा॥
बतेचमाऽऽत्साऽऽराः॥ ओऽऽहोऽऽ३१येऽऽ३। ओहोऽऽ४वाऽऽ५६॥
विश्वदधानओजसाऽऽ४५॥

(दी. १०। प. ११। मा. ३) २७ (पि।८४०)

(४६९।६) ॥ इन्द्र सामनी द्वे। द्वयोरिन्द्रो गायत्रीन्द्रासोमो इन्द्रो वा॥

वृषापावाऽ२३। हौहोइ। औऽ३होऽ२३४५। स्वधारायाऽ२३। हौहोइ। औऽ३होऽ२३४५॥
मरुत्वातेऽ२३। हौहोइ। औऽ३होऽ२३४५। चमात्साराऽ२३। हौहोइ। औऽ३होऽ२३४५॥
विश्वादाधाऽ२३। हौहोइ। औऽ३होऽ२३४५। नओजासाऽ२३। हौहोइ। औऽ३होऽ३४३॥
ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ६। प. २०। मा. ९) २८ (डो।८४१)

(४६९।७)

वृषापावा। औहौहोऽ२३४वा। स्वधाराया। औहौहोऽ२३४वा॥ मरुत्वाता। औहौहोऽ२३४वा।
चमात्सारा। औहौहोऽ२३४वा॥ विश्वादाधा। औहौहोऽ२३४वा। नओजासा।
औहौहोऽ२३४वा॥ होऽ५इ॥ डा॥

(दी. १२। प. १४। मा. २) २९ (झा।८४२)

(४६९।८) ॥ योक्ताश्चे द्वे। द्वयोर्युक्ताश्चो गायत्री सोमः इन्द्रो वा॥

औहौहोहाइ। वृषा॥ पवस्वऽ३धारायाऽ३। मारूऽ२त्वाऽ२३४ताइ। ओइ। चमाऽ२३।
चमाऽ२त्साऽ२३४राः॥ औहौहोहाइ। विश्वा॥ दधाऽ२नाऽ२३४ओ। जासाऽ२३४औहोवा॥
ओइ। ज्वरआ॥

(दी. ४। प. १३। मा. ९) ३० (दो।८४३)

(४६९।९)

^५ ^२ ^१ ^२ ^२ ^१ ^३ ^५ ^३ ^२ ^१
 वृषाओहोहोहाइ॥ पवऽऽस्त्राधाऽऽरायाऽऽ। मारूऽऽत्वाऽऽऽऽताइ। चमाऽऽ। ओइ।
^अ ^३ ^५ ^५ ^२ ^२ ^५ ^१ ^३ ^५ ^१ ^३ ^५ ^२
 चमाऽऽत्साऽऽऽऽराः॥ विश्वाओहोहोहाइ॥ दधाऽऽनाऽऽऽऽओ। जाऽऽसाऽऽऽऽओहोवा॥
^२ ^३ ^५
 ओइ। जूऽऽऽऽवा॥

(दी. ६। प. ११। मा. १०) ३१ (कौ।८४४)

॥ इति ग्रामे गेय-गाने द्वादशः प्रपाठकः॥१२॥

(४७०।१) ॥ भासम्। अत्रिर्गायत्री सोमः॥

यास्ताइ॥ मादो। वाराओऽ२३४वा। णीऽ२३४याः। ताइना॥ पावा। स्वाऽ३आओऽ२३४वा।
धाऽ२३४सा॥ दाइवा॥ वाइरा। घाशाओऽ२३४बा॥ साऽ२३४हा॥

(दी. नास्ति। प. १२। मा. ९) १ (यो।८४५)

(४७०।२) ॥ सोम साम। सोमो गायत्री सोमः॥

यस्तेमदाः॥ वराइणियाः। ताइनापावाऽ३स्वाऽ३। अन्धसा॥ दाइवावाइराऽ३४। हाउ॥
घशाऽ५सहा। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. नास्ति। प. ९। मा. १८) २ (ले।८४६)

(४७०।३) ॥ प्राजापत्यम्। प्रजापतिर्गायत्री सोमः॥

यस्ताऽ३२इमाऽ२३४दाः॥ वराइणाया। ओऽ२३४वा। हा। ओऽ२३४वा। हाइ। ताइनापवा।
स्वआ०धासा। ओऽ२३४वा। हा। ओऽ२३४वा। हाइ॥ दाइवावाइरा। ओऽ२३४वा। हा।
ओऽ२३४वा। हाऽ३इ॥ घाऽ२शाऽ२३४ओहोवा॥ सहोरयिऽ३ष्ठाऽ२३४५ः॥

(दी. ४। प. १९। मा. १२) ३ (धा।८४७)

(४७०।४) ॥ सोम साम। सोमो गायत्री सोमः॥

यस्ताइमाऽ२३दोवरेणियाः॥ ताइनापवा। स्वा०धाऽ१साऽ२॥ दाइवाऽ२वाइराऽ२३॥
घशाऽ२३४वा। साऽ५होऽ६हाइ॥

(दी. ३। प. ६। मा. ७) ४ (टो।८४८)

(४७०।५) ॥ भासम्। अत्रिर्गायत्री सोमः॥

यस्ते। माऽऽदो। वा। ईया॥ राइणाऽऽयाऽऽः। ताइनापवा। स्व। औऽऽहो। वाहा।

धसाऽऽ॥ दाइवाऽऽ३॥ वाऽऽइराऽऽ३४औहोवा॥ घशऽऽहाऽऽ१॥

(दी. ६। प. १३। मा. ६) ५ (गू।८४९)

(४७०।६) ॥ अध्यर्द्धेऽसोम साम॥

यस्तेमदोवरेणियाऽऽए॥ तेनापवस्वान्धसा। देवावीराऽऽ३। हाइ॥ घाशाउवा। साहाउवाऽऽ३॥

ऊऽऽ३३४पा॥

(दी. ९। प. ७। मा. ४) ६ (श्री।८५०)

(४७१।१) ॥ वैष्टम्भे द्वे। द्वयोर्विष्टंभो वा देवा गायत्री सोमः॥

तिस्त्रोवाचाः॥ उदाइ। उदाऽऽ३१उ। वायेऽऽ३। राऽऽ३४ते॥ गावोमिमा॥ तिधाइ।

तिधाऽऽ३१उ। वायेऽऽ३। नाऽऽ३४वाः॥ हरिरेती॥ कनाइ। कनाऽऽ३१उ। वायेऽऽ३॥

क्राऽऽ३४दात्॥

(दी. ५। प. १५। मा. ९) ७ (मो।८५१)

(८५१।२)

तिस्त्रोवाचाः॥ उदाइराऽऽते। गावोमिमन्तिधाऽऽइनाऽऽवाः॥ हरिरेतोऽऽ३४हाइ॥

काऽऽनाऽऽ३४औहोवा॥ क्राऽऽ३४दात्॥

(दी. ७। प. ६। मा. ७) ८ (चे।८५२)

(४७१।३) ॥ पाष्ठेहे द्वे। द्वयोः पष्टवाङ् गायत्री सोमः॥

तिस्त्रोवाचोऽ२३४हाइ॥ उदीरताइ। गावोमिमाऽ२३४हा। तिधेनवाः॥ हरिराइतोऽ२३४हाइ॥

कनायेऽ३। काऽ२दाऽ२३४औहोवा॥ अस्मभ्यंगातुवित्तमाऽ२३४५म्॥

(दी. ८। प. ८। मा. ७) ९ (डे।८५३)

(४७१।४)

तिस्त्रोवाच्चउदीरतो। वाहाइ॥ गावोमिमाऽ३। तीधेनाऽ२३४वाः॥ हरिराइती॥

काऽ२नोऽ२३४औहोवा॥ काऽ२३४दात्॥

(दी. ७। प. ७। मा. ६) १० (छू।८५४)

(४७१।५) ॥ क्षुल्लक वैष्टभम्। विष्टभो वा देवा गायत्री सोमः॥

तिस्त्रोऽ५वा। चाऽ३उदीरताइ॥ गावोमिमा। तिधाइनाऽ१वाऽ२३ः। होवाऽ३हाइ॥

हराइराऽ१इतीऽ२३। होवाऽ३हाइ॥ कनायेऽ३। काऽ२दाऽ२३४औहोवा॥ दीऽ२३४शाः॥

(दी. ५। प. १०। मा. १०) ११ (मौ।८५५)

(४७१।६) ॥ पाष्ठोहम्। पष्ठवाइ गायत्री सोमः॥

तिस्त्रोऽवाचाऽ५उदीरताइ॥ गावोभिमन्तिधेनवः। हरिराऽ२३इती। कनोऽ२। हुवाइ।

होऽ३वाऽ३॥ काऽ२दाऽ२३४औहोवा॥ हाओवा। ओवाऽ२३४५म्॥

(दी. ९। प. ९। मा. ७) १२ (धे।८५६)

(४७२।१) ॥ इषो वृधीयम्। इषावृधीयो गायत्रीन्द्रासोमौ॥

इन्द्रायेन्द्राउ॥ मरुत्ताइ। पवस्वामाऽ२। धुमत्तमाः॥ अर्कस्यायोऽ२। निमाऽ२३।

साऽ२दाऽ२३४औहोवा॥ इषोवृधेऽ१॥

(दी. ५। प. ८। मा. ४) १३ (बी।८५७)

(४७२।२) ॥ इन्द्रसामा इन्द्रो गायत्रीन्द्रासोमो इन्द्रो वा॥

आऽ२३४इन्द्रा। याऽ२३४इन्द्रो॥ मरू॒बतेऽ३। पाऽ२३४वा। स्वाऽ२३४मा। धु॒मत्त॑माऽ३ः।
आऽ२३४र्का॥ स्याऽ२३४यो॥ नि॒मा॒सदाऽ२३४५म्॥

(दी. १। प. १। मा. ४) १४ (घी।८५८)

(४७२।३) ॥ वैश्वदेवे द्वे। द्वयोर्विश्वेदेवागायत्रीन्द्रासोमो इन्द्रो वा॥

इन्द्रा॒याइन्द्रोऽ२३। हाऽ। औऽ३हो॒वा। मरू॒बतेऽ२३। हाऽ। औऽ३हो॒वा॥ पव॑स्वामाऽ२३।
हाऽ। औऽ३हो॒वा। धु॒मत्त॑माऽ२३ः। हाऽ। औऽ३हो॒वा॥ अ॒र्कस्या॑योऽ२३। हाऽ।
औऽ३हो॒वा। नि॒मा॒सादाऽ२३म्। हाऽ। औऽ३हो॒वाऽ३४३॥ ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ८। प. २०। मा. ४) १५ (णी।८५९)

(४७२।४)

इन्द्रा॒येन्द्रो॑। एऽ५। मरू॒॥ ब॒ताइ॑। पव॑स्वमधु॒मत्ताऽ२३माः। हु॒वाइ॑। होऽ३वा॑॥
अ॒र्कास्याऽ२३यो॑। हु॒वाइ॑। होऽ३वा॑॥ नि॒मा॒साऽ२३दाऽ३४३म्। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ४। प. १३। मा. ६) १६ (दू।८६०)

(४७२।५) ॥ आग्नेये द्वे। द्वयोरग्निर्गायत्रीन्द्रासोमो॥

इन्द्रा॒येन्द्रो॑हाऽ॥ मा। रू॒। ब॒तेऽ३हा॑ऽ। पव॑स्वमधु॒। माऽ। त॒माऽ२३हा॑ऽ। आ। का॑।
स्य॑योऽ२३हाऽ३इ॥ नि॒माऽ२३। होऽ२३४वा॑। साऽ५दोऽ६हा॑इ॥

(दी. ३। प. १३। मा. ५) १७ (डु।८६१)

(४७२।६)

इन्द्रायेन्दोवा। ओवा॥ मरुबतोवा। ओवा। पवस्वमोवा। ओवा। धुमत्तमोवा। ओवाऽ३॥
अर्काहाउ। स्ययोहाउ॥ निमोवाऽ३ओऽ२३४वा। साऽ५दोऽ६हाइ॥

(दी. २। प. १२। मा. ४) १८ (छी।८६२)

(४७२।७) ॥ वैश्वदेवम्। विश्वेदेवा गायत्रीन्द्रासोमौ इन्द्रो वा॥

इन्द्रायेन्दोमरुबते। ओहाइ॥ पवस्वमधुमत्तमः। ओऽ३हाऽ३४३। ओऽ२३४हा॥
आर्कस्यायोऽ२३॥ नाऽ२इमाऽ२३४ओहोवा॥ उप्। साऽ२३४दाम्॥

(दी. ६। प. ९। मा. ६) १९ (घू।८६३)

(४७२।८) ॥ आग्नेयम्। अग्निर्गायत्रीन्द्रासोमौ इन्द्रो वा॥

इन्द्रायेन्दोमरुबाऽ६ताइ॥ पवस्वम। धुमात्ताऽ१माऽ२३४ः॥ अर्कस्ययोनिमाऽ६हाउ॥
साऽ५दोऽ६हाइ॥

(दी. ४। प. ५। मा. ४) २० (नी।८६४)

(४७३।१) ॥ शैगवानि चत्वारि। चतुर्णां शिशुर्गायत्री श्येनसोमौ।

आसा॥ वियश्शुर्माऽ३१उवाऽ२३। दाऽ२३४या। आप्सूदाक्षाः। गिराऽ३१उवायेऽ३।
ष्ठाऽ२३४५ः॥ श्येनोनाऽ२३यो॥ निमाऽ३१उवाऽ२३॥ साऽ२३४दात्॥

(दी. २। प. ९। मा. ६) २१ (झू।८६५)

(४७६।२)

असाविया॥ शूर्मदाऽ२। या। आप्सुदाक्षाऽ२ः। गाइरिष्ठाः॥ श्याइनोऽ१नायोऽ२३॥

निमोऽ२३४वा। साऽ५दोऽ६हाइ॥

(दी. २। प. ८। मा. ५) २२ (जु।८६६)

(४७३।३)

असा। वियाओऽ२३४वा॥ शूर्मदाया। ओऽ२३४वा। आप्साओऽ२३४वा॥ दक्षोगिराइ।

ष्ठाओऽ२३४वा॥ श्येनोनयोनिमासदाऽ२३४५त्॥

(दी. ६। प. ८। मा. ५) २३ (गु।८६७)

(४७६।४)

असा। वियौवाओऽ२३४वा॥ शूर्मदायौ। वाओऽ२३४वा। अप्सू। दक्षौवाओऽ२३४वा।

गिराइ। ष्ठीवाओऽ२३४वा। श्येनः। नयौवाओऽ२३४वा॥ निमा। सादौवाओऽ२३४वा॥

होऽ५इ॥ डा॥

(दी. २। प. १४। मा. ९) २४ (झो।८६८)

(४७३।५) ॥ च्यावनानि चत्वारि चतुर्णां। च्यवनो गात्री श्येना सोमौ॥

असा। व्युहुशवाहाइ॥ अशूर्मदायाप्सुदक्षोगिरिष्ठाउहुवाऽ२३होइ॥ श्याऽ२३इनोऽ३॥

नाऽ२योऽ२३४ओहोवा॥ निमासदाऽ२३४५त्॥

(दी. ८। प. ६। मा. ६) २५ (टू।८६९)

(४७३।६)

असाव्यंशुः। औहोवाहाइ॥ मदाऽ२३या। आप्सुदक्षोगिरिष्ठाः॥ श्याङ्गनोनाऽ३योऽ३॥

नाऽ२इमाऽ२३४औहोवा॥ उप्। साऽ२३४दात्॥

(दी. ङ। प. ८। मा. ८) २६ (गै।८७०)

(४७३।७)

इहाऽ३१२३४। इहा। साव्यंशुर्मदाया। इहा॥ अप्सुदक्षोगिरिष्ठाऽ३४५ः। ईऽ२३४हा॥

श्येनोनयोऽ२निमाऽ३४५। ईऽ२३४हा॥ आऽ२सदाऽ३४५त्॥ ईऽ२३४हा॥

(दी. ङ। प. १०। मा. २) २७ (ङा।८७१)

(४७३।८)

असाऽ२३४। वियंशुः। मदाऽ२३४याऽ६। हाउ॥ आप्सूदाऽ२३४क्षाः। गिराङ्गिष्ठाऽ२३४हाइ॥

श्याङ्गनोनाऽ३योऽ३॥ नाइमाऽ२३हाऽ३४३इ। साऽ२३४दोऽ६हाइ॥

(दी. नास्ति। प. ९। मा. ९) २८ (लो।८७२)

(४७४।१) ॥ प्राजापत्ये द्वे। प्रजापतिर्गायत्री मरुद्वायु॥

पवस्वदौ। हौहोवाहाइ॥ क्षासाधनाऽ३ः। औऽ३होऽ३४इ। औहो। वाहाइ। देवेभ्यःपाइ।

तयेहराऽ३इ। औऽ३होऽ३४इ। औहो। वाहाइ॥ मरुद्भोवाऽ३। औऽ३होऽ३४इ। औहो।

वाहाऽ३इ॥ याऽ२वाऽ२३४औहोवा॥ माऽ२३४दाः॥

(दी. १८। प. १७। मा. १२) २९ (ठा।८७३)

(४७४।२)

पवस्वदक्षसाधनः। ओऽद्ववा॥ देवेभ्यःपीतयाऽ२ओइ। हराऽ२इ॥ मरुद्भ्योवाऽ२। ओऽ२३॥

यवोवा। माऽ२दोऽद्वहाइ॥

(दी. ५। प. ८। मा. ५) ३० (बु।८७४)

(४७५।१) ॥ वैदन्वतानि चत्वारि। चतुर्णां विदन्वान्नायत्री सोमः॥

पारी॥ स्वानोगिरिष्ठाः। पवाऽ२इत्रेऽ२३४सो। मोअक्षाराऽ२त्। मदाइपूसाऽ३। ईऽ३याऽ३॥

र्वधोऽ२३४वा। आऽ२सोऽद्वहाइ॥

(दी. ४। प. ८। मा. ६) ३१ (दू।८७५)

(४७५।२)

पा। र्येपारी॥ स्वानोगिरिष्ठाः। पवाऽ२इत्रेऽ२३४सो। मोअक्षाराऽ२त्॥ मदाइपूसाऽ३हाऽ३॥

र्वाऽ२धाऽ२३४ओहोवा॥ एऽ३। असीऽ२३४५॥

(दी. ६। प. ९। मा. ६) ३२ (घू।८७६)

(४७५।३)

पाऽ२रि। स्वानोऽ३गाऽ३इरिष्ठाः॥ पवित्रैसो। मोअक्षरात्। पवित्रे। सोमोऽ२३। क्षारात्।

ओइ। मदौ। वाऽ३४३ओऽ२३४वा॥ पुवा॥ सुवर्धाः। असायेऽ३। माऽ२दाऽ२३४ओहोवा॥

एऽ३। पुसर्वधाअसीऽ२३४५॥

(दी. ८। प. १६। मा. १०) ३३ (टौ।८७७)

(४७५।४)

^ॐ ओऽ३होइ। ^{१ २ ३ ४ ५} इहहाहहाइ। ^{६ ७ ८ ९ १०} ओऽ२होऽ२३४वा। ^{११ १२ १३ १४ १५} पराइस्त्राऽ२३४नो। ^{१६ १७ १८ १९ २०} गाइराऽ२३४इष्टाः॥
^{२१ २२ २३ २४ २५} पावित्रेऽ२३४सो। ^{२६ २७ २८ २९ ३०} मोअक्षाऽ२३४रात्॥ ^{३१ ३२ ३३ ३४ ३५} मदाइषूऽ२३४सा। ^{३६ ३७ ३८ ३९ ४०} वर्धाआऽ२३४सी॥ ^{४१ ४२ ४३ ४४ ४५} ओऽ३होइ।
^{४६ ४७ ४८ ४९ ५०} इहहाहहाइ। ^{५१ ५२ ५३ ५४ ५५} ओऽ२होऽ२३४प्रवाऽ६५६॥ ^{५६ ५७ ५८ ५९ ६०} एऽ३। ^{६१ ६२ ६३ ६४ ६५} उपाऽ२३४५॥

(दी. २। प. १४। मा. ११) ३४ (झा।८७८)

(४७५।५) ॥ आंगिरसस्य रजेः पदस्तोभौ द्वौ द्वयो राजिर्गायत्री सोमः॥

^{१ २ ३ ४ ५} पा। ^{६ ७ ८ ९ १०} र्येस्त्रानाः॥ ^{११ १२ १३ १४ १५} गाऽ२इ। ^{१६ १७ १८ १९ २०} रिष्ठाऽ२या। ^{२१ २२ २३ २४ २५} हाहाइ। ^{२६ २७ २८ २९ ३०} उवाऽ२३होइ। ^{३१ ३२ ३३ ३४ ३५} पावित्रेसो। ^{३६ ३७ ३८ ३९ ४०} मोअक्षाराऽ२त्।
^{४१ ४२ ४३ ४४ ४५} हाहाइ। ^{४६ ४७ ४८ ४९ ५०} उवाऽ२३होइ॥ ^{५१ ५२ ५३ ५४ ५५} मदाऽ२इषुसा। ^{५६ ५७ ५८ ५९ ६०} हाहाइ। ^{६१ ६२ ६३ ६४ ६५} उवाऽ२३हो॥ ^{६६ ६७ ६८ ६९ ७०} वर्धोऽ२३४वा।
^{७१ ७२ ७३ ७४ ७५} आऽ५सोऽ६हाइ।

(दी. ३। प. १५। मा. ११) ३५ (णा।८७९)

(४७५।६)

^{१ २ ३ ४ ५} पर्योहोवाहाइस्त्रानाः॥ ^{६ ७ ८ ९ १०} गाऽ२इ। ^{११ १२ १३ १४ १५} रिष्ठाऽ२या। ^{१६ १७ १८ १९ २०} ओऽ२३४। ^{२१ २२ २३ २४ २५} हाहोइ। ^{२६ २७ २८ २९ ३०} हाहा। ^{३१ ३२ ३३ ३४ ३५} होवा। ^{३६ ३७ ३८ ३९ ४०} होवा।
^{४१ ४२ ४३ ४४ ४५} पावित्रेसो। ^{४६ ४७ ४८ ४९ ५०} मोअक्षाराऽ२त्। ^{५१ ५२ ५३ ५४ ५५} ओऽ२३४। ^{५६ ५७ ५८ ५९ ६०} हाहोइ। ^{६१ ६२ ६३ ६४ ६५} हाहा। ^{६६ ६७ ६८ ६९ ७०} होवा। ^{७१ ७२ ७३ ७४ ७५} होवा॥ ^{७६ ७७ ७८ ७९ ८०} मदाऽ२इषुसा।
^{८१ ८२ ८३ ८४ ८५} ओऽ२३४। ^{८६ ८७ ८८ ८९ ९०} हाहोइ। ^{९१ ९२ ९३ ९४ ९५} हाहा। ^{९६ ९७ ९८ ९९ १००} होवा। ^{१०१ १०२ १०३ १०४ १०५} होवाऽ३॥ ^{१०६ १०७ १०८ १०९ ११०} वर्धोऽ२३४वा। ^{१११ ११२ ११३ ११४ ११५} आऽ५सोऽ६हाइ॥

(दी. १०। प. २३। मा. १०) ३६ (बौ।८८०)

(८७६।१) ॥ और्णायवे द्वे द्वयोरूर्णायुर्गायत्री सोमः॥

^{१ २ ३ ४ ५} परिप्रियादिवःकावीः॥ ^{६ ७ ८ ९ १०} वयाश्सिनस्योर्हितः॥ ^{११ १२ १३ १४ १५} स्वानेर्याऽ२३ती॥ ^{१६ १७ १८ १९ २०} आयाऽ२। ^{२१ २२ २३ २४ २५} इयाऽ२ई३या॥
^{२६ २७ २८ २९ ३०} कविक्रतोऽ२। ^{३१ ३२ ३३ ३४ ३५} या२३४ओहोवा॥ ^{३६ ३७ ३८ ३९ ४०} इऽ२३४५॥

(दी. ७। प. ८। मा. ४) ३७ (ज्री।८८१)

(४७६।२)

परिप्रियाऽध्रदिवःकवाहः॥ वयाऽ२होऽ१वाऽसिनस्योवोर्हितः॥ स्वनैर्याऽ२३ती॥ हुवा॥ होवा॥
होवा॥ हुवाऽ२इ॥ ईऽ३या॥ कविक्रतोऽ२॥ याऽ२३४औहोवा॥ ईऽ३याऽ२३४५म्॥

(दी. ८। प. ११। मा. ६) ३८ (टू।८८२)

प्रथमः खण्डः॥१॥ दशतिः॥१॥

॥ इति ग्रामे गेय-गाने त्रयोदशस्यार्द्धः प्रपाठकः॥

(४७७।१)

॥ सौभरे द्वे। द्वयोः सुभरिर्गायत्री सोमः॥

प्रसोमाऽ२३४साः॥ मदच्युतः। औऽ२३होवाऽ३। अवाऽ२साऽ२३४इनाः। ओइमघोनाऽ२म्॥
सुताऽ२३ः। वाऽ२इदाऽ२३४औहोवा॥ थेअक्रमूऽ२३४५ः॥

(दी. ४। प. ८। मा. ११) १ (दा८८३)

(४७८।१)

प्रसोमासाः॥ वाइपश्चितः। आपोऽ१नायाऽ२। तारुर्मयः॥ वानाऽ१निमाऽ२। आऔऽ३हो॥
हिषाइवा॥ इडाऽ२३भाऽ३४३। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ४। प. १०। मा. ८) २ (नै।८८४)

(४७९।१)

॥ वृषकाणि त्रीणि। त्रयाणामिन्द्रो गायत्री सोमः॥

पवस्त्रे०दोऽध्रवृषासुताः॥ कृधीनोयशसोजनायेऽ३॥ वाइश्वाआऽ२३४पा॥
द्वाऽ२इषाऽ२३४औहोवा॥ जाऽ२३४ही॥

(दी. ७। प. ५। मा. ५) ३ (जु।८८५)

(४८०।१)

वृषाहिया॥ सिभानूऽऽना। युमन्तन्वाहावाऽऽमाहाऽऽ३४इ॥ पवाऽऽ३॥ मानसुवोऽऽ३४वा॥
दृऽऽ३४शाम्॥

(दी. ३। प. ६। मा. २) ४ (टा।८८६)

(४८०।२)

वृषाहियाऽऽसिभानुना॥ युमन्तन्वाहावाऽऽमहे। हाऽऽइ। ऊऽऽ। होऽऽवा॥
पवमानसुवर्दशम्। हाऽऽइ। ऊऽऽ। होऽऽवा॥ हुवोऽऽ४५इ॥ डा॥

(दी. ६। प. ११। मा. ४) ५ (की।८८७)

(४८१।१)॥ बभ्रोः सामानि त्रीणि, कौम्यस्य वा। त्रयाणां बभ्रुर्गायत्री सोमः॥

इन्दुरौहोवाहाइ। पावी॥ ष्टचाऽऽइ। तनोऽऽ३४हा। हाहोइ। होऽऽहा। प्रियाःकवी। नाम्मा
तिरोऽऽ३४हा। हाहोइ। होऽऽहा। सृजाऽऽत्। अश्वोऽऽ३४हा। हाहोइ। होऽऽहाऽऽ३॥
राऽऽथाऽऽ३४ओहोवा॥ ईऽऽ३४वा॥

(दी. ८। प. १७। मा. ७) ६ (ठै।८८८)

(४८१।२)

इन्दुःपविष्टचेतनःप्रियःकवाइ॥ हिम्ऽऽस्थिहिम्। नाम्माऽऽ३४तीः॥ सृजादाऽऽ३४शाम्।
हिम्ऽऽस्थिहिम्ऽऽ३। राऽऽथाऽऽ३४ओहोवा॥ ईऽऽ३४वा॥

(दी. ३। प. ७। मा. ८) ७ (ठै।८८९)

(४८१।३)

इन्दुःपविष्टचेतनःप्रियःकवीनाम्मतिःसृ। जाऽऽदश्चाम्॥ ओवाऽऽ३३॥ ओवाऽऽ३३॥
 राऽऽथाऽऽ३३४औहोवा॥ ईऽऽ३३४वा॥

(दी. ५। प. ६। मा. २) ८ (पा।८९०)

(४८२।१) ॥ कार्तवेशस्य सामानि त्रीणि। त्रयाणां कृतवेशोगायत्री सोमः॥

असृक्षाऽऽताप्रवाजिनाः॥ गाव्याऽऽसोमाऽऽ२। सोआ श्वया॥ शूऽऽक्राऽऽसोवीऽऽ२॥
 रयाऽऽश्वः। ओऽऽ३३४५६॥ डा॥

(दी. २। प. ८। मा. ४) ९ (जी।८९१)

(४८२।२)

असृक्षताप्राऽऽवाजिनाः॥ गव्यासोमासोअश्वयाऽऽ३होइ॥ शुक्रासोवाऽऽ३१इ॥ रयाऽऽ३३।
 शाऽऽवाऽऽ३३४औहोवा॥ ग्वाऽऽ३३४भीः॥

(दी. १०। प. ६। मा. ६) १० (पू।८९२)

(४८२।३)

असृक्षतप्रवाजिनः। एऽऽ३। गव्यासोमा॥ सोऽऽआश्वाऽऽ३या॥ शुक्राऽऽसोऽऽ३४वी॥
 रयोऽऽ३३४वा। शाऽऽ५वोऽऽ५हाइ॥

(दी. २। प. ७। मा. ३) ११ (छि।८९३)

(४८३।१) ॥ शाम्मदे द्वे। द्वयोः शंमद्वायत्रीन्द्रवायू॥

^{४ ५ ४ ५} पावस्वादे॥ ^{३ २} वयाऽ३। ^{१ ^ ३} वाऽ२याऽ२३४^५औहोवा। ^{५ ४} यूऽ२३४^३षाक्। ^{४ ५ ४ ५} आइन्द्रंगच्छा। ^३ तुताऽ३इ।
^{१ ^ ३} तूऽ२ताऽ२३४^५औहोवा। ^{५ ४} माऽ२३४^३दाः॥ ^{५ ४} वायूऽ२^३होऽ१इ। ^{१ ३ ३ २} आऽ२३^३रो॥ ^३ हधाऽ३।
^{१ ^ ३} हाऽ२धाऽ२३४^५औहोवा॥ ^{३ ५} माऽ२३४^३णा॥

(दी. ७। प. १३। मा. ८) १२ (जै।८९४)

(४८३।२)

^{३ ४ ५ ४ ४} पवस्वदेवए। ^{३ २ ३} हीऐहीऽ२३४^५या॥ ^{५ ४} आयुषगेऽ२^३हीऐऽ२^३हीऽ३या।
^१ इन्द्रंगच्छ^४तुतेमदएऽ२^३हीऐऽ२^३हीऽ३या॥ ^{१ ३} वायूमारोऽ३१२३॥ ^{३ १} हधोऽ२३४^५वा। ^{४ ५} माऽ३^३णोऽ६^५हाइ॥

(दी. ४। प. ७। मा. ६) १३ (थू।८९५)

(४८४।१) ॥ जनित्रे द्वे। द्वयोर्वसिष्ठो गायत्री सोमवैश्वानरौः॥

^{४ ५} पावा॥ ^{५ ४} मानो। ^{३ २ ३} अजीजाऽ२३४^५नात्। ^{३ १} दिवश्चित्राम्। ^{३ ४} नतन्यतूम्॥ ^{३ ४ १} ज्योतिर्वैश्वाऽ२३॥
^{१ ^ ३} नाऽ२राऽ२३४^५औहोवा॥ ^{३ ५} वृऽ२३४^३हात्॥

(दी. ४। प. ८। मा. ५) १४ (दु।८९६)

(४८४।२)

^{५ ४} पवमानाः॥ ^{१ ३ ३} अजाइजाऽ३नात्। ^{१ ३ १} दिवश्चित्राऽ२३^३हाऽ३इ। ^{१ ३ ३} नातन्याऽ२३४^५तूम्॥ ^{३ ५} ज्योऽ२३४^३तीः।
^{३ ५} वाऽ२३४^५इश्वा॥ ^{४ ५} नरोवा। ^{४ ५} वृऽ३^५होऽ६^५हाइ॥

(दी. १। प. ८। मा. ८) १५ (गै।८९७)

(४८५।१) ॥ प्रक्रीडास्त्रयः (स्त्रीणि), (प्रक्रीडम्)। मरुतो गायत्री सोमः॥

४ ५ ऋ र र र ? ^ ३ २ ३ २ ३ २ २ ? ५
 पारी॥ स्वानासइन्दवोमदायब। हणाऽ२३गिराऽ३४॥ मधोऽ३४अर्षाऽ३॥ तिधोऽ२३४वा।
 ४ ५
 राऽ५योऽ६हाइ॥

(दी. ४। प. ६। मा. ३) १६ (ति।८९८)

(४८५।२) ॥ संक्रीडम्॥

४ ५ ऋ र ? ? - ?
 पारी॥ स्वानासइन्दवाउवाऽ२३होवाऽ२३हाऽ२ईया॥

र र ? ? - ?
 मदायबर्हणागिराउवाऽ२३होवाऽ२३हाऽ२ईया॥

र र ? ? - ? ^ ३ ५ र ३ ५
 मधोअर्षन्तिधारयाउवाऽ२३होवाऽ२३हाऽ२ईयाऽ२। वाऽ२३४ओहोवा॥ ऊऽ२३४पा॥

(दी. ८। प. ६। मा. ९) १७ (द्वो।८९९)

(४८५।३) ॥ निक्रीडम्॥

३ ५ र ४ २ ४ ५ ? निर ? निर ?
 पाऽ५रि। स्वानाऽ३साऽ३इन्दवाः॥ मदाऽ२यबर्हणाऽ२गिरा॥ मधोऽ२३र्षा॥ ऊर्मिरिवाऽ२।

३ ५ र २ ? २ ४ ५ ४
 ईऽ३या। तिधारया। औऽ३होवा। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. ४। प. १०। मा. ३) १८ (नि।९००)

(४८६।१) ॥ औशनम्। उशना गायत्री सोमः॥

५ र २ ? ? र र र अ - र
 परिप्रासी॥ ष्यदत्कावीऽ२ः। सिन्धोरूर्मावाधिश्रिताऽ२ः॥ कारूऽ२३म्॥

? ^ ३ ५ र २ ? ३ ? ? ?
 वाऽ२इभ्राऽ२३४ओहोवा॥ पुरुस्पृहाऽ२३४५म्॥

(दी. ७। प. ६। मा. ६) १९ (चू।९०१)

एकोनविंशति द्वितीयः, द्वितीयः खण्डः॥२॥ दशतिः॥१०॥

॥ इति पञ्चमः प्रपाठकः॥५॥

(४८७।१) ॥ यामानि त्रीणि। त्रयाणां यमो गायत्री देवाः॥

इहाऽइहा। उपोषुजातमाऽसुराम्। इहा॥ इहाऽइहा। गोभिर्भंगंपराऽइष्कृताम्। इहा॥
इहाऽइहा। इन्दुन्देवाअयाऽसिषूः॥ इहाऽ१॥

(दी. ५। प. १। मा. ८) २० (भै।१०२)

(४८७।२)

ऊपोषुजातमाऽसुराम्। उपा॥ गोभाऽइहोइ। भंगम्पराऽइष्कृताम्। उपा॥
इन्दूऽइहोइ॥ देवाअयाऽसिषूः॥ सिषुराऽइहोइ॥ ऊऽइहोइ॥

(दी. ५। प. १। मा. ८) २१ (भै।१०३)

(४८७।३)

उपोष्वौ। होइजाताम्॥ आसूऽइराम्। औऽइहोऽइवाऽइ। गोभिर्भाऽइहोऽइ॥
ओइपारिष्कृताऽइम्॥ इन्दूऽइहोइ॥ देवाऽइहोऽइ॥ अयासिषूऽइहोइ॥

(दी. ६। प. १। मा. ९) २२ (घो।१०४)

(४८८।१) ॥ अंकतेः साम, (वैरूपम्)। अङ्कतिर्गायत्री सोमः॥

पुनानोआ॥ क्रामीदाऽइहोइ॥ विश्वाऽइमाऽइहोइ॥ वीचर्षाऽइहोइ॥
शुम्भाऽइहोइ॥ प्राऽइहोइ॥ तीऽइहोइ॥

(दी. ४। प. ७। मा. ६) २३ (धू।१०५)

(४८९।१) ॥ औशने द्वे। द्वयोरुशना गायत्री सोमेन्द्रौ॥

आविशन्कालाऽदशुसुताः॥ वाइश्वाअर्पन्। अभाइश्वायाऽऽः। ओऽऽहाऽऽ। ओवा।

ओऽऽऽऽहाइ॥ इन्दूऽऽऽः॥ आऽऽइन्द्राऽऽऽऽओहोवा॥ यधीयतेऽऽऽऽ॥

(दी. ६। प. ९। मा. १०) २४ (घो।९०६)

(४८९।२)

आविशन्कलशम्। सुताऽऽः। वाइश्वाः॥ अर्पन्। अभाइश्वाया। ओहोहोऽऽऽऽवा॥

ओहोहोऽऽइ॥ इन्दूराऽऽइन्द्राऽऽ॥ या धीयाऽऽताऽऽऽऽओहोवा॥ ऊऽऽऽऽपा॥

(दी. ७। प. ११। मा. ९) २५ (घो।९०७)

(४९०।१) ॥ सोमसाम। सोमो गायत्री सोमः॥

असर्जिरा॥ धि। योयाऽऽऽथा। पवित्रे। चा। मुवोऽऽऽसूऽऽऽऽताः॥ कार्ष्मन्वाऽऽऽजी॥

नियक्रमाइत्। ओऽऽऽहोवा। होऽऽइ॥ डा॥

(दी. ३। प. ११। मा. ४) २६ (टी।९०८)

(४९१।१) ॥ कार्ष्णे द्वे। द्वयोः कृष्णो गायत्री सोमः॥

प्रयद्दाउ॥ गावोनऽऽभूर्णाऽऽयाऽऽऽऽ। तेषाऽऽः। आयाऽऽसोअक्रमुः॥ घन्ताःकाऽऽऽर्णाम्॥

अपाबचम्। ओहोऽऽहाऽऽऽऽओहोवा॥ ऊऽऽऽऽपा॥

(दी. ८। प. ८। मा. ८) २७ (डो।९०९)

(४९१।२)

प्रयद्दाऽऽऽवोनभूर्णयाः॥ बाइषाअया। सोअक्रमूऽऽऽः॥ घ्नाऽऽऽऽतोहाइ॥

काऽऽर्णाऽऽऽऽओहोवा॥ अपबचाऽऽऽऽम्॥

(दी. ७। प. ६। मा. ८) २८ (चै।९१०)

(४९२।१) ॥ सोमसाम (वैश्वदेवम्)। सोमो गायत्री सोमः॥

अप॒ग्नौ। हो॒इपा॒वा॥ सा॒इमा॑ऽ॒र्द्धाऽ॒रः। क्रा॑तु॒वित्सो॑। म॒मात्सा॑ऽ॒राऽ॒रः॥ नु॒दाऽ॒र३॥
स्वाऽ॒र॒दाऽ॒र३४ओ॑हो॒वा॥ व॒युञ्ज॑नाऽ॒र३४५म्॥

(दी. ४। प. ८। मा. ६) २९ (दू।९११)

(४९३।१) ॥ सूर्यसाम (वैश्वदेवम्)। सूर्यो गायत्री सूर्यः॥

ए॒अया॑प॒वा॥ स्व॒धाऽ॒र। र॒याऽ॒र३१उ॒वाऽ॒र३॥ ऊ॒ऽ॒र३४पा॑। य॒यासूर्य॑म॒रोऽ॒र।
च॒याऽ॒र३१उ॒वाऽ॒र३॥ ऊ॒ऽ॒र३४पा॑॥ हि॒न्वानो॑मा॒नुषो॑ऽ॒र३इ॒र्हो॑इ॒॥ आ॒प॒आऽ॒र३१उ॒वाऽ॒र३॥
ऊ॒ऽ॒र३२३४पा॑॥

(दी. ७। प. १०। मा. ७) ३० (श्ले।९१२)

(४९४।१) ॥ वार्त्रघ्नम्। इन्द्रो गायत्रीन्द्रो वृत्रहा॥

स॒होऽ॒र३४इ॒इ। प॒व॒स्व॒॥ य॒आऽ॒र॒वि॒था। इ॒न्द्र॒वृ॒त्राऽ॒र३॥ या॒ह॒न्ताऽ॒र३४वे॑। ओ॒वाऽ॒र३ओ॒वा॥
व॒त्रि॒वाऽ॒र३४साम्॑॥ मा॒ही॒र॒पा। ओ॒ऽ॒र३४हो॒वा। हो॑ऽ॒र३इ॒॥ डा॑॥

(दी. १। प. ११। मा. ५) ३१ (कु।९१३)

(४९५।१) ॥ सोम सामानि त्रीणि। त्रयाणां सोमो गायत्री सोमः॥

अ॒या॒वी॒ती॥ पा॒रि॒स्र॒वा। य॒स्तइ॒न्दा॒उ। मा॒दाइ॒षु॒वा॥ अ॒वा॒हाऽ॒र३न्ना॑ऽ॒र३॥ व॒तोऽ॒र३४वा॑।
नाऽ॒र३४वो॑ऽ॒र३इ॒॥

(दी. ४। प. ७। मा. ४) ३२ (थी।९१४)

(४९५।२)

अयावीता॥ औहोवा। औहोऽ३४इ। औ। होऽ२। वाऽ२३४। औहोवा॥ परिस्त्रवा॥
यस्तइन्दा॥ औहोवा। औहोऽ३४इ। औ। होऽ२। वाऽ२३४। औहोवा॥ मदेऽ२षुवा॥
अवाहन्ना॥ औहोवा। औहोऽ३४इ। औ। होऽ२। वाऽ२३४। औहोवा॥ वर्तीर्नवाऽ२३४५॥

(दी. २१। प. २४। मा. ४) ३३ (घी।९१५)

(४९५।३)

अयाऽ५वा। ताऽ३इपाऽ३रिस्त्रवा॥ यास्तइन्दो। मदाइषूऽ१वाऽ२॥ अवाहाऽ३न्ना। वर्तीर्नवा।
औऽ३होवा। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. ३। प. ९। मा. ४) ३४ (ढी।९१६)

(४९६।१) ॥ भारद्वाजम्। भरद्वाजो गायत्री सोमः॥

परिदुक्षाम्॥ ओइ। सनद्रायीऽ२म्। ओइ। भरद्वाजाऽ२म्। ओइ।
नोअन्धासाऽ२३४॥ स्वानोऽ३४अर्षाऽ३॥ पवोवा। त्राऽ५योऽ६हाइ॥

(दी. २। प. १०। मा. ९) ३५ (जो।९१७)

षोडशतृतीयः, तृतीयः खण्डः॥३॥ दशतिः॥१॥

इति ग्रामे गेय-गाने त्रयोदशः प्रपाठकः॥१३॥

(४९७।१) ॥ वर्षाहरम्। वृषाहरिर्गायत्री सूर्यः॥

अचि॒क्रदाऽ३त्। आचि॒क्रदाऽ३त्। अचि॒क्रदाऽ५दे॥ वृषा॒हराऽ३इ। वर्षा॒हराऽ३इ।
वृषा॒हराऽ५ए॥ महा॒न्मित्राऽ३ः। माहा॒न्मित्राऽ३ः। महा॒न्मित्राऽ५ए॥ नदर्श॒ताऽ३ः। नादर्श॒ताऽ३ः।
नदर्श॒ताऽ५ए॥ स॒सूरि॒याऽ३इ। सा॒सूरि॒याऽ३इ। स॒सूरि॒याऽ५ए॥ णदि॒द्युताऽ३इ।
णादि॒द्युताऽ३इ। णदाऽ५इ॒द्युता३॥ वा॥

(दी. ९। प. १९। मा. १८) १ (धौ११८)

(४९८।१) ॥ वार्शाणि त्रीणि। त्रयाणां वृशो गायत्री सोमः॥

आते॒दक्षाम्॥ मयो॒भूऽ३वाम्। वह्नि॒म्। द्याऽ। वृ॒णीऽ२माऽ२३४हाइ॥ पा॒न्तामाऽ३। ई॒ऽ३या॑॥
पू॒रुऽ२३। स्पृ॒ऽ२हाऽ२३४ओहो॒वा॥ ऊ॒ऽ३२३४पा॑॥

(दी. ४। प. १०। मा. ४) २ (त्री।११९)

(४९८।२)

आते॒दाऽ२३४क्षाम्। मायो॒भूऽ२३४वाम्॥ वह्नि॒मद्या॒वृणी॑। महो॒ऽ२३४हाइ॥ पा॒न्ताऽ३माऽ३।
ई॒ऽ३या॑ऽ३॥ पू॒ऽ२रू॒ऽ२३४ओहो॒वा॥ स्पृ॒ऽ२३४हाम्॥

(दी. ४। प. ८। मा. ५) ३ (दु।१२०)

(४९८।३)

आते॒दक्षम॒यः। भुवो॒ऽ२३४हाइ॥ वह्नि॒मद्या॒वृणी॑। महो॒ऽ२३४हाइ॥
पा॒न्ताऽ१माऽ२॥ पू॒रुस्पृ॒हम्। इडाऽ२३भाऽ३४३। ओ॒ऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ४। प. ९। मा. ५) ४ (धु।१२१)

(४९९।१) ॥ वैरूपे द्वे। द्वयोरिन्द्रो गायत्री सोमः॥

अध्वर्योऽ२३४आ॥ द्विभाइस्सूऽ३ताऽ३म्। सोमाऽ२०पाऽ२३४वी। त्राआऽ१नायाऽ२॥
पुनाऽ२३॥ हीन्द्राऽ३४औहोवा॥ यपातवेऽ२३४५॥

(दी. ५। प. ७। मा. ५) ५ (फु।९२२)

(४९९।२)

अध्वर्यो। होअद्री॥ भिस्सुतम्। औऽ३होऽ३वाऽ३। सामाऽ२०पाऽ२३४वी।
ओत्राआऽ१नायाऽ२॥ पुनाऽ२३॥ हाऽ२इन्द्राऽ२३४औहोवा॥ यपातवेऽ२३४५॥

(दी. ५। प. ९। मा. ५) ६ (भु।९२३)

(५००।१) ॥ तारन्तस्य सामा। तरन्तो गायत्री सोमः॥

तरत्समा॥ दिधावाऽ१ताऽ२३इ। धाराऽ२सूऽ२३४ता॥ स्यआऽ२३।
धाऽ२साऽ२३४औहोवा॥ तरत्समन्दीधावतीऽ२३४५॥

(दी. ६। प. ६। मा. ३) ७ (कि।९२४)

(५०१।१) ॥ सोमसामा। सोमो गायत्री सोमः॥

आपञ्चा॥ सहस्रिणाम्। हुवाइ। हुवाऽ२३हो॥ रयिस्सोमा। सुवीरियाम्। हुवाइ।
हुवाऽ२३होइ॥ अस्मेश्रवा। सिधारया। हुवाइ। हुवाऽ२३होऽ२। वाऽ२३४औहोवा॥
ऊऽ२३४पा॥

(दी. ७। प. १४। मा. ७) ८ (ञ्चु।९२५)

(५०२।१) ॥ सूर्यसामा। सूर्यो गायत्री सूर्यः॥

अनुप्रत्नासआयाऽद्ववाः॥ पदन्नवीयोअक्रमूः॥ रुचाइजना॥ ताऽइसू। हिम्मायेऽइ॥
रीऽइइ४याम्॥

(दी. ४। प. ६। मा. ६) ९ (तू।९२६)

(५०३।१) ॥ दार्ढ्युतानि त्रीणि। त्रयाणां दृढ्युतिर्गायत्री सोमः॥

अर्षा॥ इहा। सोमद्युमाऽइत्तमा। इहा॥ अभाइ॥ इहा। द्रोणानिरोऽइरुवा। इहा॥ सीदा॥
इहा॥ योनौवनाऽइइषुवा॥ इहाऽइ॥

(दी. ६। प. १२। मा. २) १० (खा।९२७)

(५०३।२)

अर्षाहाउ॥ सोमद्युत्तमो। भिद्रोऽइइणा। निराओऽइहो। रूवाऽइइत्॥ सीदाउवा॥
योनौवाऽइने। हिम्मायेऽइ॥ पूऽइइ४वा॥

(दी. ४। प. ९। मा. ४) ११ (धी।९२८)

(५०३।३)

अर्षासोमद्युमा। तमाः। अर्षासोमा॥ द्युमत्तमः। अभिद्रोणाऽइइहा। निरोरुवत्॥
साइदन्योनाऽइइउहाइ॥ वनाइपूऽइइवाऽइइ४३। ओऽइइइ४इइ॥ डा॥

(दी. ७। प. १०। मा. ८) १२ (जै।९२९)

(५०४।१) ॥ वृषकम्। इन्द्रो गायत्री सोमः॥

वृषासोमा॥ द्युमाऽइइआसाऽइइहा। वृषादेवाऽइइहाऽइइहा। वर्षात्राऽइइइ४ताः॥ वृषाधर्माऽइइ॥
ईऽइइया॥ णाइदधिपे। इडाऽइइभाऽइइइ४३। ओऽइइइ४इइ॥ डा॥

(दी. ३। प. १०। मा. ६) १३ (पू। १३०)

(५०५।१) ॥ ऐषम्। इषो गायत्री सोमः॥

इषेपवा॥ स्वधारयोहोवाऽऽहाऽऽ४। औहोवा। मृज्यमाऽऽनोमनीषिभिः॥ इन्द्रोरुचा॥
अभिगौहोवाऽऽहाऽऽ४। औहोवा॥ उप्। इहीऽऽ३४५॥

(दी. १५। प. ९। मा. २) १४ (भा। १३१)

(५०६।१) ॥ श्यावाश्वम्। श्यावाश्वो गायत्री सोमः॥

मन्द्रयासो॥ मधारया। वृषापाऽऽ३वा। स्वदाइवाऽऽ३यूः॥ अव्याऽऽ३ः॥
वाऽऽ२राऽऽ३४औहोवा॥ भिरस्मयूऽऽ१ः॥

(दी. ५। प. ७। मा. ५) १५ (फु। १३२)

(५०७।१) ॥ अयासोमीयम्। अयासोमो गायत्री सोमः॥

अयाऽऽ३सोऽऽ३मसुकृत्यया॥ महात्सन्ना। भ्यवाऽऽ२र्द्धाऽऽ३४थाः॥ मा०दानआयेऽऽ३त्॥
वृषाऽऽ३याऽऽ५साऽऽ६५६इ॥

(दी. २। प. ५। मा. ४) १६ (जी। १३३)

(५०८।१) ॥ आग्नेयम्। अग्निर्गायत्री सोमः॥

आ। औहोहोवाहाइ। अयंविचा॥ षणाइर्हाइता। औहोहोवाहाइ। पवमानाः॥ सचाइताता।
औहोहोवाहाइ॥ हिन्वानआ॥ पियोऽऽ३होऽऽ३। हवोवा। वृऽऽ५होऽऽ६हाइ॥

(दी. ८। प. १२। मा. ९) १७ (ठो। १३४)

(५०९।१) ॥ आयास्ये द्वे। द्वयोरयास्यो गायत्री सोमः॥

३४५ रर २^३ ५ २११ -१-न २
प्रनइन्द्रोए। हीऐहीऽ२३४या॥ महेतुनऐऽ२हीऽ२हीऽ३या॥

र १
ऊर्मिन्नविभ्रदर्षसऐऽ२हीऐऽ२हीऽ३या॥ अभायेऽ३॥ दाऽ२इवाऽ२३४औहोवा॥

२ ११ २ ३ १ १ १
अयासियाऽ२३४५ः॥

(दी. ७। प. ७। मा. १०) १८ (छौ।१३५)

(५०९।२)

३४५ र २ २ ५ २११ -न २ र १
प्रनइन्द्रो। इयाऽ३४३ईऽ३४या॥ महेतुनइयाऽ२ईऽ३या। ऊर्मिन्नविभ्रदर्षसइयाऽ२ईऽ३या॥

१ २ १ ^ ३ ५ र २ २ ११ २ ३ १ १ १
अभायेऽ३॥ दाऽ२इवाऽ२३४औहोवा॥ एऽ३। अयासियाऽ२३४५ः॥

(दी. ६। प. ८। मा. ९) १९ (गो।१३६)

(५१०।१) ॥ भारद्वाजम्। भरद्वाजो गायत्री सोमेन्द्रौ॥

२ ३ ५ ४ ५ २ १ २ १ १ १ २ ३ ५
होईऽ२३४या। [द्विः]। इयाहाइ। अपघ्नाऽ२३न्माऽ२३४५॥ होईऽ२३४या। [द्विः]।

४ ५ २ १ १ ^ ३ ५ र १ र नि १ नि १ १ १
इयाहाइ। वताइ। माऽ२। धाऽ२३४। औहोवा। अपसोमोऽ२अराऽ२व्याऽ२३४५ः॥

२ ३ ५ ४ ५ २ १ २ १ १ १ २ ३ ५
होईऽ२३४या। [द्विः]। इयाहाइ। गच्छन्नाऽ२३इन्द्राऽ२३४५॥ होईऽ२३४या। [द्विः]।

४ ५ २ १ १ ^ ३ ५ र ३ १ १ १
इयाहाइ। स्यनाइः। काऽ२। ताऽ२३४। औहोवा॥ ईऽ२३४५॥

(दी. ७। प. २४। मा. १८) २० (झो।१३७)

विंशतिश्चतुर्थः, चतुर्थः खण्डः॥४॥ दशतिः॥२॥

(५११।१) ॥ आयास्यम्। अयास्यो बृहती सोमः॥

पुनानःसो॥ माऽरधाऽर३४औहोवा। राऽर३४या। अपोवसानोअर्षसि॥ आरान्नाऽरधाः।
योनाइमाऽरर्त्ताऽर३। स्याऽरसाऽर३४औहोवा। दाऽर३४सी॥ उत्सोदेऽरवोऽर३॥
हाऽरइराऽर३४औहोवा॥ ण्याऽर३४याः॥

(दी. १२। प. ११। मा. ८) २१ (चै। १३८)

(५११।२) ॥ माण्डवम्। मण्डुर्बृहती सोमः॥

इयाऽरईऽर३या। पुनानःसोऽर२। मधाराऽर३४या॥ अपोवसानोअर्षाऽर३सी।
आरत्नधायोनिमृतस्यसीदाऽर३सी॥ उत्सोदेवोऽर३॥ हाऽरइराऽर३औहोवा॥
ण्याऽर३याऽर३४५ः॥

(दी. १२। प. ८। मा. ५) २२ (जु। १३९)

(५११।३) ॥ आपदासम्। वसिष्ठो बृहती सोमः॥

पुनानःसोमधारया॥ अपोवसानोअर्ष। स्योऽरहा। ओऽरहा। आरत्नधायोनिमृतस्यसीदा।
स्योऽरहा। ओऽरहा॥ उत्सोदाऽरइवाऽर२। ओऽरहा। ओऽरहा॥ हिरण्याऽर३याऽर३४३ः।
ओऽर३४५इ॥ डा॥

(दी. १०। प. १३। मा. ५) २३ (बु। १४०)

(५११।४) ॥सोमसाम। सोमो बृहती सोमः॥

पुनानःसोऽर५मधारया। आपोऽरवासाऽर२। नोअर्षसी। आराऽरन्नाधाऽर२। योनिमार्त्ताऽर२।
स्यसीदसी॥ उत्सोऽरदाइवाऽर२ः॥ हिरण्याऽर३याऽर३४३ः। ओऽर३४५इ॥ डा॥

(दी. ५। प. १०। मा. ६) २४ (मू। १४१)

(५११।५) ॥ ऐडमायास्यम्। अयास्यो बृहती सोमः।

४ ५ ४ ? ३ ॥ र ३ ॥ ३ ॥ ?
आइपुना॥ नाःसो। मधारया। आपोवसाऽ३१। नोअर्षसी। आरत्नधाऽ३१ः। योनिमृता।
३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ?
स्यसीदसी॥ ऊत्सोदेवाऽ३१ः॥ हिरण्याऽ२३याऽ३४३ः। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ५। प. १२। मा. ६) २५ (फू।१४२)

(५११।६) ॥ माण्डवम्। मण्डुर्बृहती सोमः॥

५ र ४ ५ ५ ५ र र ४ ५ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ? ३ ॥ ३ ॥ ? ३ ॥ ३ ॥
पुनानःसोमधारया। पोवसोवा॥ नोअर्षसि। आरत्न। धाउवाऽ२३। होवाऽ३हाइ।
३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ र ? ३ ॥ र ? ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ? ३ ॥ ३ ॥
योनिमृतस्यसीदसि॥ उत्सोदे। वाउवाऽ२३। होवाऽ३हाइ॥ हिरण्याऽ२३याऽ३४३ः।
ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ११। प. १३। मा. ७) २६ (गो।१४३)

(५११।७) ॥ उद्वत्प्राजापत्यम्। प्रजापतिर्बृहती सोमः॥

५ र ४ ५ ५ ५ र ४ ५ ५ ? ३ ॥ ३ ॥ ? ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ? ३ ॥
पुनानःसोमधा। होऽधरया॥ अपोवसानआहोऽ२। पासीऽ२। आरत्नधायोनिमृतस्यसाहोऽ२इ।
३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥
दासीऽ२॥ उत्साऽ२होऽ१इ। दाऽ२३इवोऽ३॥ हिरोऽ२३४वा। ण्याऽ५योऽ६हाइ॥

(दी. ८। प. १०। मा. ५) २७ (णु।१४४)

(५११।८) ॥ त्रिणि धनमायास्यम्। अयास्यो बृहती सोमः॥

५ र ५ ५ ५ ५ ५ ? ३ ॥ ३ ॥ ? ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ? ३ ॥
पुनानःसोमधाहाउहोवा॥ रायाआऽ२३४पो। वसाऽ२। नआऽ३४५। पाऽ२३४सी॥
३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥
आराऽ३४। औहावा। न्नाधायोनिमृताऽ२। स्यसाऽ३४५इ। दाऽ२३४सी॥ उत्साऽ३४।
औहोवा॥ दाइवोऽ२। हिराऽ३४५॥ ण्याऽ२३४याः॥

(दी. ११। प. १५। मा. ६) २८ (डू।१४५)

(५११।९) ॥ कण्वरथन्तरम्। कण्वो बृहती सोमः॥

पुनानःसोमधारया॥ अपोवसा। नोऽ३आर्षाऽ३सी। आरत्नधायोनिमृतस्यसीदसाऽ२३४ऐही॥
उत्सोदाऽ२३४इवाः॥ हिराऽ३१उवाऽ२३॥ एऽ३। ण्ययआ॥

(दी. ११। प. ८। मा. ६) २९ (गू।९४६)

(५११।१०) ॥ तिरश्ची (द्वि) निधनमायास्यम्। अयास्यो बृहती सोमः॥

पुनानःसोमधारया। एऽ३। औऽ३होऽ३धवाऽ३॥ आपोऽ३। वसाऽ२। नआऽ३४५।
पाऽ३सीऽ२। आरत्नधाः। योनिमृता। स्यासाऽ३आ। औऽ३होऽ३। दाऽ२३४सी॥
उत्साऔऽ३हो॥ दाइवोऽ२। हिराऽ३४५॥ ण्याऽ३याऽ२३४५ः॥

(दी. ४। प. १६। मा. ६) ३० (तू।९४७)

(५११।११) ॥ सदोविशीयम्। प्रजापतिर्बृहती सोमः॥

पुनानःसोमधारयाओहाओहाऽ६ए। औहोऔहोऽ३धवा॥ अपोवसानेअर्ष। स्योऽ३हा।
ओऽ३हाऽ३ए। औऽ३होइ। औऽ३होऽ३वा॥ आरत्नधायोनिमृतस्यसीद। स्योऽ३हा।
ओऽ३हाऽ३ए। औऽ३होइ। औऽ३होऽ३वा॥ उत्सोदाऽ१इवाऽ२ः। ओऽ३हा।
ओऽ३हाऽ३ए। औऽ३होइ। औऽ३होऽ३वा॥ हिर। ण्याऽ२याऽ२३४औहोवा॥
सदोविशाऽ२३४५ः॥

(दी. २०। प. २०। मा. १५) ३१ (मु।९४८)

(५११।१२) ॥ स्ववासिनी द्वे। द्वयोर्जमदग्निर्बृहती सोमः॥

ओऽरहोऽ१। वाओवा॑। ओऽरहोऽ१। वाओवा॑। ओऽरहोऽ१। वाओवा॑ऽ३।

ओऽरवाऽ२३४ओहोवा॑। पुनानःसोमधारया॑॥ पोवसानोर्षसि॑॥ आरत्नधायोनिमृतस्यसीदसि॑॥

उत्सोदेवाः॑। ओऽरहोऽ१। वाओवा॑। ओऽरहोऽ१। वाओवा॑। ओऽरहोऽ१। वाओवा॑ऽ३।

ओऽरवाऽ२३४ओहोवा॑॥ एऽ३। हिरण्ययाऽ२३४५॥

(दी. १७। प. २०। मा. ११) ३२ (जा१४९)

(५११।१३)

ओऽ३। होऽ१। वाओवा॑ऽ३। ओऽरवाऽ२३४ओहोवा॑। पुनानःसोमधारया॑।

पोवसानोर्षसि॑॥ आरत्नधायोनिमृतस्यसीद। स्योऽ३। होऽ१। वाओवा॑ऽ३।

ओऽरवाऽ२३४ओहोवा॑॥ उत्सोदेवोहिरण्ययः॑। इडाऽ२३भाऽ३४३। ओऽ२३३५५॥ डा॥

(दी. १८। प. १५। मा. ७) ३३ (णे१५०)

(५११।१४)

॥ प्लवः॑ वसिष्ठो बृहती सोमः॥

हा। वोऽ३हा। वोऽ३हाऽ३। हा। ओऽ२३४वा। हाइ। पूनानाऽ२३४ःसो। माधाराऽ२३४या॑॥

आपोवाऽ२३४सा। नोअर्षाऽ२३४सी॑॥ आरत्नाऽ२३४धाः॑। योनीमाऽ२३४र्त्ता॑।

स्यासीदाऽ२३४सी॑॥ उत्सोदाऽ२३४इवो। हाइरण्याऽ२३४याः॑। हा। वोऽ३हा। वोऽ३हाऽ३।

हा। ओऽ२३४वा। हाऽ३४। ओहोवा॑॥ एऽ३। अतिविश्वानिदुरितातरेमाऽ२३४५॥

(दी. ५। प. २४। मा. ६) ३४ (भू१५१)

(५११।१५)

॥ रौरवम्। रूरुर्वृहती सोमः॥

पुनानःसोमाऽऽधाराऽऽ३४या॥ आपोवसानोअर्षस्यारत्नधायोनिमृतस्यसाऽऽइदसाइ।
ओहाऽऽउवा॥ उत्सोदेवोहिराऽऽ३हाइ। ओहाऽऽउवा॥ प्यया। औऽऽहोवा। होऽऽइ॥
डा॥

(दी. ११। प. १। मा. ७) ३५ (घे। १५२)

(५११।१६) ॥ यौधाज्यम्। युधाजिद्धहती सोमः॥

पुनाऽऽ३१। नाऽऽसो। मा। धाराऽऽ३४या॥ आपोऽऽ३। वसाऽऽ२। नआऽऽ३४५।
पाऽऽ३४सी। आरत्नधाः। यो। निमृताऽऽ२। स्यसाऽऽ३४५इ। दाऽऽ३४सी॥ उत्साऽऽ२ः॥
दाइवोऽऽ२। हिराऽऽ३४५॥ ण्याऽऽ२३४याः॥

(दी. २। प. १७। मा. ६) ३६ (छू। १५३)

॥ इति ग्रामे गेय-गाने चतुर्दशस्यार्धः प्रपाठकः॥

(५१२।१) ॥ अच्छिद्रम्। विश्वामित्रो बृहती सोमः॥

परीतोषी॥ चताऽऽ३१उवाऽऽ३। सूऽऽ२३४ताम्। सोमोऽऽ२यउत्तमहवीः॥ सोमोयऊ॥
तमाऽऽ३१उवाऽऽ३। हाऽऽ२३४वीः। दधन्वाऽऽयोनिर्योऽऽ२प्सुवन्तरा॥ दधन्वाऽऽयाः॥ नर्योऽऽ२।
आ। प्सुवाऽऽ३१उवाऽऽ३। ताऽऽ२३४रा। सुषावसोममद्रिभीऽऽ२३४ः॥ सुषावसो।
ममाऽऽ३१उवाऽऽ३॥ द्राऽऽ२३४इभीः॥

(दी. १५। प. १७। मा. १३) १ (फि। १५४)

(५१२।२) ॥ रयिष्ठम्। इन्द्रो बृहती सोमः॥

^५ र ^२ र ^२ ? २ ^२ न ^२ २ ^२ न ^२ २ ^२ न ^२ न ^२ २ ^५
 परीतोषी॥ चतासूऽऽताम्॥ औऽऽहोऽऽवा॥ औऽऽहोऽऽवा॥ ईऽऽया॥ ईऽऽयाऽऽ४॥ हा॥
^२ ^१ र ^१ वि ^२ २ ? २ ? ^५ र ^२ ? २ ^२ न ^२ २ ^२
 हाउवा॥ सोमोऽऽयउत्तमह्वीः॥ सोमोयऊ॥ तमाह्वीऽऽवीः॥ औऽऽहोऽऽवा॥
^न २ ^२ न ^२ २ ^न २ ^५ २ ^१ र ^१ वि ^१ २ ^१
 औऽऽहोऽऽवा॥ ईऽऽया॥ ईऽऽयाऽऽ४॥ हा॥ हाउवा॥ दधन्वाश्र्योनर्योऽऽप्सुवन्तरा॥
^५ र ^१ वि ^१ २ ^१ २ ^२ न ^२ २ ^न २ ^२ न ^२ २
 दधन्वाश्र्याः॥ नर्योऽऽ२॥ आ॥ प्सूऽऽआन्ताऽऽरा॥ औऽऽहोऽऽवा॥ औऽऽहोऽऽवा॥ ईऽऽया॥
^न २ ^५ २ ^१ र ^१ र ^३ ^५ र ^२ ? २ ^२
 ईऽऽयाऽऽ४॥ हा॥ हाउवा॥ सुषावसोममद्रिभीऽऽ२३४ः॥ सुषावसो॥ ममाद्रीऽऽभाइ॥
^न २ ^२ न ^२ २ ^न २ ^५ २ ^२ २ ^५
 औऽऽहोऽऽवा॥ औऽऽहोऽऽवा॥ ईऽऽया॥ ईऽऽयाऽऽ४॥ हा॥ हाउवाऽऽ३॥ ऊऽऽ२३४पा॥

(दी. १५। प. ३८। मा. १३) २ (ब्लि।९५५)

(५१२।३) ॥ भारद्वाजे द्वे। द्वयोर्भरद्वाजो बृहती सोमः॥

^५ र ^२ र ^२ र ? ^२ न ^२ २ ^३ र ^२ न ^२ २
 औहोइपरीतोषी॥ चतासुतम्॥ औऽऽहोइ॥ औहोइ॥ आऽऽ३॥ औहोऽऽवा॥
^१ र ^१ वि ^१ २ ? १ २ ^२ न ^२ २ ^३ र ^२ न ^२ २
 सोमोऽऽयउत्तमह्विः॥ औऽऽहोइ॥ औहोइ॥ आऽऽ३॥ औहोऽऽवा॥
^१ र ^२ वि ^१ २ १ र ^२ न ^२ २ ^३ र ^२ न ^२ २
 दधन्वाश्र्योनर्योऽऽप्सुवन्तरा॥ औऽऽहोइ॥ औहोइ॥ आऽऽ३॥ औहोऽऽवा॥
^१ र ^२ र ^२ न ^२ २ ^३ र ^१ ५ ^५
 सुषावसोममद्रिभिः॥ औऽऽहोइ॥ औहोइ॥ आऽऽ२३४॥ उहुवाऽऽहोउ॥ वा॥

(दी. २०। प. २२। मा. १४) ३ (फी।९५६)

(५१२।४)

^५ ^५ र ^१ वि ^१ ^३ र ^३ र ^३ ^२ न ^२
 पा॥ र्येपारी॥ तोषिधताऽऽसुतम्॥ आउवाऽऽ२३॥ हाउहाउ॥ होऽऽवा॥
^१ र ^१ वि ^१ २ ? १ २ ^३ र ^३ र ^३ ^२ न ^२ ^१ र ^२ वि ^१ २ २
 सोमोऽऽयउत्तमह्विः॥ आउवाऽऽ२३॥ हाउहाउ॥ होऽऽवा॥ दधन्वाश्र्योनर्योऽऽप्सुवन्तराउ॥
^३ र ^३ र ^३ ^२ न ^२ ^१ र ^२ ^३ र ^३ र ^३ ^२ न ^२ ३ २
 वाऽऽ२३॥ हाउहाउ॥ होऽऽवा॥ सुषावाऽऽ२३सोऽऽ३॥ हाउहाउ॥ होऽऽवा॥ ममा॥
^१ ^५ ^५ ^५
 द्राऽऽ२३४इभाइ॥ उहुवाऽऽहोउ॥ वा॥

(दी. १६। प. २१। मा. १७) ४ (के।१५७)

(५१२।५) ॥ आभीशवे द्वे। द्वयोरभीशुर्बृहती सोमः॥

५ र र र र ५ र १ अ २ ३ ४ ५ ६
परीतोषिधतासुतम्। ए॥ सोमोयउऽऽत्तामश्हाविः। दाऽऽ३४था। हाऽऽ३४॥

५ र र र अ २ ३ ४ ५ ६ १ र २ ३ ४ ५ ६
न्वाश्वोनर्योअप्सूअन्तरा॥ सूऽऽ३४षा। हाऽऽ३४॥ वासोममोऽऽ३४वा। द्राऽऽ३४भोऽऽ३४हा॥

(दी. १। प. १०। मा. ९) ५ (नो।१५८)

(५१२।६)

५ र ५ ५ र ५ र ५ र १ अ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८
परीतोषिधतासुतम्। ए। ए॥ सोमोयउऽऽत्तामश्हावीः॥ दाऽऽ३४था। हाऽऽ३४हा॥

५ र र र अ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ १ र २ ३ ४ ५
न्वाश्वोनर्योअप्सूअन्तरा॥ सूऽऽ३४षा। हाऽऽ३४हा॥ वासोममोऽऽ३४वा।

५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२
द्राऽऽ३४भोऽऽ३४हा॥

(दी. १। प. ११। मा. ९) ६ (तो।१५९)

(५१२।७) ॥ माण्डवे द्वे। द्वयोर्मण्डुर्बृहती सोमः॥

५ र ५ ५ र ५ र ५ र १ अ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८
परीतोषिधतासुतम्। इहा॥ सोमोयउत्तमश्हाऽऽ३४वीः। इहा।

५ र र र १ अ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२
दधन्वाश्वोनर्योअप्सुवन्ताऽऽ३४रा। इहा॥ सुषावाऽऽ३४सो। इहा॥ ममाऽऽ३४।

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२
द्राऽऽ३४भाऽऽ३४ओहोवा॥ ईऽऽ३४हा॥

(दी. ११। प. ११। मा. ६) ७ (कू।१६०)

(५१२।८)

४ ऋ ५ र र ऋ र २ ? २ ? २ २ २ ४ ५
 इहा। परीतोषिधतासुतम्। इहा॥ सोमोयउत्तमंहाऽऽ३वीः। इहाउवाऽऽ। ऊऽऽ४पा।
 २ ऋ र र २ ? २ ? २ २ २ ४ ५ २ ऋ २ ? २
 दधन्वाऽयोऽनर्योअप्सुवन्ताऽऽ३रा। इहाउवाऽऽ। ऊऽऽ४पा॥ सुषावाऽऽ३सो। इहाउवाऽऽ॥
 २ ४ २ ? २ ? २ २ २ ४ ५
 ऊऽऽ४पा। ममद्राऽऽ३इभीः। इहाउवाऽऽ॥ ऊऽऽ३३४पा॥

(दी. ९। प. १५। मा. १०) ८ (श्लो। ९६१)

(५१२।९) ॥ अभीवाससाम। अङ्गिरसो बृहती सोमः॥

४ ऋ ५ र ४ ऋ र २ ? २ ३ २ ? २ ३ ४ ३ ४
 परीतोषिधतासुताम्॥ सामोयउ। तमंहावाइः। दाधाओऽऽ३४वा। ऊऽऽ३४पा।
 ऋ र र २ ? २ २ ऋ २ ? २ ? २ ४
 न्याऽयोऽनर्योअप्सुवन्ताऽऽ३रा॥ सुषावाऽऽ३सो॥ मामद्रिभिः। इडाऽऽ३भाऽऽ४३।
 ओऽऽ३४५इ॥ डा॥

(दी. ९। प. ११। मा. ८) ९ (तौ। ९६२)

(५१२।१०) ॥ परिवाससाम। अङ्गिरसो बृहती सोमः॥

४ ऋ ५ र ४ ४ ४ ऋ र २ ? २ ? २ ? २ २ २
 परीतोषिधतासुतम्। ओऽऽ६वा। सोमोऽऽयउत्तमंहाविः। दधान्वाऽयोऽऽ। होऽऽ३हाइ।
 ? र २ ? २ २ २ २ २ ? २ ? २ २
 नर्योऽऽप्सुवन्तरा॥ सुषावासोऽऽ३। हाऽऽ३हा॥ मामद्रिभिः। इडाऽऽ३भाऽऽ४३४।
 ओऽऽ३४५इ॥ डा॥

(दी. ७। प. १२। मा. ६) १० (श्लो। ९६३)

(५१२।११) ॥ वैणवम्। वेणुर्बृहती सोमः॥

४ ऋ ५ र ४ ऋ र २ ? २ ? २ ?
 परीतोषिधि। ताऽऽ५सुताम्॥ सोमोयउत्तामाऽऽ२१ऽऽ२म्। हावीऽऽ२ः।
 ऋ र र २ ? २ २ २ २ २ ? २ ? ४
 दधन्वाऽयोऽनर्योअप्सुवाऽऽ२१२॥ ताराऽऽ२॥ सुषावाऽऽ३सोऽऽ३॥ ममोऽऽ३४वा।
 ४ ४
 द्राऽऽ५इभोऽऽ६हाइ॥

(दी. ८। प. ९। मा. ७) ११ (ढै। १६४)

(५१२।१२) ॥ सोमऋतवीयम्, माण्डवं वा। सोमऋतुर्बृहती सोमः॥

१ र र १ र १ र १ र १ र १ र १ र १ र १ र
परीतोषाऽरद्ध। चतासुताऽरम्। ऐहीऽर। ऐहीऽर। ऐहिहाऽरद्ध। उवाऽरद्ध। ईऽरयां॥
१ र १ र १ र १ र १ र १ र १ र १ र १ र
सोमोयऊऽर। तमःहवीऽरः। ऐहीऽर। ऐहीऽर। ऐहिहाऽरद्ध। उवाऽरद्ध। ईऽरयां॥
१ र १ र १ र १ र १ र १ र १ र १ र १ र
दधन्वाःयोनर्योऽर। प्सुवन्तराऽर। ऐहीऽर। ऐहीऽर। ऐहिहाऽरद्ध। उवाऽरद्ध। ईऽरयां॥
१ र १ र १ र १ र १ र १ र १ र १ र १ र
सुषावसोऽर। ममद्रिभाऽरद्ध। ऐहीऽर। ऐहीऽर। ऐहीहाऽरद्ध। उवाऽरद्ध। ईऽरयाऽर४३।
१
ओऽर३४५६॥ डा॥

(दी. २०। प. ३०। मा. १४) १२ (मी। १६५)

(५१२।१३) ॥ गूर्द्धः। प्रजापतिः सोमः॥

३ २ ३ ५ ३ २ ३ २ ३ २ ३ ५ २ र र ३ २ ३ २ ३ २ ३ ५ ३ २ ३ ५ ३ २ ३ ५
उपाउपा। उपाऽर१। उपाउपा। परीतोषिधतासुतम्॥ उपाउपा। उपाऽर१। उपाउपा।
२ र १ ३ २ ३ २ ३ २ ३ ५ ३ २ ३ २ ३ २ ३ २ २ २ ३ २
सोमोयउत्तमःहविः॥ उपाउपा। उपाऽर१। उपाउपा। दधन्वाःयोनर्योऽरप्सुवन्तरा॥
३ २ ३ ५ ३ २ ३ २ ३ २ ३ ५ २ र र ३ २ ३ २ ३ २ ३ ५ ३ २ ३ ५ ३ २
उपाउपा। उपाऽर१। उपाउपा। सुषावसोममद्रिभिः। उपाउपा। उपाऽर१।
३ २ ४ ३ ५
उपाऽर३ऊऽरपाऽर५६॥ ऊऽर३४पा॥

(दी. ११। प. २०। मा. १४) १३ (ङ्गी। १६६)

(५१२।१४)॥ प्रतोदः, अंगिरसां गोष्ठः। अंगिरसो बृहती सोमः॥ पुश्ति। अंगिरसो बृहती

सोमः। महारौरवम्। रुरुर्बृहती सोमः। कश्यपो बृहती सोमः॥

५ १ र र २ र १ ३ १ १ १ ५
हाउऽ(३)वा। परीतोषिधतासुतम्। उपाऽर३४५ ॥१॥ (१५) हाउहाउहाउवा।

१ र र २ र १ ३ १ १ १ ५ १ र र २ र १
परीतोषिधतासुतम्। इहा। उपाऽर३४५ ॥२॥ (१६) हाउहाउहाउवा। परीतोषिधतासुतम्।

श्रवोबृहत्। उपाऽ२३४५ ॥३॥ (१७) हाउहाउहाउवा। परीतोषिधतासुतम्॥ (१८)

सोमोऽ२यउत्तमहविः॥ दधन्वाऽयोनर्योऽ२प्सुवन्तरा॥ सुषावसोऽ२३४५। हाउऽ(३)वा॥

एऽ३। ममद्रिभीऽ२३४५ः॥

(दी. २०। प. ११। मा. २३) १४ (भि।१६७)

(५१२।१५) ॥ महायौधाजयम्। युधाजिद्धहती सोमः॥

हाओऽ२३४वा। हाओऽ२३४वा। हाऽ३ओऽ२३४वा। हाउवा। परीतोषिधतासुतम्॥

सोमोऽ२यउत्तमहविः॥ दधन्वाऽयोनर्योऽ२प्सुवन्तरा॥ सुषावसोममा॥ हाओऽ२३४वा।

हाओऽ२३४वा। हाऽ३ओऽ२३४वा। हाउवाऽ३॥ द्राऽ३इभीऽ२३४५ः॥

(दी. ११। प. १३। मा. १३) १५ (गि।१६८)

(५१३।१) ॥ आश्वानि चत्वारि (आशम)। चतुर्णामश्वो बृहत्यश्वः ईश्वरो वा॥

आऽ२३४सो॥ मस्वानोऽ३आ। द्राइभाओऽ२३४वा। तिरोवाराऽ२णिअव्ययाऽ२३॥

जानाओऽ२३४वा। नापाओऽ२३४वा॥ रिचमवोऽ२र्विशद्धरीऽ२३ः॥ सादाओऽ२३४वा।

वानाओऽ२३४वा॥ षुदाऽ५ध्रिय्याइ। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. ६। प. १२। मा. ११) १६ (खा।१६९)

(५१३।२) ॥ सोम साम॥

हावासोमस्वा॥ नोअद्राऽ२३४इभीः। तिरोवाऽ२३४रा। णियाऽ३१उवाऽ२३। व्याऽ२३४या॥

जनोनाऽ२३४पू॥ राइचामूऽ२३४वोः। विशाऽ३१उवाऽ२३। हाऽ२४रीः॥ सदोवाऽ२३४ने॥

षुदाऽ३१उवाऽ२३॥ ध्रीऽ३४५पे॥

(दी. ३। प. १२। मा. ९) १७ (ठो।१७०)

(५१३।३)

आसोमस्वानोअद्रिभाइः॥ तिरोवाराणिआव्याऽश्याऽ२। जनोनपुरिचामूऽश्वोऽ२ः।
विशाद्धाऽश्रीऽ२ः॥ सदोवनाइ॥ पूऽ२दधिषोऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ९। प. ७। मा. ८) १८ (थै।१७१)

(५१३।४)

आसोमस्वानोअद्रिभिः। तिरोवाऽ३राणिअव्यया॥ जनोनपुरिचमुवोर्विशद्धरिः। औऽ२। हुवाइ।
होऽ३वा॥ सदोवनेषुदौऽ२। हुवाइ। होऽ३वा॥ धिषा। औऽ३होवा। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. १०। प. १३। मा. ७) १९ (बै।१७२)

(५१४।१) ॥ त्रीणिधनमाग्नेयम्। अग्निर्बृहती सोमः॥

प्रसोमदा॥ वावीताऽ२३४याइ। सिन्धूर्नापाइप्यआऽ३१उवाऽ२३। णाऽ२३४सा॥
आशोःपाऽ२३४या॥ सामदाइरोनजाऽ३१उवाऽ२३। गृऽ२३४वीः॥ आच्छाकोऽ२३४शाम्॥
मधाऽ३१उवाऽ२३॥ श्रूऽ२३४ताम्॥

(दी. ३। प. १०। मा. १०) २० (णौ।१७३)

(५१४।२) ॥ अग्नेर्वैश्वानरस्य साम। अग्निर्बृहती सोमः॥

प्रसोमदेववी। तयोऽ२३४हाइ॥ सिन्धूर्नपिप्येआ। णसोऽ२३४हाइ॥ आशोःपाऽ२३४वा।
पायाओऽ२३४वा॥ सामदिरोनजा। गृऽ२३४। वीऽ६र्हाइ॥ आच्छाओऽ२३४वा।
कोशाओऽ२३४वा॥ मधूऽ५श्रुताम्। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. ७। प. १४। मा. १०) २१ (झौ।१७४)

(५१४।३) ॥ द्विहिङ्कारं वामदेव्यम्। वामदेवो बृहती सोमः॥

प्रसोमाऽऽदेववीतयाइ॥ साङ्न्धुर्नपिप्येअर्णसाश्शोःपयसामदिरोनजौहोऽऽ। हिम्माऽऽ॥
गृऽऽऽवीः॥ अच्छाकोशांमधौहोऽऽ। हिम्माऽऽ॥ श्रुताम्। औऽऽऽहोवा। होऽऽइ॥ डा॥

(दी. ११। प. १०। मा. ६) १२२ (डू।१७५)

(५१४।४)

प्रसोमदेववीतये। सिन्धुः। नपाऽऽऽओहोवा॥ प्येअर्णसाऽऽ। हाऽऽऽउवाऽऽऽ। ऊऽऽऽपा॥
अश्शोऽऽऽपया। औहोवाहाइ॥ सामदिरो। नजागृविः। हाऽऽऽउवाऽऽऽ। ऊऽऽऽपा॥
अच्छाऽऽकोशम्। औहोवाहाइ॥ मधूऽऽऽश्रूऽऽऽताऽऽऽऽम्॥ ऊऽऽऽऽऽ॥

(दी. ११। प. १६। मा. १०) २३ (कौ।१७६)

(५१४।५) ॥ निषेधः। अंगिरसो बृहती सोमः॥

प्रसोमदाइवाऽऽदेवीतयाइ॥ सिन्धूर्नपाइ। प्येअर्णसाऽऽ। इहाऽऽ॥ आश्शोऽऽऽपाया।
हाहोऽऽऽऽहा। सामदिरो। नजागृऽऽऽवीः। इहाऽऽ॥ अच्छाऽऽकोशाम्। हाहोऽऽऽऽहा॥
मधूऽऽऽश्रूऽऽऽताऽऽऽऽम्॥ हेऽऽऽऽऽ॥

(दी. ५। प. १३। मा. ७) २४ (बे।१७७)

(५१५।१) ॥ सोम सामानि षट्। षण्णां सोमो बृहती सोमाश्चौ॥

हाउसोमाः॥ उष्वाणऽऽऽसोतृऽऽऽभीऽऽऽ। आधिष्णुभिरवीऽऽऽनाम्। आश्चौऽऽऽहो॥
येवहरितायाताइधाऽऽऽरायाऽऽ॥ मन्द्रायाऽऽऽयाऽऽऽ। हाओवा॥ तिधारयाऽऽऽऽऽ॥

(दी. ८। प. ८। मा. ६) १५ (डू।१७८)

(५१५।२)

सोमऊऽऽष्वाणःसोतृभाइः॥ आधिष्णुभिरवीनाम्। आश्वयेऽऽऽऽवा।

हरितायातिधाऽऽराऽऽया॥ मन्द्रायाऽऽऽऽया॥ ताऽऽऽऽइधा। रया। औऽऽहोवा। होऽऽइ॥

डा॥

(दी. ७। प. १०। मा. ६) २६ (जू।१७९)

(५१५।३)

सोमउष्वाणःसोतृभिः। एऽऽ। अधी॥ णुभिराऽऽऽऽवाऽऽऽ। वीऽऽऽऽनाम्॥ आऽऽऽऽ॥

येवहरितायातिधाऽऽऽऽवाऽऽऽ। राऽऽऽऽया॥ माऽऽऽऽन्द्रा॥ पायातिधाऽऽऽऽऽऽवाऽऽऽ॥

राऽऽऽऽया॥

(दी. ७। प. ११। मा. ६) २७ (चू।१८०)

(५१५।४)

सोमउष्वाणःसोतृभिः। एऽऽ। अधी॥ णुभिरवीऽऽ। नाम्। आश्वयेवा। हरितायाऽऽ।

ताइधारया॥ मान्द्रयायौवा॥ तीऽऽऽऽधा। रया। औऽऽहोवा। होऽऽइ॥ डा॥

(दी. ७। प. १४। मा. ५) २८ (झू।१८१)

(५१५।५)

^{४२ ५} ^{२ ४ ५ ४} ^{५ ४ ५ ४ ५ ४} ^{१ २ १ २ १ २} ^१ ^२
 सोमउष्वाणःसोतृ। भाइ। अधिष्णुभिरवी। नाम्॥ आधिष्णुभिरवीऽ२। नाम्। अश्वयेवा।
^{२ १ २ २} ^२ ^३ ^५ ^{२ ४ ३} ^५ ^{३ २ ४ ५}
 हरितायाता२३इधा। रयाऽ३१उवाऽ२३॥ माऽ२३४०द्रा॥ यायातीऽ२३४धा॥ रयाओहोवा।
^५
 होऽ५इ॥ डा॥

(दी. ९। प. १४। मा. ८) २९ (धै।९८२)

(५१५।६)

^{३ ४} ^{२ ३ ४} ^५ ^५ ^१ ^{५ ४ ५ ४} ^{१ २} ^{२ २}
 सोमउष्वाणःसोतृभिः। औऽ३होऽ३इ। आ२३४। धिष्णुभिरवीनाम्॥ आश्वयेवहरिताया।
^१ ^{२ ४} ^३ ^५ ^{२ १ २ २ ४} ^२ ^५ ^{३ ४}
 तिधारायौ। वाओऽ२३४वा॥ मन्द्रयायातीऽ३धा॥ हिम्ऽ३स्थिहिम्ऽ३४३।
^{३ ४} ^५
 राऽ२३४योऽ६हाइ॥

(दी. ८। प. १०। मा. ८) ३० (णै।९८३)

॥ इति ग्रामे गेय-गाने चतुर्दशः प्रपाठकः॥१४॥

(५१६।१) ॥ वैष्णवे द्वे। द्वयोर्विष्णुर्बृहती सोमः॥

तवाह॑सो॥ मरा॑ऽरणा॑। रण॑। सख्य॑इन्दो॒दिवा॑ऽइदिवा॑इ। दिवे॑।

पुरू॑णिबभ्रो॒निचर॑न्तिमा॑ऽमवा॑। अव॑॥ परि॑धी॒रतिता॑ऽइहा॑ऽइ॒आऽइ॑हा॑ हा॑ऽइ॒३४।

औ॒होव॑॥ ऊ॑ऽइ॒३४पा॑॥

(दी. ८। प. १२। मा. ६) १ (डू। १८४)

(५१६।२)

तवा॑। तवा॑॥ अह॑सोमरा॒रण॑। सख्या॑ईऽइ॒०दो॑। दिवा॑औऽइ॒हो॑। दा॒इवे॑ऽइ॒

पुरू॑णिबभ्रो॒निचर॑न्तिमा॑ऽमा॑ऽइ॒वा॑॥ परा॑औऽइ॒हो॑॥ धा॒इर॑तितो॑ऽइ॒३४वा॑।

आ॑ऽइ॒होऽइ॑हा॑इ॒॥

(दी. ५। प. १०। मा. ७) २ (मे। १८५)

(५१६।३) ॥ आंगिरसानि त्रीणि। त्रयाणामंगिरसो बृहती सोमः॥

तवाह॑सोमा॑ऽदर॑रणा॑। सा॒ख्याई॑ऽइ॒३४०दो॑। दिवे॑दा॑ऽइ॒३४इ॒वे॑। पू॒रु॒णिबभ्रो॒निचर॑न्ते॒माम्।

आ॒वाऽइ॒३४हा॑इ॒॥ पा॒री॒धा॒इ॒रा॑॥ ति॒तो॑ऽइ॒३४वा॑। आ॑ऽइ॒होऽइ॑हा॑इ॒॥

(दी. ६। प. ८। मा. ७) ३ (गे। १८६)

(५१६।४)

तवाह॑सोम॒रौ॑। हो॑ऽइ॒रणा॑॥ सा॒ख्यइ॑न्दो॒ऽइ॒दिवा॑ऽइ॒३४इ॒दी॑ऽइ॒३४वे॑।

पू॒रु॒ऽइ॒णा॒इ॒वा॑ऽइ॒। भ्रो॒निच॑रा॒ऽइ॒। ति॒मा॑ऽइ॒३४इ॒म्। आ॑ऽइ॒३४वा॑॥ पा॒री॒ऽइ॒धा॒इ॒रा॑ऽइ॒॥

ति॒ता॑ऽइ॒३४इ॒॥ ई॑ऽइ॒३४ही॑॥

(दी. ४। प. १२। मा. ५) ४ (धु।१८७)

(५१६।५)

३ ५ ३ ५ ५ र ५ ३ ३ ५ ५ ५ ३ ? र ३ ५ ३
तवाह५सोमरारण। सख्यइन्द्रोदिवेदिवाइ॥ सख्यइन्द्रोदिवेदाऽ२३इवे।

५ ५ र ३ ५ ३ ? ३ ३ ? ३ ३
पुरूणिबभ्रोनिचरन्तिमामाऽ२३वा॥ पराइधाऽ२३इ५रा॥ तिता५२३इहाऽ३४३इ।

३ ? ३
ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. १०। प. ८। मा. ९) ५ (बो।१८८)

(५१७।१) ॥ औक्षोरंध्राणि त्रीणि (स्वारम्)। त्रयाणामुक्षोरन्ध्रो बृहती सोमः॥

५ र ३ ३ ५ ३ ३ ५ ३ ३ ५ ३ ३ ५ ३ ३ ५ ३
मृज्यमानाः॥ सुहस्तियाऽ३। सामूऽ३द्राइवा। चमिन्वसाऽ३इ। रायीऽ३०पाइशा।

३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३
गंबहुलाऽ३म्। पूरुऽ२स्पृऽ२३४हाम्॥ पवमा। ना। ओऽ३हो॥ भियोऽ२३४वा।

३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३
पाऽ५सोऽ६हाइ॥

(दी. २। प. १२। मा. ७) ६ (छे।१८९)

(५१७।२)

५ र ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३
मृज्यमानाः॥ सुहस्तायाऽ२। समुद्रेवा। चामिन्वासाऽ२३४इ। रयाऽ३४इपिशा।

३
गंबहुलपूरुस्पृहाऽ२म्॥ पवाऽ२३॥ माऽ२नाऽ२३४ओहोवा॥ भियाऽ२र्षसीऽ२३४५॥

(दी. ६। प. १। मा. ५) ७ (घु।१९०)

(५१७।३)

५ र ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३
मृज्यमानाः॥ सुहा। स्तिया। साऽ१मूऽ२द्राऽवाऽ२। चमि। न्वसाइ। राऽ१थीऽ२०पाइशाऽ२।

३
गंबहुलपुरु। स्पृहाम्॥ पाऽ१वाऽ२मानाऽ२३॥ भाऽ२याऽ२३४ओहोवा॥ पाऽ२३४सी॥

(दी. ३। प. १२। मा. ६) ८ (टू।१११)

(५१७।४) ॥ आग्नेयानि त्रीणि। त्रयाणामग्निर्बृहती सोमः॥

मृज्याऽदृए॥ मानःसुहस्तियाऔऽइहो। समुद्रेवाचमिन्वसाऔऽइहो।

रयिंपिपंगंबहुलंपुरुस्पृहाऔऽइहो॥ पवमाऽइनाऽइ॥ भियोऽइइवा। पाऽइसोऽइहाइ॥

(दी. ३। प. ७। मा. ५) ९ (टू।११२)

(५१७।५)

मृज्यमानःसुहस्त्यो। वाहाइ॥ समुद्राइवा। चमीऽइन्वाऽइइसी। रयोऽइइइम्पिशा।

गंबहुलम्। पूरुस्पृहाऽइइम्॥ पवाऽइइमानाऽइ॥ भियोऽइइवा। पाऽइसोऽइहाइ॥

(दी. २। प. १०। मा. ६) १० (जू।११३)

(५१७।६)

मृज्यमानाऽइःसुहस्तिया॥ समूऽइइद्राइवाऽइ। चमाऽइइन्वासीऽइ।

रयिंपिपंगंबहुलंपुरुस्पृहाऔऽइहो॥ पवमाऽइनाऽइ॥ भियोऽइइवा। पाऽइसोऽइहाइ॥

(दी. १। प. ७। मा. ४) ११ (खी।११४)

(५१७।७) ॥ ऐडमौक्षोरन्ध्रम्। उक्षोरन्ध्रो बृहती सोमः॥

मृज्यमानःसुहस्त्या। समुद्रेवोवा। चामिन्वसि। रायिंपिशाऽइ। हाऽइहा। गंबहुलंपुरुस्पृहम्॥

पवमानाऽइ। हाऽइहा॥ भियर्पाऽइसाऽइइइ॥ ओऽइइइइइ॥ डा॥

(दी. ३। प. ११। मा. ३) १२ (टि।११४)

(५१७।८) ॥ वाजजित्। प्रजापतिर्बृहती सोमः॥

^{५ ४ ५} मृज्यमानःसुहा॥ ^४ स्तियाऽ२। ^१ समूऽ२हो। ^१ द्रेवाऽ२हो। ^५ चामिन्वसाइ। ^५ रयाऽ२इहोइ।
^१ पिशाऽ२हो। ^१ गम्बहुलाम्। ^५ पूरुस्पृहाम्॥ ^१ पवाऽ२हो। ^१ मानाऽ२हो॥ ^५ भीयर्षसाऽ३१उवाऽ२३॥
^५ वाजीजिगीऽ३वा५ऽ१॥

(दी. ८। प. १३। मा. ६) १३ (डू।९९६)

(५१८।१) ॥ वैश्वदेवे द्वे। द्वयोर्विश्वेदेवा बृहती सोमः॥

^५ हाऽ३हाइ। ^५ अभिसोमासऽ३आयाऽ१वाऽ२३ः॥ ^५ हाऽ३हाइ। ^५ पवन्तेमदिऽ३याम्माऽ१दाऽ२३म्॥
^५ हाऽ३हाइ। ^५ समुद्रस्याधिविष्टपेमऽ३नाइषाऽ१इणाऽ२३ः॥ ^५ हाऽ३हाइ।
^५ मत्सरासोमऽ३दाच्यूऽ१ताऽ२३ः। ^५ हाऽ३हाऽ३४३इ। ^५ ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ७। प. ११। मा. १३) १४ (चि।९९७)

(५१८।२)

^{५ ५ ५ ५} आभीसोमा॥ ^५ सआऽ३१उवाऽ२३। ^५ याऽ२३४वाः॥ ^{५ ५ ५ ५} पावन्ताइमा॥ ^५ दियाऽ३१उवाऽ२३।
^५ माऽ२३४दाम्॥ ^{५ ५ ५ ५} सामुद्रस्या॥ ^५ धिविष्टापेमनाऽ३१उवायेऽ३। ^५ पीऽ२३४णाः॥ ^{५ ५ ५ ५} मात्सारासाः॥
^५ मदाऽ३१उवाऽ२३॥ ^५ च्यूऽ२३४ताः॥

(दी. १। प. १२। मा. ११) १५ (खा।९९८)

(५१८।३) ॥ इन्द्रसामनी द्वे। द्वयोरिन्द्रो बृहती सोमः॥

^५ अभिसोऽ३मासआयवाः॥ ^५ पवन्तेमदियम्म। ^५ दा। ^५ औऽ३हो। ^५ आऔऽ३हो॥
^५ समुद्रस्याधिविष्टपेमनीषि। ^५ णाऽ। ^५ औऽ३हो। ^५ आऔऽ३हो। ^५ मत्सरासोमदच्यु। ^५ ताऽ।
^५ औऽ३हो। ^५ आऔऽ३होऽ३४३। ^५ ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ८। प. १५। मा. ६) १६ (पू।१११)

(५१८।४)

अभिसोमासआ। होऽध्रयवाः॥ पवन्तेमद्यम्मदम्पवन्तेमा। दियाश्होइ। माऽ२३दाम्॥
समुद्रस्याधिविष्टपेमनीषिणाः। मनाहोइ। पाऽ२३इणाः॥ मत्सरासोमदच्युताः। मदाहोइ।
च्यूऽ२३ताऽ३४३ः। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. १०। प. १३। मा. १२) १७ (बा।१०००)

(५१८।५) ॥ स्वःपृष्ठमांगिरसम्। अंगिरसो बृहती सोमः॥

अभाऽ२इसोमाऽ३४। ओहोऽध्रसआयवाः॥ पवाऽ२०तेमाऽ३४। ओहोऽध्रदियम्मदाम्।
समूऽ२द्रस्याऽ३४। ओहोऽध्रधिविष्टपाइ। ओयेऽ३। माऽ२नाऽ२३४ओहोवा। षीऽ२३४णाः।
ऊऽ२३४पा। ऊऽ२३४पा॥ मत्सरासोऽ२३॥ माऽ२दाऽ२३४ओहोवा॥ च्यूऽ२३४ताः॥

(दी. ११। प. १४। मा. ९) १८ (घो।१००१)

(५१८।६) ॥ इन्द्रसामानि त्रीणि। त्रयाणामिन्द्रो बृहती सोमः॥

ओहोवा। अभिसामासआयवः॥ ओहोवा। पवाऽ२। तेमाऽ३ओऽध्रवाऽ६५६। दियम्मदम्।
समूऽ२। द्रस्याऽ३ओऽध्रवाऽ६५६। धिविष्टपेऽ२मनीषिणाऽ२ः। ओऽ३होऽ३१इ॥ मत्साऽ२।
रासाऽ३ओऽध्रवाऽ६५६॥ मदच्युताऽ२३४५ः॥

(दी. १२। प. १३। मा. ९) १९ (जो।१००२)

(४१८।७)

अभिसोमासआयाऽद्वाः॥ पवाऽ२। तेमाऽ३ओऽ५वाऽ६५६। दियंमदम्। समूऽ२।
द्रस्याऽ३ओऽ५वाऽ६५६। धिविष्टपेऽ२मनीषिणाऽ२ः॥ मत्साऽ२॥ रासाऽ३ओऽ५वाऽ६५६॥
मदच्युताऽ२३४५ः॥

(दी. ८। प. १०। मा. ८) २० (जै।१००३)

(४१८।८)

अभिसोमसआयाऽद्वाः॥ पवन्ताइमा। दियाऽ२०माऽ२३४दाम्। समुद्रस्या। धिविष्टपाइ।
मनाऽ३इषाइणाः॥ मात्सरासोऽ२३॥ माऽ२दाऽ२३४ओहोवा॥ च्यूऽ२३४ताः॥

(दी. ६। प. ९। मा. १०) २१ (घौ।१००४)

(५१९।१) ॥ सोमसाम। सोमो बृहती सोमः॥

पुनानःसोमजागृविरव्याः॥ वारैःपारिप्रियाऽ२ः। ब्रविप्रोअभवोङ्गाइराऽ२३४। स्तमाऽ३॥
माध्वायज्ञाऽ२३म्॥ माऽ२इमाऽ२३४ओहोवा॥ क्षाऽ२३४णाः॥

(दी. १०। प. ७। मा. ८) २२ (फै।१००५)

(५२०।१) ॥ सोमसाम। सोमो बृहतीन्द्रो मरुत्वान्॥

इन्द्रायपा॥ वताऽ२इमादाऽ२ः। सोमोमरुत्वताऽ२इसूताऽ२ः। सा हास्रधारः।
अतिअव्यमाऽ२र्षातीऽ२॥ तमाऽ२इमार्जाऽ२॥ तिआयाऽ२३वाऽ३४३ः। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ५। प. १०। मा. १०) २३ (मौ।१००६)

(५२०।२) ॥ स्वः पृष्ठमांगिरसम्। अंगिरसो बृहतीन्द्रो मरुत्वान्॥

इन्द्रायपा॥ वतेमदाः। सोमोमारूऽऽ। बतेहोऽऽइ। सूताऽऽः। सा हास्रधारः। अतिअव्यमा।
पाताओऽऽ३४वा। ऊऽऽ३४पा॥ तमीहोऽऽइ। मार्जाऽऽ॥ तिआयाऽऽ३वाऽऽ४३ः।
ओऽऽ३४५इ॥ डा॥

(दी. ६। प. १५। मा. १०) २४ (डौ।१००७)

(५२०।३) ॥ सोमसाम। सोमो बृहतीन्द्रो मारुबान्॥

इन्द्रायाऽऽ३पावताइमदाः॥ सोमोमर्खताऽऽइसूऽऽ३ताः। सा सहस्रधारः। अतिअव्यमाऽऽ३।
पाती॥ तमाओऽऽ३होऽऽइ। मार्जा॥ ताऽऽ२याऽऽ३४ओहोवा॥ याऽऽ३४वाः॥

(दी. ६। प. १०। मा. १०) २५ (डौ।१००८)

(५२१।१) ॥ सोमसाम। देवाः देवताः सोमश्च॥

पवस्ववाजसा। इहा॥ ताऽऽ३४माः। अभिविश्वानिवारिया। बश्साऽऽ२मूऽऽ३४ओहोवा।
द्रःप्रथमेविधर्मन्॥ दाइवायेऽऽ३॥ भ्याऽऽ२ःसोऽऽ३४ओहोवा॥ ममत्सराऽऽ१ः॥

(दी. १०। प. १। मा. ६) २६ (भू।१००९)

(५२२।१) ॥ पवित्रम्। आदित्योबृहतीमरुबान्तसोमः॥

पवमानाअसृक्षतपवाइ॥ त्रामतिधारयामरुबन्तोमत्सराइन्द्रीऽऽ३याः॥ हयाः॥ माऽऽ३३इधाम्॥
अभायेऽऽ३। प्राऽऽ२याऽऽ३४ओहोवा॥ सीऽऽ३४चा॥

(दी. ८। प. ७। मा. ८) २७ (ठै।१०१०)

॥ त्रिसप्तति पञ्चमः, पञ्चमः खण्डः॥५॥ दशतिः॥३॥

॥ इति बार्हत्म्॥

(५२३।१) ॥ ओशनानि पञ्च। उशनान्स्त्रिष्टुबन्धः अग्निर्वा॥

ओइप्रतु। इहाऽऽ३१। द्रवा। परिकोऽऽ३। शन्निषीदा॥ ओइनृभिः। इहाऽऽ३१। पुना।
नोऽऽअभि। वाजमर्षा॥ ओअश्वम्। इहाऽऽ३१। नबा। वाऽऽजिनम्। मर्जयन्ताः॥
ओअच्छ। इहाऽऽ३१। बर्हाइः। रशना। भाऽऽ३४३इः। नाऽऽ३याऽऽ५०ताऽऽ६५६॥

(दी. १। प. २१। मा. १४) २८ (की।१०११)

(५२३।२)

प्रतु। एप्रतू। द्रवा। द्रवा। परिकोऽऽ३। शन्निषीदा॥ नृभिः। एनृभीः। पुना। पुना। नोऽऽअभि।
वाजमर्षा॥ अश्वम्। एअश्वाम्। नबा। नबा। वाऽऽजिनम्। मर्जयन्ताः॥ अच्छ। एअच्छा।
बर्हाइ। बर्हाइः। रशनाभिः। नयेऽऽ३४। हियाऽऽ६हाउवा॥ ताऽऽ२३४५इ॥

(दी. १। प. २६। मा. १५) २९ (कु।१०१२)

(५२३।३) ॥ जानस्याभीवर्तो द्वौ॥

प्रतुद्रा॥ वापरिकोशाम्। निषीऽऽ३दा। साइदा। ओहोइ। ओहोऽऽ३वा। नृभिःपुनानोअभिवा।
जमाऽऽ२३र्षा। आर्षा। ओहोइ। ओहोऽऽ३वा। अश्वन्नबावाजिनम्मा। जयाऽऽ२३०ताः। यान्ता।
ओहोइ। ओहोऽऽ३वा॥ अच्छाबर्हाइः॥ रशनाभिः। नयेऽऽ३४। हियाऽऽ६हाउवा॥
ताऽऽ२३४५इ॥

(दी. १३। प. २१। मा. १२) ३० (टा।१०१३)

(५२३।४)

हाओऽदहा। उहुवाऽ३४। ओऽदहा। प्रतुद्रवा। परिकोऽ३। शन्निषीदा॥ नृभाःपुना।
 नोऽ३अभि। वाजमर्षा॥ अश्वन्नत्वा। वाऽ३जिनम्। मर्जयन्ताः॥ हाओऽदहा। उहुवाऽ३४।
 ओऽदहा। अच्छाबर्हाइः। रशना। भाऽ३४३इः। नाऽ३याऽ५०ताऽ६५६इ॥

(दी. ४। प. १९। मा. ११) ३१ (धा१०१४)

(५२३।५) ॥ त्रिष्टुवौशनम्॥

प्रातू॥ द्रवापरिकोशाम्। निषीऽ३दा। नृभाइःपुना। नोऽदअभि। वाजमर्षा॥
 अश्वन्नत्वावाजिनम्मा। जयाऽ२३०ताः। अच्छाबर्हाइः। रशना। भाऽ३४३इः।
 नाऽ३याऽ५०ताऽ६५६इ॥

(दी. ५। प. १२। मा. ९) ३२ (फो।१०१५)

(५२४।१) ॥ वाराहाणि चत्वारि (वाजसनी द्वे)। चतुर्णां वराहस्त्रिष्टुब्देववराहौ॥

प्राऽ॥ कावियाऽ२म्। उशनेवाऽ२। ब्रुवाऽ२३णाः। देवादवाऽ२। नाञ्जनिमाऽ२। विवाऽ२३क्ती॥
 महित्राताऽ२ः। शुचिबन्धूऽ२ः। पवाऽ२३काः॥ पदावाराऽ२। होअभियाऽ२इ॥
 तिराऽ३४ओहोवा॥ भाऽ२३४५न्॥

(दी. ८। प. १४। मा. ९) ३३ (ढो।१०१६)

(५२४।२)

प्रकावियाऽ२म्। उशनेवाऽ२। ब्रुवाणाऽ२ः। देवोदेवाऽ२। नाञ्जनिमाऽ२। विवाक्तीऽ२॥
 महित्राताऽ२ः। शुचिबन्धूऽ२ः। पवाकाऽ२ः॥ पदावाराऽ२। होऽ२। भियाऽ२३४ओहोवा॥
 तिरेभाऽ२३४५न्॥

(दी. ८। प. १३। मा. ७) ३४ (डे।१०१७)

(५२४।३)

र र ^ ? २^ ३ ५ अ र र र र ^ ? २^ ३ ५
प्रकाव्यमुशनेवब्रूऽ३वाणो। देऽ२३४वाः॥ देवानाअनिमाविऽ३वाक्ती। माऽ२३४ही॥
२ ? ३ ५ २ र र र ? २ ३ ? ? ?
व्रतःशुचिबन्धुःपऽ३वाकः। पाऽ२३४दा॥ वराहोअभ्येतिराऽ२३। हाउवाऽ३॥ भाऽ२३४५न्॥

(दी. ९। प. ९। मा. ५) ३५ (धु।१०१८)

(५२४।४)

अ र ? २ अ २ ? र २ ३ ४ ५ अ अ र २ ^ ? २ ३ ४ ५
हाउहाउ। हुप्। प्रकावियाम्। उशने। वब्रुवाणाः॥ देवोदेवा। नाऽ३०जनि। माविवक्ती॥
२ ? २ ^ २ ३ ४ ५ र र ? २ अ २ ^ ? २ ^
महिव्रताः। शुचिबाऽ३। धुःपवाकाः॥ हाउहाउ। हुप्। पदावरा। होऽ३अभि। आऽ३४३इ।
२ ^ ४ ॥
तीऽ३राऽ५इभाऽ६५६न्॥

(दी. १०। प. १७। मा. १४) ३६ (फी।१०१९)

॥ इति ग्रामे गेय-गाने पञ्चदशस्यार्धः प्रपाठकः॥

(५२५।१) ॥ संक्रोशास्त्रयः। त्रयाणामंगिरसस्त्रिष्टुप्सोमः सूर्यो वा॥

? २ ^ ? २ अ र २ ^ ? २ ३ ४ ५ ?
होइ। होऽ। होऽ३होइ। तिस्रोवाचाः। ईऽ३रया। तिप्रवहीः॥१॥ होइयाऽ२३होइ।
२ अ र २ ^ ? २ ३ ४ ५ अ ? ? २ अ र २ ^ ?
तिस्रोवाचाः। ईऽ३रया। तिप्रवहीः॥२॥ आ। होइयाऽ२३होइ। तिस्रोवाचाः। ईऽ३रया।
२ ३ ४ ५
तिप्रवहीः॥३॥

॥ सामसुरसी द्वे। द्वयोः सामसुरस्त्रिष्टुप्सोमः सूर्यो वा॥

? २ ? २ अ २ ^ २ अ र २ ^ ? २ ३ ४ ५ ?
होइहा। इहोइहा। औऽ३होऽ३इ। इहा। तिस्रोवाचाः। ईऽ३रया। तिप्रवहीः॥४॥ होइया।
२ ? २ अ २ ^ ? २ अ र २ ^ ? २ ३ ४ ५
इयोइया। औऽ३होऽ३इ। इया। तिस्रोवाचाः। ईऽ३रया। तिप्रवहीः॥५॥

(दी. ११। प. २१। मा. २२) १ (घा।१०२०)

(५२५।२) ॥ वेणोर्विशाले द्वे। वेणुस्त्रिष्टुप्सोमः सूर्यो वा॥

३ २ ३ ५ २ र १ १ ३ २ ३ ५ २ ३ र २ १ १ २ ३ ४ ५ ५ ३
इहोइह। इहोहाऽइहो। वाहोइह। तिस्रोवाचाः। ईऽइरया। तिप्रवहीः॥६॥ इहोवाऽ५।

२ १ २ १ ५ ५ ५ २ ३ र २ १ १ २ ३ ४ ५
इहोवाऽ२३। ईऽइ४इहाइ। ईऽ५। इहा। तिस्रोवाचाः। ईऽइरया। तिप्रवहीः॥७॥

॥ तन्नातन्ने द्वे। गोतमस्त्रिष्टुप्सोमः सूर्यो वा॥

२ १ २ १ ५ ५ २ ३ र २ १ १ २ ३ ४ ५ १ २ ३
इहोवाऽ२३। ईऽइ४इहाइ। इहा। तिस्रोवाचाः। ईऽइरया। तिप्रवहीः॥८॥ आओऽइहो।

१ २ ३ ३ ५ २ ३ र २ १ १ २ ३ ४ ५
आओऽइहोऽइ४। ओहोवा। हाऽइहोइ। तिस्रोवाचाः। ईऽइरया। तिप्रवहीः॥९॥

॥ अगस्त्यस्य यमिके द्वे। द्वयोरगस्त्यस्त्रिष्टुप्सोमः सूर्यो वा॥

१ २ ३ ३ ५ २ ३ र २ १ १ २ ३ ४ ५
आ। ओऽइहोवाहाऽइ४। ओहोवा। तिस्रोवाचाः। ईऽइरया। तिप्रवहीः॥१०॥

(दी. ११। प. ३३। मा. १८) २ (दौ।१०२१)

३ २ ३ ५ ५ ५ २ १ २ ३ ४ ५ २ १ १ २ ३ ४ ५
ओहाऽइ। ओहाओहा। ऋतस्यधाइ। तीऽइ०ब्रह्म। णोमनीषाम्॥११॥

॥ वारवंतीये द्वे। द्वयोरिन्द्रस्त्रिष्टुप्सोमः सूर्यो वा॥

१ २ १ २ ३ २ १ ३ ३ र २ १ १ २ ३ ४ ५ १ २ १
हहहोइ। हहहाहहोइ। गावोयन्ताइ। गोऽइपतिम्। पृच्छमानाः॥१२॥ इहहोइ।

२ ३ २ १ ३ १ २ १ २ ३ ४ ५ १ २ ३ ४ ५
इहहाहहोइ। सोमयन्ताइ। मतयः। वाऽइ४३। वाऽइशाऽइ५नाऽइ५६॥१३॥

(दी. ६। प. १६। मा. १३) ३ (कि।१०२२)

(५२६।१) ॥ अगस्त्यस्य यमिके द्वे, अष्टौ वासिष्ठानि। उत्तरयोर्विश्वेदेवाः षण्णां

वासिष्ठस्त्रिष्टुब्देवाः॥

अस्याऽऽ३४औहोवा। प्रेषा। हेऽऽमना। पूयमानाः॥१॥ उहुवाइ। अस्याऽऽ३४औहोवा। प्रेषा।
हेऽऽमना। पूयमानाः॥२॥ हाइ। उहुवा। देवाऽऽ३४औहोवा। देवाइ। भीऽऽसमा।
पृक्तरसाम्॥३॥ हाउ। होइ। सुताऽऽ३४औहोवा। पवाइ। त्राऽऽ३०परि। एतिरेभान्॥४॥ हा।
हाऔहोइ। मिताऽऽ३४औहोवा। वसा। द्वाऽऽ३पशु। मन्तिहोता। पशु। माऽऽ३४३।
तीऽऽ३होऽऽप्रताऽऽ६५६॥५॥

(दी. १७। प. ३०। मा. १७) ४ (जे।१०२३)

(५२६।२)

औहोवाहाऽऽहोइ। इहा। अस्यप्रेषा। हेऽऽमना। पूयमानाः॥ देवोदेवाइ। भीऽऽसमा।
पृक्तरसाम्॥ सुतःपवाइ। त्राऽऽ३०परि। एतिरेभान्॥ औहोवाहाऽऽहोइ। इहा। मितेवसा।
द्वाऽऽ३पशु। माऽऽ३४३। तीऽऽ३होऽऽप्रताऽऽ६५६॥६॥

(दी. १२। प. १७। मा. ७) ५ (छे।१०२४)

(५२७।१)

॥ कालकाक्रन्दौ द्वौ॥

सोमःपवतेजनितामऽऽताइनाऽऽ२म्॥ जनितादिवोजनितापृऽऽथाइव्याऽऽ२ः॥ जनिताग्रेर्जनितासू।
रियाऽऽ२३स्या॥ जनितेन्द्रा। स्याऽऽजनि। तोऽऽ३४३। ताऽऽ३वाऽऽप्रइष्णोऽऽ६५६ः॥७॥

(दी. १०। प. ८। मा. ६) ६ (बू।१०२५)

(५२७।२)

सोमःपवतेजनिता। एऽ३। औऽ३होऽ३वा॥ पाताऽ२३४५इनाऽ६५६म्।

जनितादिवोजनितापृथिव्याः॥ जनाऽ२इताऽ२३४ग्नेः॥ जनिता। सूऽ३४३।

रीऽ३याऽ५स्याऽ६५६॥ जनितेन्द्रस्यजनितोतविष्णोऽ२३४५ः॥ ८॥ (इत्यष्टौ वासिष्ठानि)

(दी. १०। प. १०। मा. ६) ७ (मू। १०२६)

(५२७।३) ॥ जनित्रे द्वे। द्वयोर्वसिष्ठस्त्रिष्टुब्बिश्वेदेवाः॥

हाउजनत्। [त्रिः]। जनद्वाउ। [त्रिः]। होइ। जनत्। [द्वे द्विः]। होइ। जनात्। सोमःपवा।
तेऽ३जनि। तामतीनाम्॥ जनितादाइ। वोऽ३जनि। तापृथिव्याः॥ जनिताग्नाइ। जनिता।
सूरियस्या॥ हाउजनत्। [त्रिः]। जनद्वाउ। [त्रिः]। होइ। जनत्। [द्वे द्विः]। होइ। जनात्।
जनितेन्द्रा। स्याऽ३जनि। तोऽ३४३। ताऽ३वाऽ५इष्णोऽ६५६ः॥

(दी. ११। प. ३७। मा. ३७) ८ (खे। १०२७)

(५२७।४)

जनद्वाउ। [त्रिः]। जनदाउ। [त्रिः]। जनत्। होइ। [द्वे त्रिः]। सोमःपवा। तेऽ३जनि।
तामतीनाम्। जनितादाइ। वोऽ३जनि। तापृथिव्याः॥ जनिताग्नाइ। जनिता। सूरियस्या॥
जनद्वाउ। [त्रिः]। जनदाउ। [त्रिः]। जनत्। होइ। [द्वे त्रिः]। जनित्रेन्द्रा। स्याऽ३जनि।
तोऽ३४३। ताऽ३वाऽ५इष्णोऽ६५६ः॥

(दी. ५। प. ३७। मा. ३१) ९ (फा। १०२८)

(५२८।१) ॥ अंगिरसां व्रतोपोहः, (सम्पा)। वसिष्ठस्त्रिष्टुब्बरुणः॥

ओऽऽहाइ। ओऽऽहा। ओहा। इयाऽऽ। ओऽऽहाऽऽए। अभित्रिपा। षाऽऽ०वृष।
 णं वयोधाम्॥ अंगोषिणाम्। अवावा। शन्तवाणीः॥ वनावसा। नोऽऽवरु। णोनसिन्धूः॥
 ओऽऽहाइ। ओऽऽहा। ओहा। इयाऽऽ। ओऽऽहाऽऽए। विरत्तधाः। दयते। वाऽऽ४३।
 रीऽऽयाऽऽघ्णाऽऽ६५६इ॥

(दी. ६। प. २३। मा. १०) १० (गौ।१०२९)

(५२९।१) ॥ सम्पा वैयश्चम्। व्यश्चस्त्रिष्टुप्सूर्यः॥

हो। होइ। अक्रान्त्समुद्रःप्रथमेविधा। मान्॥ हो। होइ। जनयन्त्रजाभुवनस्यगो। पाः॥ हो।
 होइ। वृषापवित्रेअधिसानोऽऽअ। व्याइ॥ हो। हो। बृहत्सोमोऽऽवावृधेस्वानोआ। द्रा।
 औऽऽहोवाहाउवाऽऽ॥ एऽऽ। स्वानोआ। द्रीऽऽ३४५ः॥

(दी. १८। प. २०। मा. १२) ११ (णा।१०३०)

(५३०।१) ॥ सोम सामनी द्वे। द्वयोः सोमः त्रिष्टुप्सोमः॥

कानी। क्रांतीऽऽक्रांतीऽऽ। हरिरासृज्यमाऽऽ३नाऽऽ३ः॥ साइदान्। वानाऽऽवानाऽऽ।
 स्यजठरेपुनाऽऽ३नाऽऽ३ः॥ नृभीः। याताऽऽयाताऽऽ। कृणुतेनिर्णिजाऽऽ३०गा३म्॥ आताः।
 मातीऽऽम्मातीऽऽम्। जनयताऽऽ३। स्वाऽऽधाऽऽ३४औहोवा॥ भीऽऽ३४५ः॥

(दी. ५। प. १४। मा. ११) १२ (भा।१०३१)

(५३०।२)

^{३ ४ ५} र ^२ ^{३ ४ ३ २} ^३ ^५ ^{४ १} ^२ ^{२ १} ^२
 कनिकृन्तिहा। होइ। हरिरासृज्या। माऽ२३४नाः॥ हाहोइ। सीदन्वनस्यजठरेपुनाऽ२३नाः॥
^{२ १} ^२ ^{२ १} ^२ ^{२ १} ^२ ^अ
 हाहोइ। नृभिर्यतःकृणुतेनिर्णिजाऽ२३०गाम्॥ हाहोइ। अतोमताइम्। जनयताऽ२३॥
^१ ^२ ^{४ २} ^३ ^{१ १ १}
 स्वाऽ२धाऽ२३४औहोवा। भीऽ२३४५ः॥

(दी. ११। प. १३। मा. ११) १३ (गा।१०३२)

(५३१।१) ॥ ऐषम्। इषस्त्रिष्टुबिन्द्रसोमौ॥

^{४ ५ ४ ५} ^{३ २} ^{५ २} ^{४ ५} ^२ ^५ ^{३ २}
 एषाएषाः॥ स्यताऽ३१२३४इ। मधुमाऽइन्द्रसोमः। वृषावृषाऽ६ए। वृष्णाऽ३१२३४ः।
^५ ^{४ ५} ^२ ^५ ^{३ २} ^{४ ५ ४ ५} ^{४ ५} ^५
 परिपवित्रेअक्षाः॥ सहसहाऽ६ए। स्रदाऽ३१२३४ः। शतदाभूरिदावा॥ शश्वच्छश्वाऽ६दे।
^{३ २} ^{२ ५ ४} ^५ ^३ ^{१ १ १}
 तमाऽ३१२३४म्। बर्हिरावाजियेऽ५। हियाऽ६हाउवा॥ स्थाऽ२३४५त्॥

(दी. ११। प. १४। मा. १४) १४ (घी।१०३३)

(४३२।१) ॥ माधुच्छन्दसम्। मधुच्छन्दास्त्रिष्टुप्सोमः॥

^{२ ३} ^५ ^{३ २} ^{२ १} ^{२ १} ^{२ ३ ४ ५} ^{२ ४} ^{२ १}
 हाओऽ२३४हाइ। इहाऽ३१। पवस्वसो। माऽ३मधु। माऽऋतावा॥ अपोवसा। नोऽ३अधि।
^{२ ३ ४ ५} ^{२ १ २} ^{२ १} ^{२ ३ ४ ५} ^{२ ३} ^५ ^{३ २} ^{२ १}
 सानोअव्याइ॥ अवद्रोणा। नीऽ३घृता। वन्तिरोहा॥ हाओऽ२३४हाइ। इहाऽ३१। मदिन्तमो।
^{२ १} ^{२ १} ^{२ १ ४} ॥
 मत्सरः। आऽ३४३इ। द्राऽ३पाऽ५नाऽ६५६ः॥

(दी. ३। प. १७। मा. ११) १५ (ठा।१०३४)

चतुर्विंशतिह् षष्ठः, षष्ठः खण्डः॥६॥ दशतिः॥४॥

(५३३।१) ॥ कुत्सस्याधिरथीयानि त्रीणि। त्रयाणां कुत्सस्त्रिष्टुप्सोमः॥

^{३ ५ ३ २ ४ ५ २ ११ ११ ? र र २ ^ २ ^ ३ ४ ५ २ ? ११ ?}
 होऽऽवा। उहुवाऽऽ। होवा। प्रसेनानाद्धः। शूरोआऽऽ। ग्राइरथानाम्॥ गव्यन्नेताइ।
^{२ ^ २ ३ ४ ५ २ ११ २ ? २ ^ २ ^ ३ ४ ५ ११ ११ १ ?}
 हर्षताऽऽइ। अस्यसेना॥ भद्रान्कृण्वान्। इन्द्रहाऽऽ। वान्त्सखिभ्याः॥ आसोमोवा।
^{२ ^ ? २ ^ ३ ४ ५ ३ ५ ३ २ ^ ४ ५ ५}
 स्त्राऽऽरभा। सानिदत्ताइ। होऽऽवा। उहुवाऽऽ। होवाऽऽ। हाउवा॥

(दी. १। प. ११। मा. ११) १६ (धा।१०३५)

(५३३।२)

^{५ ४ २ ? ? ? २ ११ ११ ? र र र ^ २ ^ ३ ४ ५ २ ? ११ ? २ ^}
 औहोऽऽवाऽऽ३४५। प्रसेनानाद्धः। शूरोआऽऽ। ग्राइरथानाम्॥ गव्यन्नेताइ। हर्षताऽऽइ।
^{२ ३ ४ ५ २ ११ २ ? ? २ ^ २ ^ ३ ४ ५ र ४ २ ? ? ? ११ ११ १ ?}
 अस्यसेना॥ भद्रान्कृण्वान्। इन्द्रहाऽऽ। वान्त्सखिभ्याः॥ औहोऽऽवाऽऽ३४५। आसोमोवा।
^{२ ? २ ^ २ ^ ४ "}
 स्त्राऽऽरभा। साऽऽ३४३। नीऽऽ३दाऽऽ५त्ताऽऽ६५६इ॥

(दी. ११। प. १५। मा. १०) १७ (डौ।१०३६)

(५३३।६)

^{५ ४ २ ? ? ? ३ र ११ ? र र २ ^ २ ^ ३ ४ ५ ३ ११ ? २ ^}
 औहोऽऽवाऽऽ३४५। प्रसेनानाद्धः। शूरोआऽऽ। ग्राइरथानाम्॥ गव्यन्नेताइ। हर्षताऽऽइ।
^{२ ३ ४ ५ ३ र २ ? २ ^ २ ३ ४ ५ र ४ २ ? ? ? ११ ११ १ ?}
 अस्यसेना॥ भद्रान्कृण्वान्। इन्द्रहाऽऽ। वान्त्सखिभ्याः॥ औहोऽऽवाऽऽ३४५। आसोमोवा।
^{२ ^ ? २ ^ २ ^ ४ ३ ? ? ?}
 स्त्राऽऽरभा। साऽऽ३४३। नीऽऽ३दाऽऽ५॥ ताऽऽ२३४५इ॥

(दी. ११। प. १६। मा. १०) १८ (कौ।१०३७)

(५३४।१) ॥ वैश्वज्योतिषानि त्रीणि। त्रयाणां विश्वज्योतिस्त्रिष्टुप्सूर्यः॥

^{१ र ^ २ २ र र र ? अ ? ? ? १ र ^ २}
 हाउहोवाऽऽहाइ। प्रतेधारामधुमऽऽ३ताइरसृगाऽऽ२३४५न्॥ हाउहोवाऽऽहोइ।
^{र र र ? अ ? ? ? १ र ^ २}
 वारंयत्पूतोअतीऽऽ३याइषिआव्याऽऽ२३४५म्॥ हाउहोवाऽऽहाइ।

पवमानपवसे ऽ३धामगोनाऽ२३४५म्॥ हाउहोवाऽ३हाइ।

जनयन्त्सूर्यमऽ३पाइन्वोअर्काऽ२३४५इः। हाउहोवाऽ३हाउ॥ वाऽ२३४५॥

(दी. २०। प. १०। मा. २१) १९ (मा१०३८)

(५३५।१) ॥ अस्य देवा देवता॥

प्रगायता। अभिया। चामदेवान्॥ सोमश्हिनो। ताऽ३महा। तेधनाया॥ स्वादुःपवा। ताऽ३मति।
वारमव्याम्॥ आसीदतू। कलशम्। दाऽ३४३इ। वाऽ३आऽ५इन्दूऽ६५इः॥

(दी. ५। प. १३। मा. ७) २० (बे।१०३९)

(५३६।१) ॥ इन्द्रोऽस्य देवता॥

हाउहोवाऽ३हाइ। प्रहिन्वानोजनितारोऽ३४३दसीयोः॥ हाउहोवाऽ३हाइ।
रथोनवाजश्सनिषाऽ३४३नयासीत्॥ हाउहोवाऽ३हाइ। इन्द्रङ्गच्छन्नायुधासाऽ३४३श्शिशनः॥
हाउहोवाऽ३हाइ। विश्वावसुहस्तयोराऽ३४३दधानः। दधाऽ५नाउ॥ वा॥

(दी. २३। प. १०। मा. १३) २१ (णि।१०४०)

(५३७।१) ॥ वाचस्सामनी द्वे। द्वयोः वाक्किष्टृप्वाक्सोमौ॥

तक्षददी। होऽ२३४५इ॥ मनसोवेनतः। वाऽ२३४५क्॥ ज्येष्ठस्यधा। होऽ२३४५॥
मन्दुक्षोरनी। काऽ२३४५इ॥ आदीमायन्। होऽ२३४५इ॥ वरमावावशा। नाऽ२३४५॥
जुष्टम्पतिम्। होऽ२३४५इ॥ कलशेगाऽ५वः। इ। दाउ॥ वा॥

(दी. १३। प. १८। मा. ११) २२ (डा।१०४१)

(५३७।२)

^{२ १ २ ^} तक्षददाऽ३१२३४इ। ^{३ ४ र ३ ४ ५} मनसोवेनतः। ^{३ १ १ १} वाऽ२३४५क्॥ ^{अ १ २ ^} ज्येष्ठस्यधाऽ३१२३४। ^{४ अ ४ अ} मन्दुक्षोरनी।
^{३ १ १ १} काऽ२३४५इ॥ ^{अ १ र २} आदाइमायाऽ३१२३४न्। ^{३ ४ अ ४ ५ र ३ १ १ १} वरमावावशा। नाऽ२३४५ः॥
^{२ १ २ ^} जुष्टम्पताऽ३१२३४इम्। ^{४ र} कलशेगाऽ५वः। ^५ इ। दाउ॥ वा॥

(दी. ११। प. १४। मा. ११) २३ (घ।१०४२)

(५३८।१) ॥ दाशस्पत्ये द्वे। द्वयोर्दशस्पतिस्त्रिष्टुप्सूर्यः॥

^{४ ५ १ र} साकाम्॥ ^{२ १ २} उक्षोमर्जयन्तस्त्रसाऽ२३राः। ^१ दाशाऽ२। ^{अ र र २ १} धीरस्यधीतयोधनूऽ२३त्रीः॥ ^१ हारीऽ२ः।
^{१ र अ} पर्यद्रवञ्जाःसूरियाऽ२३स्या॥ ^{१ १} द्रोणाऽ२म्। ^{१ र र} ननक्षेअत्योनवाऽ२३। ^{२ १} हाउवाऽ३॥ ^{३ १ १ १} जीऽ२३४५॥

(दी. ७। प. १०। मा. ७) २४ (जे।१०४३)

(५३८।२)

^{अ ५ २ ^} साकमुक्षाऽ६ए॥ ^{५ ४ अ} एऽ३१२३४। ^{र ५ २ ^} मर्जयन्तस्त्रसारः। ^{५ ४ अ} दशधीराऽ६ए। ^{५ २ ^} एऽ३१२३४।
^{५ र ४ अ ४ ५ र} स्यधीतयोधनुत्रीः॥ ^{५ २ ^} हरिःपर्याऽ६ए। ^{५ अ र ५} एऽ३१२३४। ^{अ ५ २ ^} द्रवञ्जाःसूर्यस्य॥ ^{अ ५ २ ^} द्रोणन्ननाऽ६ए। ^{५ २ ^} एऽ३१२३४।
^{५ अ ४ ५} क्षेअत्योनवाऽ६ए। ^{५ ३ १ १ १} हाउवा॥ जीऽ२३४५॥

(दी. ११। प. १४। मा. ८) २५ (घै।१०४४)

(५३९।१) ॥ कश्यपस्य शोभनम्। कश्यपस्त्रिष्टुप्सूर्यः॥

^{४ ५ ४ १ लि १ लि १} अधियदा॥ ^{२ र १ र २ ^ ३ ४ ५} स्माइन्वाऽ२जिनीऽ२वशु। ^{२ र १ र २ ^ ३ ४ ५} भाः। ^{२ र १ र २ ^ ३ ४ ५} स्पर्द्धन्तेधियःसू। ^{२ र १ र २ ^ ३ ४ ५} राइनविशाः॥
^{२ अ र} अपोवृणानःपवताइ। ^{अ २ १} कवीऽ२३यान्॥ ^{२ १} ब्रजन्ना। ^{२ १} पाऽ। ^{२ १} शुर्वद्धा। ^{२ ^} नाऽ३४३।
^{२ ^ ४ ॥} याऽ३माऽ५न्माऽ६५६॥

(दी. ६। प. १२। मा. ६) २६ (खू।१०४५)

(५४०।१)॥ दाशस्पत्यानि चत्वारि। चतुर्णां दशस्पतिस्त्रिष्टुप्सूर्यसोमेन्द्राः। सोमेन्द्रौ वा॥

इन्दुऽर्वाजीऽर्वा॥ पवतेगोनियोघाः॥ इन्द्राऽसोऽर्वा॥ साहइन्वन्मदाया॥

हन्ताऽइराऽर्वा॥ बाधतेपर्यरातिम्॥ वराऽइवाऽर्वा॥ ष्वन्वृजानाऽर्वा॥ स्याऽ

राऽर्वाजौवाओऽर्वा॥ होऽर्वा॥ डा॥

(दी. ४। प. १२। मा. १०) २७ (थौ।१०४६)

(५४०।२)

इन्दुर्वाजीपवतौ। हौहोवाहाइ॥ गोनियोघौ। वाओऽर्वा॥ इन्द्रेऽसोमाऽर्वाऽसहइ॥

न्वान्मदायौ। वाओऽर्वा॥ हन्तिरक्षोबाधते। पर्यरातौ। वाओऽर्वा॥

वरिवस्कृष्वन्वृजानाऽर्वा॥ स्याऽ। राऽर्वाजौवाओऽर्वा॥ होऽर्वा॥ डा॥

(दी. १०। प. १५। मा. ७) २८ (मे।१०४७)

(५४०।३)

इन्दुरौहोवाहाईया॥ वाजाऽ। वाऽर्वा॥ हाऽर्वा॥ पवतेगोनियोघाऽ। वाऽर्वा॥ हाऽर्वा॥

इन्द्राऽसोमः। सहइन्वाऽ। वाऽर्वा॥ हाऽर्वाऽर्वा॥ माऽर्वादाऽर्वा॥ औहोवा। याऽर्वा॥

हन्ताऽइरक्षो। बाधाताऽइपाऽ। वाऽर्वा॥ हाऽर्वाऽर्वा॥ र्याऽर्वाऽर्वा॥ औहोवा। तीऽर्वा॥

वराऽइवस्कृ। ष्वन्वृजानाऽ। वाऽर्वा॥ हाऽर्वाऽर्वा॥ स्याऽर्वाऽर्वा॥ औहोवा॥ जाऽर्वा॥

(दी. १४। प. २५। मा. २१) २९ (ना।१०४८)

(५४०।४)

५ र र र र ४ ५ इन्दुर्वाजीपवतेगोनियोधाः॥ इन्द्रे सोमःसहइन्वन्मदाया॥ हन्तिरक्षोबाधतेपर्यरातीम्॥

४ ५ अ ३ अ र ३ ३ १ १ १ वरिवस्कृण्वन्वृजनस्यराजा। राजाऽ३४औहोवा॥ एऽ३। स्यराजाऽ२३४५॥

(दी. १३। प. ७। मा. ४) ३० (ठी।१०४९)

॥ इति ग्रामे गेय-गाने पञ्चदशः प्रपाठकः॥१५॥

(५४१।१) ॥ श्रौष्टानि त्रीणि। त्रयाणां श्रुष्टिस्त्रिष्टुप्सोमः॥

अ ५ ५ ५ ५ ? र र र ? ० न ३ ३ ३ ३ न ३
औहोहाइ। अयोहाइ॥ पवापवस्रैनावसूऽ२३नी। औऽ३होइ। इहा। ईऽ३या।

र ? र ३ ? ३ न ३ ३ ३ ३ न ३
माश्चबइन्दोस्रासिप्रधाऽ२३न्वा। औऽ३होइ। इहा। ईऽ३स्या॥

? र र ? ३ न ३ ३ ३ ३ न ३
ब्रध्नश्चिद्यस्यवातो नजूऽ२३तीम्। औऽ३होइ। इहा। ईऽ३या॥

अ ३ ३ ३ ३ ? र र ? ३ न ३ ३ ३ ३ ? ३ ३ ३ अ र ३ ३
पुरुमेधाश्चित्तकवेनराऽ२३०धात्। औऽ३होइ। इहा। ईऽ२। याऽ२३४। औहोवा॥ एऽ३।

अ ३ ३
दीदिहीऽ१॥

(दी. १४। प. २२। मा. ९) १ (थो।१०५०)

(५४१।२)

५ ५ ५ ५ ? र र ? ३ न ३ ३ ३ न ३
अयोहाइ। पवोहाइ॥ पवस्रैनावसूऽ२३नी। इहोइयाऽ३। ईऽ३या।

र ? र ३ ? ३ न ३ ३ ३ ३ न ३ ? अ र ? ३
माश्चबइन्दोसरसिप्रधाऽ२३न्वा। इहोइयाऽ३। ईऽ३या॥ ब्रध्नश्चिद्यस्यवातो नजूऽ२३तीम्।

र ३ ३ ३ न ३ अ र र ? ३ न ३ ३ ३ ३ ? ३ ३ ३
इहोइयाऽ३। ईऽ३या॥ पुरुमेधाश्चित्तकवेनराऽ२३०धात्। इहोइयाऽ३। इऽ२। याऽ२३४।

अ र ३ ३ ३ अ ? ? ? ?
औहोवा॥ एऽ३। दीदयाऽ२३४५त्॥

(दी. १६। प. १८। मा. १०) २ (गौ।१०५१)

(५४१।३)

३ ३ ५ ३ ३ ५ ३ ? ५ ३ अ ३ अ ३ र अ अ
हाओऽ२३४वा। हाओऽ२३४वा। हाऽ३ओऽ२३४वा। हाउवा। अयापवापवस्रैनावसूनि।

? ३ ? ? ? ३ ? ३ र ? अ ? ३ ? ३ ? ३ ? ? ? ३ ? ३ ? ३
इहइ। हियाऽ२। इहा। इहा॥ माश्चबइन्दोसरसिप्रधन्वा। इहइ। हियाऽ२। इहा। इहा॥

? ३ ? ३ अ ? अ ? ? ३ ? ? ? ३ ? ३ ३ ५
ब्रध्नश्चिद्यस्यवातो नजतिम्। इहइ। हियाऽ२। इहा। इहाऽ३॥ हाओऽ२३४वा।

हाओऽ२३४वा। हाऽ३ओऽ२३४वा। हाउवा। पुरुमेधाश्चित्तकवेनरन्धात्। इहइ। हियाऽ२।
इहा॥ इहाऽ२३४५॥

(दी. १४। प. २८। मा. १५) ३ (दु। १०५२)

(४५२।१) ॥ आत्रम्। अत्रिस्त्रिष्टुप्सूर्यो विश्वे देवा वा॥

महत्तत्सोमोमहिषश्चऽ३काराऽ२॥ अपायद्गर्भोवृणीतऽ३दाइवाऽ२न्॥

अदधादिन्द्रेपवमानऽ३ओजाऽ२ः॥ अजनयत्सूर्येऽ३ज्योऽ२३। तिरिन्दाउवाऽ३॥ एऽ३।

अजनयत्सूर्येज्योतिरि। न्दूऽ२३४५ः॥

(दी. १३। प. ८। मा. ६) ४ (दु। १०५३)

(४५३।१) ॥ वासिष्ठम्। वसिष्ठस्त्रिष्टुप्सोमः॥

असाओऽ३हो। जिवाक्वाऽ२। रथ्याइयाऽ३४। था। जाऽ२३४५उ॥ धियाओऽ३हो।

मनोताऽ२। प्रथमामाऽ३४। नी। पाऽ२३४५॥ दशाओऽ३हो। स्वसाराऽ२ः। अधिसानोऽ३४।

आ। व्याऽ२३४५इ॥ मृजाओऽ३हो। तिवान्हीऽ२म्। सदनाइषूऽ३४। अच्छऽ२उ।

वाऽ२३४५।

(दी. २। प. २०। मा. ११) ५ (जा। १०५४)

(५४४।१) ॥ अपां सोम। आपस्त्रिष्टुप्सोमः॥

अपामिवेदूर्मयस्तो। होवाहाइ। तुराणाऽ२३४ः। हाहोइ। प्रमनी। पाः। ईरतेऽ३। सोमम।

छाऽ३४। हाहोइ॥ नमस्य। ताइः। उपचाऽ३। यन्तिसम्। चाऽ३४। हाहोइ॥ आचवि। शा।

तियुश। तीरुश। ताऽ३४म्। हाहाऽ३४। औहोवा॥ वाऽ३हाऽ२३४५ः॥

(दी. १२। प. २४। मा. ११) ६ (झा।१०५५)

॥ सप्तमः खण्डः॥७॥ दशतिः॥५॥ इति त्रैष्टुभम्॥

(५४५।१) ॥ प्रेकौ द्वौ। नकुलोऽनुष्टुप्सोमः॥

पुरोजिती॥ वोऽअन्धाऽ२३४साः। सुतायामाऽ२दयाऽ३१उवायेऽ३। नाऽ२३४वे॥
अपश्चानाऽ२श्चथाऽ३१उवायेऽ३। षाऽ२३४ना॥ सखायोदीऽ२र्घजाऽ३१उवायेऽ३॥
ह्रीऽ२३४याम्॥

(दी. ३। प. ८। मा. ६) ७ (डू।१०५६)

(५४५।२) वामदेवोऽनुष्टुप्सोमः॥

पुरोजिती॥ वोऽओ०धाऽ३साः। सूतायमाऽ२। ऊऽ२। हाऽ२इ। ऊऽ२।
दाऽ३याइनाऽ३वे। आपश्चानाऽ२म्। ऊऽ२। हाऽ२इ। ऊऽ२। आऽ३थाइषाऽ३ना॥
साखायोदाऽ२इ। ऊऽ२इ। हाऽ२इ। ऊऽ२३॥ घाऽ२जाऽ२३४औहोवा॥ एऽ३।
ह्रियाऽ२३४५म्॥

(दी. ७। प. १९। मा. ११) ८ (झा।१०५७)

(५४५।३)

पुरोहाहाउ॥ जाऽ२३४इती। वोआऔऽ३होऽ३। धासाः। सुताऔऽ३होऽ३। यामाऽ६।
हाउवा। दयित्वेऽ२। उपा॥ अपश्चानश्चथाऽ१इषाऽ३ना॥ सखाऔऽ३होऽ३। योदाऽ६।
हाउवा। घजिह्रियम्॥ उपाऽ२३४५॥

(दी. ५। प. २५। मा. ११) ९ (मा।१०५८)

(५४५।४) ॥ और्ध्वसद्वनम्। ऊर्ध्वसद्वादेवानुष्टुप्सोमः॥

५
पुरोजितीवोअन्धसः। उवाहाइ॥ सुतायमादयित्त्वउवाऽ२३होइ।

अपश्चानश्चथिष्टनउवाऽ२३होइ॥ साखायोदाइ॥ घाजिहाऽ२३४५याऽ६५६म्॥

सुवृक्तिभिर्नृमादनम्भरेऽ२षुवाऽ१॥

(दी. १०। प. ७। मा. ९) १० (फो।१०५९)

(५४५।५) ॥ श्यावाश्चम्। श्यावाश्चोऽनुष्टुप्सोमः॥

३
पुरोऽ३१। जीऽ३ती। वोअ। धाऽ३सः। एहिया। सूऽ। तायमादा। यि। त्वाऽ२इ।

एहियाऽ२। अपश्चानाश्चाऽ३थीऽ३॥ ष्टाऽ२३४ना॥ ऐहाऽ२इ। एहियाऽ२।

सखायोदाइर्घाऽ३जीऽ३। हाऽ३४५योऽ६हाइ॥

(दी. ९। प. १६। मा. ६) ११ (तू।१०६०)

(५४५।६) ॥ आन्धीगवम्। अन्धीगुरनुष्टुप्सोमः॥

५
पुरोजितीवोऽ४०धासाः॥ सुताय। मादाऽ२३या। हिम्माऽ२१२। त्वेअपश्चानश्चथिष्टन॥

साखाऽ३२उवा॥ योऽ२दी। घाऽ२३जी। हियाम्। औऽ२३होवा। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. ६। प. १२। मा. ५) १२ (खु।१०६१)

(५४६।१) ॥ क्रौञ्चानि त्रीणि। त्रयाणां क्रुङ्गुष्टुपूषाभगोद्यावापृथिवी॥

अयंपूषोहो। रायिर्भगाः॥ सोमःपुनाऽ३। नोआऽ३र्षाऽ५ताऽ६५६इ॥ पतिर्विस्त्रोहो।

स्याभूमनाः॥ विख्यद्रोऽ३। दासीऽ३ऊऽ५भाऽ६५६इ॥

(दी. ७। प. ८। मा. ६) १३ (जू।१०६२)

(५४६।२)

अ॒यंपू॒षा॑ । अ॒यंपू॒षा॑ ॥ र॒यिर्भ॑गाः । सोमः॑ पू॒नाऽ॒र॒ । नो॑ अ॒र्ष॑ता॒ह । प॒तिर्वा॑ह॒श्चाऽ॒र॒ ।
ओ॒स्याभू॑ऽ॒श॒मा॒नाऽ॒र॒ ॥ ओ॒ह्वि॒य॒ख्याऽ॒र॒द्रो॑ ॥ दा॒सी॒उ॒भा॑ । इ॒डाऽ॒र॒भा॑ऽ॒र॒४३॑ ।
ओ॒ऽ॒र॒३४५॒इ॑ ॥ डा॑ ॥

(दी. ५। प. १२। मा. ८) १४ (फै।१०६३)

(५४६।३)

अ॒यंपू॒षा॑ । हो॑ । र॒यिर्भ॑गाऽ॒ह॒ए॑ ॥ सोमाऽ॒र॒ःपु॒नाऽ॒र॒ । न॒आऽ॒र॒४५॑ । षाऽ॒र॒३४॒ती॑ ।
प॒तिर्वि॑श्व॒स्यभू॑भ॒मनः॑ । वि॒य॒ख्याऽ॒र॒द्रो॑ ॥ द॒सी॒ऊऽ॒र॒भा॑ऽ॒र॒४३॒इ॑ । ओ॒ऽ॒र॒३४५॒इ॑ ॥ डा॑ ॥

(दी. ४। प. ११। मा. ६) १५ (तू।१०६४)

(५४७।१) ॥ बा॒ष्ट्री॑ सा॒मनी॑ द्वे । द्वयो॑स्त्वा॒ष्ट्रोऽनु॑ष्टु॒प्सोमे॒न्द्रौ॑ ॥

सु॒ता॒सो॒मा॑ ॥ धु॒माऽ॒र॒त्त॒माः॑ । सो॒मा॒इन्द्रा॑ऽ॒र॒य॒माऽ॒र॒ । ए॒ऽ॒र॒ । दि॒न॒आ॑ । प॒वा॒ह॒त्र॒वाऽ॒र॒०तो॑ऽ॒र॒ ।
ए॒ऽ॒र॒ । क्ष॒र॒न्ना॑ । दा॒ह्वान्ग॑च्छाऽ॒र॒०तु॒वाऽ॒र॒ः । ए॒ऽ॒र॒ ॥ म॒दा॒आ॑ ॥

(दी. ४। प. ११। मा. ७) १६ (ते।१०६५)

(५४७।२) ॥ ऊ॒र्ध्वे॒डं॒बा॒ष्ट्री॑ सा॒म ॥

सु॒ता॒सो॒मधु॑म॒त्त॒माः॑ ॥ सो॒माऽ॒र॒इन्द्रा॑ऽ॒र॒ । य॒माऽ॒र॒४५॑ । दौऽ॒र॒३४॒नाः॑ । प॒वि॒त्र॒व॒न्ता॑अ॒क्षर॑न् ॥
दे॒वा॒न्ग॑च्छा ॥ तु॒वो॒माऽ॒र॒३दा॑ऽ॒र॒४३ः॑ । ओ॒ऽ॒र॒३४५॒इ॑ ॥ डा॑ ॥

(दी. ६। प. ९। मा. ७) १७ (घे।१०६६)

(५४७।३) ॥ वा॒सि॒ष्ठम् । व॒सि॒ष्ठोऽनु॑ष्टु॒प्सोमे॒न्द्रौ॑ ॥

सुतासोमधुमत्तमाः। सोमाइन्द्रा॥ यमन्दिनः। पवित्रावाऽ२। तोअक्षरन्॥ दाइवान्गच्छोवा॥
तूऽ२३४वाः। मदा। औऽ३हावा। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. ६। प. ११। मा. ८) १८ (कै।१०६७)

(५४७।४) ॥ आष्कारनिधनं त्वाष्ट्री साम। त्वाष्ट्रोऽनुष्टुप्सोमेन्द्रौ॥

सुतासोमधुमत्तमाः। सोमाहाउ॥ इन्द्राऽ३यामन्दिनाऽ२ः। इन्द्राऽ३हो।
यमाऽ२०दाऽ२३४इनाः। पवित्रव३०तोअक्षाराऽ२न्। त्रवाऽ३हो। तोऽ२क्षाऽ२३४रान्।
देवान्गच्छऽ३०तूवोऽ१मादाऽ२ः॥ देवाऽ३न्होइ। गच्छोऽ२३४हा॥ तूऽ२वाऽ२३४औहोवा॥
मदाऽ३आऽ२३४५॥

(दी. १०। प. १३। मा. १२) १९ (बा।१०६८)

(५४७।५) ॥ वासिष्ठम्। वसिष्ठोऽनुष्टुप्सोमेन्द्रौ॥

सुतासोमधुमत्तमाऽ६ए॥ सोमइन्द्राऽ३यामन्दिनाऽ२ः। दाइनाऽ२ः।
पवित्रव३०तोअक्षाराऽ२न्। क्षाराऽ२न्। देवान्गच्छऽ३०तूवोऽ१मादाऽ२ः। मादाऽ२ः॥
देवाऽ३न्होइ। गच्छोऽ२३४हा॥ तूऽ२वाऽ२३४औहोवा॥ मदाऽ३ईऽ२३४५॥

(दी. १०। प. ११। मा. १३) २० (पि।१०६९)

(५४७।६) ॥ त्वाष्ट्री सामनी द्वे (स्वारत्वाष्ट्री साम)। द्वयोस्त्वाष्टुप्सोमेन्द्रौ॥

सुतासोमाऽ३हा। धुमत्तामाऽ२ः॥ सोमाइन्द्राऽ३हा। यमन्दाइनाऽ२ः। पवित्रवाऽ३हा।
तोअक्षाराऽ२न्॥ देवान्गच्छाऽ३हा। तुवाऽ३हो२३४। वा। माऽ५दोऽ६हाइ॥

(दी. ७। प. १०। मा. ७) २१ (जे।१०७०)

(५४७।७)

॥ द्विरभ्यस्तं बाष्ठी साम॥

सुता। सोमाऽ३। हाऽ३हा। धुमत्तामाऽ२३४ः॥ सोमाः। इन्द्राऽ३। हाऽ३हा।
यमन्दाइनाऽ२३४ः॥ पवि। त्रवाऽ३। हाऽ३हा। तोअक्षाराऽ२३४न्॥ देवान्। गच्छाऽ३।
हाऽ३हा। तुवोऽ३हाऽ२३४। वा। माऽ५दोऽ६हाइ॥

(दी. ७। प. १८। मा. ८) २२ (जै।१०७१)

(५४७।८)

॥ वासिष्ठम्। वसिष्ठोऽनुष्टुप्सोमेन्द्रौ॥

सुतासोऽ३माधुमत्तमाः॥ सोमाइन्द्रा। यमन्दिनः। पावाओऽ२३४वा। त्रवन्तोअक्षरन्॥
देवान्गच्छा॥ तुवोभाऽ२३दाऽ३४३ः। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ७। प. ९। मा. ८) २३ (झै।१०७२)

(५४८।१)

॥ क्रौञ्चे द्वे। द्वयोः क्रुडनुष्टुप्सोमः॥

हाउसोमाः॥ पवाऽ३०ताइन्दावाउ। वाऽ३। हाउवा। अस्मभ्यंगातूवित्तामाउ। वाऽ३। हाउवा।
मित्राःस्वानाअरेऽ१पासाउ। वाऽ३। हाउवाऽ३४॥ सुवा। धियाऽ३ः॥ सूऽ२३वाऽ३ः।
वाऽ३४५इदोऽ६हाइ॥

(दी. ५। प. १४। मा. १४) १४ (भी।१०७३)

(५४८।२)

सोमाःपवन्तइन्द्रवाः॥ अस्माभ्यंगा। तुवित्तामाः। माइत्राओऽ२३४वा। स्वानाअरेपसः॥
सुवाधियाः॥ सुवर्वाऽ२३इदाऽ३४३ः। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ६। प. ९। मा. ११) २५ (घा।१०७४)

(५४९।१) ॥ सोम सामानि त्रीणि। त्रयाणां सोमोऽनुष्टुप्सोमः॥

अभीनोवा॥ जाऽ२साऽ२३४औहोवा। ताऽ२३४माम्। रयिमर्षशतस्पृहम्॥

इन्दोसहस्रभाऽ२३हो। णसाऽ२म्॥ तुविद्युम्नविभाऽ२३होयेऽ३॥ सहमोऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ५। प. ९। मा. ५) २६ (भु।१०७५)

(५४९।२)

अभीनोवा॥ जासातमम्। रयिम्। पाउवाऽ२३। होवाऽ३हाइ। शतस्पृहम्। इन्द्रोऽ२सा

हाउवाऽ२३। होवाऽ३हा। सभर्णसम्॥ तुवायेऽ३॥ दूऽ२म्नाऽ२३४औहोवा॥

विभासहाऽ२३४५म्॥

(दी. ७। प. १३। मा. ८) २७ (जै।१०७६)

(५४९।३)

अभीऽ२होइ। नोवाजाऽ३साऽ३। हाताऽ२३४माम्॥ रयीऽ२होइ। अर्षशाऽ३ताऽ३।

हास्पृऽ२३४हाम्॥ इन्दोऽ२होइ। सहस्राऽ३भाऽ३। हार्णाऽ२३४साम्। तुवाऽ२होइ।

द्युम्नवीऽ३भाऽ३। हाऽ३साऽ५हाऽ६५६म्॥

(दी. २। प. १२। मा. ८) २८ (छै।१०७७)

(५४९।४) ॥ क्रौधम्। ऋडनुष्टुप्सोमः॥

अभीनोवाऽ३१२३४। जसा। तमाऽ३म्॥ रयिमर्षाऽ३१२३४। शत। स्पृहाऽ३म्॥

इन्दोसाहाऽ३१२३४। स्तभ। णसाऽ३म्॥ तुवाइदूम्नाऽ३१२३म्। विभाऽ५सहाउ॥ वा॥

(दी. १। प. १२। मा. ६) २९ (खू।१०७८)

(५४९।५)

॥ सोमसाम। सोमोऽनुसृप्सोमः॥

अभीनोवाहोऽ५जसातमाम्॥ रयिमर्षोहोऽ५शतस्पृहाम्॥ इन्दोसहोहोऽ५स्रभर्णसाम्॥
तुविद्युम्रोहोऽ५विभासहाम्। सहम्। तुविद्युम्रविभाऽ५। हाउवा॥ सहऽ३मेऽ२३४५॥

(दी. ९। प. ८। मा. ६) ३० (दू।१०७९)

(५५०।१)

॥ आङ्गिरसानि त्रीणि। त्रयाणामंगिरसोऽनुष्टुबिन्द्रः॥

आऽ२३४भी॥ ओइनवन्तआद्रुऽ१हाऽ२ः। ओइप्रियमिन्द्रस्यकामाऽ१याऽ२म्॥
ओइवत्सन्नपूर्वआयूऽ१नीऽ२॥ ओइ। जातश्रिहन्तिमोऽ१२३४। वा। ताऽ५प्रोऽ६हाइ॥

(दी. २। प. ८। मा. ९) ३१ (जो।१०८०)

(५५०।२)

अभी। नवाऽ३२। तआऽ५द्रुहाः॥ प्रियमिन्द्राऽ३। स्याकामाऽ२३४याम्। वत्सन्नपूर्वऽ३।
र्वाआयूऽ२३४नी॥ जाताऽ३श्होइ। रिहाऽ३हो। तिमाताऽ२३राऽ३४३ः। ओऽ२३४५इ॥

डा॥

(दी. ३। प. १२। मा. ७) ३२ (ठे।१०८१)

(५५०।३)

अभीनवन्तेअद्रुहः। ओहाइ॥ प्रियमिन्द्रस्यकामियम्। ओहाइ॥ वत्सन्नपूर्वआयुनि।
ओहोवाहाइ॥ जातश्रिहोवा। तीऽ२३४मा। तरा। ओऽ३होवा। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. ६। प. १२। मा. ८) ३३ (खै।१०८२)

(५५१।१) ॥ गृत्समदस्य सूक्तानि चत्वारि। चतुर्णां गृत्समदो बृहती सोमः॥

आहाऽ३। ओऽ२३४वा॥ र्यतायधृष्णवेऽ२। धनूऽ३। ओऽ२३४वा॥ तन्वन्तिपौऽसियम्।
 शुक्राऽ३। ओऽ२३४वा॥ विन्यत्यसुरायनिर्णिजऽ२। विपाऽ३। ओऽ२३४वा॥
 अग्नेऽ२महीयुवाऽ२३४५ः॥

(दी. ८। प. १२। मा. ४) ३४ (ठी।१०८३)

(५५१।२)

हाऽ३हाइ। आह्र्यता। याऽ२३४धृ। हाऽ३हाऽ३४। औहोवा। ष्णाऽ२३४वे॥ हाऽ३हाइ।
 धनूष्टान्वा। तीऽ२३४पौ। हाऽ३हाऽ३४। औहोवा। सीऽ२३४याम्॥ हाऽ३हाइ। शुक्राविया।
 ताअसुरा। याऽ२३४नी। हाऽ३हाऽ३४। औहोवा। णीऽ२३४जे॥ हाऽ३हाइ। विपामाग्राइ।
 माऽ२३४ही। हाऽ३हाऽ३४। ओहोवा॥ यूऽ२३४वाः॥

(दी. ९। प. २५। मा. ८) ३५ (नै।१०८४)

(५५१।३)

आह्र्यतायधृष्णवआ॥ धनूष्टाऽ१न्वाऽ२। तिपौऽसाऽ१याऽ२म्। शुक्राविया। ताअसुराऽ३।
 यानीऽ२र्णाऽ२३४इजाइ॥ विपामाऽ१ग्राऽ२इ॥ ओइ। माऽ२३४हीऽ३। यूऽ३४५वोऽ६हाइ॥

(दी. ३। प. १०। मा. ८) ३६ (पै।१०८५)

(५५१।४)

आऽ४ह्र्य। ताऽ४यधृ। ष्णाऽ३वे। धनूष्टान्वा॥ तिपौऽसियाम्। शुक्राविया। ताअसुरा।
 यनाउवाऽ३। णीऽ२३४जे॥ वाइपाऽ३हाइ। आग्नेऽहाइ॥ मर्हयूऽ२३वाऽ३४३ः।
 ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. २। प. १४। मा. ८) ३७ (झो।१०८६)

(५५२।१) ॥ द्विरभ्यस्तमाकूपारम्। अकूपारोऽनुष्टुब्देवाः॥

परित्य॑र्ह्य॒त॑र्हरि॒म्। पा॑ऽ२३४। रित्य॑र्हो॒होऽ॒र्ह्य॒त॑र्हरा॒इम्॥ ब॒भ्रु॒म्पु॒नन्ति॒वारे॒ण। बा॑ऽ२३४।
भ्रु॒म्पु॒नो॒होऽ॒र्ह्य॒ति॒वारे॒णा॥ यो॒दे॒वा॒न्वि॒श्वा॑र्इत्प॒रि। यो॑ऽ२३४। दे॒वा॒न्वो॒होऽ॒र्ह्य॒श्वा॑र्इत्प॒रा॒इम्॥
म॒दे॒न॒स॒ह॒ग॒च्छ॒ति। मा॑ऽ२३४। दे॒न॒सो॒होऽ॒र्ह्य॒ग॒। छा॑ऽ॒र्ह्य॒तो॒ऽ॒र्ह्य॒हा॒इम्॥

(दी. १७। प. १३। मा. ७) ३८ (जे।१०८७)

(५५३।१) ॥ वैरूपम्। विरूपोऽनुष्टुप्सोमः॥

प्र॒सु॒न्वाऽ॒३॒नाय॑अ॒न्ध॒साः॥ म॒र्त्तः॑। न॒वाऽ॒२। ष॒त॒द्वाऽ॒२४॒चाः॑। अ॒प॒श्चान॑म॒रा। धा॑ऽ॒३४॒साम्॑।
ह॒ता॒माऽ॒३॒खम्॥ न॒भृ॑ऽ॒३॒गाऽ॒र्ह्य॒वाऽ॒६५॒६ः॥

(दी. ३। प. ८। मा. ७) ३९ (डे।१०८८)

॥ इति ग्रामे गेय-गाने षोडशस्यार्द्धः प्रपाठकः॥

॥ त्रयस्त्रिंशदष्टमः, अष्टमः खण्डः॥८॥ दशतिः॥६॥ इत्यानुष्टुभम्॥

(५५४।१) ॥ कावम्। (कुत्सो) कविः जगती सोमसूर्यो॥

आ॒भि॒प्री॑ऽ॒३४॒या॑॥ णी॒पा॒वाऽ॒३४॒ता॒इम्॥ चा॒नो॒हि॒ताऽ॒३४॒ः॥ ना॒मा॒नी॑ऽ॒३४॒या॑।
हो॒अ॒धी॑ऽ॒३४॒ये। पू॒व॒र्द्ध॒ता॒येऽ॒३४॒॥ आ॒सू॒री॑ऽ॒३४॒या॑। स्या॒बृ॒हा॑ऽ॒३४॒ताः॑। वृ॒ह॒न्न॒धा॒येऽ॒३४॒॥
रा॒थ॒वाऽ॒३४॒इ॒ष्वा॑। चा॒मा॒रू॑ऽ॒३४॒हा॒त्। वि॒चा॑ऽ॒३४॒१॒उ॒वाऽ॒३४॒॥ क्षा॑ऽ॒३४॒णाः॑॥

(दी. ४। प. १३। मा. ८) १ (दौ।१०८९)

(५५४।२) ॥ ऐदंकावम्। कविर्जगती सोमसूर्यो॥

^४ एऽ५। ^४ अभिप्रियाऽ२। ^{३४} णिपवताइ। ^४ एऽ५। ^४ चनोहिताः॥ ^४ एऽ५। ^४ नामानियाऽ२। ^४ होअधियाइ।
^४ एऽ५। ^४ पुवर्द्धताइ॥ ^४ एऽ५। ^४ आसूरियाऽ२। ^{३४} स्यबृहताः। ^४ एऽ५। ^४ बृहन्नधी॥ ^४ एऽ५। ^४ रथविष्वाऽ२।
^{३४} चमरुहात्। ^४ एऽ५। ^४ विचक्षणाः। ^४ होऽ५इ॥ डा॥

(दी. ६। प. २२। मा. ९) २ (खो।१०९०)

(५५४।३) ॥ वाजसनि। वाजनिर्जगती सोमसूर्यो॥

^५ अभ्यौहोवाहाइप्रियाणी॥ ^४ पवताइचाऽ२३४नो। ^४ हिताः। ^४ नामानियहोअधियेपुवर्द्धताइ॥
^४ आसूर्यस्यबृहतोबृहन्नधाइ॥ ^४ रथम्। ^४ वाइष्वधमरुहत्। ^४ विचाऽ३१उवाऽ२३॥ ^४ क्षाऽ३णाऽ२३४५॥

(दी. ९। प. ९। मा. ११) ३ (धा।१०९१)

(५५४।४) ॥ वजजिती। द्वयोर्वाजजिज्जगती सोमसूर्यो॥

^३ अभिप्रिया। ^४ णीपवताइ। ^३ होइहोवाऽ३होयेऽ३४। ^४ चनोहिताः। ^४ हाहो। ^४ वाहाइ॥ ^४ नामानिया।
^४ होअधियाइ। ^३ होइहोवाऽ३हायेऽ३४। ^४ पुवर्द्धताइ। ^४ हाहो। ^४ वाहाइ॥ ^४ आसूरिया। ^४ स्याबृहताः।
^३ होइहोवाऽ३होयेऽ३४। ^४ बृहन्नधी। ^४ हाहो। ^४ वाहाइ॥ ^४ रथविष्वा। ^४ चामरुहात्।
^३ होइहोवाऽ३होयेऽ३४। ^४ विचक्षणाः। ^४ हाहो। ^४ वाऽ६हाउ। ^४ वा॥ ^४ वाजीजिगीऽ३वा५ऽ१॥

(दी. १५। प. २६। मा. १६) ४ (पू।१०९२)

(५५४।५)

^३ अभिप्रिया। ^४ णीपवताइ। ^४ चानोहिताः। ^३ होवाऽ३होइ॥ ^४ नामानिया। ^४ होअधियाइ। ^४ पुवर्द्धताइ।
^३ होवाऽ३होइ॥ ^४ आसूरिया। ^४ स्याबृहताः। ^४ बृहन्नधाइ। ^४ होवाऽ३हो॥ ^४ रथविष्वा। ^४ चामरुहात्।
^४ वीचक्षणाः। ^३ होवाऽ३होऽ२। ^४ वाऽ२३४औहोवा॥ ^४ वाजीजिगीवाविश्वाधनाऽ२नीऽ२३४५॥

(दी. २१। प. १८। मा. १२) ५ (गा।१०९३)

(५५४।६) ॥ स्वारकावम्। कविः प्रजापतिर्जगती सोमसूर्यौ॥

अभ्योवा॥ प्रियाणिपवताइ। चनोहाइताऽ२ः। नामानियहोअधियाइ। पुवर्द्धाताऽ२इ॥

आसूर्यस्यबृहतो। बृहन्नाधीऽ२३। राथाऽ३०वाइष्वा। चमरूहाऽ२३त्।

वाइचाऽ३क्षाऽ५णाऽ६५६ः॥

(दी. ७। प. १०। मा. १०) ६ (जौ।१०९४)

(५५५।१)॥ उद्गर्गवम् आङ्गिरसानि त्रीणि वा। त्रयाणां भृगुर्जगती सोमो देवाः॥

अचोदासोऽ२३। नोधनूवाऽ२३। तूइन्दवाः॥ प्रस्वानासोऽ२३। बृहद्देवेऽ२३। पूहरयाः॥

विचिदाश्नाऽ२३। नाइषायाऽ२३ः। आरातयाः॥ अर्योनाःसाऽ२३। तूसनाइषाऽ२३।

तूनोधियाऽ३१उवाऽ२३४५॥

(दी. १२। प. १२। मा. ९) ७ (छो।१०९५)

(५५५।२) ॥ आंगिरसे द्वे। द्वयोरंगिरसो जगती सोमो देवाश्च॥

आचोदसो। नोधनुवन्तु। इन्दवाः॥ प्रास्वानासो। बृहद्देवेषु। हरयाः॥ वाइचिदश्ना।

नाइषयोअ। रातयाः॥ आर्योनाःसा। तुसनिष। तुनोऽ५धियाउ॥ वा॥

(दी. १०। प. १३। मा. ७) ८ (बे।१०९६)

(५५५।३)

हाउहोवाऽ३हाइ। अचोदसोनोऽ३धा। नूवाऽ३०तूऽ३। इन्दवाऽ२३४५ः॥ हाउहोवाऽ३हाइ।

प्रस्वानासोबृऽ३हात्। देवेऽ३पूऽ३। हरयाऽ२३४५ः॥ हाउहोवाऽ३हाइ। विचिदश्नानाऽ३आइ।

षयोऽ३आऽ३। रातयाऽ२३४५॥ हाउहोवाऽ३हाइ। अर्योऽनःसन्तुऽ३सा। निषाऽ३०तूऽ३।
नोधियाऽ३२उवाऽ२३४५॥

(दी. २०। प. १६। मा. १६) ९ (पू।१०९७)

(५५५।४)॥ सामराजे द्वे (महा सामराजं)। द्वयोः सामराजो जगती सोमो देवाश्च॥

अचोहाइ॥ दासोनोधनुवा। तुइन्दावाऽ२ः। प्रस्वानासोबृहद्देवाइ। पुहरायाऽ२ः।

विचोऽ२३४हाइ। अश्रोऽ२३४हाइ। नाइषयः। अरोऽ२३४हाइ। तायाः॥ अर्योऽ२३४हाइ।

नःसोऽ२३४हा॥ तूसानीऽ२३४षा। तूनाऽ२३उवाऽ३॥ धीऽ२३४याः॥

(दी. ७। प. १५। मा. १४) १० (जी।१०९८)

(५५५।५) ॥ स्वार सामराजम्॥

अचौहोवा॥ दासोनोधनुवा। तुइन्दावाऽ२ः। प्रस्वानासोबृहद्देवाइ। पुहरायाऽ२३ः।

वाइचीऽ३दाश्ना। नाइषाऽ२३४याः। होइ। अराताऽ२३४याः॥ होऽ३इ। आर्योऽ३नाःसा॥

तूसानीऽ२३४षा। हो। तुनोऽ३धाऽ५याऽ६५६ः॥

(दी. ७। प. १४। मा. ११) ११ (झ।१०९९)

(५५५।६) ॥ सिमानान्निपेधः॥

अचो। वाहाइ॥ दासोनोधनुवा। तुइन्दावाऽ२ः। प्रास्वानासोबृहद्देवाइ। पुहरायाऽ२३ः।

वाऽ२३इचीत्। आऽ२३श्नाऽ३४। नाइषयोअरा। ताऽ३याः॥ आऽ२३र्यो॥ नाऽ२३साऽ३४।

तूसनिषा। तुनोऽ३धाऽ५याऽ६५६ः॥

(दी. ९। प. १४। मा. ११) १२ (धा।११००)

(५५६।१) ॥ वैधृत वासिष्ठम्। वसिष्ठो जगतीन्द्रः॥

एषप्रकोशेऽ२। मा धुमा२२। अचाइक्राऽ२३४दात्॥ इन्द्रास्यवाज्राऽ२। वा पुषोऽ२।
वपुष्टाऽ२३४माः॥ अभाऋतास्याऽ२। सु। दुधाऽ२। घृताश्रूऽ२३४ताः॥ वाश्राअर्पा०तीऽ२।
पा यसाऽ२३। चधाऽ३इनाऽ५वाऽ६५६ः॥

(दी. ३। प. १६। मा. १०) १३ (टौ।११०१)

(५५७।१) ॥ लौशे द्वे। द्वयोर्लुशो जगतीन्द्रसोमौ॥

प्रोयाऽ२३४सीत्। इन्दुरिन्द्राऽ२३। स्याऽ३निष्कृतम्॥ सखासख्युः। नप्रमिनाऽ२३।
तीऽ३संगिरम्॥ मर्यइवा। युवतिभाऽ२३इः। साऽ३मर्षति॥ सोमःकला। शैशतयाऽ२३।
मनाऽ३पाऽ५थाऽ६५६।

(दी. ३। प. १२। मा. ७) १४ (ठौ।११०२)

(५५७।२)

प्रोयासीदिन्दुरिन्द्रस्यनिः। कृताम्। कृताऽ२३४५म्॥ सखाऽ३१२३४। सख्युर्नप्रमिनातिसम्।
गिराङ्गिराम्॥ मर्याऽ३१२३४ः॥ इवयुवतिभिःसम। षताइषताइ॥ सोमाऽ३१२३४ः।
कलशैशतया। मनाऽ३पाऽ५थाऽ६५६॥

(दी. ७। प. १२। मा. ९) १५ (छौ।११०३)

(५५७।३) ॥ प्रवद्भार्गवम्। भृगुजगतीन्द्रसोमौ॥

प्रोअयासाइत्। इन्दुरिन्द्रा। स्याऽऽनिष्कृताम्॥ सखासख्युः। नप्रमिना। ताऽऽइसङ्गिराम्॥
मर्यइवा। युवतिभाइः। साऽऽमर्षताइ॥ सोमःकला। शैशतया। माऽऽनापथाऽऽ१३॥
वाऽऽ३४५॥

(दी. ६। प. १३। मा. १२) १६ (गा।११०४)

(५५७।४)

प्रोअयासाइत्। इन्दुरिन्द्रा। स्यानिष्कृताऽऽ३म्॥ सखासख्युः। नप्रामिना।
तिसंगाऽऽ३४इराम्॥ मर्यइवा। युवतिभाइः। सामर्षतायेऽऽ३॥ सोमःकला। शैशतया।
मनाऽऽपाऽऽथाऽऽ६५६॥

(दी. ९। प. १२। मा. १०) १७ (थौ।११०५)

(५५७।५)

॥ याम्मायमो जगतीन्द्रसोमौ॥

आऽऽइ। इया। प्रोअयासाइदिन्दुरिन्द्राऽऽ३। स्याऽऽनिष्कृतम्॥ सखायसख्यूर्नप्रमिनाऽऽ३।
तीऽऽसंगिरम्॥ मर्यइवायुवतिभाऽऽ३इः। साऽऽमर्षति॥ आऽऽइ। इया।
सोमःकलाशेऽऽशतयाऽऽ३। मनाऽऽपाऽऽथाऽऽ६५६॥

(दी. ४। प. १२। मा. ९) १८ (थौ।११०६)

(५५८।१)

॥ दास (वात्स) शिरसी द्वे। द्वयोर्दसशिरा जगतीसोमः॥

धर्तादाइवाऽऽ३। ओवाऽऽए॥ पवतेकृबीऽऽयोरासाऽऽ३। ओवाऽऽए। दक्षोदाइवाऽऽ३।
ओवाऽऽए॥ नामनुमादीऽऽयोनुभाऽऽ३। ओवाऽऽए॥ हराइःसार्जाऽऽ३। ओवाऽऽए॥

नोअतियोनऽइसात्वाभाऽइ। ओवाऽइए॥ वृथापाजाऽइ। ओवाऽइए॥

सिकृणुषाइनदाइषूवाऽइ। ओवाऽइए। होऽइइ॥ डा॥

(दी. १३। प. १८। मा. १५) १९ (डु।११०७)

(५५८।२)

धर्त्ताओहोहाऽइ॥ दिवः। पवतेका। ओहोऽइहाऽइ। हा। बियोरसो। दक्षोदेवा।

ओहोऽइहाऽइ। हा। नामनुमा। दियोनृभाइः। हराइःसार्जा। ओहोऽइहोऽइ। हा।

नोअतीयो। नसत्तभाइः॥ वृथापाजा। ओहोऽइहाऽइ। हा॥ सिकृणूषा। ओहोऽइहाऽइ।

हाइ। नदीषुवा। ओहोऽइहाऽइ। हाऽइ४। ओहोवा॥ एऽइ। नदीषुवाऽइ॥

(दी. १८। प. २८। मा. १०) २० (डौ।११०८)

(५५९।१) ॥ यामानि त्रीणि, (ऐडयामम्)। त्रयाणां यमो जगती सोमेन्द्रौ॥

वृषामातीऽइ३। नाम्पवाताऽइ३इ। एऽइ। विचक्षणएऽइ॥ सोमोआहाऽइ३म्।

प्रतराइताऽइ३। एऽइ। उपसान्दिवएऽइ॥ प्राणासाइन्धूऽइ३। नांकलाशाऽइ३। एऽइ।

अचिक्रददेऽइ॥ इन्द्रस्याहाऽइ३। दियावाइशाऽइ३न्। एऽइ। मनीषिभिरेऽइ३४३।

ओऽइ३४५इ॥ डा॥

(दी. १०। प. १८। मा. १०) २१ (बौ।११०९)

(५५९।२)

(५६१।२) ॥ वायोरभिक्रन्दम् (वायोरभिदः)॥ वायुर्जगतीन्द्रसोमौ॥

४ ऋ र ४ ५ ४ ऋ ४ ५ १ र र र २ २^ २
इन्द्रायसोमसुपुतःपर्यौ। होइसावा॥ अपामीवाभवतुरक्षसाऽ१साऽ३हा।

१ र २ २^ २ ३ ५ ३ ५ १ २ ३ २ ^ १
मातेरसस्यमत्सतद्वयाऽ१वीऽ३नो। द्राऽ२३४वी। णाऽ२३४स्वा॥ ताइहसाऽ३। हाऽ२३।

२ ^ ४ ५ ॥
तुवाऽ३इन्द्राऽ५वाऽ६५६ः॥

(दी. ८। प. ९। मा. ४) २६ (ढी।१११४)

(४६२।१) ॥ यामानि त्रीणि। त्रयाणां यमो जगती सोमश्वेनौ॥

२ र १ ३ र १ ५ ४ ३ र १ ३ र १ ५ ४
असाविसो। मोअरुषोऽ२३४। वृषाहराइः॥ राजेवदा। स्मोअभिगाऽ२३४ः। अचिक्रदात्॥

२ र १ र ३ र १ ५ ४ ३ र १ २ १ ४
पुनानोवा। रामतियाऽ२३४इ। पिअव्ययाम्॥ श्वेनोनयो। निघृतवाऽ२३। तमाऽ५सदात्।

४
होऽ५इ॥ डा॥

(दी. ११। प. १४। मा. ११) २७ (घा।१११५)

(५६२।२)

२^ ३ ५ २ ^ ३ ५ ३ र १ २ ^ २ ^ ३ ५
आसावीऽ२३४सो। मोअरूऽ२३४षाः। वार्षाहरायेऽ३ः॥ राजेवाऽ२३४दा।

२ ^ ३ ५ ३ र १ २ ^ ३ ५ २ ^ ३ ५
स्मोअभीऽ२३४गाः। आचिक्रदाऽ२३त्॥ पुनानोऽ२३४वा। रामातीऽ२३४ये।

३ र १ २ ^ ३ ५ २ ^ ३ ५ ३ २ ^ १ ^ ३ ५ र
पीअव्ययाऽ२३म्॥ श्वेनोनाऽ२३४यो। निघार्त्ताऽ२३४वा। तमाऽ३। साऽ२दाऽ२३४औहोवा॥

२ ^ १ १ १ १
देऽ३। दिवीऽ२३४५॥

(दी. ६। प. १५। मा. ९) २८ (डो।१११६)

(५६२।३)

असाविसोमोअरुषोवृषाह। राडः॥ राजेवदस्मोअभिगाअचिक्र। दात्॥ पुनानोवारमत्येष्यव्य।

याम्॥ श्येनोनयोनिघृत। वा। तमाऽऽ। साऽऽदाऽऽ३४औहोवा॥ एऽऽ। दिवीऽऽ३४५॥

(दी. १८। प. १२। मा. ८) २९ (ठै।१११७)

(५६३।१) ॥ मरुतांधेनु। मरुतो जगतीसोमः॥

प्रादे॥ वमच्छामधुम। तआऽऽइन्द्रवाः। आसिष्याऽऽ३४दा। तगावआ। नधाऽऽइन्द्रवाः।

बर्हिषाऽऽ३४दाः। वचनावाऽऽ। तऊऽऽधभाडः। परिसूऽऽ३४ताम्॥

उस्त्रियानिर्णिजंधाडरायेऽऽ३॥ धोऽऽइद्राऽऽ३४औहोवा॥ धाऽऽइद्राऽऽ३४५॥

(दी. ८। प. १३। मा. १६) ३० (डू।१११८)

(५६४।१) ॥ काक्षीवतानि (शाड्गणि) त्रीणि। अञ्जतः कक्षीवाञ्जगती सोमः॥

अञ्जताड। वियञ्जताड। समञ्जाताऽऽइ॥ ऋतुःरिहा। तीमधुवा। भियञ्जाताऽऽइ॥ सिन्धोरुच्छ्वा।

सेपतया। तमुक्षाणाऽऽम्॥ हिरण्यपा। वाःपशुमा। प्सूगृभ्णताऽऽ१उवाऽऽ३४५॥

(दी. ५। प. १२। मा. ६) ३२ (फू।१११९)

(५६४।२) ॥ व्यञ्जतः कक्षीवान्॥

अञ्जाऽऽहो। तेऽऽहोइ। वियञ्जतेऽऽसाऽऽमञ्जताड॥ ऋतूऽऽहोइ। रिहाऽऽहो।

तिमधुवाऽऽभीऽऽअञ्जताड॥ सिन्धोऽऽहोइ। उच्छ्वाऽऽहो। सेपतयाऽऽ०ताऽऽमुक्षणम्॥

हिराऽऽहो। ण्यपाऽऽहो। वाःपशुमा। प्सूगाऽऽभ्णाऽऽप्राताऽऽ६५६इ॥

(दी. २। प. १३। मा. ८) ३२ (जै।११२०)

(५६४।३) ॥ समञ्जतः कक्षीवान्॥

पञ्चत्रिंशन्नवमः, नवमः खण्डः॥९॥ दशतिः॥७॥ इति जागतम्॥

॥ इति ग्रामे गेयगाने षोडशः प्रपाठकः॥१६॥

(५६६।१) ॥ पदे द्वे। द्वयोर्वसिष्ठ उष्णिगिन्द्रः॥

इन्द्रमच्छा॥ सुताइमा। औहोऽ२३४वा। वृषणंया। तूहरया। औहोऽ२३४वा॥ श्रुष्टाइजाता।
सइन्द्रवाः॥ सुवर्वाऽ२३इदाऽ३४३ः। ओऽ२३४इइ॥ डा॥

(दी. ३। प. ११। मा. ७) १ (टे।११२४)

(५६६।२)

इन्द्रमच्छा॥ सुताइमाऽ३इ। ताईऽ३माइ। वृषणंया। तूहरयाऽ२ः। हाराऽ३याः।
श्रुष्टेजाताऽ३साइन्द्रवाऽ२ः॥ आइन्दाऽ३वाऽ३ः॥ सुवराऽ३४। औहोवा॥
विदोविऽ३दाऽ२३४५ः॥

(दी. ६। प. ११। मा. ११) २ (का।११२५)

(५६६।३) ॥ अनुपदे द्वे। द्वयोर्वसिष्ठ उष्णिगिन्द्रः॥

इन्द्रम्। इन्द्राम्॥ अच्छऽ३सूताऽ१इमेऽ२। आइमेऽ२॥ वृषणंया। तूहरयाऽ२ः। रायाऽ२ः।
श्रुष्टेजाताऽ३साइन्द्रवाऽ२ः॥ दावाऽ२३ः॥ सुवराऽ३४। औहोवा॥ विदोऽ३विदाऽ२३४५ः॥

(दी. ५। प. १२। मा. १०) ३ (फौ।११२६)

(५६६।४)

इन्द्रमच्छसुताइमेवृषणंयन्तुहा। होऽ३४३। रया॥ श्रुष्टाउवा। जाताउवाऽ३४।
सइन्द्रवःसुवा। हो॥ विदोऽ३४५इइ॥ डा॥

(दी. ९। प. ९। मा. ७) ४ (झे।११२७)

(५६६।५) ॥ पौष्कलम्। प्रजापतिरुष्णिगिन्द्रः॥

ॐ १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००

सईऽ२०दाऽ२३४५वाऽ६५६ः॥ सुवर्विदाऽ२३४५ः॥

(दी. १। प. ७। मा. ७) ५ (खे।११२८)

(५६७।१) ॥ ऐषिराणि पञ्च। ऐषिरोष्णिगिन्द्रः॥

प्रधन्वासौहोइ। ओऽ३होऽ२३४वा। मजागृविः॥ इन्द्रायेन्दोहोइ। ओऽ३होऽ२३४वा।

परिस्रव॥ द्युमन्तश्शौहोइ। ओऽ३होऽ२३४वा। ष्ममाभर॥ सुवर्विदोहोइ।

ओऽ३होऽ२३४५वाऽ६५६॥ ऊऽ२३४पा॥

(दी. १। प. १२। मा. ५) ६ (थु।११२९)

(५६७।२)

प्रधन्वासौहो। वाऽ३हो। मजागृवीऽ२ः॥ इन्द्रायेन्दोहो। वाऽ३होइ। परिस्रावाऽ२॥

द्युमन्तश्शौहो। वाऽ३हो। ष्ममाभाराऽ२॥ सुवर्विदोहो। वाऽ३होऽ२। वाऽ२३४ओहोवा॥

ऊऽ२३४पा॥

(दी. ११। प. १३। मा. ३) ७ (ग्वि।११३०)

(५६७।३)

ओहोहोइ। प्रधन्वासोऽ२। ओहोहो। मजागृवीऽ२ः॥ ओहोहोइ। इन्द्रायाइन्दोऽ२।

ओहोहोइ। परिस्रावाऽ२॥ ओहोहोइ। द्युमन्ताश्शूऽ२। ओहोहो। ष्ममाभाराऽ२॥ ओहोहोइ।

सुवः। वाऽ२इ। दाऽ२३४। ओहोवा॥ ऊऽ२३४पा॥

(दी. ११। प. १८। मा. ९) ८ (द्वो।११३१)

(५६७।४)

हुवाऽरुइ। हुवाऽरुइ। हुवाऽरुइहोइ। प्रधन्वासोऽरु। मजागृवीऽरुः॥ इन्द्रायाइन्दोऽरु।
परिस्नावाऽरु॥ दुमन्ताऽशूऽरु। ष्ममाभाराऽरु॥ सुवर्वाइदाऽरुम्। हुवाऽरुइ। हुवाऽरुइ।
हुवाऽरुइहोऽरु। वाऽरुइ४ओहोवा॥ ऊऽरुइ४पा॥

(दी. ५। प. १५। मा. १०) ९ (म्बौ।११३२)

(५६७।५)

प्रधन्वाऽरुइसोमजागृवीः॥ इन्द्राऽरुयाऽरुइ४इन्दो। ओइ। पाऽरुइराइसाऽरुवा॥
दुमाऽरु०ताऽरुइ४शू॥ ओ। ष्ममाऽरुभाऽरुइ४५राऽरुइ५६॥ सुवर्वाइदाऽरुइ४५म्॥

(दी. २। प. ८। मा. ५) १० (जु।११३३)

(५६८।१) ॥ शौक्तानि पञ्च। शुक्तिरुष्णिक्सोमः॥

सखाऽरुयाआऽरु। निषीदता। पुनानाऽरुइया। प्रगायता॥ शिशुन्नाऽरुइया॥ ज्ञैःपराइभूऽरु।
पताश्राऽरुइयाऽरुइ४इइ। ओऽरुइ४५इ॥ डा॥

(दी. ५। प. ९। मा. ४) ११ (भी।११३४)

(५६८।२)

सखायाआ॥ निषीदाऽरुइ४ता। पुनाऽरुनाऽरुइ४या। प्राऽरुगाऽरुइ४ओहोवा। याऽरुइ४ता॥
शिशुन्नया। ज्ञैःपरिभूऽरुइ४॥ पाऽरुताऽरुइ४ओहोवा॥ श्रियेऽरु॥

(दी. ५। प. ९। मा. ३) १२ (भि।११३५)

(५६८।३)

४ ऋ ४ ५ २ र ११ र
सखायआनि। पीदाऽदता॥ पुनानायप्रगायाता॥ शिशुन्नयज्ञैःपराऽ२इ॥ भूषाऽ२३ताऽ३।
१ २ ३
आऽ२३याऽ३४३इ। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ८। प. ८। मा. ४) १३ (डी।११३६)

(५६८।४)

५ र ४ ऋ ४ ५ २ र ११ २ र ११ २ ४ ५ ४ ५ १ र १
औहोइ। सखायआनि। पीदाऽदता॥ पुनानौहोइ। पुनानौहोयेऽ३। याप्रायाप्रा॥ गायतौहोइ।
१ र २ ३ ४ ५ ४ ५ २ १ र २ १ र २ ३ ४ ५ ३ २ ३ ४ ५ र
गायतौहोयेऽ३। शाइशू*शाइशूम्॥ नयज्ञौहोइ। नयज्ञौहोयेऽ३। पारी। पाराऽ३४औहोवा॥
२ ३ ४ ५
एऽ३। भूषतश्रियेऽ१॥

(दी. १८। प. १५। मा. ९) १४ (जो।११३७)

(५६८।५)

५ र ३ २ ३ ५ २ १ २ ३ ५ २ र ११ नि र ३
सखा। यआओऽ२३४वा॥ निषाइ। दाताओऽ२३४वा। पुनानायप्रगाऽ२यत॥
१ २ ३ ४ ५ १ र २ ३ १ २ ३ ५ २
शाइशाओऽ२३४वा॥ नयज्ञैःपरिभूऽ३। पाताओऽ२३४वा॥ श्रियेऽ१॥

(दी. ५। प. ९। मा. ७) १५ (भे।११३८)

(५६९।१) ॥ कार्णश्रवसानि त्रीणि। त्रयाणां कर्णश्रवा उष्णिक्सोमः॥

३ ५ ३ ५ १ र २ ३ १ र २ १ र २ ३ १ २ ३ ४
ताऽ२३४०वः। साऽ२३४खा॥ योमदाऽ२३या। पूनानम। भिगायाऽ२३ता॥ शाइशुन्नह।
३ ४ ५ १ २ ३ ४ ५ १ २ ३ ४ ५ १ २ ३ ४ ५
व्यैःस्रदयाऽ२३॥ तगूर्तिभाऽ३४३इ। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ५। प. १०। मा. ५) १६ (मु।११३९)

(५६९।२)

ओङ्कतंवःसखा॥ योम। दायाओऽ२३४वा। पुनानमभिगाऽ३। आ। ओऽ२३४वा।
यताओऽ२३४वा॥ शिशुन्नह्वैःस्वदयाऽ३। आ। ओऽ२३४वा॥ तगाओऽ२३४वा॥
तीऽ२३४भीः॥

(दी. ३। प. १२। मा. ५) १७ (तु।११४०)

(५६९।३)

तवःसखायोमदाऽ६या॥ पुनानमभिगाऽ२यत। शाङ्गुन्नहाऽ३। व्यैःस्वा। दयाऽ३॥
ताऽ२३गूऽ३॥ ताऽ३४५इभोऽ६हाइ॥

(दी. ५। प. ७। मा. ३) १८ (फि।११४१)

(५७०।१) वाचस्सामनी द्वे। द्वयोर्वागुष्णिकसोमः॥

प्राणा॥ शाऽ२३४इशूः। महाऽ२३४इनाम्। हिन्वाऽ२नाऽ२३४र्त्ता। स्याऽ३दाइधीऽ३तीम्॥
वाङ्मपारि। प्रियाभुवाऽ२३त्॥ अधद्विताऽ३४३। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. २। प. १०। मा. ९) १९ (जो।११४२)

(५७०।२)

प्राणाप्राणा॥ शाङ्गुऽ२ःशाङ्गुऽ२ः। महाऽ३१उवायेऽ३। नाऽ२३४५म्।
हिन्वन्नार्त्तस्यदाऽ३१उवायेऽ३। धीऽ२३४तीम्। विश्वापारिप्रियाऽ३१उवाऽ२३। भूऽ२३४वात्॥
अधोऽ२। होऽ२। हुवायेऽ३॥ द्वाऽ२इताऽ२३४ओहोवा॥ ऊऽ३२३४पा॥

(दी. ३। प. १३। मा. ११) २० (ङ्ग।११४३)

(५७०।३) ॥ इन्द्रसामनी द्वे। द्वयोरिन्द्रोष्णिकसोमः॥

प्राणाशिः॥ महाऽऽइनाम्। ओहोऽऽवा। हिन्वृत्स्यदीधितिम्॥ वाइश्वाउवा। पाराउवा॥
 प्रियाऽऽभुवत्। अधाउवाऽऽ॥ एऽऽ॥ द्विताऽऽ॥

(दी. ५। प. १०। मा. ९) २१ (मो।११४४)

(५७०।४)

प्राणा॥ होऽऽइ। इयाहाइ॥ शाइशुर्महाइ। नाऽऽइम्। आउहाउ। होऽऽवा।
 हिन्वृत्स्यदीधिताइम्। आउहाउ। होऽऽवा॥ विश्वापा। र्याउहाउ। होऽऽवा॥ प्रियाऽऽइ॥
 भूऽऽवाऽऽइ४ओहोवा॥ अधद्विताऽऽ॥

(दी. १२। प. १६। मा. १४) २२ (ची।११४५)

(५७०।५)

॥ मरुतां प्रेङ्खम्। मरुत उष्णिकसोमः॥

प्राणा॥ इहोइ। शाऽऽइ४इशूः। इहोऽऽइ। महीनाऽऽइम्। होवाऽऽहोयेऽऽइ४॥ हिन्वन्।
 इहोइ। आऽऽइ४र्त्ता। हहोऽऽइ। स्यदीधिताऽऽइम्। होवाऽऽहोयेऽऽइ४॥ विश्वा। हहोइ।
 पाऽऽइ४री। हहोऽऽइ। प्रियाभुवाऽऽइत्। होवाऽऽहोयेऽऽइ४॥ आऽऽइ४धाऽऽइ॥
 द्वाऽऽइ४इइतोऽऽइहाइ॥

(दी. ६। प. २०। मा. १४) २३ (डी।११४६)

(५७१।१)

॥ प्राजापत्ये द्वे। द्वयोः प्रजापतिरुष्णिगिन्द्रसोमौ॥

पवस्वदाऽऽइ। ववीताऽऽइ४याइ॥ आइन्दोधाराऽऽइ। भिरोजाऽऽइ४सा। आकालशाम्।
 माधूमाऽऽइ४त्सो॥ मनएभानाऽऽइ४॥ सदाऽऽइ४ए। होऽऽइ४॥ डा॥

(दी. ४। प. १०। मा. ८) २४ (नै।११४७)

(५७१२)

पवस्वदा॥ ववीतयाइ। इन्दोधाऽ२३राऽ३४। भिरोजसाऽ६ए। आकाऽ३हा। लाशाऽ२म्॥
माधूऽ३हाइ। मान्तसोऽ२३॥ मनोऽ२३४वा। साऽ५दोऽ६हाइ॥

(दी. ३। प. १०। मा. ५) २५ (णु।११४८)

(५७२।१) ॥ सुज्ञाने द्वे। द्वयोरिन्द्र उष्णिक्सोमः॥

सोमःपुना॥ नऊर्मिणा। अव्यंवाराऽ२म्। विधावताइ॥ अग्नेवाचाऽ२ः॥ पव।
माऽ२नाऽ२३४औहोवा॥ कनिक्रददेउपाऽ२३४५॥

(दी. ७। प. ८। मा. ६) २६ (जू।११४९)

(५७२।२)

सोमःपुना॥ नऊर्मिणोवाऽ३। ओऽ२। वाऽ२३४। औहोवा। अव्यंवारंविधावति॥ अग्नेऽ३।
होवाऽ३। होऽ२। वाऽ२३४। औहोवा। वाचःपवमानः॥ कनाऽ३। होवाऽ३। होऽ२।
वाऽ२३४। औहोवा॥ क्राऽ२३४दात्॥

(दी. १२। प. १८। मा. ३) २७ (जि।११५०)

(५७२।३) ॥ दौते द्वे। द्युतोष्णिक्सोमः॥

सोमःपुनानऊ। मिणा। अव्यंवारंविधावाऽ२३ती॥ अग्नेवाचाः॥ ववमानाः। काऽ३निक्र॥
दाऽ२३४५त्॥

(दी. ७। प. ७। मा. ४) २८ (छी।११५१)

(५७२।४)

सोमःपुनानऊर्मिणाऽ२३४ऐही॥ अव्यंवारंविधावताऽ२३४ऐही॥ अग्नेवाचःपवमानाऽ२३४ऐही॥
कानी। ऋददेऽ३४। हियाऽ६हा। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. ११। प. ८। मा. ५) २९ (गु।११५२)

(५७२।५) ॥ आतीषादीये द्वे। द्वयोः प्रजापतिरुष्णिकसोमः॥

सोमःपुना। नऊऽ३२मीऽ२३४णा॥ अव्यंवारम्। विधावति॥ अग्राऽ३२इ। वाऽ२३४चाः॥
पवाऽ३२। माऽ२३४नाः॥ कनाऽ३इक्राऽ५दाऽ६५दत्॥

(दी. ३। प. ९। मा. ७) ३० (ढे।११५३)

(५७२।६)

सोमःपुना। हो। नऊर्मिणाऽ६ए॥ अव्यंवारंविधाऽ१वाऽ३ती। अग्नेवाऽ२३४५। चाऽ२३४५ः॥
पवमाऽ२३नाऽ३ः॥ काऽ२नाऽ२३४औहोवा॥ ऋददेऽ२३४५॥

(दी. ६। प. ९। मा. ५) ३१ (घु।११५४)

(५७३।१) ॥ सोमसामानि चत्वारि। चतुर्णां सोम उष्णिकसोमः॥

प्रपुनाऽ२३नायवेधसाइ॥ होइ। होइ। सोमायवचाउच्याताऽ२इ॥ भृतिन्नभरामतिभाऽ२इः॥
जुजोषाऽ२३ताऽ३४इइ। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ५। प. ८। मा. ९) ३२ (बो।११५५)

(५७३।२)

प्रपुनानौहोऽ५यवेधसाइ॥ सोमाओऽ३होऽ३४। यवचउच्यताइ॥ भृताओऽ३होऽ३४।
नभरामतिभाइः॥ जुजाऽ३१उवाऽ२३॥ पाऽ२३४ते॥

(दी. ५। प. ७। मा. ८) ३३ (फै।११५६)

(५७४।१)

गोऽऽमन्नः। होइ। इन्दोअश्ववाऽऽदे॥ सूतःसुदक्षधाऽऽनीऽऽवा। शुचिचवाऽऽ३४५॥
णमधिगोऽऽ३४औहोवा॥ पूऽऽ३४धा। रया। औऽऽहोऽऽवा। होऽऽइ॥ डा॥

(दी. ३। प. ११। मा. ५) ३४ (ट्ट।११५७)

(५७५।१)

हावास्मा॥ भ्याऽऽ३४०त्वा। वासूवीऽऽ३४दाम्। अभाऽऽइवाऽऽ३४णीः। अनाओऽऽ३४वा।
पाऽऽ३४ता॥ गोसिष्टेवा। णमभिवाऽऽ३४॥ सयामसिहोऽऽ३४इ॥ डा॥

(दी. ३। प. १०। मा. ५) ३५ (णु।११५८)

(५७६।१) ॥ यशाऽऽसि त्रीणि। त्रयाणां सोमोष्णिक् सोमः॥

पवतेहा॥ र्यतोहरिः। औऽऽहोऽऽइ। औऽऽहोऽऽ३४वा। आतिह्वाराऽऽसिरऽऽहिया।
औहोऽऽइ। औऽऽहोऽऽ३४वा॥ अभ्यर्षस्तोतृभ्योवा। औऽऽहोऽऽइ।
औऽऽहोऽऽ३४वा॥ राऽऽवाऽऽ३४औहोवा॥ यशोयशाऽऽ३४इ॥

(दी. १०। प. १२। मा. ६) ३६ (फू।११५९)

(५७६।२)

पवाऽऽ। पवतेहा॥ र्यतोहरिः। औहोइ। औऽऽहोइ। औहोइ। आतिह्वाराऽऽसिरऽऽहिया।
औहोइ। औऽऽहोइ। औहोइ॥ अभ्यर्षस्तोतृभ्योवा। औहोइ। औऽऽहोइ। औहोऽऽ।
राऽऽवाऽऽ३४औहोवा॥ यशोयशाऽऽ३४इ॥

पाऽऽ३४। वस्वम्। धुमत्ताऽऽ६माः॥ आइन्द्राऽऽ२। यसोमाऽऽ२। ऋतुवाइत्ताऽऽ३मोऽऽ३।

माऽऽ३दाः॥ महिबुक्षाताऽऽ३मोऽऽ३॥ माऽऽ३४५दोऽऽ६हाइ॥

(दी. नास्ति। प. ९। मा. ५) २ (लु।११६४)

(५७८।३)

पवस्वमधुमा। इहा॥ तमः। इन्द्रायसोमऋतुवित्तमोमाऽऽ२३दाः। इहा॥ महाइबूऽऽ२३क्षा।

इहा॥ तमोमाऽऽ२३दाऽऽ३४३ः। ओऽऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ५। प. १०। मा. ५) ३ (मु।११६५)

(५७८।४)

॥ वासिष्ठम्। वसिष्ठः ककुप् सोमेन्द्रो॥

पवस्वमा। एऽऽ५। धुमा॥ तमाः। इन्द्रायसोऽऽ३। हाऽ। औऽऽ३हो। माऋतुवीऽऽ२३दाऽऽ३।

हाऽ। औऽऽ३होऽऽ३४। तमोऽऽ३४मदाः॥ महायेऽऽ३॥ बूऽऽ२३क्षाऽऽ२३४औहोवा॥

तमोमदाऽऽ२३४५ः॥

(दी. ५। प. १४। मा. ४) ४ (भौ।११६६)

(५७८।५)

॥ सफम्। देवाः ककुप् सोमः॥

पवस्वाऽऽमधु। मत्ताऽऽ२३४माः॥ इन्द्रायसोमाऽऽ२। ऋतुवाइत्ताऽऽ३मोऽऽ३। माऽऽ३२३४दाः॥

महाइ॥ बुक्षाताऽऽ३मोऽऽ३। माऽऽ३४५दोऽऽ६हाइ॥

(दी. १। प. ८। मा. ५) ५ (गु।११६७)

(५७९।१)

॥ ऐषिराणि चत्वारि। चतुर्णामिषिरः ककुप् सोमः॥

अभाइ। बुम्नाऽ३०वृऽ३हद्यशः॥ इषाः। पतेदिदीहिदेऽ३वाऽ३देवयुम्॥ विको। शम्म॥

ध्यमाऽ३०यूऽ५वाऽ६५६॥

(दी. ३। प. ७। मा. ४) ६ (ठी।११६८)

(५७९।२)

अ। भेदूम्नाम्॥ बृहाद्याऽ१शाऽ२ः। इषास्पताइ। दीदीहाऽ२३४इदे। वदाइवाऽ२३४यूम्॥

विकौवाओऽ२३४वा॥ शम्मध्यमाऽ३१उवाऽ२३॥ यूऽ२३४वा॥

(दी. नास्ति। प. ९। मा. ८) ७ (ले।११६९)

(५७९।३)

अभियुम्नम्बृहत्। इहा॥ यशः। इषस्पतेदिदीहिदेवदेवाऽ२३यूम्॥ विकौहोवाऽ३हाइ॥

शम्माऽ२ध्यमयुवा। इडाऽ२३भाऽ३४३। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ७। प. ९। मा. ५) ८ (झु।११७०)

(५७९।४)

अभियुम्नवृऽ६हद्यशः॥ इषस्पताइ। दिदीहिदाइ। वादेवयूम्॥ विकोशम्मध्यमाऽ२३५होइ॥

यूऽ२३४वा। एहियाऽ६हा। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. ५। प. ९। मा. ६) ९ (भू।११७१)

(५८०।१) ॥ कार्णश्रवसानि त्रीणि। त्रयाणां कर्णश्रवा ककुबश्रः॥

आसोतापा॥ राऽ२इषाऽ२३४ओहोवा। चाऽ२३४ता। अश्रन्नस्तोममसुराऽ२५रजस्तुरम्॥

ओयेऽ३। वनाऽ३॥ ओयेऽ३। प्रक्षाऽ३४। ओहोवा॥ उदप्रुताऽ२३४५म्॥

(दी. १। प. १०। मा. ४) १० (नी।११७२)

(५८०।२)

आसोतापा॥ रिषि। चताऽ२। ऊऽ२। हाऽ२इ। ऊऽ२। अश्वन्नस्तोमम। सुराऽ२म्। ऊऽ२।
हाऽ२इ। ऊऽ२। रजा। सुराऽ२म्। ऊऽ२। हाऽ२इ। ऊऽ२॥ वना। प्रक्षाऽ२म्। ऊऽ२।
हाऽ२इ। ऊऽ२॥ उदा। पूऽ२ताऽ२३४ओहोवा॥ ऊऽ३२३४पा॥

(दी. ६। प. २४। मा. ८) ११ (लै।११७३)

(५८०।३)

आसोतापा॥ रि। षाइ। चता। अश्वन्नस्तो। मामपूऽ२३४राम्। रजास्तूऽ२३४राम्॥
वनोहाइ॥ प्रक्षामूऽ३दा। हिम्मायेऽ३॥ पूऽ२३४ताम्॥

(दी. ३। प. ११। मा. ५) १२ (टु।११७४)

(५८०।४) ॥ वाचस्सामानि त्रीणि। त्रयाणां वक्कुकुबश्चः॥

आसोतापारीऽ६षिधता॥ आश्वओऽ२३४वा। नस्तोममसुराऽ२२रजस्तुराऽ२३म्॥ होइ।
वानाओऽ२३४वा॥ प्रक्षमुदप्रुताऽ२३४५म्॥

(दी. ६। प. ६। मा. ५) १३ (कु।११७५)

(५८०।५)

आसोऽ३४ओहोवा॥ तापराइषिधाताऽ२। आश्वन्नस्तो। मामपूराऽ२म्। रजास्तूऽ२३४राम्॥
वनोहाइ॥ प्राक्षमुदाऽ३१उवाऽ२३॥ पूऽ२३४ताम्॥

(दी. ५। प. ८। मा. ७) १४ (बे।११७६)

(५८०।६)

आसोतापा। हो। रिषिधताऽदए॥ आश्वन्नस्तो। मामसूराऽरम्। राजस्तुरम्॥
वानप्राक्षाऽर३म्॥ ऊऽर३दाऽ३। प्रूऽ३४५तोऽदहाइ॥

(दी. ४। प. ९। मा. ५) १५ (धु।११७७)

(५८१।१) ॥ कौत्मलबर्हिषे द्वे। द्वयोः कुत्मलबर्हिः ककुप् वृषभः॥

एताम्॥ ऊत्याम्। मदाऽर३च्यूऽर३४ताम्। सहास्रधा। रावृषभाऽ३म्। दिवोऽर३दूऽर३४हाम्॥
विश्वाऽर३होऽ१इ। होइ॥ वाऽर३सूऽ३। नाऽर३इबाऽर३४औहोवा॥ भ्राऽर३४ताम्॥

(दी. २। प. ११। मा. १०) १६ (चौ।११७८)

(५८१।२)

एतामूत्याम्॥ मदाऽ३१उवाऽर३। च्यूऽर३४ताम्। सहस्रधारंवृषभंदिवोदुहाऽर३म्॥
वाइश्वावासू॥ निबाऽ३१उवायेऽ३॥ भ्राऽर३४ताम्॥

(दी. २। प. ७। मा. ७) १७ (छे।११७९)

(५८१।३) ॥ सादन्तीयम् (शङ्कु)। प्रजापतिः ककुप् वृषभः॥

एतमुत्यम्। एऽ५। मदा॥ च्युताम्। सहस्रधारंवृषभंदिवोदूऽर३हाम्॥ वाइश्वाऽर३वासूऽर३॥
निबोऽर३४वा। भ्राऽ५तोऽदहाइ॥

(दी. ३। प. ८। मा. ५) १८ (डु।११८०)

(५८१।४) ॥ कौत्मलबर्हिषाणि त्रीणि। त्रयाणां कुत्मलबर्हिः ककुप् वृषभः॥

ए॒त॒मु॒त्य॒म्। ओ॒हा॒इ। म॒द॒च्यु॒त॒म्। ओ॒हा॒इ॥ सा॒ह॒स्रा॒ऽऽ॒३॒४॒धा। रं॒वा॒र्षा॒ऽऽ॒३॒४॒भा॒म्।
 दि॒वो॒दु॒ह॒मो॒ऽऽ॒३॒४॒हा॒इ॥ वि॒श्वा॒ऽऽ॒३॒४॒हो॒ऽऽ॒इ॥ वा॒ऽऽ॒३॒सू॒ऽऽ॒३। ना॒ऽऽ॒इ॒वा॒ऽऽ॒३॒४॒ओ॒हो॒वा॒॥
 भ्रा॒ऽऽ॒३॒४॒ता॒म्॥

(दी. ४। प. ११। मा. १०) १९ (११८१)

(५८१।५)

ए॒ता॒मु॒त्य॒म॒दा॒च्यु॒ता॒म्॥ सा॒ह॒स्र॒धा। रा॒ऽऽ॒३॒४॒वृ॒ष॒भा॒ऽऽ॒३॒४॒म्। दि॒वो॒ऽऽ॒३॒४॒। दु॒ह॒मो॒इ॥
 वि॒श्वा॒व॒सू॒नि॒वा॒ऽऽ॒३॒४॒हो॒इ॥ भ्रा॒त॒मा॒ऽऽ॒३॒४॒उ॒वा॒ऽऽ॒३॒४॒॥ ऊ॒ऽऽ॒३॒४॒पा॒॥

(दी. ३। प. ८। मा. ५) २० (डु।११८२)

(५८१।६)

ए॒ता॒ऽऽ॒३॒४॒म्। उ॒त्य॒म॒म॒दा॒। च्यु॒ता॒म्॥ स॒ह॒स्र॒धा॒रा॒ऽऽ॒३॒४॒वृ॒। ष॒भ॒म्। दि॒वो॒ऽऽ॒३॒४॒१॒२॒३।
 दू॒ऽऽ॒३॒४॒हा॒म्॥ वि॒श्वा॒व॒सू॒नि॒वा॒ऽऽ॒३॒४॒ओ॒ये॒ऽऽ॒३॒४॒॥ भ्रा॒ऽऽ॒३॒४॒ता॒म्। ए॒हि॒या॒ऽऽ॒३॒४॒हा॒॥ हो॒ऽऽ॒३॒४॒ए॒॥ डा॒॥

(दी. ६। प. १२। मा. ७) २१ (खे।११८३)

(५८२।१) ॥ लो॒मा॒नी॒ द्वे॒ (दी॒र्घ॒म्)। द्वा॒यो॒र्भ॒र्द॒वा॒जः॒ क॒कु॒प् सो॒मः॥

सा॒मू॥ न्वे॒यो॒व॒सू॒ऽऽ॒३॒४॒ना॒म्। यो॒रा॒ऽऽ॒३॒४॒या॒मा॒ऽऽ॒३॒४॒। ने॒ता॒य॒इ॒डा॒ऽऽ॒३॒४॒ना॒म्॥ सो॒ऽऽ॒३॒४॒मा॒ः॥
 यः॒सु॒क्षि॒ता॒ऽऽ॒३॒४॒इ॒नो॒ऽऽ॒३॒४॒हा॒इ॥

(दी. ४। प. ६। मा. ६) २२ (तू।११८४)

(५८२।२)

ससुहाउ॥ न्वेयोवसूनाऽ२३५हाउ। योराऽ२यामाऽ२॥ नेतायः॥ इडानाऽ२३५हाउ॥

सोमोयःसूऽ३हाउ॥ क्षितीनाम्। औऽ२३होवा। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. १। प. १०। मा. ७) २३ (ने।११८५)

(५८२।३) ॥ सोमसामानि त्रीणि। त्रयाणां सोमः ककुप् सोमः॥

सः। स्वेसासू॥ न्वेयोवसाऽ३१उवाऽ२३। नाऽ२३४५म्। योरायामाऽ२नेतायइडाऽ२नाऽ३म्॥

सोमौवाओऽ२३४वा॥ यःसुक्षिताऽ३१उवायेऽ३॥ नाऽ२३४५म्॥

(दी. १। प. ८। मा. ८) २४ (दौ।११८६)

(५८२।४)

ससुन्वेऽ२३योवसूनाम्॥ योरायाऽ१माऽ२३ने। तायइडाऽ२३४५नाऽ६५६म्॥

सोमोऽ२यःसुक्षितीनाम्। सोमाऽ२३४५ः॥

(दी. ८। प. ५। मा. ५) २५ (णु।११८७)

(५८२।५)

ससुन्वेयाः। एवासू॥ नायोराऽ१याऽ२३मा। नेतायइडाऽ२३नाऽ३४म्॥ सोमाऽ३ः॥ यःसुक्षि।

ताऽ२३४इ॥ नाऽ२३४५म्॥

(दी. ६। प. ८। मा. ६) २६ (गू।११८८)

(५८३।१) ॥ शैतोष्माणि चत्वारि। चतुर्णां शीतोष्मः ककुप् सोमः॥

ब५हिया॥ गदाइवियपवमानजनिमानिऽ३द्यूमाऽ२। तामाऽ२ः॥ आमाऽ२र्त्ताच्चाऽ२३॥

यघोऽ२३४वा। पाऽ५योऽ६हाइ॥

(दी. २। प. ६। मा. ३) २७ (चि।११८९)

(५८३।२)

ब॒श्हिया॑॥ ग॒दाइ॒विया॑। प॒वमा॑ना। हो॒वाऽइ॒हाइ॑। ज॒निमा॑ऽ॒इनी॑ऽ॒इ॒४। द्यु॒मा। ता॑ऽ॒इमाः॑॥
अ॒माऽ॒इ॒३॥ ता॑ऽ॒इ॒च्चा॑ऽ॒इ॒४औ॑हो॒वा॥ य॒घोऽ॒इ॒षया॑ऽ॒इ॒४५॒न्॥

(दी. ३। प. १०। मा. ५) २८ (णु।११९०)

(५८३।३)

ब॒श्ह्यं॒गदा॑॥ वि॒या। प॒वमा॑न॒जनि॑मानि॒द्युम॑त्ताऽ॒इमाः॑॥ अ॒मार्त्ता॑ऽ॒इ॒च्चा॑ऽ॒इ॒३॥ य॒घोऽ॒इ॒४वा॑॥
पा॑ऽ॒इ॒५यो॑ऽ॒इ॒हाइ॑॥

(दी. २। प. ६। मा. २) २९ (चा।११९१)

(५८३।४)

ब॒श्होऽ॒इ॒अंग॑दै॒विया॑॥ प॒वमा॑ऽ॒इना॑। ज॒निमा॑ऽ॒इना॑येऽ॒इ॒४। द्यु॒मा। ता॑ऽ॒इमाः॑॥
अ॒मार्त्ता॑ऽ॒इ॒च्चा॑ऽ॒इ॒३॥ य॒घोऽ॒इ॒४वा॑। पा॑ऽ॒इ॒५यो॑ऽ॒इ॒हाइ॑॥

(दी. १। प. ८। मा. ३) ३० (गि।११९२)

(५८४।१)

॥ गाय॒त्रपा॑र्श्वम्। दे॒वाः क॑कुप् सोमः॥

ए॒षाः॥ स्या॑धा॒रया॑ऽ॒इ॒१उ॒वाऽ॒इ॒३। सू॑ऽ॒इ॒३४ताः॑। अ॒व्याऽ॒इ॒वारे॑भिःप॒वते॑मदि॒न्तमः॑॥
क्री॒डा॒नूऽ॒इ॒१र्मी॑ऽ॒इ॒२ः॥ अ॒पाऽ॒इ॒३म्। हि॑म्ऽ॒इ॒३स्थि॑बाऽ॒इ॒३॥ आ॒इ॒वाऽ॒इ॒३४५॑॥

(दी. ३। प. ८। मा. ८) ३१ (गौ।११९३)

(५८४५८५।२)॥ स॒न्तनि॑। दे॒वाः क॑कुप्युस्त्रि॒या अ॑भि॒व्रज॑न्तेति वि॒ष्टार॑पंक्ति सोमः॥

एषाहाउ॥ स्याधारयाऽऽ३१उवाऽऽ३३। सूऽऽ३३४ताः। अव्याऽऽ२वारेभिःपवतेमदिन्तमाऽऽ३३॥

क्रीडन्हाउ॥ ऊर्मिरपाऽऽ३१उवाऽऽ३३॥ ईऽऽ३३४वा॥ छू ॥१॥

यउस्त्रियाऽऽ२अपियाअन्तरम्मनीऽऽ३३॥ निर्गाहाउ॥ आकृन्तदाऽऽ३१उवाऽऽ३३। जाऽऽ३३४सा॥

छू ॥२॥

अभिव्रजन्तन्निषेगव्यमश्चियाऽऽ३३म्॥ वर्मीहाउ॥ वाधृष्णवाऽऽ३१उवाऽऽ३३॥ रूऽऽ३३४जा॥

घि॥३॥

(दी. १०। प. १५। मा. १४) ३२ (मी।११९४-११९५)

(५८४।३) ॥ सोम सामानि त्रीणि। सोमः ककुप् सोमः॥

एषस्यधा। रायाऽऽ१सूताऽऽ२ः॥ अव्यावाराइ। भाइःपवते। मदिन्तमाः॥ क्रीडन्नुऽऽ३३४मीऽऽ३३ः॥

आऽऽ३३पाऽऽ३३म्। आऽऽ३३४५इवोऽऽ६हाइ॥

(दी. ६। प. ८। मा. ८) ३३ (गै।११९६)

(५८४।४)

एषस्याऽऽ३धारयासुताः॥ अव्याहोऽऽ२इ। वारेभिःपवतेमादिन्तामाऽऽ२ः॥ क्रीडाऽऽ२न्होऽऽ१इ।

ऊऽऽ३३४मीः। अपामिवा। औऽऽ३३होवा। होऽऽ३इ॥ डा॥

(दी. ८। प. ९। मा. ६) ३४ (दू।११९७)

(५८४।५)

एषस्यधाऽऽ३रयासुताः॥ अव्यावाराइ। भिःपवताऽऽ३३इ। मदिन्तमाः॥

क्रीडन्नुर्मिरपोवाऽऽ३ओऽऽ३३४वा॥ आऽऽ३३४५इवोऽऽ६हाइ॥

(दी. ६। प. ६। मा. ७) ३५ (के।११९८)

पञ्चत्रिंशत्, एकादशः खण्डः॥११॥ दशतिः॥९॥ इति ग्रामे गेय-गाने सप्तदशः प्रपाठकः॥१७॥

॥ इति ककुबुष्णिहः॥ इति पवमानाख्यं चतुर्थं गानं समाप्तम्॥

॥ इति सौम्यं तृतीयं पर्वकाण्डं समाप्तम्॥ इति पवमानं काण्डम्॥

॥ इति षष्ठः प्रपाठकः॥६॥

॥ इति ग्रामगेयगानं समाप्तम्॥